

चंद्रावती : एक तोरणना अवशेष

श्रीमान् गौर्जर–भीमदेव–नृपतेर्धन्यः प्रधानाग्रणीः
प्राग्वाटान्वयमण्डनः स विमलो मन्त्रीश्वरोऽप्यस्पृहः ।

प्रकाशकोनुं निवेदन

सन १९६४ मां गुजरात साहित्य सभाने स्थपाये ६० वर्ष थयां होई संस्थानो हीरक महोत्सव ऊजववानो निर्णय करवामां आव्यो छे. ए अंगे विविध प्रकाशनो रजू करवानी योजना पण विचारवामां आवी छे. जणावतां अमने आनंद थाय छे के आ योजनाना बीजा फळ तरीके अमारामांना एक मंत्री डा. धीरजलाल धनजीभाई शाहे संपादित करी तैयार करी आपेल लावण्यसमय-विरचित **'विमलप्रबंध'** काव्यनी मूळ अधिकृत वाचना अने एनी विस्तृत प्रस्तावना तरीके गुज. युनि मां गुजरातीना विषये पीएच.डी.ने माटे स्वीकारवामां आवेलो महानिबंध—**'विमलप्रबंध : अध्ययन'** ग्रंथाकारे प्रसिद्ध करवामां आवे छे.

गुजराती जूना साहित्यमां 'विमलप्रबंध'नुं अनेक दृष्टिए महत्त्व छे एमां इतिहास, समाज, धर्म वगेरे विषयो संकळायेला छे. मन्त्री विमलनुं व्यक्तित्व एमां मूर्त करवामां आव्युं छे. आनुं अध्ययन करी डॅा. शाहे मंत्री विमलनी ऐतिहासिक महापुरुष तरीके मुलवणी करी आपी आ काव्यनो विशिष्ट अभ्यास रजू करी आप्यो छे. इतिहासना अभ्यासकोने तो ए सविशेष आनंद अने प्रेरणा आपशे ज, परंतु जूनां गुजराती काव्योनो सर्वांगीण अभ्यास करनाराओने पण ए उपयोगी नीवडशे.

आ प्रकाशन करवानी डॅा. शाहे आ सभाने संमति आपी छे, तेथी सभा एमनुं ऋण स्वीकारतां आनंद अनुभवे छे.

वेलेन्टाईननी हवेली,
त्रण दरवाजा,
अमदावाद
ता. १६-३-१९६५

चैतन्यप्रसाद मो. दीवान
केशवराम का. शास्त्री
मन्त्रीओ :
गुजरात साहित्य सभा

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

शुभेच्छा

भाईश्री धीरजलाल धनजीभाई शाह साथे मारे वर्षोथी धर्मस्नेह छे. सहज भावे एओ विद्याव्यासंगी महानुभाव छे. संजोगोनी अनुकूळताए एमने एक सफळ वेपारी बनाव्या छे. अने देशनां कामोमां पण एमने एटलो ज रस छे. आ रीते वेपारमां अने देशनां कामोमां पूरेपूरा ओतप्रोत रहेवा छतां एमणे पोताना विद्यारसने सुकाई जवा न देतां वहेतो राख्यो छे ए आनंद उपजावे तेवी तेमज बीजाओने प्रेरणारूप बनी रहे तेवी बीना छे

अनेक प्रकारनी प्रवृत्तिओनी जंजाळ वच्चे पोतानी विद्याउपासनाने चालु राखीने श्री. धीरुभाईए बी.ए.नी उपाधि प्राप्त करी अने त्यार पछी सोळमा सैकाना सुप्रसिद्ध जैन कवि श्रीलावण्यसमयविरचित 'विमलप्रबंध' उपर संशोधनात्मक महानिबंध लखीने डॉक्टरेट (पी एच. डी.)नी डिग्री मेळवी. आ हकीकत श्री. धीरुभाईनी जाग्रत विद्यारुचिनी साक्षी पूरे एवी छे

दंडनायक विमळ ए गूर्जरभूमिना एक जाजरमान प्रभावक महापुरुष थई गया. जेम एमना जीवनने लगती ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध थाय छे, तेम एमना जीवन आसपास, एमना तेजस्वी व्यक्तित्वनो ख्याल आपती संख्याबंध दंतकथाओनी फूलगूथणी पण थई छे. 'विमलप्रबंध'ना अध्ययन-संशोधन निमित्ते आ महानिबंधना लेखके दंडनायक विमळने लगतां केटलांक नवां ऐतिहासिक विधानो प्राचीन शिलालेख आदि सामग्रीने आधारे रजू कर्यां छे. दा.त. एमणे पृ. ९७-९९ मां एम सूचन कर्युं छे के विमळ मंत्री नि.संतान न हता, पण एमने पुत्र हतो. संभव छे के आ पुत्र खोळे लीधेलो होय।

अध्ययन-संशोधन-संपादननी आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति प्रमाणे महा-निबंधने उपयोगी बनावे तेमज एना गौरवमां अभिवृद्धि करे ए रीते, कविवर श्रीलावण्यसमयनी महत्त्वनी काव्यकृतिनुं केवळ ऐतिहासिक दृष्टिए ज अध्ययन के परिशीलन अने पर्यालोचन करवाने बदले श्री. धीरुभाईए साहित्यिक तथा भाषानी दृष्टिए पण एनुं मूल्यांकन कर्युं छे, तेथी आ ग्रंथ इतिहास साहित्य अने भाषा-ए त्रणे दृष्टिए उपयोगी थई पडशे, एमां शंकाने स्थान नथी.

प्राचीन गूर्जरभाषानी आवी एक महत्त्वनी काव्यकृतिना अध्ययन-संशोधन निमित्त जाग्रत थयेली श्री धीरुभाईनी विद्याप्रवृत्तिनो विशेष प्रगति थाय अने एमना हाथे विद्यासेवा, विद्याप्रवृत्ति अने विद्याप्रसारनां वधु ने वधु सत्कार्यो थतां रहे, एवी शुभेच्छा दर्शावतां हुं आनंद अनुभवुं छुं

मुनि पुण्यविजय

पुरोवचन

चालुक्य भीमदेव (१०२२-१०६३)ना दीर्घ अने प्रवृत्तिमय शासनकाळमा एनो कारभार जे मंत्रीमंडळना हाथमा हतो तेमा विमल अने दामोदर अग्रणी हता. वनराज चावडाना समयथी मंत्रीपद विमलनी कुलपरंपरामा होवानु प्रबंधो वगेरे कहे छे. चंद्रावतीना परमारराज धंधुकने वश करवामा दंडनायक विमले ज मुख्य भाग भजवेलो. ता आबु परनुं जगप्रसिद्ध आदिनाथनुं देरासर —'विमलवसही' बंधाववानो यश पण एने भागे जाय छे. आवी यशस्वी कारकिर्दी धरावनार विमल मंत्री जैनोमा अनेक अनुश्रुतिओ अने दंतकथाओनु गौरवभर्यु पात्र बने ए स्वाभाविक छे.

एटले विमलना थई गया पछी पाचसो वरसे लावण्यसमय जेवा सोळमी शताब्दीना गणनापात्र जैन कविने हाथे आपणने विमलनी कविकल्पनायुक्त कीर्तिगाथा मळे छे. 'विमलप्रबंध'नु महत्त्व इतिहास करता विशेषे तो साहित्यरचना लेखे, अने तत्कालीन समाज अने संस्कारनु चित्र दोरवा माटे प्रचुर सामग्री पूरी पाडनार साधन लेखे छे.

'विमलप्रबंधे' एना अनेकविध महत्त्वने कारणे मध्यकालीन गुजरातीना अभ्यासीओनु आ पूर्वे पण सारी रीते ध्यान खेंच्यु छे.

'विमलप्रबंध' रचाया पछी तरतमा ज सौभाग्यनंदीए एनो 'विमलचरित' नामे संस्कृतमा अनुवाद कर्यो ए हकीकत त्यारे पण एने मळेली अगत्यनी सूचक छे. १९२९ लगभगमा 'नरसिंहयुगना कविओ' ए लेखमाळामा (हवे प्रयस्थ: पृ ८१-१०३) तथा १९३५मा Gujarat and its Literatureमा (नवीन संस्करण पृ २१५-२१६) में 'विमलप्रबंध अने लावण्यसमय' परत्वे कहेलुं छे

पण एनी सामग्रीनु व्यवस्थित अने सविस्तर अध्ययन करवानो यश डो. धीरजलाल शाहने जाय छे. 'विमलप्रबंध'नो ग्रंथपाठ पण शास्त्रीय रूपमा विशिष्ट शब्दोना कोश साथे सुलभ करी आपवा उपरात एमणे कर्ता तथा कृतिना विविध पासाओने लगती घणी उपयोगी माहिती तारवी आपी छे. खास करीने विमलना जीवन विशे, उपलब्ध बधी साधनसामग्रीनो उपयोग करीने, एमणे जे ऐतिहासिक चर्चा करी छे ते एमना सनिष्ठ श्रम अने ऊडा अभ्यासनु सरस दृष्टात पूरुं पाडे छे. मध्यकालीन साहित्यनी बीजी महत्त्वनी कृतिओनु आ पद्धतिए अध्ययन थतु रहे तो ए समयना इतिहास अने संस्कारजीवनना चित्र माटे घणी मूल्यवान सामग्री सुलभ बने.

हु डो. धीरजलाल शाहने एमना अभ्यासना आ सुंदर फळ बदल अभिनंदन आपु छु.

कनैयालाल मा. मुनशी

भूमिका

जूनी गुजरातीना साहित्यमा जे अल्पसत्त्व इतिहासमूलक काव्यकृतिओ जाणवामा आवी छे तेमा बे कृतिओनो गणनापात्र काव्यकृतिओ तरीके स्वीकार करवामा आव्यो छे : प्रथम कृति ए पद्मनाभकृत '**कान्हडदेप्रबंध**' अने बीजी कृति ए '**विमलप्रबन्ध**'. 'कान्हडदेप्रबन्ध'ना त्रण संपादनो थयां छे, 'विमलप्रबन्ध'नु जे संपादन वर्षो पहेला प्रकट थयु हतु ते आजे दुर्लभ बनी गयु छे, वळी नवेसरथी एना संपादन-संशोधननी आवश्यकता पण हती आ अंगे मारे जे कहेवानु छे ते प्रकरण पहेला—प्रास्ताविकमां कह्यु पण छे.

'विमल' विशे जैन तेमज जैनेतर लेखकोए ठीक ठीक माहिती अत्यार सुधी प्रकट करेली छे, परंतु जैन लेखकोए ए माहिती प्राय सांप्रदायिक रंगे रंगी रजू करी छे, तो जैनेतर विद्वानोए अछडती नजरे, तो कोईए जैन-सप्रदाय तरफना पूर्वग्रहथी दोरवाई एनी उपेक्षा करी छे आबु पर्वत उपरनु 'विमळवसही'नु मदिर ए ज जाणे विमळनी कीर्ति माटे होय एटलुं अत्यार सुधी सौनी जाणमा छे विमलप्रबंध'—आ कृति तरफ पण जैनेतर विद्वानोनु ध्यान एक सांप्रदायिक कृति तरीके सविशेष रह्यु छे, एमा सत्य पण छे आ सर्व लक्षमा लई, आ प्रबधना अध्ययन पछी आ कृतिमा मळी आवती ऐतिहासिक माहितीनो आश्रय लई, अहीं विमळनु नवेसरथी मूल्याकन करवा यत्न कर्यो छे, एटलु ज नहि, एना जन्मकाळथी लइ एना अत सुधीनो क्रमबद्ध इतिहास आप्यो छे

विमळने पुत्र हतो के नहि एनी चर्चा आज सुधी चालया करी छे अने एने पुत्र नहोतो एवी आजे पण मान्यता प्रवर्तमान छे; परंतु उत्कीर्ण लेखा परथी अहीं सिद्ध करवा यत्न कर्यो छे के विमळने पुत्र हतो, एटलु ज नहि एनी छ पेढी सुधीनी वशावळी पण तारवीने आपवामां आवी छे. विमळना पूर्वजोनी माहिती हरिभद्रसूरिना 'नेमिनाथचरित'माना 'सनत्कुमारचरित'नी प्रशस्तिमाथी उपलब्ध थती हती, पण उत्कीर्ण लेखोनी सहायथी विमळना पूर्वजो नीनगथी लई, विमळ पछीनी छठ्ठी पेढी सुधीनी यादी सौ प्रथम अहीं रजू करी छे वीस वर्षनी वये अणहिलपुर पाटणना दडनायक तरीके निमायेल विमळ, सोमनाथ पर विजय मेळवी पाछा फरी रहेल महमूद गिझनीने रोकवा कंथ-कोटमा सामनो करी पराजय पामेल विमळ, गुजरातनरेश भीम साथे एनो पीछो पकडवा जतां सिंध प्रदेशना राजा हम्मुक पर मेळवेल विजय, पवनवेगे गझनी जई रहेल महमूद गिझनीनी पाछळ पडतां पंजाबना मीठाना अगरो–'रोमनगर' सुधी पहोंची त्याना मुस्लिम सुलतानोनो करेलो पराजय, पाटण पाछा फरी

चंद्रावतीनगरीनी नवेसरथी करेली रचना, अने जगप्रसिद्ध 'विमलवसही'नुं अंगत देखरेख नीचे करायेल सर्जन, वर्धमानसूरिना शुभ हस्ते मूळनायकनी प्रतिष्ठा—आ सर्व माहिती कडीबद्ध रीते आपवा अहीं नम्र यत्न कर्यो छे.

वळी 'विमलप्रबंध'नु समाजदर्शन श्री मणिलाल बकोरभाई व्यासे, एओए संपादन करेल 'विमळप्रबंध'मा थोडीघणी चर्चा द्वारा कर्युं हतुं; परंतु ए उपरांत राजकीय, धार्मिक तेमज सामाजिक दृष्टिए त्यारनुं समाजदर्शन करवानो पण अहीं यत्न कर्यो छे. नगररचना, राजसभा, त्यारनी राजकीय माहिती, राज्यनी आवकना साधनो, युद्धसामग्री, पुत्रजन्म–प्रसंगनी विधि, भोजन, पोशाक, अलंकार, केटलाक रीतरिवाजो—सगपणो, संबंधो, शुकन–वहेम, शक्तिनी पूजा, जैनधर्मना नवा वाद–स्थानकवासी संप्रदायनी उत्पत्ति, मुस्लिम राज्यकर्ताओनी लूटफाट, रमत–उत्सवो, सामाजिक सजाओ वगेरे माहिती आ प्रबंध परथी व्यवस्थित रीते तैयार करी रजू करी छे

मध्यकालीन गुजराती भाषा विशे अत्यार सुधीमां घणी माहिती व्यवस्थित रीते रजू थई छे, परंतु 'विमलप्रबंध'नी भाषाभूमिका विशे कोईए आज सुधी चर्चा करी नथी ए वखतनी बोलाती अने लखाती भाषा केवी हती, अने 'विमलप्रबंध'नी जूनी वाचनामा भाषाभूमिका मध्यकालीन होवा छता लहियाओए—कदाच खुद ग्रंथकारे पण अजाण्ये तत्कालीन उच्चरित जीवंत रूपो लेखनमा कया कया लखी नाख्या लागे छे एनी पण चर्चा करी छे. साथे साथे सांयोगिक असरो - अरबी, फारसी मारवाडी, खडी बोलीनी असर, भाषानी लाक्षणिकताओ वगेरेनो निर्देश पण प्रथम वार अहीं कर्यो छे.

'विमलप्रबंध'मां आवता वर्णकोनी माहिती तेमज आ प्रबंधमाना मने महत्त्वना लागेला पाचसो उपरातना शब्दो तारवीने अकरादि क्रमे छेल्ले भावार्थ साथे आप्या छे बीजा संपादनोमा पण आम करवामां आवे तो अभ्यासनी दृष्टिए ए खूब महत्त्वनु बनी रहे

आ रीते आ महानिबंधमां मारा 'विमलप्रबंध विषयक' अभ्यासनु एक विशिष्ट रूप रजू करवानो यत्न कर्यो छे, जे गुजराती साहित्यना इतिहासमा 'विमलप्रबंध' ना अत्यार सुधी स्वीकारवामा आवेला स्थानने वधु महत्त्व अपावशे ज, पण एनी महत्त्वनी - अत्यार सुधी केटलीक गलत मनाती आवती हकीकतोने इतिहासनु बळ मळता गुजरातना इतिहासनी सामग्रीना ग्रंथोमा पण एनुं महत्त्व नकारी शकाय एम नथी ज एम सिद्ध करवा शक्तिमान बनशे एवी मने श्रद्धा छे

विमळे पुनरुद्धारेल चन्द्रावती नगरीनो भाग्येज कोई अवशेष आजे बच्यो छे कर्नल टोडे ई. स. १८२५ मां आ प्रदेशनो एक प्रवास खेडयो त्यारे त्यांना प्राचीन अवशेषो—एक तोरण अने बे मंदिरो—एणे जोया हतां. एनी प्रतिकृतिओ 'Travels In Western India' माथी मेळवी अहीं आपेल छे. आ अवशेषो ज ए प्राचीन नगरीना भव्य स्थापत्यनो ख्याल आपी जाय छे.

गुजराती भाषामा रजू करेल आ महानिबंधनो अंग्रेजीमां अनुवाद करी प्रकट करवानो विचार हतो; परंतु तत्काल पहोंची नहि शकवाथी, भारतमाना कोईपण अभ्यासीने सरळ बनी रहे ए आशयथी, एने भाषा गुजराती पण लिपि नागरीमा मुद्रित करवानुं पसंद कर्युं छे.

गुजरातना समर्थ ज्योतिर्धर श्री. कनैयालाल माणेकलाल मुनशीए 'पुरोवचन' द्वारा अने कोई पण सम्प्रदायनी मुनिपरंपरामा आगवु स्थान धरावी शके तेवा शक्तिशाळी तेमज आचार्य हेमचंद्रनी परंपरामां आ सदीमां एमना साचा वारस समर्थ संशोधक-संपादक मुनिश्री पुण्यविजयजीए आशीर्वाद आपी आ कृतिनुं बहुमान कर्युं छे एम हुं समजु छुं. ए माटे बन्नेनो हुं उपकृत छु.

आ महानिबंध पूरो करुं ए माटे, मारा ए कार्यमां दररोज रस लेनार — मने ए कार्य माटे जाग्रत राखनार बे व्यक्तिओनो मारे उल्लेख करवो ज रह्यो सौ प्रथम मारा मुरब्बी अने पितातुल्य श्री. निकमलाल महासुखराम शाहनो एमणे ज, ज्यारे गुजरात युनिवर्सिटीए पत्र द्वारा मने छेल्ली तक आपी के हवे समय वधारवामां नहि आवे त्यारे मुंबई मारी साथे दोढ मास सुधी रही मने अढार अढार कलाक कार्य करवा उत्साहित कर्यो. अने श्री. कमळाबहेन र मुनशियाए बे वर्ष सुधी सतत रोकटोक कर्या करी न होत तो कदाच आ कार्य पूरु थयु होत के केम एनी मने शंका हती.

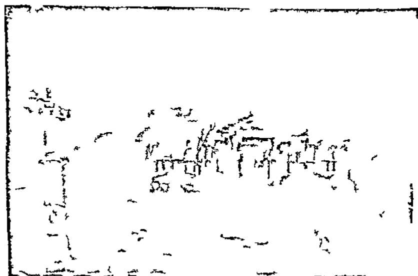
'गुजरात साहित्य सभा' ए मारा आ प्रदानने प्रकट करी मारुं पण बहुमान कर्युं छे; ए माटे ए संस्थाना कार्यकर्ताओनो पण आभारी छुं.

कार्तिक वद ११, सं. २०२१
२१-११-'६४
गांधीकुंज : प्रीतमराय मार्ग
अमदावाद-७

धीरजलाल धनजीभाई शाह

अनुक्रमणिका

चंद्रावती एक नाना भग्न मदिरना अवशेष



चद्रावती पर विशाळ भग्न मदिरना अवशेष

विमलप्रबंध : अध्ययन

१. प्रास्ताविक

ई. स. १९३६–३७ वर्षनी आ वात छे. ए समये भावनगरथी प्रकट थता 'जैन' साप्ताहिकमां दर सप्ताहे 'अभ्यास अने अवलोकन' शीर्षक नीचे साहित्य-ना पानानु हु सपादन करतो. ए वर्षोमां जेमने त्यां हु नोकरी करतो हतो तेमना तरफथी युक्त प्रांत अने नेपाळनी सरहद सुधी, एमना धधाना विकासार्थे, जवानुं थयुं. पाछा फरता आसो सुद चौदशनी तकनो लाभ लई 'ताजमहाल' जोवानी तक लीधी ए जोया पछी पडेला संस्कारने पछीना 'जैन'मा शब्ददेह आप्यो ए वांची भावनगरना सुप्रसिद्ध स्थपति श्री. वीरेन्द्रराय महेताए एक पत्र द्वारा टकोर करी के "आबु उपरनां जैन मंदिरो 'विमलवसही' अने 'लुणिगवसही' तमे जोया जणातां नथी; एक वखत जोई आवो; विश्वमां एनु स्थापत्य अनुपम छे"

आ टकोरे मने जाग्रत कर्यो ई. स १९४०मा आ बन्ने 'वसहीओ' जोवानी तक मळी. लागलागट त्रण दिवस सुधी आ अद्‌भुत वसहीओनु निरीक्षण ऊमे पगे, बेसीने, के पलाठी वाळीने कर्यां ज कर्युं; 'अद्‌भुत' एवा संस्कारे हृदयमा स्थान लई लीधु अने 'विमलवसही'ना सर्जक विशे विशेष जाणवानी उत्कठा जन्मी 'विमलप्रबध'नं रसपूर्वक वाची जवानी आ प्रथम भूमिका.

ई स. १९४२मा स्नातक थया पछी एक वृत्तिए खूब जोर कर्युं—'महानिबंध' लखवानी. विद्वान मित्रोनो एमां सहयोग मळ्यो. विषयनी पसंदगीनु कार्य मारे माटे जरा कठिन बन्यु. छेवटे मन ठर्युं गुजरातना बे प्राचीन कविओ उपर–अमदावादना लावण्यसमय अने खंभातना ऋषभदास–एक साधु, बीजा श्रावक–एक विरक्त, बीजा संसारी. साहित्यिक मनोवृत्ति 'ऋषभदास' तरफ वळती हती; 'विमलवसही' अने एना सर्जक 'विमळ' प्रत्येनी लागणी 'लावण्य-समय' तरफ. ए वर्षोमां आप्तजनोनु 'चा–घर' नामे एक मंडळ चालतुं. चा पीवी अने साहित्यिक चर्चाओ करवी ए एनो उद्देश हतो. स्व. झवेरचंद मेघाणी, श्री. धूमकेतु, श्री. मधुसूदन मोदी, प्रो अनंतराय म. रावळ अने बीजा अमे पांचेक मळी आठ सभ्योनी ए मडळी हती. आ 'चा–घर'मा मारी विचारसरणी

रजू करी. चर्चाने अंते "महानिबंध"ना विषय तरीके लावण्यसमयनी इतिहास-मूलक कृति 'विमलप्रबंध' उपर श्री. धूमकेतु अने श्री मधुसूदन मोदीनुं वलण ढळ्यु पंडितश्री बेचरदास साथे आ संबंधी विचार-विनिमय करतां एमणे पण टेको आप्यो; एटले आ कार्य में हाथमां लीधु ई. स. १९४७मा.

सद्भाग्ये गुजरातना ख्यातनाम विवेचक श्री. रामनारायण वि. पाठकनी दोरवणी नीचे मारे आ कार्य करवानुं हतु.

सं. १९७० (ई सं १९१४)मां श्री. मणिलाल बकोरभाई व्यासे पंडित लावण्यसमय-कृत 'विमलप्रबंध'नी वाचना जुदी जुदी त्रण प्रतो उपरथी तैयार करी प्रसिद्ध करी[1] त्यारथी सोळमी सदीनी एक नोंधपात्र इतिहासमूलक गुजराती काव्यकृति सुलभ बनी हती. श्री. व्यासे ए संपादननी प्रस्तावनामां ए समय सुधीमां मळेली साधनोनो उपयोग करीने 'विमलप्रबंध'नी ऐतिहासिक तेमज भाषाकीय दृष्टिए विशिष्टता दर्शाववानो सुयत्न कर्यो छे. आ मुद्रित कृति ई स १९४७मां मेळववी मुश्केल हती. चर्चा-विचारणा दरम्यान जोयु के बीजा अभ्यासीओने पण आ कृतिनी खोट जणाया करती हती, आथी आ "महानिबंध" लखु ते पहेलां 'विमलप्रबध'नी उपयोगी वाचना मारा अंगत उपयोग माटे तैयार करवानी मनोभावना थई. आ माटे थोडी प्रतो एकत्र करी अने मूल वाचना पडित बेचरदास दोशीनी नजर नीचे साधवानो आरंभ कर्यो; साथोसाथ प्रो. पाठकना मार्गदर्शन नीचे 'विमलप्रबंध'ना सर्वांगीण अभ्यासनु पण मंगलाचरण कर्युं

प्रो. पाठकनी साथे अभ्यास अंगेनी पर्येषणा दरम्यान में जोयु के 'विमल-प्रबध'-आ साहित्यकृतिए एमने आकर्ष्या हता अने एमांना ढाळ एमणे गाई बताव्या हता. 'विमलप्रबंध'ना खड सात-आठ अने चूलिकाए तो एमने मुग्ध कर्या हता. स्व. मोहनलाल द. देसाई, पं. बेचरदास दोशी अने प्रो. मधुसूदन मोदीना मार्गदर्शन नीचे संपादनकार्यमां पण दोरवणी मळ्ये जती हती ज

परंतु अचानक प्रो. रामनारायण पाठक दिवंगत थया, एटले मने मारा आ कार्यमां निराशा ऊपजी अने अभ्यासनु कार्य लगभग छोडी दीधु. एवामां मुनिश्री पुण्यविजयजीनी साथे एक दिवस चर्चा थतां, एमणे आ कार्य फरी शरू करवाना आग्रह कर्यो; मारी पासेनी वि. सं. १६४१ नी प्रत उपरथी में लीधेल मूल पाठ, तेमज डहेलाना उपाश्रय(अमदावाद)मांथी मेळवेली बे प्रतो उपरथी लीधेलां पाठांतरो पण एमणे चकासी लीधां, अने पछी मारी पासेनी

[1] विप्र (व्यास), प्रस्तावना, पृ. ९५

प्रतो तपासी जेई बीजी चार प्रतो मारा अभ्यास माटे मने आपी, जेमां एक प्रत वि. सं. १६२७ नी हती ज्यारे बीजी त्रण लिपि-वर्ष विनानी हती. आ त्रण प्रतोमानी ६१ पत्रनी प्रत भाषानी दृष्टिए वि. स १६२७ नी प्रत करता पण वधु जूनी अने शुद्ध हती; आथी एओश्रीनो अभिप्राय थयो के लिपिवर्ष विनानी जूनी प्रतनो पाठ मान्य राखी, मारी पासेनी वि. सं. १६४१ वाळी प्रत अने स्व. मणिलाल व्यासनी मुद्रित वाचनानां पाठांतरो नोंधी जो मारे माटेनी वाचना तैयार करु तो 'लावण्यसमय'ना मूल पाठनो वधु नजीक जवामां सरळता थशे. पंडित बेचरदास दोशी अने प्रो. मधुसूदन मोदीनो पण आ प्रकारनो अभिप्राय थयो; आथी व्हेलाना उपाश्रयनी बे प्रतो उपरथी नोंधेला पाठांतरो-जेना नोंधेला पाठांतरोनी आ प्रतो पासे कोई विशिष्टता नहोती ते—जता करी मारा अभ्यासने माटे नवेसरथी वाचना तयार करवानी शरुआत करी.

आ समय दरम्यान गुजरात युनिवर्सिटीए गुजरातना जाणीता भाषाशास्त्री अने प्राचीन गुजराती कृतिओना संशोधक अने संपादक श्री. केशवराम काशीराम शास्त्रीने गुजरातीना विषय माटे पी.एच डी.ना मार्गदर्शक तरीके मान्य कर्या. एमनी साथे आ संबंधी चर्चा तथा 'विमलप्रबंध' उपर 'महानिबंध' तैयार करवानी मारी भावनाने वधावी लई मार्गदर्शन आपवानु एमणे स्वीकार्युं अने मुनिश्री पुण्यविजयजीए 'महानिबंध'ना विषयोनी माहिती आपी हती तेने पुष्टि आपी मारा उत्साहमां अभिवृद्धि करी; आथी एमना मार्गदर्शन नीचे ई. स. १९५५मा "श्री भोळाभाई जेशींगभाई अध्ययन-संशोधन विद्याभवन-" गुजरात विद्यासभा द्वारा गुजरात युनिवर्सिटीमा विद्यार्थी तरीके नाम नोंधावी, फरीथी आ कार्यनी शरूआत करी

मुनिश्री पुण्यविजयजीए चीणी आपेली जूनामां जूनी प्रतना पाठने प्रधान राखी थोडा समयमां ज में पाठांतरो साथे मूळ वाचना तैयार करी एने छपावी पण नाखी; अने पछी 'विमलप्रबंध' उपरना मारा अभ्यासने आ विषयना विविध ग्रंथोना वाचनथी पुष्ट करी 'महानिबंध'ना प्रकरणोनी मांडणी करी आजे ए अनेक ग्रंथोनी वाचन नोंधो उपरथी 'विमलप्रबंध' उपर 'महानिबंध' रजू करवा शक्तिमान थयो छु

अहीं नोंध लेता आनंद थाय छे के आ कार्यनी पाछळ सद्गत प्रो. रामनारायण पाठक, स्व. मोहनलाल दलीचंद देसाई, पंडितश्री बेचरदास दोशी, प्रो. मधुसूदन मोदी, मुनिश्री जिनविजयजी, डॉ. हरिवल्लभ चु. मायाणी अने मारा मार्गदर्शक प्रो केशवराम का शास्त्रीनुं मार्गदर्शन जो मळ्यु न होत, ए दरेके

उत्साह रेड्या कर्यो न होत तो मारु कार्य सरळ ना बनत वळी मुनिश्री पुण्यविजयजी, भो. जे अध्ययन-सशोधन विद्याभवन, फार्बस गुजराती सभा, भारतीय विद्याभवन, लालभाई दलपतभाई भारतीय सस्कृति विद्यामदिर, श्री केशवराम शास्त्री वगेरेना किंमती ग्रथसग्रहोनी मने मदद ना मळी होत तो आ कार्य हजु पण विलबायु होत आ सौ विद्वानो तेमज ते ते सस्थाना सचालकोनो आ माटे आभार मानता हु एक प्रकारनी कृतकृत्यता अनुभवु छु

मारे जे ग्रथोनो उपयोग करवानो थयो छे ते सर्वेनी एक यादी 'महानिबध'ने अते परिशिष्ट २ तरीके रजू करी छे ते ते ग्रथना विद्वान लेखको-सामयिकोमाना लेखोना लेखको वगेरेनु ऋण पण मारे स्वीकारवु जोईए. अत्यार सुधी विविध विषयो उपर थयेला अभ्यासनो उपयोग आम आसान न बन्यो होत तो आ 'महानिबध' अद्यतन स्वरूपे तैयार करवानी मने आटली सरळता पण न थई होत

अते, आ महानिबध लखवानी परवानगी आपवा माटे गुजरात युनिवर्सिटीना सचालकोनो अने ज्यारे ज्यारे जरूरत जणाई त्यारे त्यारे श्री भो. जे विद्याभवनना अध्यक्ष प्रो. रसिकलाल छोटालाल परीखे सलाह अने सूचनो आप्या छे ते माटे एमनो अहीं नम्रभावे आभार व्यक्त करतां आनद अनुभवु छु.

२. लावण्यसमय

पश्चिम भारतनी मुख्य राजधानी एक समये वलभी हती, त्यांथी श्री अने सरस्वती बन्ने श्रीमाळ के भिन्नमाळमां जई वस्यां. भिन्नमाळनुं स्थान त्यारबाद गुजरातनी राजधानी तरीके अणहिलवाडे लीधुं[1] अने वि. सं. १४६८-ई. स १४११ थी श्री अने सरस्वती बन्ने गुजरातना पाटनगर अमदावादमां आवी वस्यां छे. अमदावाद एना स्थापनाकाळथी श्री अने सरस्वती बन्नेथी समृद्ध रह्युं छे; श्री अने सरस्वतीना अनेक उपासकोनुं एणे एना स्थापनाकाळथी सर्जन कर्युं छे, तो अनेकने एणे पोताने आंगणे स्थान आप्युं छे.[2] अमदावादना इतिहासमां संतो अने सुलतानोनुं जेवुं स्थान छे तेवु ज ऊंचुं स्थान अमदावादने आबाद राखनार शाह-वेपारीओनु पण छे.[3]

सोळमी सदीमां दादु पंथना स्थापक संत दादु दयाळनो जन्म अमदावादमां थयो हतो. अढारमी सदीमां पोतानी प्रतिभाथी गुजरातने रंगनार सहजानद स्वामीए लखनौ पासेना एक गाममां पोतानो जन्म होवा छतां, धार्मिक अने सुधारक प्रवृत्तिना स्थान तरीके अमदावादने पसंद कर्यु हतु. विश्ववंद्य मोहनलाल करमचंद गांधी-महात्मा गांधीजीनो जन्म सौराष्ट्रना एक खूणामां-पोरबंदरमां थया छतां, सत्य अने अहिंसाना प्रयोग माटे-ए प्रयोग द्वारा मात्र राजकीय स्वातंत्र्य ज नहि, परंतु सामाजिक अने आर्थिक स्वातंत्र्य प्राप्त करवा माटेना प्रयोगो एओए वर्षो सुधी अमदावादमां रही आदर्या हता. 'श्री'ना क्षेत्रे पण एणे एक परंपरा आपी छे, तो 'सरस्वती'ना क्षेत्रे पण दर शतके गुजराती साहित्यमां पोतानो युग स्थापी मान्य व्यक्तिओने स्थान आप्यु छे.

सरस्वतीना क्षेत्रे ध्यान खेंचनारा पहेला साधु सिद्धिसूरि जाणवामां आव्या छे. एमणे वि. सं. १६१६मां अमदावादमां रही 'सिंहासनबत्रीशी'नी गुजराती

1. Early History of India, Vincent Smith, pp. 332-353; Kāvyanuśāsana, Vol II, Introduction, p. lxxxII

२. गुप्ता पृ. ७५७-७८३

३. गुप्ता पृ. ७११

लौकिक वार्ता पद्यबद्ध करी आपी छे.[४] आना पछी शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद अने पुष्टिमार्ग नामे वैष्णव संप्रदायना स्थापक वल्लभाचार्यजीना पुत्र विठ्ठलनाथजी उर्फे गुसाईजीनु चरित आपतु एक सुंदर ऐतिहासिक काव्य 'वल्लभाख्यान' सर्जनार कवि गोपालदास कलोल पासे आवेल रुपाल गामना रहीश हता, पण आ काव्य वि सं. १६३६नी आसपास अमदावादमा दादा हरिनी वावथी सुप्रसिद्ध थयेला परा असारवामा रही रच्युं हतु.[५] गुजराते जे जे थोडा वेदान्ती कविओ उत्पन्न कर्या छे तेओमां अजोड अने श्रेष्ठ स्थान भोगवता अखानो जन्म अमदावाद पासे आवेला एक नाना गाम जेतलपुरमां थयो हतो. परंतु एणे पोताना सुवर्णकारना व्यवसाय माटे अमदावादनी देसाई पोळमा वसवाट करी स्थूळ सुवर्णकारमाथी साहित्यिक अने आध्यात्मिक सुवर्णकार तरीके विकास साध्यो हतो[६] एणे 'अखेगीता' अने बीजी सख्याबंध पद्यकृतिओ अने गुजराती तेमज हिंदीमां पण सेंकडो पदोनी रचना करी हती लगभग एनी ज कोटिए पहोंचवानी शक्ति धरावतो एनो समकालीन गोपाल पण अमदावादनो ज वतनी हतो एणे स १७०० आसपास 'गोपालगीता' तेमज बीजी सख्याबंध कृतिओ अने ज्ञानसभर सेंकडो पदोनी रचना करी हती[७] शक्तिना गान द्वारा पोतानो 'जय' बोलावनार वल्लभ भट्ट मेवाडो पण अमदावादनो हतो[८] अने अनेक मौलिक वार्ताओथी गुजराती साहित्यने समृद्ध करनारो शामळ भट्ट अमदावादना परा गोमतीपुर-जूना वेंगणपुरनो रहीश हतो वि स. १७८५ सुधीनी एनी रचनाओ आ स्थळे थई हती. छेल्ला शतकनी वात करीए तो कवि दलपतराम डाह्याभाई सर रमणभाई नीलकंठ, नरसिंहराव दिवेटिया, केशव ह. ध्रुव, नानालाल दलपतराम कवि, डॉ आनंदशंकर ध्रुव, अने महात्मा गांधी-ए सौ नजर समक्षथी विलीन थई रहेली पेढीना प्रतिनिधिओ हता आ साहित्यकारोना सर्जने अमदावादने गौरव अर्प्युं छे. आ ज रीते, सोळमी सदीना गुजराती साहित्यने समृद्ध करनार कवि लावण्यसमयनो जन्म पण अमदावादमां थयो हतो सत्तरमी सदीना कवि ऋषभदासे 'कुमारपालरास'मा आ कविनुं योग्य रीते स्मरण कर्युं छे :

४. के का. शास्त्री पासेनी हाथप्रत

५. GAL p 135, कविचरित, भा. १-२, पृ. ५५२

६. GAL p. 180-184, कविचरित, मा. १-२, पृ ५६३

७. कविचरित भा. १-२, पृ. ५४५

८. गुज. हाथप्रतोनी संकलित यादी, पृ १८८

‘ आगि जे मोटा कविराय, तारा चरणरज ऋपभाय,
लावण्य लींबो खीमो खरो, सकल कविनो कीरति करो. ’ [९]

‘ रळियामणा गुजरात प्रदेश ’ना प्रसिद्ध पाटण शहेरमां मंग नामे श्रीमाळी वणिक रहेतो हतो पाटणमां एनी प्रतिष्ठा हती, दानी तरीके एनी ख्याति हती. कोई कारणे ए कुटुंब पाटण छोडी अमदावाद आवी वस्युं. मंगने त्रण पुत्रो हता. सौथी मोटा पुत्रनु नाम श्रीधर हतुं. अनेक परांओथी शोभता अमदावाद शहेरना एक परा-अजदपुरमां आ कुटुंब रहेतु हतुं आ श्रीधर श्रेष्ठीने एमनी पत्नी झमकलदेवीथी चार पुत्रो—वस्तुपाल, जिनदास, मगळदास अने लघुराज अने एक पुत्री—लीलावती हतां आमानो सौथी नानो पुत्र लघुराज ते ज विमलप्रबधना कर्ता लावण्यसमय [१०]

लघुराज-लहुराज लावण्यसमयनो जन्म अमदावादमां अजदपुरामां वि सं १५२१- ई स. १४६५मा पौष वदि त्रीजना रोज थयो हतो. अमदावादमां ए समये आजनी जेम अनेक परां हतां त्रणसो उपरात परां होवानु इतिहास साक्षी पूरे छे [११] आ परांओमां फिरोजपुर अने अजदपुर ए बे परां अफघानोए वसावेलां हता [१२] आ समयमा, खास करीने अमदावादमा, जैनोनु प्रभुत्व खूब हतु [१३] एटले अफघानोए वसावेला अजदपुर परामा पण जैनोनी वस्ती हती.[१४] आ परामां आवेला जिनमंदिरनी पासेनी धर्मशाळामां चातुर्मास रहेला [१५] मुनि समयरत्नने श्रेष्ठीए लहुराजना जन्माक्षर देखाड्या. समयरत्ने आ जन्माक्षर जोई श्रीधरने कह्यु के ‘ आ बाळक लहुराज कां महान तपस्वी थशे, कां कोई तीर्थ करशे, कां महान यति थशे, कां महाविद्वान थशे. ’ [१६]

लहुराजे बालवयमां अभ्यास क्यांसुधी कर्यो हतो, केवी रीते कर्यो हतो, तेमज बाल्यकाळ क्यां पसार कर्यो हतो, एनी माहिती उपलब्ध नथी, परंतु बालवयमां एने दीक्षा आपवामां आवी हती. आ उपरथी एम कही शकाय के मा-बाप जैन धर्मनां चुस्त अनुयायी हशे, आचारविचार पाळवामां दृढाग्रही

---

९. ‘ कुमारपालरास ’ पृ. ५३

१०. विम्र-चूलिका (व्यास), पृ. ३७७-३७८; विम्र-टिप्पण, पृ. २२९-२३०

११. गुपा पृ. २७८ थी २२९

१२. गुपा पृ. २२६

१३. गुपा पृ. ४००

१४. गुपा पृ. २२९.

१५. विम्र (व्यास), प्रस्तावना, पृ. १२. अने विम्र (व्यास), पृ. ३७८

१६. विम्र (व्यास), पृ. ३७९; जैकृ भा १, पृ. ६८-६९

हशे, अने उपाश्रयमां आववाजवामां, पौषधप्रतिक्रमण वगेरे नियमनोना आचारमां जाग्रत हशे; आथी मावापनी साथे वाळ लहुराजने नियमित रीते उपाश्रयमां जवा आववानुं थतु हशे. मावापने चार पुत्रो हता तेमां सौथी नानो लहुराज, एटले लाडकवायो पण हशे एनो उछेर पण, ए सौथी नानो होई, जतनपूर्वक थयो हशे. आ कारणथी समयरत्न मुनिए पोतानां भक्त श्रीधर अने झमकलदेवी पासे, आ बाळक दीक्षा लेशे तो जैन धर्मने उज्ज्वळ करनार अने शासन-प्रभावक थशे एवी भविष्यवाणी कही मागणी करी हशे. विमलप्रबंधनी चूलिकाना अंतनी प्रशस्तिमां लावण्यसमये पोते ज पोताना विशे कह्युं छे के 'गुरु-वचने वइरागी थयु.'[१७] समयरत्ने बाळकनी तेजस्विता पारखी लई आ प्रकारनुं वचन नाख्युं हशे; अने 'मात तात पय लागी रहिउ'-मावापे लहुराजने दीक्षा अपाय एमा संमति आपी हशे, कारण के प्रशस्तिमां जणाव्या मुजब 'मावापने पगे लागी बाळ लहुराज दीक्षा लेवानी तैयारी करे छे.'[१८] आ ज प्रशस्तिमांना उल्लेख मुजब वि सं १५२९ ना जेठ सुदि दसमना दिवसे पाटणमां पालणपुरी उपाश्रयमा मोटा उत्सवपूर्वक तपगच्छ शाखाना अधिपति आचार्य लक्ष्मीसागरसूरिए बाळक लहुराजने दीक्षा आपी हती.[१९] समकालीन उल्लेखो परथी कही शकाय के दीक्षानो उत्सव, पंडित पन्यास सूरिनी पदवीओना अर्पण प्रसंगे जे उत्सवो थता तेनी जेम, खूब धामधूमपूर्वक थतो[२०] आम लहुराजने नव वर्षनी बालवये दीक्षा आपवामां आवी अने एनुं मुनि तरीकेनु नाम 'लावण्यसमय' राखवामां आव्यु.[२१]

लावण्यसमये प्रशस्तिमां पोते ज कह्या मुजब एनी 'साहित्यिक शक्तिओ खीली ऊठे' ए माटे मुनि समयरत्ने अनेक विषयोनुं अध्ययन कराव्यु हतुं :

"नवमइ वरसि दिपवर दीघ, समयरत्न गुरि विद्या दीध ॥
सरसति मात मया तव लही, वरस सोलमइ वाणी हुइ ।
रचिया रास सुदर-संबंध, छंद कवित चुपई प्रबध ॥
विविध गीत बहु मरिया विवाद, रचीआ दीपसूरिसंवाद।
सरस कथा हरीआली कवइ मोटा मन्त्रीराय रंजवइ ॥"[२२]

१७. विप्र (व्यास), पृ. ३८०
१८. विप्र (व्यास), पृ. ३८०
१९. विप्र—चूलिका ८७ तथा जैक, भा. १, पृ. ६९
२०. सुमतिसाधु-विवाहलो
२१. विप्र-चूलिका पृ. ८८
२२. विप्र-चूलिका, पृ ८८, ८९, ९०

आम सरस्वतीनी कृपा थवाथी सोळमा वर्षेथी लावण्यसमये कविताओ रचवी शरू करी हती; पछी तो छद, कविता, चोपाई, रास-प्रबध, अनेक प्रकारना गीत, सवाद, रसिक कथाओ वगेरे रच्या हता

कवित्वशक्ति विकसवानी साथे, लावण्यसमये उपदेशनु कार्य पण हाथ धर्युं हतु. कवित्वशक्ति, भाषा उपरनो काबू अने विद्वत्ता वगेरे कारणोने लईं, एमना उपदेशनी असर अनेक उपर थई होय एम जणाय छे

" मोटा मत्रीराय रंजवइ ।

जसिउ उपदेश हुइ सुविशाल, बहु थानकि देहरा पोसाल ।

मीर मलिक ते मानइ विनइ, पडित-पद ते पचावनइ ॥ "[२३]

लावण्यसमयना उपदेशथी राज्यना मत्रीओना मननु रंजन थयु छे, मीर (सरदारो) अने मलिको , राजाओ ए विनयपूर्वक मुनिने मान आप्युं छे, अने भक्त श्रावकोए एमना उपदेशनी असरथी स्थळे स्थळे देरासरो अने उपाश्रयो बधाव्या छे एमनी आ शक्तिओने कारणे लावण्यसमयने वि स १५५५मां 'पडित 'पद आपवामां आव्यु हतु [२४] गुजरातमा मुस्लिम राज्य स्थपाई चूक्युं हतु अने लावण्यसमयना समयमा गुजरातनी राजधानी अमदावादमा महमूद बेगडानु शासन हतुं, परतु कया कया मीर-मलिकोने एमना उपदेशनी असर थई एनो उल्लेख मळतो नथी. एटलु कही शकाय के अमदावादमा के गुजरातना बीजा प्रदेशमा-मुस्लिम अधिकारीओए पण लावण्यसमयनु मान जाळव्यु हशे.

लावण्यसमये रचेली कृतिओ उपरथी जणाय छे के यात्रानिमित्ते तेमज चातुर्मासने कारणे एओए सौराष्ट्र गुजरात तथा रजपूतानामा स्थळे स्थळे विहार कर्यो छ, अने आ विहारना समये अनेक श्रेष्ठी तेमज अधिकारीओने जैनधर्मना मुख्य सिद्धातोनो--आध्यात्मिक उपदेश आप्यो छे, साथे साथे चातुर्मास रह्या होय तेवा स्थळोए केटलीक पद्यात्मक कृतिओ पण रची छे; आम वि. स १५५८मा 'नवपल्लव-पार्श्वनाथ'[२५]नी यात्रा करी, वि स १५६२मा 'वामजनगरमा,'[२६] वि स १५६२मा 'सेरिसानगरमा,[२७] वि स १५६७ मा खभात (त्रबावती)मा,'[२८]

२३. विमल-चूलिका पृ १०, ११

२४ विमल-चूलिका, पृ ११

२५ ' नवपल्लवपार्श्वनाथस्तवन '

२६ 'नेमनाथ हमचडी '

२७. ' सेरीसा-पार्श्वनाथस्तवन '

२८. ' सुरप्रियकेवली रास '

वि स १५६८मां पाटण पासे 'मालसमुद्र'मां,[२८] वि. स १५७५मां 'शांतिजनगर' (सातीनगर)मां[३०] वि स १५७५नी पहेलां वछराज-रत्नपुर (संभवनाथनी पौषधशाळा)मां[३१] अने वि स १५८९मां अमदावादमां बुहाद्दीनपुरामां[३२] रच्याना उल्लेख मळे छे

मेवाडना महाराणा रत्नसिंहना मंत्री कर्माशाहे सौराष्ट्रमां आवेल शत्रुंजय तीर्थनो सातमो उद्धार लावण्यसमय पंडितना उपदेशथी कर्यो हतो एवो उल्लेख शत्रुंजय उपरना वि स १५७८ना शिलालेखमांथी मळे छे[३३] लावण्यसमयने वि स १५५५मां पंडित-पदवी अपाई हती, ए आपणे उपर जोई गया छीए

सौराष्ट्र अने गुजरातनां तीर्थोनी यात्रा पण करी छे नवपल्लव पार्श्वनाथ, सेरीसा, खंभात, अने शत्रुंजयना उल्लेखो मळे ज छे, पण ए सिवाय गिरनारनी यात्रा पण एमोए करी जणाय छे.[३४]

लावण्यसमयना देहान्तसमय विशे कंई माहिती उपलब्ध नथी, परंतु एटलुं जरूर कही शकाय के वि स १५८९ सुधी एओ हयात हता[३५] आ व[३६] अमदावादना शाहआलमना रोजा पासे आवेला 'बुहाद्दीनपुरामां स्थिर रही 'खेमऋषि (बोहा) रास-यशोभद्रसूरि रास'नी रचना करी छे आम वि. स

२९ विप्र-चूलिका, पृ ९५

३०. 'करसंवाद'

३१ देवराज वच्छराज चोपाई

३२ खिमऋषि (बोहा)-बलभद्र-यशोभद्र रास

३३ 'पूज्य पं समयरत्न-शिष्य पं लावण्यसमयखिमध्य श्रीआदिदेवस्य प्रणमतीति भद्र . ।

लावण्यसमयाख्येन पंडितेन महात्मना ।
सप्तमोद्धार-सच्चा च प्रशस्ति प्रकटीकृता ॥''

संवत १५८७ शत्रुंजयना सातमा उद्धारनी प्रशस्तिनो उल्लेख, प्राचीन जैन लेखसंग्रह, भा २

'बुद्धिप्रकाश' पु ७६, अंक १, सन १९२९

प्र. का. जैन इतिहासमाला तृतीय पुष्प (प्रकाशक आत्मानंद सभा, भावनगर) जुओ पृ ५०३-५०५

३४ विप्र (ब्यास), पृ ३८१

३५ विरास, भा. २, प्रस्तावना, पृ १६ 'तपास करवा छतां कविनो देहोत्सर्ग क्यारे अने क्या समये थयो ते काइ जाणवामां आव्युं नथी '-विजयधर्मसूरि

३६. खेमऋषि (बोहा) रास-यशोभद्रसूरि रास

१५२१ थी १५८९ सुधी एटले के अडसठ वर्षनी उमर निश्चित छे. उक्त रासना पठन पछी एम कही शकाय के स्वस्थताथी विस्तारपूर्वक रचायेला आ रासना रचनासमय पछी पण कवि वधु वर्ष हयात रह्या होय.

लावण्यसमयना शिष्यसमुदाय विशे पण कंई माहिती उपलब्ध नथी. एमनी जुदी जुदी कृतिओ तेमज तत्कालीन प्राप्त थती बीजी माहिती उपरथी एमना गुरु विशे तेमज एमना गुरुभाईओ विशे केटलीक माहिती मळी रहे छे.[३७] तपगच्छनी पाट उपर बावनमा आचार्य रत्नशेखरसूरि (वि. स. १४५७ थी १५१७) थया[३८] एमना शिष्य लक्ष्मीसागरसूरि (वि स. १४६४) एमनी पाटे आव्या. आ लक्ष्मीसागरसूरिए लावण्यसमयने दीक्षा आपी हती सुधानंदन रत्नमंडन शुभरत्न सोमजय जिनसोम जिनहंस सुमतिसुंदर सुमतिसाधु इंद्रनंदि राजप्रिय आदि दस मुनिओने पण लक्ष्मीसागरसूरिए आचार्यपद आप्यानो उल्लेख मळे छे[३९] एटले ए सर्वे लावण्यसमयना गुरुभाई समजाय छे. सोमविमल नामना साधुए वि. स. १६०२ना जेठ मासमा रचेल 'गच्छनायक-पट्टावली सज्झाय'मा अगियार मुनिओने लक्ष्मीसागरसूरिए आचार्यपद आप्यानो उल्लेख कर्यो छे,[४०] परतु अगियारमा नामनी कशी माहिती मळती नथी. आ अगियारमी व्यक्ति तरीके लावण्यसमयनु नाम गणवानी सभावना थाय, परतु लावण्यसमये पोते क्याय एवो उल्लेख कर्यो नथी; तेमज वि. स. १५६८मा रचायेल 'विमलप्रबध'मां पोताने मुनि लावण्यसमय' तरीके ज ओळखावेल छे, अने 'पडित' पदवी प्राप्त थयेली एनो मात्र उल्लेख करेलो छे.

लावण्यसमय लक्ष्मीसागरसूरि पासे दीक्षित थया हता, परतु एमणे पोतानी दरेक कृतिमा सुमतिसाधुसूरिने पोताना गुरु तरीके गणाव्या छ वि स. १५४३मा

---

३७ जुओ लावण्यसमयनी कृतिओ; विरास भा.-२, प्रस्तावना

३८ 'जैन गच्छोनी गुरुपट्टावलीओ' परिशिष्ट २ तथा तपगच्छनी पट्टावलि जैक, भा. २, पृ ७०१ थी ७२२

३९ विरास, भा. २, प्रस्तावना; जैक. भा २, 'तपगच्छनी पट्टावलि : नोंध लक्ष्मीसागर, पृ ७२१–७२२

४० ऐतिहासिक सज्झायमाळा, भा १, पृ. ४९
'पाटि लषमीसागर नागर सेवी पाय
सभनयर भली परि गच्छमेल करि गुरुराय;
अग्यार आचारिज पद कीधा सुविचार
पाटि थाप्या सुमतिसाधु–गुणधार ''

रच्यायेल 'सिद्धांत चोपई'ने अंते उल्लेख करता एओ कहे छे :

"अम्ह गुरु **श्रीसोमसुंदरसूरि**, जासु पसाई 'दुरिआं' दूरि,
तपगच्छनायक सुगणनिधान **लक्ष्मीसागरसूरि** प्रधान,
श्रीसोमजयसूरींद सुजाण, जसु महिमा जगि मेरुसमाण,
अहनिसि हरषि प्रणमु पाय, **सुमतिसाधुसूरि** तपगच्छराय
गुणमंडित पंडित जयवंत '**समयरत्न** गिरुआ गुणवंत,"

'गौतमपृच्छा चउपई'मां इंद्रनंदि अने राजप्रियसूरिनो उल्लेख मळे छे

"तपगच्छनायक आणंदपूरि वंदु **श्रीसोमसुंदरसूरि**,
तास अनइ सोहइ गुरु-चंद, सिसि **लक्ष्मीसागरसूरिंद**.
सिस सिरि **सोमदेवसूरि** सोम समान, **सोमजयसूरीस**-प्रधान,
तपगछनायक नयणाणंद, गुरु **सुमतिसाधु** सुरिंद
श्रीइंद्रनंदिसूरि गणधार, किरि अभिनय गोयम-अवतार,
तपगछि उपइ अविचल भाण, **श्रीराजप्रियसूरि** सुजाण,
समयरत्न जयवंत मुणींद, इम जपई जगि तेहनउ सीस."

वळी 'सुरप्रियकेवली रास'मां—

"तपगछि गुरू गोयम समा, **सोमसुंदर** सूरिराय,
समयरत्न सहिगुरू जयउ, पामी तेहना पाय"

आ रीते समयरत्नसूरिनो लगभग दरेक कृतिमां उल्लेख करी एमना चरणने वंदन करी लावण्यसमय पोतानी कृतिने पूरी करे छे, आथी लावण्यसमयना गुरु लक्ष्मीसागरसूरि के समयरत्नसूरि, एवी शंका थवा संभव छे परंतु लावण्यसमय लक्ष्मीसागरसूरिनो पोताना गुरु तरीके उल्लेख करे ज छे, एटले ए प्रश्न रहेतो नथी तो पछी शत्रुंजय-प्रशस्तिमा 'पूज्य पंडित समयरत्नशिष्य लावण्यसमय'नो जे उल्लेख मळे छे तेनो अर्थ कई रीते घटाववो?[४१] आनो अर्थ एटलो के, भक्त-समुदाय पण लावण्यसमयने समयरत्नना शिष्य तरीके ओळखे छे. आम थवाना बे कारण छे : लावण्यसमय —बाळ लहुराजने दीक्षित थवा माटे तैयार करनार समयरत्न हता; दीक्षा अपावी पण समयरत्ने; लावण्यसमयने दीक्षित थया पछी अनेक विषयोनु अध्ययन पण समयरत्ने कराव्यु छे. आम पहेला गुरु 'समयरत्न-सूरि' छे, ज्यारे दीक्षागुरु 'लक्ष्मीसागरसूरि' छे. लक्ष्मीसागरसूरिना वि. सं. १५३७मां स्वर्गवास[४२] पछी लावण्यसमयना प्रेरक समयरत्नसूरि ज रह्या

४१ जुओ नोंध ३३.
४२. जैक, भा. १, टिप्पण, पृ. ६२

छे. तपगच्छनी पट्टावली मुजब लक्ष्मीसागरसूरिनी पाटे सुमतिसाधुसूरि आव्या छे;[४३] आ सुमतिसाधुसूरि विशे लावण्यसमयने अत्यंत मान छे; अने 'सुमतिसाधुसूरि विवाहलो' ए कृतिमां सुमतिसाधुना दीक्षाना प्रसंगने रसिकताथी वर्णव्यो छे. आम गच्छनायक सुमतिसाधुसूरि थया छतां समयरत्नने कवि गुरु तरीके मान आपी रह्या छे.

मोहनलाल दलीचंद देसाई कहे छे के 'आ समयमां–सोळमी सदीमां लावण्यसमये जेटली सुंदर कृतिओ रची छे तेटली कृतिओ कोई जैन कविए रची नथी; तेथी *आ समयने 'लावण्यसमययुग' ए नाम आपीए तो अस्थाने नहि गणाय.*'[४४] जैन साहित्यनी अपेक्षाए आ विधानने स्वीकारी लईए; परंतु ए ज समयना जैनेतर कविओनी साथे सरखामणी करवा जईए तोपण लावण्यसमयनुं स्थान सोळमी सदीना कविओमां मोखरे आवी रहे छे लावण्यसमये जैन परंपराने साचवनारुं साहित्य सर्ज्युं होवा छतां, भाषा अने कविता उपरना प्रभुत्वने कारणे, तेमज लोकमानसने समजी तत्कालीन सत्यो रजू करवा माटे ए, सोळमी सदीमां मात्र जैनोमां ज नहि, पण जैन-संस्कृतिनी असरवाळा अन्य संप्रदायोमां पण लोकप्रिय थयेल छे, अने तेथी 'जैन साहित्यना इतिहास'मां सोळमी सदीने 'लावण्यसमययुग' कहेवामां अतिशयोक्ति नथी; गुजराती साहित्यनी दृष्टिए विचार करतां पण ए उक्त युगना एक गणनापात्र कवि छे ए स्पष्ट समजी शकाय एम छे[४५]

---

४३ तपगच्छनी पट्टावली: जैक, भा २, पृ ७२१–७२२

४४. जसाइ, पृ ५२५

४५. 'लावण्यसमयनी कृतिओ'

३. लावण्यसमयनी कृतिओ

"गुजराती साहित्यना मध्ययुग अने एनी पण पूर्वना युग माटे आजथी पचीस वर्ष पर जे जे अभिप्रायो बंधायेला ते, नवां नवां पुस्तको हाथ लागवाथी, काळक्रमे बदलाता गया छे. दाखला तरीके नरसिंहने "आदि कवि "नु स्थान आपवामां आवतु, अने साथे साथे एवो पण अभिप्राय आपवामां आवतो के नरसिंह महेताना समय पहेलां गुजराती साहित्य हतु ज नहि, एनो आरंभ नरसिंह महेताथी थयो. ए अभिप्राय भूलभरेलो मालूम पडयो छे घणां प्राचीन काव्यो जे अप्रसिद्ध पडी रहेला ते प्रसिद्धिमां आववाथी जूना अभिप्राय फेरवी नवा बांधवामां आव्या छे. अने हाल जे अभिप्राय बंधाया छे ते पण स्थायी नथी, कारण के जैन भंडारो अने जैनेतर व्यक्तिओना कबजामां एटला बधा अप्रसिद्ध लेखो पडी रहेला छे के जेम जेम प्रसिद्ध थता जशे तेम तेम हाल बाधेला अभिप्राय पण फेरववा पडशे. आपणा जूना साहित्य सबंधे हालनो जमानो अनिश्चितपणानो transitional period छे "[१]

वर्षो पहेलां रजू करेली उपर मुजबनी स्व. कृष्णलाल मो झवेरीनी फरियाद जेवी ज फरियाद श्री. कनैयालाल मुनशीए जैन साहित्यकारोनी जे रीते उपेक्षा सेवाई रही छे ते अंगे करी छे.[२] आ उपेक्षा सेवावानां केटलांक कारणो पण छे मोटा भागना जैन कविओनी कृतिओनी भाषा प्राकृतमय छे, एटलुं ज नहि, परंतु ते ते कृतिनी जैन सिद्धांतोनु प्रतिपादन करवानी तालावेली अने उपदेशनी प्रचुरता तेमज सांप्रदायिक कट्टरताने कारणे पण वाचको तेमज विद्वानो द्वारा आ उपेक्षा सेवाई रही होय एम कहेवामा अतिशयोक्ति नथी. आवी ज उपेक्षा विद्वानो द्वारा लावण्यसमय माटे थई होय एम जणाय छे. श्री. मुनशीना मतव्य मुजब, साहित्यक्षेत्रे गणनापात्र सिद्धिओ प्राप्त करनार लावण्यसमय सोळमी सदीमां सौथी वधु गणनापात्र कवि छे.[३]

---

१. आनंदकाव्यमहोदधि, मौक्तिक, ७, उपोद्घात
२. GAL p. 163–164
३. GAL p. 164

लावण्यसमयनी आज सुधीमा नानी मोटी थईने त्रीसेक उपरांत कृतिओ उपलब्ध छे आ कृतिओमा केटलीक जैन गृहस्थोना जीवनप्रसगने लगती छे, केटलीक कृतिओ जैन संतो–साधु पुरुषो विशे छे, तो छएक कृतिओमा स्तवनो अने सज्झायो–रूपे जैन तीर्थंकरोनु गुणदर्शन छे, आ सर्व कृतिओमां 'विमल-प्रबंध' अथवा 'विमलरास' कृति सारी रीते मोटी अने सुंदर कृति छे, ज्यारे स्तवनो अने सज्झायोमा केटलीक तो मात्र आठ–दस तूकथी लई पचीस के त्रीस त्रीस तूक सुधीनी नानी कृतिओ छे आमानी मोटा भागनी कृतिओ सामयिको अने पुस्तकाकारे सग्रहोमा प्रकट थयेल छे, अने एमानी मोटा भागनी कृतिओमा ते तेनो रचनासमय पण मळी रहे छे अहीं नीचे आपेली कृतिओ सालवारी प्रमाणे गोठववा यत्न करेलो छे·

१ सिद्धांतचतुष्पदी (लुंकटवदन–चपेटा)

जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक सप्रदायना प्रचलित रीतरिवाजो सामे सोळमी सदीमा लोंकाशा (वि स १५०८) नामना एक साधुए बड करी नवा मतनु प्रतिपादन कर्यु 'जिनपूजा–जिनप्रतिमानो निषेध कर्यो साथे जैनोनी आवश्यक क्रियाओ करवामा तथा दान देवामा मान्यता न राखी दया ए धर्म छे अने हिंसामा अधम छे एवो पोकार कर्यो, जे जे क्रिया करवामा कोई पण अशे हिंसा थाय ते अस्वीकार्य छे अने उपरनी बाबतो करवामा हिंसा थाय छे ए जातनी प्ररूपणा करी, अगाव्यु के मुल सूत्र मानवा, पण तेमा प्रतिमापूजा कही नथी एवा समयमा पीरोजखान नामनो पादशाहनो मानीतो दहेरा ने पोशाळो तोडी जिनमतने पीडतो अने ते सयोग मेळवी लौंकाशाहे पोताना मतनी प्ररूपणा करी अनेक लोक तेना विचारमा भळ्या '[४] लोंकाशाना आ नवा मतनु–सिद्धातोनु आ चोपाईमा खडन छे, तेमज मूर्तिपूजानु 'घणी ज सरस रीते प्रतिपादन छे'[५] 'प्रतिवादरूपे रचायेली आ कृति होवा छता रुगार पण क्रोध के निंदानो अभि-प्राय राख्यो नथी '[६]

'जीव सवे मझ बधव समा, पडइ वरासइ धरज्यो क्षमा । ७४ ।'

आ कृतिनी रचना वि स १५४३ ना कार्तिक सुदि ८ ने रविवारे थई छे एमा १८१ कडी छे·

'ए चउपई रची अभिराम, लुंकट वदन–चपेटा नाम । १७९ ।

---

४ जैसाइ. पृ ५०६–५०८

५ विरासं, भा २, पृ ८

६. विरासं, भा २, पृ ९

संवच्छर दह पच विशाल, त्रिताला वरषे चउसाल,
काती शुदि आठमि शुभ (रवि) वार, रची चउपई बहुत विचार । १८० ।

।१८१। इति श्रीसिद्धांत-चतुष्पदी । लुंकटवदनचपेटाविधाना । लिखिता परोपकाराय ॥ "७

लोंकाशाए नवा मतनु प्रतिपादन कर्यु त्यारे सोळमी सदीमां एनी सामे जब्बर वंटोळ ऊभो थयो हशे एम जणाय छे, कारण के ए ज समये वि. स १५४४ आसपास खरतरगच्छीय जिनहर्षसूरिना शिष्य कमलसंयम उपाध्याये पण 'सिद्धांतसारोद्धार-सम्यक्त्वोल्लास-टिप्पनक'मां लोंकाशाना मतनो प्रतिवाद कर्यो छे ८

आ 'चतुष्पदी'नी 'स्वपरोपकाराय' प्रचारार्थे हस्तलिखित अनेक नकलो पण थई छे

आ कृति मात्र सांप्रदायिक होवा छतां, एनु प्रतिपादन कोईने पण असर करे ते रीते थयु छे. नीचेनी थोडी लीटीओ उपरथी एनो ख्याल आवशे :

'मदि झिरतु मयगल किहां, किहां आरडतु ऊट,
पुन्यवंत मानव किहा, किहा अधमाधम खूट. १५२
राजहंस वायस किहा, भूपति किहां दास,
सप्तभूमि मदिर किहां, किहा उडवसे वास. १५३
मधुरा मोदक किहां लवण, किहां सोनु किहां लोह,
किहां सुरतरू किहां थयरडु, किहा उपशम किहा कोह १५४
किहां टंकाउलि हार वर, किहां कणयरनी माल,
शीतल विमल कमल किहा, किहा दावानल-झाल १५५
भोगी भिखारर किहा, किहां लहियू किहां हाणि,
जिनमत लुका-मन प्रति‍इ एवडु अंतर आणि १५६'

२. गौतमपृच्छा चउपई

भगवान महावीरना प्रथम शिष्य गौतम गणधरना मनमां जैन सिद्धांतो अंगे केटलाक संशय थयेला आ संशयोना निवारणार्थे एमणे केटलाक प्रश्नो महावीरने पूछेला. आ प्रश्नो तेमज एना उत्तरनी गूंथणी आ 'चउपई'मां छे प्राकृत प्राचीन 'गौतमपृच्छा' प्रकरणने आधारे आ रचना थई छे.

७. जैनयुग, पुस्तक ५ अंक ९-१०, सं १९८६ जैष्ठ, भा २, पृ ६९
८. जैनयुग, पुस्तक ५, अंक ९-१०, सं १९८६, जैष्ठ, पृ ५०७-५०८

'श्रीमुखि **गौतमपृछा** करइ, वीर सरिखा समइ हरइ. १०९'

रचनाकाळ वि. स. १५४५ चैत्र सुद ११ ने गुरुवार छे. काव्यमां एनो उल्लेख चमत्कृति द्वारा थयो छे :

'पहिलु तिथिनी सख्या आणी, सवत जाणि इणि अहिनाणी,
बाणवेद जउ वाचउ वाम, जाणुं वर्ष तणु ए नाम. १११
वासुपूज्य जिणवर वारसु, चैत्र थिको मास जिने नमु
अजूआली इग्यारिसि सार, तहीइ सुरगुरु गिरुउ वार ११२'

आ कृतिनी ११९ कडी छे; १२१ कडीओ मळ्यानो पण उल्लेख छे.[९]

३ स्थूलिभद्र एकवीसो

भगवान महावीरना निर्वाण पछी कठस्थ रहेला धर्मसाहित्यनो लुप्त थवानो भय ऊभो थता जैन सघे पाटलिपुत्रमा साधुसमुदाय पासे ए साहित्य एकत्र कराव्यु; एमा बे समर्थ आचार्यो अग्रणी हता–भद्रबाहु अने एमना शिष्य, नद महाराजना मत्री शकटालना पुत्र स्थूलिभद्र. स्थूलिभद्रनी आ 'एकवीसा'मां एकवीस कडीओ द्वारा स्तुति छे एनो रचना वि. स १५५३ना दिवाळीना दिवसोमा थई छे आ एक टूकु रसिक काव्य छे :[१०]

'सवत पनर त्रिपनइ सवत्सरे दिवस दीवाळी तणउ,
थूलिभद्र गायु मय सुणायु, **एकवीसु** ए मणउ.[११] २१

४ नेमिनाथ रंगरत्नाकर छंद

आ कृतिमा जैनोना बावीसमा तीर्थकर नेमिनाथना लग्ननो प्रसग छे. आ कृतिनु सौन्दर्य एना विविध छदोने ल्ईने विशेष छे :

'हु मन आणदिइ, नेमि जिण वदिइ, नव नव छदिइ छद कहु'

आ 'छद'नो रचनासमय वि स १५४६ ना माघ सुदि १० ने रविवार छे

'स्मृत्वा श्रीशारदा नेमेश्छदोभिर्विविधैर्वरैः ।
प्रनथ्नामुरं कुर्वे रगरत्नाकराभिध ॥'

आ 'छद'नो पहेलो श्लोक सस्कृतमा छे. छदने बे खडमा वहेंची नाखवामा आव्यो छे. एने कवि 'अधिकार' कहे छे. पहेला खडमा ७० कडी अने

९ जैक, भा. २, पृ. ७२–७३; विरास, भा २
१०. जसाइ, पृ ५२५
११. जैक, भा २, पृ. ७१–७२; विरास, भा. २

बीजा खंडमा ११७ कडी छे.[१२] बीजा खंडने अंते रचनासमयनो निर्देश मळे छे :

'तिथिमान आणि तिथि प्रमाणी संवत जाणी सुहेकरो,
रसवेद वामिइ वरस नामइ, महा मासि मनोहरू. ११४
शुभ योग योगे दसमि भोगिइ वार वारू दिणयरो,
नव छंद छंदिहिं किय प्रबंधि, तवित नेम जिनेश्वरो. ११५'

'कवि लावण्यसमये आ काव्यने प्रासादिक अने अलंकारप्रचुर बनाववा माटे काव्यचातुर्य योज्यु छे राजिमती नेमिश्वरनी वरयात्रानी राह जुए छे, घर-आगणेथी रथसती नथी नेमिश्वर अधवचथी पाछा वळयाना समाचार मळे छे छतांए मानवा ए तैयार नथी '[१३] आ वखतनु कविए करेलु वर्णन प्रमादयुक्त छे :

'न गमइ अंगइ रत्नफल फाली, राजवि नेमि-विरह विकराली
अलगी रखइ सोवन-त्रोटी जिम जव-रोटी कागिइ त्रोटी　७७
जिम जव-रोटी कागिइ बोटी घणचर बोटी थइय खोटी,
लागी धन कोटि, मानि मोटी काजि न आवइ ते ते त्रोटी　७८
गिउ गोफण त्रूटी, वेणी छूटी, कटकइ नेउर ग्या ए फुटी,
आभरण अखूटी, भाज्यां कूटी, दयामणी दीसइ ए लूटी　७९"

'अत्यत आशाभरी राजिमती ज्यारे आशाभग थई त्यारे तेना मनना दु:खनो पार न रह्यो लग्न थवाना स्वप्नां एकाएक तूटी जता एणे जोयां एटले ए शून्यमनस्क थई गई जीवनना पदार्थोमांथी एनो रस ऊडी गयो राजिमतीने विवाहोत्सुक छ एम मानी खानपान श्रृंगार आभूषण, कुसुमनी शय्या वगेरे भोगसामग्रीनु स्मरण करावी एनी सखी, तेनो संमति वाछे छे, त्यारे भागी गयेला मनवाळी राजिमती अह अह' कहे छ ते खूब उचित लागे छे '[१४]

'सहीय भणिइ: 'सुणि देवि, अम कहि करू कि?' 'अह अह
'ऊगटि अंगि करेवि पक परिहरू कि?' 'अह अह'
'नवउ ति नवसर हार, गलि धरु कि?' अह अह'
'कुसुम-सेज सुकुमाल सोइ परयरु कि?' 'अह अह'
विरह महीं कइई राइमई 'रे रहि. सखि! सिउ झखइ?
अणखि करइ तुझ वयणलां ते वाहला नेमीश्वर-पखइ'

१२　अंक, भा २ पृ ८५-८६; गुजरात विद्यासभा ह लि पुस्तक न ५५२
१३　गुजराती साहित्यना स्वरूपो-पद्यविभाग पृ ११५
१४.　गुजराती साहित्यना स्वरूपो-पद्यविभाग, पृ ११६
१५　गुजराती साहित्यना स्वरूपो-पद्यविभाग पृ ११७

५ नवपल्लव पार्श्वनाथ स्तव

आ कृति जैनोना त्रेवीसमा तीर्थंकर पार्श्वनाथनु स्तवन-स्तुति छे कर्ताए सं. १५५८मा नवपल्लव पार्श्वनाथनी यात्रा करी ते प्रसगे रचायेलु आ स्तवन छे. रचनाकाळ वि सं १५५८ चैत्र वद ४ (?) जणाय छे:[१६]

'सवत पनर अठ्ठावनि, चैत्र वदि चुसाल,
मुनि लावण्यसमि नवपल्लव, कीधी जात्र रसाल ए '–३५ '

केटलेक स्थळे 'नवैल्लव पार्श्वनाथ स्तव' तरीके पण आ कृतिनो उल्लेख मळे छे.[१७]

६ आलोयण-वीनती

जैनोना प्रथम तीर्थकर आदीश्वर समक्ष करेला पपोनी आलोचना दर्शाववा माटे आ कृति छे एनो रचनाकाळ वि स १५६२ मा वामजनगरमां छे:[१८]

'सवत पनर वासिठइ, आदिश्वरने अलवेसर साप तु,
वामिजमाहि वीनव्यो सीमंधर रे देवदर्शन दावि तु ' ५४

स्तवनमा ५७ कडी छे. आ स्तवनने 'सीमधरसज्झाय' पण कहे छे.[१९]

७ नेमनाथ हमचडी

जैनोना बावीसमा तीर्थंकर नेमिनाथ पोताना लग्नप्रसगे भोजन माटे एकत्र करायेला अनेक पशुओनो करुण साद साभळी माडवेथी पाछा फरी गिरनार पर जई तप द्वारा मुक्ति प्राप्त करे छे कन्या राजिमती पण नेमिनाथनी पाछळ जई आत्मसाधना द्वारा ज्ञान प्राप्त करे छे; आ प्रसगनु अनेक जैन कविओए मान्जत-पूर्वक गान कर्यु छे. ८३ कडीनो आ कृतिनो विषय पण आ ज छे. केटलीक हाथप्रतोमा ८५ कडी पण छे एनो रचनासमय वि. स १५६२ (केटलीक प्रतोमा १५६४) छे:[२०]

'सवत पनर वासठे (पाठान्तर 'चुसठे') रे गायु नेमिकुमारो,
मुनि लावण्यसमय इम बोलइ वरतिउ जयजयकारो रे ८३ '

१६. जैक, भा ३, खंड १, पृ ५०७
१७ विरास, भा २
१८. जैक, भाग ३, खड १, पृ ७३ अने पृ. ५०७
१९. विरासं, भा १, पृ ९
२०. जैक, भा १, पृ ७४; भाग ३, खंड १, पृ. ५०७–८; विरासं, भा. १

८. सेरीसा पार्श्वनाथ-स्तव

सेरीसा पार्श्वनाथ जैनोनु एक तीर्थ मनाय छे. कविए वि. स. १५६२मां सेरीसानी यात्रा करी जणाय छे ए प्रसगे रचायेली पदर कडीनी आ कृति छे. आ कृतिमां जैनोना त्रेवीसमा तीर्थंकर पार्श्वनाथनी प्रार्थना छे:[२१]

'सवत पनर बासठि प्रसाद **सेरीसा** तणो
लावण्यसमें इम आदि बोले नमो नमो त्रिभुवनधणी १५'

९. रावण-मंदोदरी संवाद

सीतानु हरण करीने रावण एने लका लई गयो त्यारे मदोदरी अने रावण वच्चे जे संवाद थयो तेनी कल्पना आ रचनामा छे. सवाद ६३ कडीमां छे अने एनी रचना वि. स १५६२ मा थई छे:[२२]

'संवत पनर बासठि रच्यो रास सवाद रे. ५९'

आ सवादनी शरूआत कवि मदोदरी पासे जाणे सूतेला सिंहने ज जगाड्यो होय ए रीते वेगथी करावे छे:

'सूतेलो सींह जगावीउ, नहीओ वासग नाग रे
सीत हरी तिं स्यु कर्युं, रूठा रामना पाग रे'

१०. वैराग्य वीनती

आ वीनती, 'आदिनाथ वीनती'ने नामे पण मळे छे. जैनोना प्रथम तीर्थंकर 'आदीश्वर'नी आ प्रार्थना छे. ४७ कडीनी कृतिनी रचना तपगच्छना आचार्य हेमविमलसूरिना आग्रहथी वि. सं. १५६२ना आसो सुद १०ना रोज थई छे:[२३]

'पंनर बासठइ आदि जिन थुठइ करी वीनती ऊलटी घणइ ए.
आसो ममवाडइ दसमी दिहाडइ मुनि लावंन्यसमइ भणइ ए. ४७'

११ सुरप्रिय केवली-रास

जैनोना चोवीसमा तीर्थंकर महावीरना शिष्य श्रेणिकना समयमा थयेला सुरप्रिय जैन सतनु चरित्र आ काव्यमां छे. एनो रचनासमय वि स १५६७ ना आसो सुद ६ रविवार (पाठातर शनिवारे) छे काव्यनी रचना खभातमा थयेली छे:[२४]

२१ जैक भा. १, पृ. ७४-७५; विरासं, भाग १
२२. जैक, भा १, पृ ७५ अने ८३
२३. जैक, भा. १, पृ. ७५; भाग ३, खड-१ पृ. ५०८
२४. जैक, भा १, पृ. ७५-७६; भाग ३, खंड १, पृ. ५०८-५०९; विरासं, भाग १

'सवत पनर सत(ड)सठइ, आसो सुदि रविवार,
(पाठ—सोमवार),
रचिउ चरित्र सोहामणु, अवावती मझारि. १९८'
एक हस्तप्रतमा एक कडी वधारे मळे छे :
'श्रमण पास-पसाउलइ, रास रचि मनिरगि,
दूहावधि वधीउ, उलट आणी अगि.'

आ रासमा २०१ कडीओ छे उपरनी 'श्रमण पास' वाळी कडी पाछळथी उमेरायेली जणाय छे.

१२ करसंवाद

जैनोना प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव वरसीतपना पारणे श्रेयासकुमारने त्या पधारे छे. श्रेयासकुमार पोते ऋषभदेवने वहोरावे छे. आ प्रसगने नजर समक्ष राखी कविए श्रेयासकुमारना जमणा–डावा–बे हाथनो विवाद आ कृतिमा आप्यो छे जमणो अने डाबो हाथ पोतपोतानो महत्ता बतावता दलीलो करे छे, छता बन्ने हाथ केटला उपयोगी छे ए दर्शावतु ६९ कडीनु आ काव्य वि स १५७५ मा शातिजनगर (सातीनगर)मा रचायु छे

'सवत पनर पनर पचिहुतरइ मुनि लावण्यसमइ उचरइ ६९'

लीबडीना भडारमाथी मळी आवेली एक हस्तप्रतमा रच्याचाल स १५७० मळे छे,[२५] 'सिंवत पनर चमोतरे' एवो पाठ पण मळे छे [२६]

१३ अंतरीक पार्श्वजिन छद

अतरिक्ष पार्श्वनाथनो, ५४ कडीना आ काव्यमा स्तुति छे. रच्यासमय वि स १५८५ वैशाख सुद ३ छे, पाठातरमा 'छयासीउ'—वि स १५८६नो पण उल्लेख छे [२७]

'सवत पनर पच्यासीया (पाठ छयासीउ) वषाण,
सुदि वैशाष तणो दिन जाण,
उलट आयात्रीजें थयो, गायो मास जिणेसर जयो ५३'

१४. देवराज-वच्छराज चउपई

आ कृतिनो 'देवराज रास' अने 'देवराज वच्छराज रास' तरीके पण उल्लेख मळे छे छ खडोमा आ रास वहेंचायेलो छे एमा देवराज अने वच्छराज

२५ जैक, भा १, पृ ७५, भाग ३, खड १, पृ ५१०, विरास भा २
२६. विरास भा २, पृ ११
२७ जैक, भा. १, पृ ८०, भा ३ खड १, पृ ५१०

कुवर हिव सिणगारिइ ए, मस्तकि भरीइ रूप तु,
बाहे सोवन-बहिरखा ए, दीसइ रूअडलउ रूप तु
कवि नवरग पछेवडउ ए, ओढणि आछउ चीर तु,
चार तुरगम आणिउ ए, चडिउ यावन वीर तु
कामिणि मुखि मगल भणइ ए, भट्ट भणइ बहु छद तु,
लूण उतारइ बहिनडी ए, कुअर अति आणद तु.
वर पोसालइ आविउ ए, दुरिअ गया सवि दूरि तु
श्रीरत्नशेखरसूरि वदिआ ए, मनह मनोरथ पूरि तु.'

आ 'विवाहला'मा मात्र थोडी ज लीटीओमा गुर्जर नारीनु सुरेख चित्र ऊभु करी दीधुं छे —

'झालि झबूकइ गालि रे, जाणे ससि नइ सूर रे,
राग वसिइ सेवाकालि अति घण तेजनउ पूर रे १७
मस्तकि सोहइ राखडी रे, आखडी अति अणिआली ए,
ओढणी आछी चूनडी, पहिरणि नवरग फालि रे, १८
साव सुलक्षण सारिअ, सारिअ काजल-रेख रे,
रूपिइ रभा अवतारिअ, दीसइ रूयडलउ वेस रे. १९'

छेल्ली कडी आतरप्रासनी चमत्कृतिथी उठाव आपे छे·

'नव नविअ वाणिहिं, मति विनाणिहिं हियइ हरिख घणउ धरी,
मइ एक चित्तिहि, करीअ भत्तिहि, अगि आलस परिहरी,
जा सात सायर, वर दिनायर, गयणि रोहिणी चदलु,
ता ए अनुपम, सुगुरु-सरिसउ, जयउ जगि विवाहलु '

आ 'विवाहला'मा साद्यु सीधुं वर्णन होवा छता यथारेक यथारेक शब्द-लालित्यभर्या वर्णनो छदो उपरनु प्रभुत्व, यमको वगेरे, विशाळ रणमा लीला टापु नयनने ठारी जाय तेम, चित्तने प्रसन्न करी जाय छे

लावण्यसमय पोतानी कृतिओमा पोताना गुरु तरीके जेनो वारंवार उल्लेख करे छ ते आ ज सुमतिसाधु आ सुमतिसाधुए लावण्यसमय-बाळक लहुराजनु हीर पारखी उरे एने नानी उमरे दीक्षा अपावी पोतानी पासे राखी 'सरस्वती'नी उपासना करावी हती

आ कृतिनो रचना-सालनो उल्लेख उपलब्ध नथी ३५

३५. जैक भा १, पृ ८५; भाग ३, खड १, पृ ५११, विराप्र भा २, पृ २१-२९ अने ४०-४६

१७. चतुर्विंशति जिनस्तवन

जैनोना चोवीस तीर्थंकरोनी अठ्यासी कडीनी आ कृतिमा स्तुति छे.[३६] आ कृति वि सं १५८७ पहेला रचाई होवानो सभव छे, कारण के आ कृतिनी शरूआतमां 'आदिनाथ भास सं. १५८७' एवो उल्लेख छे.[३७] आखी कृतिमा अक्षरमेळ मालिनी वृत्तनो उपयोग कर्यो छे :

'मालिनी छदइ कय पयचधिइ तविया जिन ऊलट घणइ,
मइ लहिउ लाभ अनत मुनि लावण्यसमय सदा भणइ'

आ कृतिमा जैनोना चोवीस तीर्थंकरोमांथी अढारमा तीर्थंकर अरनाथनु व्यक्तित्व चार लीटीमां कविओ सहज भावे उपसाव्यु छे :

'कनकतिलक भाले, हार हीइ निहाले,
ऋषभ-पय पखाले, पापना पक टाले;
अर जिनवर चाले, फूटरे फूल माले,
नरभव अजुआले, राग निइ रोस टाले.

१८. खिमऋषि (बोहा) बलिभद्र-यशोभद्र रास

खिमऋषि बलिभद्र अने यशोभद्र ए जैन मुनिओनु आ चरित छे. खिमऋषि अने बलिभद्र ए बने मुनिओ यशोभद्रना शिष्य थाय छे, एटले गुरु-शिष्यना सबधने कारणे कविए त्रणे विशे एक ज रास रच्यो छे. आम तो आ रास त्रण खडमा वहेंचायेलो छे, परंतु गुरु-शिष्यना सबधने कारणे सळंगसूत्रता जळवाई रहे छे. आ चरितमा खिमऋषिना कठिन अभिग्रहो अने बलिभद्र तथा यशोभद्रसूरिना चमत्कारोनु कदाळाजनक लघाणपूर्वक कथन छे. आ कृति वि स. १५८९ना माघ महिनामा रविवारे अमदावादमा 'बुहारीनपरा'मा पूर्ण थई छे; अनुक्रमे त्रणे खडमा २१३, १२६ अने १७३ कडी छे, सळग रास ५१२ कडीनो छे.[३८]

'सवत पनर नव्यासीइ, माघ मासि रविवारि,
अहिमदावाद विशेषीइ, पुरु बुहारीन मझारि. खड ३. १६७'

आ कृति मात्र वर्णनात्मक होवा छता केटलोक वार अलकारनी छाप पडेली मळे छे :

---

३६. जैक, भा. १, पृ ५१३; जैनयुग, पु १, पृ. १७८–१७९; प्राचीन तीर्थमालासंग्रह, भाग १, पृ. १६६–१६८

३७ जैक, भा. ३, खड १, पृ. ५१३

३८. जैक, भा १, पृ. ८०–८२; भाग ३, खड १, पृ. ५११; विरासं, भा. २, पृ. १२

नामना बे राजकुमारोना विषयनी जाणीती लोककथा निरूपाई छे रासनो रचना-समय उपलब्ध थतो नथी, परंतु वि स १५७५ पहेलां ए लखायो होवानो संभव छे. एनी रचना वच्छराज-कनपुरमा आवेल 'संभवनाथ पौषधशाळा-उपाश्रय'मा थयेल छे :[२८]

'पहेलो अक्षर लभनो ए मा० बीजो भरनो जाणी
त्रीजो पुण्यवंत बीजलु ए, मा० आगलि समय ठवेइ'

१५ सूर्य-दीप-वाद छंद

सूर्य अने दीप ए बे वच्चेनो, पोतपोतानी महत्ता दर्शावतो विवाद त्रीस कडीनी आ सुंदर कृतिमा वर्णवायो छे. आखी कृति 'छप्पय' छंदमा छे, पण काल्पनिक मनोहर संवाद अने 'छप्पय' छंदने कारणे आ कृति मनोहर बनी गई छे. कृतिमा रच्या-सालनो उल्लेख नथी, परंतु आ कृति पण एनुं रचना-कौशल जोता सं. १५८९ पहेला रचाई होय एम जणाय छे :

'प्रहि ऊगमि अवतार, दीप दिनकरण भणिज्जइ
जेह-सिउ जेह्ला काम तांम लोके बहु किज्जइ
दीपक देइ साखि, देव देहरासरि नमीइ,
भोजन कूरक्पूर, भाण अजूआल्इ जिमीइ
लावण्यसमय कहइ भाव सुणि, जउ रहिइ तु राखु क्मिइ;
तप तपइ तेज दीपक तणु जो जाइ सूर संध्या-समइ. ११'

कवि 'दीपक' उपरथी एनो लाक्षणिक अर्थ घटावता कहे छे :

'रमणी-दीपक चंद्र दिवस-दीपक जो दिणयर,
कामणी-दीपक कंत, देश-दीपक राजेश्वर,
त्रिभुवन-दीपक दान, ज्ञानदीपक गुरू भणीइ,
वंशदीपक सुपुत्त, विनयदीपक सुणीइ,
दीपक दिनकर देखि करि, अणप्रीछइ कां तडफडु?
लावण्यसमय कहइ सूरथी जो, दीपकगुण दीपइ वडु -२३'

बे पक्ष वादविवाद करे त्यारे सामान्यत बीजाना गुण लक्षमा लेवामां आवता नथी; तेथी आवो विवाद सदोष बनी जाय छे. आथी कवि कहे छे के आ विवाद मात्र आनंदने खातर छे; एमां कोई दोष होय तो ए पोतानो छे :[२९]

२८ जैक, भा १, पृ ८३-८४, भाग ३, खंड १, पृ. ५११; विरासं, भा. २, पृ १२; आनंदकाव्यमहोदधि, मौक्तिक ३, पृ. २११ थी २५४

२९ विरसं, भा २, पृ. १२

'सूर चडिउ तुझ हाथि, करमिइ केलवी न आणिउ,
दीप चडिउ अम्ह हाथि, सोइ गुणि अधिक वखाणिउ.
दीप-सूर नहि दोस, दोस कविजन-मति केरउ,
बुद्धि-विहूणउ वाद नाद मनि धरउ न विरुउ
जास पक्ष जे आदरइ, तसु गुण जउ लख परि लहइ,
लावण्यसमय मुनिवर भणइ, कवि हारि न को हसता कहइ.-२६'

आ ज रीतना छंद उपरनु कविनु प्रमुख 'विमलप्रबंध'मा पण जोवा मळे छे.[30] विक्रमनी सोळमी सदीमा आ प्रकारना संवादोनी रचना ठीक ठीक थई छे. 'उपाहरण'नु पुराणप्रसिद्ध वस्तु लईने रचायेल 'उपाहरण' काव्यमा वीरसिंहे 'पार्वती अने दीपकनो वाद'मा[31] पार्वती अने दीपकनी होड मूकीने दीवामा 'राग' केम थाय छे एनो कवित्वमय कल्पना आपी छे ए अहीं सरखावी शकाय.[32]

आ कृति हजी सुधी अप्रसिद्ध छे[33]

१६. सुमतिसाधुसूरि विवाहलो

मेवाड देशना जाउर नगरना श्रेष्ठी गजपतिशाह अने संपूरीदेवीना पुत्र नयराजने निशाळे जता जता रत्नशेखरसूरिनो परिचय थयो अने बाल्यवयमा दररोज एमना दर्शने जवा लाग्यो मुनिना उपदेशथी एने दीक्षा लेवानी इच्छा थई अने रत्नशेखरसूरि पासे दीक्षा लीधी आ सुमतिसाधुने आचार्य लक्ष्मीसागर-सूरिए पंडितपद तेमज आचार्यपद उत्सवपूर्वक आप्या हता. ६२ कडीना आ काव्यमां सुमतिसाधुनी दीक्षानो प्रसंग 'विवाहला'ना जेटला गौरवथी वर्णववामा आव्यो छे. गामेगामना संघोने कंकोतरी पाठववामा आवी छे,[34] कारण के-

'नयराजकुंवर परिणिसिइ ए, वरिसिइ संयम-नारि हु'

वरघोडानु वर्णन रसभर्यु कर्यु छे :

'चउरी गूडर ताडिआ ए, तलिया तोरण चंग तु,
माहाजन सहू जीमाडीइ ए, मंदिरि मोटउ जंग तु

२९ गुजराती साहित्यना स्वरूपो, पद्यविभाग, पृ ११७-११८
३०. 'स्त्रीजीवन' वर्ष ६, अंक १२, सालो २००१, पृ ६९३-संपादक डॉ भोगीलाल जे. सांडेसरा
३१. विप्र-चूलिका, ३९-४०-४१-४२; पृ. २१९
३२ 'स्त्री-जीवन' वर्ष ६, अंक १२, सालो २००१, पृ. ६९३, नोंध श्री कमळाबहेन र. सुतरिया
३३ गुजराती साहित्यना स्वरूपो, पद्यविभाग, पृ. ११७
३४. गुजराती साहित्यमां स्वरूपो, पद्यविभाग, पृ ३७१-३७२

'ममता चक्र भरइ कुंभार, ममता भूप भरइ भंडार,
ममतु योगी भिक्षा लहइ, ममती नारी निजकुल दहइ १३०
नदी न पीइ नीर लगार, कूरम काइ धरइ भुइ भार.
महीअलि मेह सरोवर भरइ, उत्तम पर-उपगारी सरइ १३१
पान पदारथनी वेल्डी, दूध दही दीसइ सेल्डी,
साकर सरस सरस रस झरइ, उत्तम पर-उपगारी चरइ १३२'

ऐतिहासिक रासससंग्रहनी प्रस्तावनामां लावण्यसमयनी कृतिओनी नोंध लेतां विजयधर्मसूरि जणावे छे के सिद्धांत-चतुष्पदी, गौतमपृच्छा, स्थूलिभद्र-एकवीसो नेमनाथ-हमचडी आलोयण-वीनती, सेरीसा पार्श्वनाथ स्तुति सुरप्रिय केवली रास, विमलप्रबंध, करसंवाद, अंतरीक पार्श्वनाथस्तवन, अने गेमाऋषि रास ए अगियार कृतिओ जोवामां आवी छे ए सिवाय पण बीजी केटलीक नानी कृतिओ मळी छे आ कृतिओमां जे कृतिओनो आ प्रकरणमां उल्लेख थई गयो छे ते सिवायनी आ सुन्दर कृतिओ छे १. गौतमरास, २ गौतम छंद,[३९] ३. जीराउला पार्श्वनाथ वीनती ४ पचतीर्थीस्तवन ५ राजिमती गीत, ६ दृढप्रहारीनी सज्झाय, ७ कर्माशाहे करावेला उद्धारनी प्रशस्ति, ८ पंचविषय स्वाध्याय, ९ आठमनी सज्झाय, १०. सात वारनी सज्झाय, ११ पुण्यफलनी सज्झाय, १२ आत्मबोधसज्झाय, १३ चौद स्वप्ननी सज्झाय, १४ दाननी सज्झाय, अने १५ श्रावकविधि सज्झाय [४०]

'जैन गूर्जर कविओ' भा १ मां आ सिवाय बीजी केटलीक कृतिओनी नोंध छे -[४१] १ मनमांकड सज्झाय, २ हितशिक्षा सज्झाय, ३ पार्श्वनाथ जिनस्तवन प्रभाती, ४ आत्मप्रबोध ५ नमराजुल बारमासो, अने ६ वैराग्योपदेश,[४२] ए ज पुस्तकना भा. ३-खंड १ मां १ गर्भवेली (११४ कडी), अने २. गौरीसांवली गीतविवाद ए बे कृतिओनो उल्लेख छे[४३]

आ नानी कृतिओनां शीर्षक ए प्रकारनां छ के एमांथी ते ते कृतिओना विषयनो सहेजे ख्याल आवी शके

३९ 'सज्झायमाला' पृ ७२, जैक, भा १, पृ ८७
४० ऐरासं, भा २, प्रस्तावना, पृ १२
४१ जैक, भा १ पृ ८७
४२ आ उल्लेखमांनी कृति न ४, ५ ६, शा भीमशी माणेके प्रकट करेली 'सज्झायमाला'मां मळे छे, पृ ९३, ३१४ अने ३७४
४३ जैक, भा ३, खंड १, पृ ५१३-५१४

४. विमलप्रबंध—प्रबंध, रास के चरित ?

'विमलप्रबध'नी 'चूलिका'ना अतभागमा प्रबधकर्त्ता लावण्यसमय आ काव्यकृतिनो एकथी वधु वार 'रास' तरीके उल्लेख करे छे 'बोल सकल सघ वीनविउ, **विमलरास** तेणइ कारणि कहिउ,'[१] **रास** रचीउ **रास** रचीउ नवल नवरङ,'[२] 'सरस **रास प्रबंध** गायु,'[३] 'इतिश्री **विमलरास** सकल-शास्त्रे **विमलरास** सपूर्ण'[४] वगेरे.

आम, चूलिकाना अतभागमा आ कृतिनो **रास** तरीके उल्लेख छता आ कृतिना आदिमा, अने नवे खडनी पुष्पिकाओमा, आ कृतिनो **प्रबंध** तरीके पण उल्लेख थयेलो जोवा मळे छे आदिमा कवि कहे छे· 'कहइ कवीयण हु विमलमति, **विमलप्रबध** रच्योस'[५] वळी दरेक खडने अते पुष्पिकामा 'इति श्रीमाल मत्रि प्रगट **प्रबंध**'[६] एम **प्रबंध** शब्दनो प्रयोग करायेलो जोवामा आवे छे बीजी हस्तप्रतोमा पण आ ज रीते आदिमा तेमज नवे खडनी पुष्पिकाओमा **रासने** बदले **प्रबंध** शब्द वपरायेलो छे

स्व मणिलाल बकोरभाई व्यास-सपादित कृतिमा नवमा खडना अतभागमा पुष्पिकामा 'इति श्री**विमलप्रबध**'[७] तेमज ए ज पुष्पिकाना अते 'इति **विमल-चरित्र** समाप्त'[८] तेमज मारी पासेनी प्रतिमा चूलिकाना अतभागमा 'मनोहर प्रकट **प्रबंधे**'[९] अने स्व मणिलाल व्यासनी वाचनामा 'श्रीविमलमत्री **प्रबद्वासे**'[१०]

---

१ विप्र-चू ५३
२ विप-चू ५५
३. विप्र-चू. ३५
४. विप्र-चू.-पुष्पिका, पृ २३५
५ विप्र. १-१
६. विप्र-पुष्पिका पृ १६
७ विप्र पृ २०८, लीटी २३
८. विप्र पृ २०८
९ विप्र पृ २३५ लीटी २१
१०. विप्र पृ २३६, लीटी १

उल्लेख मळे छे. आम जुदी जुदी हस्तप्रतोमां **प्रबंध रास** अने **चरित**नो नकल करनाराओए मनफावती रीते उपयोग करेलो जोई शकाय छे.

तो सौ प्रथम प्रश्न ए थाय ए स्वाभाविक छे के विमलनु आ चरित्र **प्रबंध** कोटिनुं छे, **रास** कोटिनु छे के **चरित्र** कोटिनुं छे, अथवा त्रणेनो आ काव्यकृति एक समन्वय छे

सौ प्रथम रास-काव्यस्वरूपनां लक्षणो जोईए. श्री. केशवराम का. शास्त्रीना मंतव्य मुजब 'रास'नो विकास केवळ जैन कविओने आभारी छे.'[११] सौ प्रथम 'रास' शब्दनो प्रयोग "उपदेश रसायन रास"मां जोवा मळे छे. ए काव्यना संस्कृत टीकाकार जिनपाल उपाध्यायना कथन मुजब 'चर्चरी' अने 'रासक' ए प्राकृत प्रबंध खूब ज सरस होई एना उपर वृत्ति लखवानो कोई विचक्षण पुरुष *प्रयत्न करतो नथी '[१२] वळी आवी कृतिओ ए ज उपाध्यायना जणाव्या प्रमाणे* 'सर्वे रागोमा गवाय छे'[१३]

'रासक' एक उपरूपकविशेष छे.[१४] काव्यानुशासनमां वाग्भटे कई कई काव्यकृतिओ गाई शकाय एनो उल्लेख कर्यो छे : 'डोम्बिका-भाण-प्रस्थान-भाणिका-प्रेरण-शिगक-रामाक्रीड-हल्लीसक-श्रीगदित-**रासक**-गोष्ठी प्रभृतीनि गेयानि।' आचार्य हेमचंद्र पण 'गेय...**रासक**...रागकाव्यादि'[१६] द्वारा 'रासक'नु लक्षण वाग्भटना कथनानुसार आप्युं छे. वळी 'रासक'नु लक्षण आपतां वाग्भट स्पष्टता करे छे : 'जेमां अनेक नर्तकीओ होय, जेमां अनेक प्रकारना ताल अने लय होय,

११ आपणा कविओ, पृ १४३

१२. चर्चरी-रासकप्रख्ये प्रबन्धे प्राकृते किल।
वृत्तिप्रवृत्ति नाधत्ते प्राय· कोऽपि विचक्षणः ॥
अपभ्रंश-काव्यत्रयी, पृ. २९

१३. अत्र पद्धटिकाबन्धे मात्रा षोडश पादगाः।
अथ सर्वेषु रागेषु गीयते गीतकोविदैः ॥
अपभ्रंश-काव्यत्रयी, पृ. २९

१४. आपणा कविओ, पृ. १४४

१५. काव्यानुशासन, वाग्भट, (निर्णयसागर) पृ. १८०

१६. काव्यानुशासन-आचार्य हेमचंद्र, पृ ४४५-४४६

१७. अनेकनर्तकीयोज्यं चित्रताललयान्वितम्।
आचतुःषष्टियुगलाद्रासकं मसृणोद्धतं ॥
(काव्यानुशासन-वाग्भट)

जेमां चोसठ युगल होय तेवुं कोमळ अने उद्धत जे रूपक–गेय ते **रासक.**[१८] रेवतगिरिरासुमां रासनो विशिष्टता जणावाई छे ' 'रंगिहि ए रमइ जो रासु'[१९] 'रास' रमी शकाय तेवा होय छे आ मतव्यनुं लक्ष्मणगणिए समर्थन कर्युं छेः 'केवि उत्तालतालाउल रासय'। –केटलाक ऊंचा तालथी आकुळ बन्यो होय ते **रास**[२०] शारदातनये भावप्रकाशनमां 'रासक' नृत्यना त्रण प्रकार गणाव्या छे—दंडरासक, तालरासक अने लतारासक[२१] सप्तक्षेत्रिरासुना कर्ताए एना बे प्रकार आप्या छे–तालारास अने लकुटारास तालारास एटले फरते कुंडाळे मात्र ताळीओथी ताल आपी संगीतपूर्वक पगना ठेका साथे फरवामां आवतो रास, ज्यारे बन्ने दांडियाथी ए ज प्रमाणे फरवामां आवे ते लकुटारास[२२]

आ सर्व व्याख्या अने लक्षणो उपरथी टूंकमां कही शकाय के दसमी सदीना पहेलाथी, लोकोने रुचे तेवी सादी अने रसभर गेय वाणीमां अभिनयने पोषक जे केटलीक कृतिओ सर्जाई हती ते 'रास' नामे ओळखाती अने फरते कुंडाळे दांडियाथी के पगना ठेका साथे ताळीओना तालपूर्वक गाई शकाय तेवी कृतिओ आ समयमां ठीक ठीक मळी आवे छे. अपभ्रंश साहित्यमां पण आवी कृतिओ उपलब्ध छे

आचार्य हेमचंद्रना समयमां रास' अथवा 'रासक' मंदिरो अने देरासरोमां रमाता अने गवाता शरूआतमां आ कृतिओ टूंकी रहेती, परंतु क्रमश एमां कथानुं तत्त्व उमराये गयुं, एनी साथे साथे धार्मिक उपदेशे पण प्रवेशवुं शरू कर्युं, आथी रास नी गेयता रही, पण अभिनयक्षमता घटती गई, रास'नुं बंधारण शिथिल बन्ये गयुं, अने एनुं कलास्वरूप सौन्दर्ययुक्त रहेवाने बदले

---

१८ आपणा कविओ पृ १४४

१९ प्राचीन गूर्जर काव्यसंग्रह, पृ ५

२०. —लक्ष्मणगणि

२१ लतारासकनाम स्यात्तत्त्रैधा रासक भवेत् ।
दण्डरासकमेकं तु तथा मण्डलरासकम् ॥

(भावप्रकाशन)

२२. तीछे तालारास पडइ बहु भाट पडता ।
अनइ लकुटारास जोईइ खेला नाचता ।
सुललित वाणी मधुरि सादि जिण–गुण गायता ।
ताल मानु छंद गीत मेलु वाजिंत्र वाजता ॥
(प्राचीन गूर्जर काव्यसंग्रह–सप्तक्षेत्रिरास)

ढीलुं पडतुं गयुं. 'रास'नो पट-विस्तार पण आ कथातत्त्व अने उपदेशने कारणे विस्तृत थये गयो.

अगाउ कह्युं तेम 'रास'नो विकास केवळ जैन कविओने आभारी छे; अने जैन कविओए उपजावेलो अने विकसावेलो काव्यनो आ विशिष्ट प्रकार, जैन धर्मनुं माहात्म्य वधारवा माटेनुं, सांसारिक उपाधिओथी मुक्त बनी मुक्तिने मोक्षने वरवा माटेना उपदेशनुं वाहन बनवाथी, कृत्रिम बनतो गयो छे काव्यकला अने काव्यतत्त्वनी दृष्टिए आवी कृतिओ धीमे धीमे निकृष्ट थती गई छे. शरू शरूमां ऋषभदेव नेमिनाथ महावीर आदि जैन तीर्थंकरो, अने गौतम स्थूलिभद्र शालिभद्र जेवा जैन मुनिपुंगवोना संकीर्तनमां ज 'रास' पर्याप्त थतो; परंतु धीमे धीमे ए जीवनचरित्रोमां कथातत्त्व उमेरावा लाग्युं; विषयविस्तार पण वध्यो. संघपतिओना चरितने पण केन्द्र स्थाने राखी रास रचावा शरू थया; तीर्थनुं माहात्म्य पण उमेरायुं. आम 'रास'नो पटविस्तार वधवानी साथे एमां नायक-नायिकाना शृंगारनां घेरां वर्णनो, साथे साथे पूर्वभवनां संसारवर्णनो, जैन धर्मना आचार-विचारो अने एनुं महत्त्व, अने अंतमां पात्र के पात्रोनुं धर्मरंगी बनी जवुं ए ध्वनि सामान्य बनी रह्यो. आ कारणे पात्रना जीवनमां थतुं परिवर्तन, ए परिवर्तन माटेनी भूमिका स्वाभाविक न बनी शक्यां. कृत्रिम बन्यां एम कहीए तोपण अतिशयोक्ति नहि कहेवाय.[२३] श्री केशवराम का. शास्त्रीना शब्दोमां तो 'आ जातनु साहित्य पाछळथी धार्मिक स्तवनो उपदेशात्मक काव्यो, धार्मिक-तीर्थंकर साधुओ, जैन श्रेष्ठीओनां चरितो, तीर्थस्थळोनां कथानको वगेरे विषयने बांधतुं लांबां वर्णनात्मक काव्योना रूपमां आववा लाग्युं हतुं.'[२४]

जूनी गुजरातीमां विक्रमनी अगियारमी सदीथी सोळमी सदी सुधीमां रचायेला रासोनी जे संख्या उपलब्ध छे तेना अभ्यास पछी कही शकाय के छ के सात सदीथी शरू करी संख्याबंध सदीओ सुधीनी आ रासकृतिओए प्रजा-जीवन पर व्यापक असर करी छे[२५] अने आमांनी गणनापात्र कृतिओए गुजराती भाषाना अभ्यास माटे ज नहि, परंतु तत्कालीन राजकीय सामाजिक परिस्थितिना अभ्यास माटे पण अगत्यनी सामग्री पूरी पाडी छे. आमांनी गणनापात्र कृतिओनो उल्लेख आ रीते थई शके :

१. उपदेशरसायनरास (अगियारमी सदी)

२३. आपणा कविओ, पृ. १४८

२४. जुओ लावण्यसमय-कृत रास : 'विमलप्रबंध (बोहा) बलभद्र-यशोभद्ररास

२५. जुओ लावण्यसमयकृत रास : 'गुरुप्रियकेवलीरास,' कडी २०१.

२ भरतेश्वर बाहुबलीरासु (वि स १२८१)
३ रेवतगिरिरासु (वि स १२८७)
४ आबुरास (वि स १२८८)
५ सप्तक्षेत्रिरास (वि स १३२७)
६ कच्छूलीरासु (वि स १३६३)
७ समरारासु (वि स १३७१)
८ सदेशकरास (चौदमी सदी
९ क्षेत्रप्रकाशरास (पदरमी सदीनी शरूआत)
१०. शालिभद्ररास (वि स १४५५)

आ उपरात बीजी केटलीक कृतिओ पण मळे छे, परतु ए 'प्रबध'ना स्वरूपने वधु मळती आवे छ

'प्र+बन्ध्=प्रकृष्ट रीते बाधवु' उपरथी स 'प्रबन्ध' शब्द आवेलो छ ए वीरनु प्रशस्ति-काव्य छे मराठीमा प्रसिद्ध 'पवाडा' शब्दनो शक्य विकास स 'प्रपात'=धोध माफक वहेती वाणी उपरथी थयो जणाय छ गुजराती भाषामा पण 'पवाडा'नो जूनो शब्दप्रयोग मळी आवे छे आ प्रबध ए 'रास'नो ज विकसेलो एक प्रकार छे 'रास'मा गेय अने अभिनय तत्त्व आवतु, आमाथी नाट्यतत्त्व लुप्त थता मात्र गेय तत्त्व ज रह्यु अने क्रमश धार्मिक पुरुषोना जीवनो, तीर्थस्थळोना कथानको वगेरे उमेराता गया आम 'रास'नु कलास्वरूप पण बदलातु गयु ऐतिहासिक पौराणिक अने सामाजिक वार्ताओ अने प्रसंगो उमेरायाथी राससाहित्य प्रबन्ध-साहित्यनी नजीक जवा लाग्यु

प्रो कान्तिलाल व्यासना मतव्य मुजब सस्कृत साहित्यमा साहित्यप्रकार तरीके प्रबन्धनु स्वरूप सुनिश्चित रीते निबद्ध थयु नथी [२६] सस्कृत साहित्यकृतिओमा प्रबन्धनो अर्थ केवळ सुसकलित व्यवस्थित साहित्य-रचना एटलो ज छे [२७] कालिदास महाकविए 'मालविकाग्निमित्र'नी शरूआतना प्रास्ताविक भागमा प्रबन्धनो अर्थ 'काव्यनाटकादिनी रचना' एवो कर्यो छे [२८] सुबन्धु कविए कथात्मक रचना

२६ कान्हडदेप्रबध प्रस्तावना पृ ६०
२७ सरखावो 'अत्युज्झितार्थसंबन्ध प्रबन्धो दुरुदाहर' ।
(टीका-दुरुदाहर = दुर्वचा) – (शिशुपालवध, २–७३)
२८ सरखावो प्रथितयशसा भाससौमिल्लकविपुत्रादीना प्रबन्धानतिक्रम्य वर्तमानकवे कालिदासस्य क्रियाया कथ परिषदो बहुमान ।
(टीका-प्रबन्धान्=रूपकाणि—मालविकाग्निमित्र, अक–१)

माटे प्रबन्ध शब्द वापर्यो छ[२८] आ उपरथी श्री कान्तिलाल व्यास योग्य ज तारवणी करे छे के 'तेरमा चौदमा शतक सुधीमा प्रबन्धनु स्वरूप सुनिश्चितपणे बधाई चूक्यु छे ए युगना बधा प्रबन्ध ऐतिहासिक चरित्रात्मक रचना अथवा टूकामा कहीए तो ऐतिहासिक वार्तास्वरूपना छे बल्लालनो सुप्रसिद्ध भोजप्रबन्ध, कुमारपालप्रबन्ध मेरुतुगनो प्रबन्धचिन्तामणि, राजशेखरसूरिनो चतुर्विंशतिप्रबध आदि सर्व प्रबन्धो ऐतिहासिक चरित्र के ऐतिहासिक कथाप्रसगना स्वरूपना छे एमाना कुमारपालप्रबन्ध जेवा प्रबन्धो पद्यमा रचाया छे, तो भोजप्रबन्ध जेवा गद्यपद्यमिश्रित छे आमायी केटलाकमां एक ज ऐतिहासिक व्यक्तिनु चरित्र सुसकलित रीते विगते आलेखवामा आव्यु छे, तो प्रबन्धचितामणि के चतुर्विंशति-प्रबन्धमा भिन्न भिन्न ऐतिहासिक व्यक्तिओना प्रसगोनु टूकाणमां निरूपण थयु छे '[३०]

प्रो मजुलाल मजमूदारना मत मुजब 'हिंदी तथा गुजराती साहित्यना अभ्युदयनो काळ देशमां लडाईओनो समय हतो वीरता अने गौरव ए वखतना जीवनलक्षणो हता, ए वखतनो युगधर्म हतो, तेथी साहित्यमां वीरगाथाओनी उत्पत्ति साहजिक हती आ वीरगाथाओ बे स्वरूपमा मळे छे–मुक्तकना रूपमा अने बीजी प्रबधना रूपमा जेम युरोपमा वीरगाथाओनो विषय युद्ध अने प्रेम हतो, तेवी रीते आहीं पण हतु '[३१] एनु सरल दृष्टात छे **कान्हडदेप्रबन्ध**

आम दसमी सदीथी सोळमी सदीमा सस्कृत अने गुजराती भाषामा रचायेल प्रबन्धोनी सख्या गणनापात्र छे एमा कुमारपालप्रबन्ध नाभिनदर्नजिनोद्धार-प्रबन्ध वगेरे सस्कृतमा पद्यात्मक कृतिओ छे भोजप्रबध चतुर्विंशतिप्रबन्ध प्रबन्ध-चिंतामणि वगेरे सस्कृत गद्यपद्यात्मक कृतिओ छ, एमा एक अथवा एनथी वधु वीर पुरुषोना चरित्रो मळी आवे छे. वळी गीत सर्गो अने चोवीस प्रबन्धोथी सकलित गीतगोविंद' कृतिमा अष्टपदी तथा त्रण चार श्लोकोथी युक्त एवा दरेक एकमन प्रबन्ध तरीके ओळखावामा आवेल छे आम ज उपलब्ध प्रबन्धसाहित्य छे तेना अभ्यास पछी एम कही शकाय के प्रबन्ध ए मोटे भागे ऐतिहासिक व्यक्तिना चरित्रनिरूपणनु काव्य छे–ए व्यक्ति पछी युद्धवीर होय, कर्मवीर होय दानवीर होय के धर्मवीर होय वस्तुत युद्धवीरना जीवननिरूपणनु काव्य ते

२९ सरखावो 'प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्धविन्यासवैदग्ध्यनिधि प्रबन्ध चक्रे सुबन्धु ।
-(वासवदत्ता)

३० कान्हडदेप्रबंध, प्रस्तावना, पृ ६१

३१ गुजराती साहित्यनां स्वरूपो, पृ ८२

प्रबन्ध; परंतु 'कर्मे शूरा ते धर्मे पण शूरा' ए न्याये जैन कविओए कर्म सामे युद्ध करनारा-स्वमुक्ति माटे संग्राम आदरनाराओने पण वीर गण्या; आथी प्रबन्धना मुख्य नायक युद्धवीरमाथी धर्मवीर सुधीमां परिवर्तन पाम्या.

आ साथे ए हकीकतनी पण नोंध लेवी जोईए के दसमी सदीथी लई सोळमी सदी सुधीना कविओने मन प्रबन्ध रास अने चरितनी व्याख्या स्पष्ट नहोती. एओनी सामे आ दरेकनो आदर्श हतो, परंतु एने वळगी रहेवानी कोईने तालावेली जणाती नथी, आथी अत्यारनगार मोटा भागनी आ प्रकारनी 'प्रबन्ध' कृतिओनो उल्लेख 'रास' तरीके, 'रास' कृतिओना 'चरित' तरीके अने 'चरित'नो 'प्रबन्ध' के 'रास' तरीके मळे छे. कविओने ज्यारे जे रीते सूझ्यु ते रीते मन फावे ते रीते आ त्रणे शब्दोनो उपयोग कर्या कर्यो छे एक ज कृतिमां त्रणे शब्दोनो प्रयाग थयेलो पण जोवा मळे छे. वळी प्रबन्ध कृतिनो उल्लेख 'पवाडु' अने 'चउपई' तरीके पण थयेलो जोवा मळे छे वि. स. १४१७मा रचायेल 'हसाउलि' कृतिमा ए कृतिनो उल्लेख 'कथा' तेमज पवाडु' तरीके पण मळे छे.[३२] कान्हडदे-प्रबन्ध 'प्रबन्ध' ज होवा छतां केटलीक हस्तप्रतोमा एने रास, पवाडु, के चउपई तरीके गणावेल छे.[३३] वि. स. १४८५मा हीराणदसूरिए रचेल 'विद्याविलास पवाडु' ए विद्याविलास राजानु चरित्र छे; ज्यारे पदरमा शतकमा रचायेल 'त्रिभुवनदीपकप्रबध'ने कर्ताए 'पवाडु' तरीके पण गणावेल छे.[३४] तो नाकर विष्णुदास वगेरे पोतानी आख्यानकृतिओने 'रास' पण कहे छे.

आ उपरथी कही शकाय के शरूआतमा ऐतिहासिक वीरपुरुषनी यशोगाथा माटे रचाती एवी कृतिओ रास तरीके प्रचलित हती; आ कृतिओ गाई शकाती, रमी पण शकाती आ कृतिओनो पटविस्तार वधतो गयो तेम तेम अभिनय-तत्त्व ओछु थतु गयु, गेय तत्त्व रह्युं आवी कृतिओ 'रास' के 'प्रबन्ध' अथवा 'रास अने 'प्रबन्ध'ने नामे वहेती थई; क्वचित् एनो 'चरित' तरीके पण उल्लेख थवो शरू थयो

प्रबन्धनी जे परंपरा मळी आवे छे ते उपरथी तारवी शकाय के 'प्रबन्ध' काव्यमा काव्यनो नायक ऐतिहासिक पुरुष होवो जरूरी हतो. आ काव्यना घडोमा

३२ बावन-वीर-कथा-रस-लीउ,
एक पवाडु असाइत' कहिउ। (हसाउलि, पृ १७, कडी १२०)

३३ कान्हडदेप्रबन्ध, प्रस्तावना, पृ ६०

३४ पुनपवाडा सम्मली आणन्दिउ नरनाह।
(गुजराती साहित्यना मध्यकालीन स्वरूपो, पृ १२४)

आ ऐतिहासिक पुरुषना पराक्रमोनी परंपरा वर्णववामा आवती. अने एना जीवननी ऐतिहासिक दृष्टिए विशिष्टता दर्शाववामां आवती. एमा प्रधान वीररस रहेतो; बीजा रसो आनुषंगिक रीते काव्यतत्त्वने सहायरूप बनता. जैन कविओए विषयनो विस्तार वधारवाथी अने वर्णनात्मक शैली अपनाववाथी प्रबन्ध कृतिओ 'रास' तरीके ओळखावी पण शरू थई, 'चरित' तरीके पण. आ दृष्टिए विचारता विमल-प्रबन्ध'—सोळमी सदीना उत्तरार्धमां रचायेली आ कृति प्रबन्ध छे, रास छे, चरित पण छे.

विमलप्रबंधमा अगियारमी सदीमां थई गयेला गुजरातना एक वीर पुरुष विमलनु जन्मथी लई अंत सुधीनु संपूर्ण जीवनचरित्र छे ए दृष्टिए आ कृतिने 'चरित' कही शकाय आ कृति गेय छे; कयाक कवित अने ढाळ अभिनयपूर्वक गाई शकाय तेवा छे; आयो 'रास'नी व्याख्या मुजब 'रास'नां बीजा लक्षणोने लई ए रास पण छे; वळी आ काव्यमां खंड सातमा अने आठमामां विमलना पराक्रमोनी परंपरा आपवामा आवी छे, आ पराक्रम-प्रसंगो ऐतिहासिक छे; बाकीना सात खडोमां आ बे खडने पोषक एवुं निरूपण नथी, छता नवमा खंडमा विमलनी जैनधर्म उपरनी श्रद्धा, युद्धनी असरथी एनु विरक्त मन, धर्मघोषसूरिनो मोक्ष माटेनो उपदेश, अने अर्बुदगिरि उपर जैन-देरासरनी बांधणी ए सर्व प्रसगो शांतरसना पोषक छे, आथी सातमा अने आठमा खडना वीररस पण नवमा खडना शांतरसने पोषक बनी रहे छे. नरसिंहरावे प्रबंधनी व्याख्या करतां कह्यु छे के 'प्रबंधमा उल्लेखायेली महत्त्वनी बधी हकीकतोने इतिहासना आधारोनु संपूर्ण समर्थन मळवु जोईए; तो ज ते ऐतिहासिक प्रबंध बनी रहे.'[३५] आ व्याख्यानी सराणे आ काव्यकृतिने चढावतां, विमलनु जीवन—विमलनी दडनायक तरीकेनी कारकिर्दी, सिंधु देश उपरनो चढाई, रोमनगरना सुल्तानो उपरनी जीत, अर्बुदगिरि उपर 'विमलवसही'नी बांधणी—ए सर्वने इतिहासना आधारोनु संपूर्ण समर्थन मळतुं होई 'विमलप्रबंध' ए 'प्रबंध' बनी रहे छे.

श्री. कान्तिलाल व्यासना शब्दोमां कहीए तो 'प्राचीन गुजरातना बे सुविख्यात ग्रंथो पद्मनाभरचित कान्हडदे-प्रबन्ध अने लावण्यसमयसूरिनिर्मित विमलप्रबन्ध सळंग, सुबद्ध ऐतिहासिक चरित्ररचनाओ छे.'[३६] अने प्रो मंजुलाल मजमूदारना मत मुजब 'रिमळे नगरठ्ठाना राजा धमणियाने कैद करी एने चद्रावतीमां आण्यो ते प्रसंग वर्णवतां कविए 'रास'ने वीररसोचित साचो प्रबंध

३५ कान्हडदेप्रबंध, प्रस्तावना, नरसिंहराव दिवेटिया
३६. कान्हडदेप्रबन्ध, प्रस्तावना, पृ ६१

पमाव्यो छे.'[३७] अलबत्त, ए कबूल करवुं पडशे के 'वीररसने पोषकरूपे अद्‌भुत, रौद्र, विप्रलंभ शृंगार अने करुण-रस कथानी मन्दिर-रचनामां मीनाकारी जेवी कलाघटना'[३८] कान्हडदेप्रबन्धमां जोवा मळे छे तेवी कलाघटना विमलप्रबन्धमां जोवा मळती नथी; छतां शांतरसने पोषक अद्‌भुत वीर शृंगार अने हास्य रस कथानी मंदिररचनामां मीनाकारी जेवी कलाघटना माटे मुकातो कान्हडदेप्रबन्ध पछीनो प्रबन्धकृति तरीके आ कृतिने गुजराती साहित्यमां आगवुं स्थान मळ्युं छे.

---

३७. गुजराती साहित्यनां मध्यकालीन स्वरूपो, पृ ८९

३८ कान्हडदेप्रबन्ध, प्रस्तावना, नरसिंहराव दिवेटिया

५. विमलप्रबंधनुं मूल्यांकन

'विमलप्रबंधमां विमलनुं चारित्र्यवर्णन तो बहु ज थोडुं छे; अने जे छे तेमां पण इतिहासनी कसोटीमां उतरे एवुं तो घणुं ज थोडुं छे. प्रमाणभूत इतिहास-रचनानी वृत्ति ज ए काळे खीली नहोती. ब्राह्मणवर्गना विद्वानो का तो संस्कृतमां ज्योतिष पुराण के वेदांतग्रंथोनी टीकाओ लखता, अथवा तो देश्य भाषामां पौराणिक आख्यानोनुं कथन करता. राजतरंगिणी, कीर्तिकौमुदी के कान्हडदे-प्रबन्ध जेवा अपवाद बाद करीए तो आ काळना ब्राह्मणवर्गना विद्वानोने हाथे ऐतिहासिक रचना काई खास थई नथी एम कहीए तो चाले. जैन साधुओए ए दिशामां ब्राह्मणो करतां घणुं वधारे कर्युं छे. चावडा अने सोलंकी वंशना इतिहासने माटे आपणे जैन साधुओना आभारी छीए. विद्योत्तेजक महाराज भोजनी कीर्ति आपणा सुधी पहोंचाडवा माटे पण जैन साधुओनो ज आपणने आभार मानवो पडशे. मुसलमानी राज्यकाळ पूर्वेनी गुजरातनी लोकस्थिति जैनसाधुओनी नोंधथी ज आपणने प्रत्यक्ष थाय छे. ऐतिहासिक नोंधो माटे गुजरातनो इतिहास हमेशां जैन साधुओनो आभारी रहेशे.'[1]

विमलप्रबंधनी प्रस्तावनामां एना संपादक मणिलाल बकोरभाई व्यासे करेल आ उल्लेख मोटे भागे आजे पण सत्य छे. गुजरातना चौलुक्य राज्यनो इतिहास मुख्यत्वे जैन साधुओनी ए युगनी कृतिओ उपरथी उपलब्ध थाय छे. एम पण कही शकाय के 'आ राजवंशोने इतिहासकारोनी खोट सालो नथी.'[2] जो के जैन कविओ इतिहासकार नहोता, इतिहास के इतिहासनी नोंधो लखवानी पण एमनी मनीषा नहोती, परंतु राज्याश्रय मळवाने कारणे चौलुक्य राजाओनुं गुणकीर्तन करवानो एक पण लाभ एमणे जतो कर्यो नथी. सिद्धराज जयसिंह (वि. सं. ११५० थी १२००) अने कुमारपाळ (वि. सं. १२०० थी १२२९) ना राज्यकाळ दरम्यान जैनोने, अने जैनोना समर्थ आचार्य—मुनशीना शब्दोमां कहीए तो गुजरातना प्रथम ज्योतिर्धर—ने[3], एटले के आचार्य हेमचंद्रने राज्याश्रय

---

१. विप्र (व्यास) प्रस्तावना, पृ. ६१

२. COG : Preface

३. गुजरातना ज्योतिर्धरो-

मळ्यो, अने गुजरातनो काव्यमिश्र इतिहास प्रगट थवो शरू थयो. द्व्याश्रय ए आचार्य हेमचन्द्रनी महत्त्वनी इतिहासमूलक कृति गणी शकाय व्याकरण अने इतिहास ए बेउ साथोसाथ काव्यमां वणाया होवाथी, इतिहासनी महत्त्वनी कडी एमांथी मेळवता मुश्केली नडे छे, छतां गुजरातना इतिहास माटे ए प्रथम ग्रंथ छे एम कही शकाय

आचार्य हेमचन्द्रना आ प्रयोगने ए पछीना गणनापात्र जैन मुनिओए अपनावेल छे ए कारणे चौलुक्य वंशना इतिहासनी कडीओ एमांथी प्राप्त थई रहे छे सोमेश्वरकृत कीर्तिकौमुदी यशःपालकृत मोहराजपराजय, सोमप्रभकृत कुमारपालप्रतिबोध, अरिसिंहकृत सुकृतसंकीर्तन, जयसिंहसूरिकृत हम्मीरमदमर्दन, उदयप्रभकृत सुकृतकीर्तिकल्लोलिनी, चन्द्रप्रभ(प्रभाचंद्र)कृत प्रभावकचरित, आचार्य मेरुतुंगकृत प्रबन्धचिंतामणि, राजशेखरसूरिकृत चतुर्विंशतिप्रबंध (प्रबंधकोश), जिनमंडनकृत कुमारपालप्रतिबोध, जिनहर्षगणिकृत वस्तुपालचरित, हरिभद्रसूरिना सनत्कुमारचरिउना अंतभागमां अपायेल नमिनाथचरिउ-प्रशस्ति[४]—आ अने आ सिवाय पण बीजा कविओए आ रीते कुमारपाल वस्तुपाल-तेजपाल जेवी व्यक्तिओना चरितनु कथन करीने गुजरातना इतिहास माटे सामग्री पूरी पाडी छे. वस्तुतः आ चरितोमां चरितनायकनी प्रशंसा भारोभार पथराई जती, परंतु ए साथे एकाद गद्य अथवा छेल्ले नानी प्रशस्ति पण चौलुक्य राजाओनी प्रशंसा माटे रहेती आ माहिती ज गुजरातना चौलुक्यसमयना इतिहासनु व्यवस्थित संकलन करवामां अति उपयोगी थई रही छे[५]

अभयतिलकगणिकृत द्व्याश्रयनी टीका, मेरुतुंगकृत प्रबंधचिंतामणि अने कृष्णजीकृत रत्नमालानी हस्तप्रतो उपरथी सौ पहेला गुजरातना इतिहास विशेनी माहितीनु संकलनकार्य ए. के. फॉर्बसे 'रासमाळा' द्वारा कर्युं रासमाळाना प्रकाशन पछी, केटलाक वर्षे, इ स १८७८मां जर्मन विद्वान ज्योर्ज बुह्लरे 'इन्डियन ॲन्टिक्वरी'मां 'Eleven Land-Grants of Chaulukyas' (चौलुक्य राजाओना जमीन अंगेना अगियार दानपत्रो) शीर्षक लेख प्रगट कर्यो. त्यारपछी आ विद्वाने चौलुक्य राजवंशना इतिहासनु संशोधन चालु राख्यु. अने 'वडनगरप्रशस्ति' तथा 'चित्राप्रशस्ति' जेवा महत्त्वना शिलालेखोनु संपादन करवा उपरांत, आचार्य हेमचंद्रनु जीवन पण लख्यु आनु शुभ

४ COG : Preface, GIL pp 62-100
जैसाइ, पृ. २२१ थी ४६१
५ COG Preface

परिणाम ए आव्युं के अंग्रेज विद्वान टॉनीए (Tawney) प्रबंधचिंतामणिनुं अंग्रेजीमां भाषांतर कर्युं. आ सर्व प्राथमिक पण महत्त्वना संशोधनना परिणामे डॉ भगवानलाल इंद्रजीए 'बोम्बे गेझेटियर'मां चौलुक्योनो इतिहास व्यवस्थित रीते रजू करवानुं कार्य आदर्युं[६] अने आजे आ सर्व तेमज अन्य यत्नोना फळस्वरूप सं ९९८ थी १३०० सुधीनो चौलुक्योना राजवंशनो इतिहास कडीबद्ध मळी रहे छे

कोई पण देशना प्राचीन इतिहासना संशोधन अने संकलन माटे ताडपत्रो, ताम्रपत्रो शिलालेखो, सिक्का, हस्तलिखित ग्रंथो, प्रशस्तिओ, दंतकथाओ वगेरे साधनो महत्त्वना गणी शकाय, परंतु आमां उत्कीर्ण लेखो ए महत्त्वनुं मुख्य साधन छे, कारण के ताम्रपत्रो शिलालेखो सिक्काओ वगेरे उत्कीर्ण लेखो तत्कालीन समाज अंगेनी इतिहास-दृष्टिए महत्त्वनी माहिती पूरी पाडे छे, ज्यारे हस्तलिखित ग्रंथो वगेरे तत्कालीन न होई एमांथी प्राप्त थती माहिती झीणी चाळणीए चाळवानी जरूर रहे छे—अथवा कहो के कपरछाण करवानी आवश्यकता रहे छे, अने आ प्रकारना रहेला चाळण पर इतिहासनी बांधणी बांधवा जतां अनेक वार विचार करवा पडे छे

चौलुक्य-समयना गुजरातनी राजकीय आर्थिक अने सामाजिक सामग्री माटे जैन भंडारोमांथी उपलब्ध थयेल हस्तलिखित साहित्ये पुष्कळ माहिती पूरी पाडी छे, अने हजु आ भंडारोनुं जेम जेम व्यवस्थित संकलन थये जाय छे तेम तेम नवी नवी माहिती उपलब्ध थती ज जाय छे, परंतु आ साथे एक हकीकतनी नोंध लेवी जोईए आ प्राप्त थती सामग्रीमां विशेष महत्त्वनुं साहित्य 'चरित-साहित्य' छे आणीता इतिहासविद् प्रो. केशवलाल कामदारना शब्दोमां कहुं तो "जैनसाहित्यमां चरितानुयोगने श्रेष्ठ स्थान आपवामां आव्युं छे तेवुं स्थान हिन्दना बीजा साहित्यमां जवल्ले ज आपवामां आव्युं होय"[७] अने "आ चरितोमां केटलांक पात्रो प्रशस्त हतां, तेथी लेखकोनी दृष्टिए तेमनुं वर्णन अमुक दृष्टिथी करवामां आव्युं छे तेमां चालु चरितात्मक वाङ्मय-Biography-नी बधी यथेपिकता आवी शकी नथी, तेमां गुणोने अतिशय तरीके वर्णव्या हशे, तेमां दोषोने ढांकवामां आव्या हशे; चरितनुं वर्णन सांप्रदायिक ने धार्मिक थई जतुं हशे, तेमां कथाविभाग जोडी देवामां आव्यो हशे, यात्राना वर्णनो, मंदिरोना जीर्णोद्धारो, अमारिघोषणानां जयनाश्यो दीक्षाउत्सवो, शासननो उद्योत, ए बधुं

६ COG : Preface
७ जैनाई, प्रस्तावना, पृ ७१

तेमां विशेषपणे आवतु हशे, छतां ते साहित्यविभाग अगत्यनो छे, परंपरायी मेडातो आव्यो छे, ने तेमां अनेकविध अने उपयोगी व्यक्तिगत, ऐतिहासिक सामाजिक, भौगोलिक ने राजकारणी माहिती मेळववामां आवी छे तेथी आ गुण वधाए राख तपासवो पडे छे जैन साहित्य चरितात्मक छे, तेटलु ज ऐतिहासिक छे. तेना परिशीलनथी हिन्दना इतिहासने नवो आकार मळ्यो छे ने भविष्यमां मळशे गूजरातना इतिहासमां तो ते अनेरु स्थान ले छे. '[८]

विमलप्रबंध ए कृति प्रबंध होवा छतां चरितात्मक पद्यकृति पण छे. चौलुक्य राजा भीम पहेला (सं १०८० थी ११२२)ना समयमां थयेल 'विमल' नामना श्रेष्ठीनु आ जीवनचरित छे आ चरित पण, जैन कविओए लखेलां अन्य जीवनचरित्रोनी जेम साम्प्रदायिक अने धार्मिक वर्णनो-दृष्टियी मुक्त नथी. आबु पर्वत उपर बंधावेला जगप्रसिद्ध 'विमलवसही'ना मंदिरोने कारणे विमल जैनोमां आदरणीय अने अनुकरणीय व्यक्ति तरीके प्रशंसायेल छे, आजे पण प्रशंसा पामे छे आथी एना प्रत्येक कार्यमां लावण्यसमयने-जैन संप्रदायना कविने अद्भुतता जोवा मळे अथवा आ इष्ट व्यक्ति विशे एवा एवा कार्योनो उल्लेख थाय जेमाथी जैन धर्मनी प्रतिष्ठा थये, ए आ चरितना आलेखन पाछळनी कविनी दृष्टि छे मुख्य ध्येय जैन धर्मनु गौरव वधारनार व्यक्तिनु चरितालेखन छे, इतिहास एनी पाछळ धीरे--तद्दन धीमे पगले चाल्यो आवे छे, आथी विमलप्रबंधना सुदीर्घ विस्तारमां कथाओ, वर्णनो, धार्मिक उत्सवो लाबा उपदेशो वगेरे विशेषपणे जोवा मळे छे--इतिहासतत्त्व ओछु

एक महत्त्वनी वात मणिलाल व्यासे कही छे तेनो उल्लेख पण अहीं करी लेवो जोईए. 'विमलप्रबंध विमळनी पछी लगभग पाचसे वर्षे रचायो छे अलबत्त, ए काळे विमळ विशे माहिती मेळववाना साधन हालना करता वधारे विद्यमान हता, पण ते काळ इतिहाससशोधननो नहोतो चद्रावती ते काळे उद्ध्वस्त थयु हशे; चौलुक्य राजाओनु राजदफतर राजमहेलोनी साथे अग्निदेवताना मोमां गयु हशे, पाटणनो ज्ञानभंडार छानामाना कोई सुरक्षित स्थळे मोकली दईने भोंयरामां सताडी देवो पड्यो हशे एवे वखते कविए ऊडु सशोधन करवाने बदले दंतकथा उपर ज चलावी लीधु होय तो तेमां दोष दई शकाय एवु नथी कविनो उद्देश इतिहास लखवानो हतो पण नहि ऐतिहासिक वस्तु लईने सभारंजनी काव्य करवु अने ते द्वारा जैनधर्मनो बोध आपवो ए ज कविनो उद्देश

---

८ जैसाइ, प्रस्तावना, पृ ७४

हतो. विमलप्रबंधना द्दालना स्वरूपथी ए उद्देश पूर्णताए पहोंचवाने कंई अडचण नहोती.'[९]

आम लावण्यसमयनो जे उद्देश—सभारंजनी काव्य अने जैन धर्मनी महत्ता दर्शाववा माटेनी उत्कट इच्छा ए बन्ने सिद्ध थयां छे. 'आ प्रबंध रचाया पछी दस ज वर्षमां आ प्रबंधनुं संस्कृत भाषांतर थयुं ए आ प्रबंधनी लोकप्रियता समजवाने माटे बस छे. संवत १६६० एटले सो वर्ष पछी लखायेली विमलप्रबंधनी घणी प्रतिओ मळे छे,[१०] आ हकीकत ज सूचवे छे के आ प्रबंधे केटली लोकप्रियता प्राप्त करी हशे अने जनमनरंजन पण कर्युं हशे; परंतु आ "सभारंजनी" अने 'जैन धर्मना उपदेश'नी मनोवृत्तिने कारणे 'दुर्भाग्ये सुसंगत चरित्र आपणने मळ्युं नथी.'[११] वळी 'बीजा बधा पराक्रमी पुरुषोनां चरित्रो कोई देवदेवीना चमत्कार साथे मेळवी देवायां छे तेम विमळनुं चरित्र पण अंबाजीना चमत्कार साथे मेळवी देवायुं छे. विमळ निर्धनावस्थामांथी एकाएक कोटयधिपति अने राजमान्य पुरुष थयो ए बनाव अचंबो उपजावे तेवो छे, अने अचंबो ऊपजावे तेवुं होय तो कोई पण देवदेवीनी मदद वगर बने ज नहि एवी, ए काळना लोकोनी दृढ मान्यता हती. विमळ अंबाजीनो आराधक हतो एटले अंबाजीना प्रतापथी ज ए बधुं पाम्यो एवी मान्यता बधाय ए स्वाभाविक हतु. गमे तेम होय, पण विमळ मोटो धनवान अने पराक्रमी पुरुष हतो ए निर्विवाद छे.'[१२]

श्री. कनैयालाल मुनशी आ विमलप्रबंध विशे पोताना अभिप्राय उच्चारतां कहे छे के 'तेनु कांई ऐतिहासिक महत्त्व नथी; तेनी वार्तानी बांधणी मात्र सांप्रदायिक परिस्थिति उपर थयेली छे.'[१३] ए हकीकतमां कंईक तथ्य छे, परंतु एमनो आ अभिप्राय पचीस वर्ष पहेलांनो छे. जो के साथे साथे ए अभिप्राय

९. विप्र (व्यास), प्रस्तावना, पृ. ६२

१०. विप्र (व्यास), प्रस्तावना, पृ. ६४- 'संवत १५७८मां सौभाग्यनंदसूरिए 'विमलप्रबंध' परथी संस्कृतमां विमलप्रबंध रच्यो.' पृ ६५. आ संस्कृत प्रबंधनी हस्तलिखित प्रत मुनिश्री जिनविजयजी पासे एमना संग्रहमां छे.

११ विप्र (व्यास), प्रस्तावना, पृ. ६३

१२. विप्र (व्यास), प्रस्तावना, पृ. ६३

१३. GAL, pp. 164

पण एमणे ज आप्यो छे के 'सिद्धराजनी पहेलानां समयमां विमल एक वीर पुरुष हतो;[१४] परंतु 'आ पद्यमांनी वार्ता ए मात्र काल्पनिक छे; अने तत्कालीन रीतरिवाजना अध्ययन माटे उपयोगी छे.'[१५]

श्री. अनंतराय रावळ पण आ ज अर्थनुं कहे छे के 'इतिहास अने कविता लेखे आ प्रबंधनुं मूल्य एटलुं नथी, जेटलुं ए युगनी समाजस्थिति अने लोकाचार पर प्रकाश पाडनार कृति तरीके छे.'[१६]

हकीकतमां श्री. मुनशीए करेलां आ विधानो पछी विमलप्रबंधना रचना-समय पछीनो तुरतनी केटलीय हस्तप्रतो आजे उपलब्ध थई छे; लावण्यसमयना समय पहेलांना समयनां केटलांक चरित अने काव्यो पण प्रकाशमां आव्यां छे, तेमज तत्समयना उत्कीर्ण लेखो पण उपलब्ध थया छे. आ सर्वना संशोधन-संपादन पछी विमलना चरित्र उपर वधु प्रकाश पड्यो छे; लावण्यसमयना समयनां रीतरिवाज, प्रणालिकाओ—सामाजिक अने राजकीय स्थिति विशे वधु माहिती मळी रहे छे. एना उपरथी अभ्यासीने एम लाग्या वगर न रहे के 'विमल' ए मात्र ऐतिहासिक पुरुष हतो, एटलुं ज नहि, परंतु गुजरातना राजकीय, सामाजिक अने सांस्कृतिक पडतरमां पण एनो महत्त्वनो फाळो हतो. विमलप्रबंध ए चरितात्मक ग्रंथ छे, एमां अनेक विषयांतरो प्रवेश्यां छे, 'विमल' विशेनी माहिती ए समयनी दंतकथाओ उपरथी लेवाई छे तेमज उपलब्ध साहित्यमांथी स्वीकाराई छे, छतां ए भूलवुं न जोईए के आ दंतकथाओ अने तत्कालीन उपलब्ध साहित्ये महत्त्वनी इतिहासविषयक कडीओने पण साचवी राखी छे. सांप्रदायिक दृष्टिने कारणे चरितकारोए इष्ट अथवा आराध्य व्यक्तिना अव-गुणो जोवाने बदले तेमज चरितनायकनी प्रतिष्ठा जरा पण ओछी न थाय ए जोवानी वधु पडती काळजी राखी होवाना कारणे, कोईपण चरितमाना अंकोडा तूटे ए स्वाभाविक छे; छतां गुणदर्शी दृष्टिए पण, जे कडीओ मळी रहे छे तेने, इतर सामग्रीना संशोधन द्वारा सांकळी शकाय छे. आ दृष्टिए तत्कालीन प्रबन्ध रास चरित वगेरे कृतिओ गुजरातना इतिहासना संशोधन माटे महत्त्वनां साधन छे, महत्त्वनी भूमिका आपी रहे छे, ए निःशंक छे.

१४. GAL, pp. 165

१५. GAL, pp 165

१६ गुजराती साहित्य : मध्यकालीन, पृ ४३

[२]

प्रबंधनो सार

खंड १ : प्रथारंभे लावण्यसमय कवि जैनोना प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेवने प्रणाम करी अर्बुदा पद्मावती चक्रेश्वरी वगेरे देवीओनु स्मरण करी, विमलप्रबंधनी रचना करवा माटे सरस्वती देवीनी कृपा याचे छे. विमल कोण, क्या एनो जन्म थयो एणे शा शां धर्मकार्यो कर्यां, वगेरेनु वर्णन करवा माटे आ प्रबध रचवामां आव्यो छे सौ प्रथम लक्ष्मीदेवीए पुष्पमाल नामनु नगर स्थाप्यु. त्यारपछी रत्नमाल अने एनी जगाए श्रीमालनगर अने श्रीमाल वशनी पण स्थापना थई.

खंड २ : श्रीमालनगरमां उहड अने रोहड बे भाई हता. रोहड करोडाधिपति हतो; उहड पासे नव्वाणु लाख हता. एक लाख जो भाई पासेथी मळे तो उहड करोडाधिपति थई शके एटमा रही शके. रोहडे ना कही ए ज नगरना राजाना कुवरे राजा पासे ग्रास माग्यो राजाए ना कही आथी उहडनो सहकार लई कुवर श्रीमाल छोडी चाली नीकळयो. बन्ने जणा सिंधु देशमा आवेला ठठ्ठानगर जई पहोंच्या त्याना राजाए नगर वसाववा (मारवाडना प्रदेशमा) उज्जड जगा आपी, त्या बन्नेए उएसनगर वसाव्यु. उहडनु बहुमान थयु आ उएसनगरमा वसनारा ओसवाळ कहेवाया. श्रीमालनगरमा जे पूर्व दिशामा रहेता हता ते प्राग्वाट कहेवाया,[17] एओए अवाजीने गोत्रज

17 "Going back to the Jains, it is to be observed that Prāgvāṭa is no other than the present Porvāḍ or Porvāḷ The latter two cannot be derived from Prāgvāṭa, but might come from the expression Poṛityavadana, and I belive that Prāgvāṭa is a sanskritization of Porvāḍ This may not be originally the name of a place, but of a person, as expressions like Poṛityavadana-anvayai, Prāgvāṭakula, and Vamśa would suggest though, is is also possible that imitating Brahmanas and Kṣatriyas who traced their origin to some famous Ṛṣi, these Jains who were probably foreigners used the words 'Kula' and 'Vamśa' for indicating descent from a place

'Oisvāla is the present Osvāḷ one of the main

तरीके स्थापी. आ पछी कवि अढार वर्णनी व्यवस्था तथा छ दर्शन अने छन्नु पाखंडनो उल्लेख करे छे.

खंड ३ : कलियुगनां लक्षणोनुं लंबाणथी वर्णन करी, कवि भिन्नमाल नगरनुं वर्णन करे छे. आ भिन्नमाल नगरमां श्रीमाळीओनां नेवु हजार सोहामणां मंदिर हता, पिस्ताळीस हजार ब्राह्मण हता बन्नेनो परस्पर सुमेळ हतो, ब्राह्मणो वेदपुराणना अर्थनो अभ्यास करता. आ समये भिन्नमालमां प्राग्वाट वंशमां नीन नामनो गोष्ठी हतो एनी आर्थिक स्थिति कथळवाथी, ए गुजरात देशमां आवेल गुजरातना शणगाररूप गांभुनगरमां आवी वस्यो. स्थिति सध्धर पण थई वनराजना निमंत्रणथी पोताना पुत्र लहिर साथे ए पाटण गयो, अने दंडनायक तरीके ए निमायो. लहिरे वनराज योगराज रत्नादित्य अने वयरसिंह एम चार पेढी सुधी पोतानु अधिकारपद भोगव्यु. आ लहिरना वंशमा वीर नामे श्रेष्ठी थयो. एने त्यां वीरमतीनी कुक्षिए विमलनो जन्म थयो.

खंड ४ : शरूआतमां कविए पुरुषनां बत्रीस लक्षणो अने बोंतेर कळा गणावी, विमलने निशाळे भणवा मूक्यो. विमल लगभग सोळ वर्षनी उमरनो थयो एटले वीरे विमलने माथे सर्व जवाबदारी सोंपी दीक्षा लीधी. विमलनुं तेज जोई शत्रुओ एनी इर्षा करवा लाग्या आथी वीरमती पोताने पियर गेहुंडी गामे जई रही मामा सामान्य स्थितिना हता, एटले मा–दीकराए मामानी खेतीमां साथ आप्यो पाटणना श्रीदत्त श्रेष्ठीए पोतानी दीकरी 'श्री'नु वेविशाळ विमल साथे कर्यु. दैववशात् विमलने सुवर्ण प्राप्त थयु.

खंड ५ : धन प्राप्त थवाथी वीरमती प्रसन्न थई. कवि स्त्रीना सामुद्रिक

Marvadi sub-groups. They are all from Osvāla in Marvad, Rajputana. It would appear that they are called so from this place-name. Or is it that the place is called by that name because Oisvālas lived in a large numbers there, Oisvāla itself being a tribal name or the name of one of the ancestors?

"Members of Śrimālī Jñāti are now called Śrimālī. There seems to be no doubt that the word *stands and* stood formerly for a place and not for a person."

Studies in the Historical and Cultural Geography and Enthrography of Gujarat, pp. 143–144

लक्षणो, स्त्रीनो चोसठ कळा, तेमज अढार लिपि, छ राग अने एना तालनी माहिती आपे छे. कन्या जोवा गयेलाओ लग्न लई पाछा वळ्या. लग्ननी तैयारीओ आदरी. माडवो नगायो. कंकोतरीओ लखाई. 'जान' लई विमले ठाठमाठपूर्वक लग्न कर्या; पहेरामणी वरोठो वगेरे कर्युं. परणीने पाछा फर्या पछी थोडा समयमा ज सहकुटुंब ए पाटण रहेवा गयो.

खंड ६ : धर्मघोषसूरि आबुनी तळेटीए पधार्या. त्या जैनोनु तीर्थ न जोई एओ विचारमा पडया. पाटण आवी विमलने उपदेश आपी, संघ साथे आरासणनी यात्राए गया, अने आबु उपर तीर्थ रचवानो विमलने आदेश आप्यो तीर्थरचना माटे जोईती रकम पोतानी पासे नहि होवाने कारणे विमले पोतानी अशक्ति दर्शावी त्यार पछी पोतानी बाणविद्याथी गुर्जरनरेश भीमने प्रसन्न करी, पाचसो अश्वदळोनो अधिकारी थई दंडनायकनी पदवी प्राप्त करी विमलनो झडपथी उत्कर्ष थतो जोई, ईर्षाळुओए गुर्जरनरेशना कान भमेर्या अने एमने विमलनु गृह जोवा मोकल्या विमलना रहेणीकरणी अने ठाठ जोई गुर्जर-नरेशने पण शका गई—रखे विमल पोतानो समोवडियो थई जाय! आथी टाढे पाणीए खस काढवा वाघने छूटो मूकी एने वश करवा विमलने आज्ञा करी विमलने एमा विजय मळयो आथी मल्ल साथे कुस्ती योजी कासळ काटवानी योजना करी, पण एमाय विमले मल्लने पराजय अर्पी पोतानी शक्तिनां दर्शन कराव्श

खंड ७ : वाघ अने मल्लना युद्धमा विमलनी जीत थवाथी, गुर्जरनरेशे एना वडदादाओ–लहिरना समयथी विमल पासे लहेणु काढयु राज्यने दाण आप्या सिवाय लहिर वगेरेए अश्वो परदेशथी मगाव्या हता; अने दाणनी रकम खूब ज मोटी हती परिस्थिति समजी लई, विमले गुर्जरनरेशनी रजा लई पाटण छोडयु, अने त्याथी मालवण जई रह्यो विमलने सैन्य साथे आवतो साभळी चद्रावतीनगरीनो राजा धधूक नगरी छोडी चित्रकूट–चित्तोड जतो रह्यो, अने विमले चद्रावतीनगरीनु राज्य सभाळी लीधु पूर्वमां आवेल रोमनगरना बार सुलतानोने माथाभारे थयेला जोई, रोमनगर उपर विमले सवारी करी, अने बारे सुलतानो उपर विजय मेळवीने एमनी पासेथी दड वसूल करी ए चद्रावती नगर पाछो फर्यो

खंड ८ : सिंधु देशमा आवेल ठठ्ठानगरना राजाए दूत मोकली अपमानजनक सदेशो मोकल्यो, तेथी विमले बभनिया–ठठ्ठानगर पर चढाई करी. बन्ने वच्चे भयंकर युद्ध थयु. विमलनो विजय थयो; बभनियानरेश केद पक-

डायो अकेक हाथी–घोडा वगेरे कबजे करी, केदी बमनियानरेश साथे विमल चद्रावतीनगरीए पाछो फर्यो. चद्रावतीमा एनो अपूर्व सत्कार थयो गुर्जरनरेश भीमे छत्रचामर मोकली विमलनु सन्मान कर्यु बमनरेशे समाधाननी शरतो कबूल राखी एने मुक्त करी सिंध पाछो मोकल्यो एक दिवस विमले चद्रावतीनगरीनु निरीक्षण कर्यु अने एने नवेसरथी वसाववानी इच्छा थवाथी विवेकपूर्वक' नगरीनी रचना करी. त्यार पछी चतुर्विध सघ साथे शत्रुजय–गिरनारनी यात्रा करी, धर्मघोषसूरिने चद्रावतीनगरीमा चातुर्मास राख्या

खंड ९ : सघपतिनी पदवी मेळवी विमले धर्मघोषसूरि पासे धर्मस्थानु श्रवण शरू कर्यु. जैनधर्मनु स्वरूप, बार व्रत श्रावकना आचार विचार वगेरेनु नित्य श्रवण करवाथी विमलनु दिल द्रव्यु, अने पोते करेला पापोनु गुरु पासे प्रायश्चित्त माग्यु. गुरुए कह्यु के 'जैनमदिर बधावे तो आ पापनु प्रायश्चित्त थई शके' आथी आबु पर्वत उपर जैनतीर्थनी स्थापना करवा विमले इष्ट देवी अर्बुदानी आराधना करी अबादेवीए प्रगट थई वर मागवा कह्यु विमले अर्बुदशिखर पर तीर्थ करवानु एक वरदान अने बीजु वरदान पुत्रनु माग्यु अबादेवीए एक वरदान मागवा कह्यु आथी विमले पोतानी पत्नी 'श्री'नी सलाह लई, पुत्रने बदले तीर्थ करवानी इच्छा व्यक्त करी वच्चे वच्चे कवि अर्बुद पर्वत विशेनी पौराणिक माहिती, श्रीमाता अने रसियाडेरानी कथा, वालीनाथनी आडाई अने भरडाओनी माथामारेपणानी प्रसगकथाओ कहे छे सर्वे मुश्केलीओनु निवारण करी, वास्तुशास्त्रना सर्वे नियमोने लक्षमा लई, आरासणथी आरस मगावी, कुशळ कारीगरोने रोकी, जाते ज ध्यान राखी विमले अपूर्व एवा तीर्थनी रचना करीने स. १०८८मा धर्मघोषसूरिनी निश्रामा महोत्सवपूर्वक प्रतिमानी स्थापना करावी

चूलिका : विमलनी प्रतिष्ठा साभळीने पाचसो अगियार भाट चद्रावती नगरीए आव्या, परतु विमल चद्रावतीमा नहोतो आथी एओ निराश थया 'श्री'ना दर्शननी इच्छाथी विमलने त्या गया. 'श्री'ए ए सर्वनो भावभीनो सत्कार करी, विमल पर्वत परथी पाछा आवे त्यासुधी आग्रहपूर्वक रोकी सर्वने सतोष्या कविए आ प्रसगे भाट पासे 'नारी कहइ घर–शणगार' अने 'जिहा नारी तिहा मदिर सही'नी उक्तिने सार्थक करी बतावी छे ग्रन्थाते कविए पोतानो प्रशस्ति आपी छे

[३]

विमलप्रबंध नव खंड अने वधारानी चूलिकामा वहेंचायेलो छे कविना शब्दोमा कहीए तो एनी मूळ कृतिमा दूहा छंद कवित्त भासा मळीने कुल तेरसो छपन्न कडीओ छे [१८] आटला दीर्घ क्षेत्रे वहेता काव्यप्रवाहमा प्रसंगोनी दृष्टिए जोईए तो प्रसंगो खूब ज ओछा छे थोडापूरे वहेता प्रवाहमा प्रवास करता होईए तो सभर वहेती नदीना बन्ने कांठेना सृष्टिसौन्दर्यने धराईने निहाळवानो समय न रहे ए समजी शकाय, परंतु अत्यंत धीरे वहेता आ कथाप्रवाहने काठ कांठ विचरता मन सुतृप्त थाय एवु अनुपम सौन्दर्य निहाळवानी तक घणी थोडी मळे छे कान्हडदे-प्रबंधमा कथाप्रवाह वेगे वहेतो होवा छता जे रसास्वाद माणी शकीए छीए तेवी तृप्ति आ प्रबंधमा मूळथी मुख सुधी पर्यटन कर्या पछी अल्प प्रमाणमा अनुभवाय छे एनु एक कारण छे अने ए छे कविनी *साम्प्रदायिक दृष्टि*

विमलप्रबंध एक लांबी पद्यकृति छे ए साची वात, परंतु एमा मात्र विमलनु जीवनचरित्र—आदिथी अंत सुधीनु विमलनु जीवन अने एना जीवननी कार्यवाही वर्णनात्मक रीते आपवामा आव्या छे एटले सारांय प्रबन्धमा मुख्य पात्र तरीके विमल ज जोवा मळे छे गौण पात्रोमा 'श्री' अने 'वीरमती' जणाय छे, गुजरातनो राजा भीमदेव, सिंधु देशनो-ठठ्ठानगरनो राजा रोमनगरना सुलतानो अने एमनी बीबीओ, धर्मघोषसूरि ए पात्रोनो निर्देश करी शकाय, परंतु विमल सिवाय एवु एके पात्र नथी, जे सुरेख रीते ऊपसी आवतु होय

विमलप्रबन्ध ए विमलनु प्रशस्तिकाव्य होवा छता लावण्यसमयनो उद्देश विमलनु आदर्श जीवन श्रोताओ समक्ष रजू करवाने बदले विमलनां सुकृत्योनो आधार लई जैन धर्मनो प्रभाव वधारवानो छे, एटले समग्र रीते आ कृतिनो ध्वनि पण ए ज प्रकारनो नीकळे छे विमलनु जीवन समग्रतया कर्मवीरनु होवा छतां कविना कथनथी धर्मवीरनु ज बनी रहे छे दंडनायक तरीकेना अधिकारपदे आरूढ थया पछी विमलनी यशस्वी कारकिर्दीथी अंजाई जई, ईर्षाळुओ ज्यारे भीमदेवना कान भंभेरी विमलनो कांटो दूर करवा यत्न करे छे त्यारे विमलनी निर्भयता स्पष्ट जोई शकाय छे वीफरेला वाघने छूटो मूकी एने

१८ विप्र ((शाह), चू १०९ में जे प्रत उपरथी मूळ वाचना तैयार करी तेमा १२७३, अने क प्रतमा अने म. मुद्रित प्रतमां १२९७ कडी छे म. प्रतमांथी ५११ मद्दनी नामावलि आपती लगभग २५ गाथा ओछी करीए तो म प्रतमां पण १२७२ कडी रहे छे

वश करवा गुर्जरनरेशे आदेश आप्यो त्यारे मात्र दंडनायक तरीके ज नहि पण पृथ्वीये विशेष निर्भयता दर्शावी विमल पोतानु शौर्य दर्शावे छे मरल साथेना युद्धमा पण प्रतिस्पर्धीने महात करवानु कौशल दर्शावे छे; अने सिंधु देशना राजा उपर जीत मेळवनार तेमज रोमनगरना बार सुलतानोने पराजय आपनार विमल चंद्रावतीनगरीमा ज्यारे स्थिर थाय छे त्यारे वाचक शौर्यने बदले एनामा निर्वेद जुए छे आम कर्मवीर होवा छता जेनो आत्मा धर्मपुरुषनो छे तेवा विमलने पोतानी कृति माटे लावण्यसमये पसद करेल छे. चंद्रावतीनगरीना राजा धधूकने पाछो मित्री भीमदेव साथे समाधान करावी प्रेमपूर्वक एनी गादी पाछी अपावे छे एमा शौर्य करता पण बीजा एक विशिष्ट गुणनी आवश्यकता छे, अने ए गुण छे औदार्यनो, क्षमानो. क्षमा ए वीरनुं भूषण छे एनी प्रतीति आ कार्य परथी थई छे.

धर्मघोषसूरिना उपदेशथी आबु उपर विमलवसही जैन मदिरनी रचनानो विचार थता ए मदिर माटे त्या वर्चस धरावता ब्राह्मणो—भरडाओ जमीन आपवानी ना कहे छे आनाकानी करे छे, त्यारे पोते दंडनायकनी पदवीए होवा छता, धधूकराजनो साथे पूर्ण मैत्री होवा छता, गुर्जरनरेशनु पोताने पीठबळ होवा छता ए जमीन बळजबरीथी न लेता, समजावटथी ए जमीननु जे मूल्य होइ शके तेनाथी वधारे चूकवी जमीन प्राप्त करे छे, पोते सत्तास्थाने होवा छतां चंद्रावतीनगरीनी नवरचनामा अने विमलवसहीना बांधकाममा क्याय वेठ लीधानो इशारो सुद्धा नथी, ऊलटानु कारीगरो अने मजूरो प्रसन्न थाय ते रीते मजूरीनु मूल्य सोनैया अने रुपैयाथी चूकवाय छे ए वस्तुनी पाछळ विमलना औदार्य अहिंसक मनोवृत्ति तो तरवरे ज छे, पण एनी मानवताना पण दर्शन थाय छे अन्य रीते विचारीए तो सिंधुदेश अने रोमनगरना सुलतानो साथे युद्ध करनार विमल गुर्जरनरेश द्वारा छत्रचामरथी समान पामतो विमल, दंडनायकपदे होवा छता एक सामान्य नागरिक थईने चंद्रावतीमा रहे एमा जैन धर्मना विशिष्ट गुण समन्वयबुद्धि अने अहिंसक मनोवृत्ति ज जोवा मळे छे. ज्यारे कवि कहे छे के निमळे मठ मदिर, निशाळ, अने छये दर्शनना अभ्यासीओ माटे विश्रामस्थानको बधाव्या त्यारे धर्मसहिष्णुता पण डोकियु करी जाय छे मंत्रीश चोवीस वर्षनो भरजुवान वये, समर्थ विरोधीओ पर युद्धो द्वारा विजय मेळवी, चक्रवर्ती अशोकनी जेम जेनु हृदय अतर्युद्धे चडे अने हिंस्र मनोवृत्तिने दमी आत्मामा रममाण रहे तेनो आत्मा पार्थिव भूमिथी पर अने धर्मवीर ज होई शके ए निःशक छे. ए दृष्टिए पोतानी कृति माटे विमलनी मुख्य पात्र तरीके लावण्यसमये करेली पसदगी योग्य ज कही शकाय.

विमलनी माता—वीरमतीनु पात्र ऐतिहासिक होवानो उल्लेख मळतो नथी, एटले कविए ' वीरनी पत्नी ते वीरमती ' एम कल्पना करी नाम मूक्यु होवा संभव छे आ गौण पात्रने कविए उठाव ठीक आप्यो छे विमलना पिता वीरे दीक्षा लीधा पछी घरनी जवाबदारी वीरमती उपर ज आवी पडे छे. विमल हजु पूरो पलोटायेल नथी, विमलना उत्कर्षमां अनेकनी इतराजी छे, आथी ए पोताने पियर जई, कामधंधो करी, दु:ख वेठी विमलने उछेरे छे, एमां एनु मातृहृदय झळकी ऊठे छे, विमल- चेविशाळ पाटणना धनपतिनी पुत्री 'श्री' साथे नक्की थया पछी श्रीन सहज एवो गौरवयुक्त निर्णय ले छे के ज्यांसुधी घरनी आर्थिक स्थिति सुधरे नहि त्यांसुधी विमलने परणाववो नथी आमां मातृहृदय उपरात व्यवहारुपणु दर्शाइ आवे छे.

' श्री ' विशे कविए ओछामा ओछो उल्लेख कर्यो छे, पण ज्यां ज्यां एना विशे उल्लेख मळे छे त्यां त्यां, भले ए उल्लेख मिताक्षरी होय तोपण, एमाथी सौरभ प्रगटे छे आवा उल्लेख बे स्थळे छे विमले अंबादेवीनी आराधना करी वरदान माग्यु त्यारे अने विमलनी प्रशंसा सांभळी पांचसो उपरात भाट चद्रावतीनगरीए आव्या त्यारे ज्यारे अबादेवी बे नहि, परंतु एक वरदान—का तीर्थ, वां पुत्र—मागवानु कहे छे त्यारे विमल ' श्री 'नी सलाह ले छे 'श्री' कहे छे ' स्वामी ! पुत्र मागवाथी ससार वधशे कोई पुत्र कुलमडन होय छे, कोई कुलने कलंक उपजावनार होय छे, कोई विरल पुत्र भक्त होय छे, कोई विरल पुत्र धर्मी होय छ कोनी दीकरी अने कोनी मा ? कोना पुत्र अने कोना तात ? कृपा करी तुरत जिनप्रासादनु वचन मागो " ' श्री 'नो आ जवाब कोई पण स्त्रीसमाजने गौरव अपावे तेवो छे दरेक स्त्री पुत्रैपणायुक्त होय छे पण विवेकी श्री ' पोताने पुत्र नहि होवा छता, ए मनीषाने दबावी, एक शुभ कार्य माटे—जे कार्यथी एनी प्रसिद्धि शाश्वती बनी गई छे-प्रेरणा आपे छे बीजा प्रसगे ज्यारे भाटनो समुदाय चद्रावतीनगरी आवे छे त्यारे विमल अर्बुदगिरि उपर गयेल होय छे विमलनी गेरहाजरी सांभळी भाट लोको निराश थाय छे, पण ज्यारे एओ ' श्री 'नु स्वागत पामे छ त्यारे ' विमल सुप्रभात, श्री सुप्रभात ' एम जयकार उच्चरी ऊठे छे 'गृहिणी गृहमुच्यते'—पंडित आशाधरना ए वाक्यने ' श्री ' अक्षरश साचु करी बतावे छे स्त्री ए मात्र पत्नी ज नहि पत्नी करता पण विशेष मित्र पण थई शके छे—मित्रथी पण विशेष, ए चित्र आ आछा रेखाचित्र परथी आपणा हृदय पर अकित थई जाय छे

सामान्य रीते भीमदेव पहेलानु पात्र इतिहासमां एक आदर्श राजवीनु छे, परंतु लावण्यसमये, विमलना पात्रालेखनने विकसाववा, एने काचा काननो वर्णव्यो

छे, विमलनी शक्तिओथी मुग्ध भीमदेव विमलनु कासळ काढवा माटे बन्ने वार यत्न करी चूक्यो छे, छता चद्रावतीगमन पछी भीम-विमल वच्चेनु सौहार्द, एना तरफथी विमलने छत्रचामरनी भेट, चद्रावतीमा पण ज्यारे प्रसगको विमलने भभेरे छे त्यारे पण विमलनी भीमदेवने ज राजा तरीके स्वीकार्यानी दृढता,— आ सर्व प्रसगो कल्पनाना होवा छता, विमलनु व्यक्तित्व उपसाववा माटे घटावायेला होवा छता भीमने आदर्श राजवी तरीके केईक अशे रजू करी जाय छे

वभनिया—सिंधु देशना राजा तथा रोमनगरना सुलतानोनु पानालेखन साव पातळु अने फिरसु छे एमा एओनी नबळाईओ ज बतावबामा आवी छे, परतु सुल्तानोनी बीबीओना पात्रोमा, स्त्रीओनी महेणा-टोणा मारवानी अने टीसळवृत्तिनी लाक्षणिकताने खूबीथी रजू करी छ.

धर्मघोषसूरिना पानमा काई ज विशिष्टता नथी एक सामान्य धर्मगुरु उपदेश कई रीते आपे एनी ज एमाथी झाखी थाय छे वळी आ पात्र पण ऐतिहासिक नथी.

आम, आगळ कह्यु तेम, कविने जैन धर्मनो ज प्रभाव दर्शाववो छे एटले एने माटे विमलने मुख्य पात्र तरीके पसद करीने एनी मूर्ति माटे जरूर जणाइ त्या त्या कविए गौण पात्रो मूक्या छे, जरूर न जणात तो कदाच कवि एकला विमलना पात्रथी ज चलावी लेत जे गौण पात्रोनो आश्रय लेवामा आव्यो छे तेओनी पाछळनो आशय पण ए ज छे के विमल जेवा उदात्त पात्रने धर्मपुरुष बनाववामा ए मददगार बनी रहे 'श्रीरमती' अने 'श्री' बन्ने पात्रो ए ज रीते विमलमा सस्कारोनु सिंचन करी रह्या छे, धर्मघोषसूरि पण ए ज रीते सहायक थाय छे बाकीना जे पात्रो छे ते सगाजदर्शन कराववा पूरता ज छे.

विमलप्रबधनु काव्यनिरूपण कविए जूनी पद्धतिए, ओछामा ओछा रस अने अलंकारनो आश्रय लईने, कर्यु छ कविने एक प्रकारनी धर्मकथा लखाणथी रजू करवी छे, आथी कवि पाते पोतानी सर्व रचायेल धर्मविषयक कृतिओने नजर समक्ष राखी आ काव्यनी रचना करे छे आ कारणे सस्कृत अने प्राकृत काव्यकृतिओनु अनुकरण करवानी वृत्ति पण एमनामा सहेजे उद्भवेली जणाती नथी विमलप्रबंधनी जो सरसामणी करवी होय तो जैनेतर अने पौराणिक रचनाओनी साथे एने सरखावी शकाय, जेमा कवितातत्त्वनु आलेखन टेवानो कोई उद्देश होतो नथी, मात्र वर्णनो कथानको प्रसगो अने उपदेशथी वक्तव्य निरूपे जाय नगरादि वर्णनोमा जे काई रोचक तत्त्व जोवा मळे छे ते जैन आगम ग्रंथोमा सामान्यत आवता वर्णकोनी छाया जेवु छे जे वर्णको अने वर्णनो अपाया

छे ते पण सामान्य छे, आथी आ सर्व काव्यचमत्कृतिने पोषक बनतु नथी

लावण्यसमयनी शैली सामान्य छे क्वचित् ए चमकीली अने वेगीली बने छे त्यारे ए कविताने सार्थक करे छे कलियुगनु वर्णन, रोमनगरना सुलताननी बीबीओनु खडी बोलीमा टीसळ अने हास्यरसप्रधान सवाद आठमा खडमा बमनियाना राजा साथेना युद्धप्रसगे प्रौढ अने ओजस्वी भाषामा युद्धनु तादृश वर्णन, विजय पछी उत्साहाल्कृत वानीमा विमलनो चद्रावतीमा सत्कार, 'श्री'नु कर्णमधुर अने रसमर्या शब्दो द्वारा उपसावेलु रेखाचित्र, अने ए द्वारा समग्र नारीसमाजनी करेल परासा वगेरे गुणपक्षे होई विमलप्रबधनी एक.सारा काव्यमा गणना थई शके एम छे

विमलप्रबंधनो प्रधान रस शात रस छे, कारण के कविए आ काव्य द्वारा एक धर्मपुरुषने जीवत करेल छे सर्व आरभिकी-समारभिकी क्रियानो त्याग करी शात जीवन व्यतीत करवानो मनीषा, आत्माना विचारमा ज लीन, ए सर्व लक्षणो जैन धर्मना सिद्धातोने अनुलक्षीने छे ससारनो त्याग करीने नहि, पण ससारी-अवस्थामा रहीने पण साधुजीवन जीवी शकाय छे शौर्य अने श्रीथी युक्त विमलने नवमा खडमा अपायेल उपदेश शातरसनो ज पोषक छे. विमलनु वाघ तथा मल्ल साथेनु युद्ध बमनिया-नरेश साथेनु खूनखार युद्ध रोमनगरना सुल्तानो उपरनो विजय अने चद्रावतीनगरीनी पुनर्रचना, विमलवसहीनो माडणी,- आ सर्व कार्योमाथी विमलनु विरागयुक्त चरित्र ज ऊभु थाय छे, आथी आपणे भाव विभाव अने अनुभावो व्यक्त थता एकदम अनुभवी शकता नथी सातमा खडमा बीबीओना सवाद द्वारा उपजावेल हास्य रस अने आठमा खडमा बमनियाना राजा उपरनी चढाईना प्रसगोनो वीररस पण छेवटे शातरसना ज पोषक छे

विमलप्रबधमा आवता आलकारिक वर्णनोमा विशिष्ट चमत्कृति नथी स्त्रीओ तथा पुरुषना सामुद्रिक लक्षणो दर्शावता चोथा पाचमा खड, अने उपदेशप्रचुर नवमा खड सिवाय बाकीना खड द्वारा आ वर्णनात्मक कृति सुवाच्य बनी गेय काव्य बनी रही छे कलियुगनु वर्णन, स्त्री-पुरुषना सामुद्रिक लक्षणो वगेरेथी आ लाबो कथापट क्वचित् कटाळाजनक थई जवा छता एकदरे रोचक बनी रहे छे कथापटनो विस्तार अति लाबो थई जवाने कारणे, शरूमा कह्यु तेम, लाबी मुसाफरीए नीकळेल परिभ्राजको ऊचानीचा खाडाखूबा तेमज कदीक छुश्रासुका तो कदीक हरियाळोथी आच्छन्न एवा मार्ग उपर थईने जता जेम क्वचित् थाक लागे, हरियाळीथी मन प्रफुल्लित बने तेम लाबा वर्णनात्मक चित्रो द्वारा क्वचित् कटाळो अनुभवा छता ए वर्णनो क्यारेक अलकारोथी रोचक रीते रजू करवानी शैलीने कारणे कथापट शुष्क नथी थई जतो पण क्यारेक चित्तहर

पण बनी रहे छे. पोताना कथयितव्यने भार आपवाने कविए प्रसगोपात्त ठीक ठीक समयस्छ उपमा, उत्प्रेक्षा, दृष्टांत, रूपक, अर्थान्तरन्यास विरोधाभास, वाचकलुप्ता उपमा वगेरे अलंकारोनो उपयोग कर्यो छे (जेमके : उपमा (४-३ ६ ४२, ६,४३, ६-४४, ६-४५ ६-६२, ८-५१, ८-५७), उत्प्रेक्षा (१-५ थी ८, ५-७४), दृष्टांत (४-६५ ६-३६, ९-१५२, ६-४१ ६ ४२ ६ ४३, ६-४४ ६-४५), रूपक (चू ८०), अर्थान्तरन्यास (६-६५ ६-६६ ६ ६७), वाचकलुप्ता उपमा (९,१८९) वगेरे.

आ उपरांत काव्यमां कहेवतोनो पण कविए ठीक ठीक उपयोग कर्यो छे. कहेवतो ए वस्तुस्थितिए अर्थान्तरन्यास नामनो अलंकार छे अने सामान्य लोकोक्ति तरीके पण ओळखवामां आवे छे विमलप्रबंधमां उपयोगमां लेवायेली केटलीक कहेवतो आजे पण प्रचलित छे :

बोलइ बोलइ वाधइ राढि, काटइ काटइ वाधइ वाडि (१ ८७)
वाइना फूल बाईनइ चडइ (१.८८)
इटाले घसि लाभइ द्राम (२७)
मगण मरण समाणउ जोइ (२ ९)
अणतेडिउ जे परघरि जाइ, मान महुत नवि पामइ राय (२.११)
नाहूनउ सीह तणउ बाचडु, मोटा मयगलथी ते वडु (२ १२)
गाजवीज घण थोडा मेह (२ ६३)
एक वयरी विषवेलडी, ए विहु, त्रीजी व्याधि ।
जा[उ] उगती छेदीइ तु सिरि हुइ समाधि ॥ (४.५६)
कडुआ फल नवि लागइ अंबि, सोनइ स्यिहइ न लागइ संपि ।
माणिकि मल न बइसइ सार, सील न चूकइ विमल कुआर ॥ (४ ६५)
देखी काग कविजन इम भणइ, मेरही द्राख लींबोली विणइ (६.६१)
सिंगइ साकल कतरइ (६ ६५)
गुलइ मरइ जे मानवी तेह विस दीजइ चोम (६ ६६)
कण ओसवणता थूरा ए रहिया (७ ३३)
करता पाक रहिया कोरडु (७.३४) वगेरे

आ तथा अन्य कहेवतो अने अलंकारोथी काव्यनो विशाळ पट, अनेक चादरणाथी आकारा दीपी उठे तेम दीपी ऊठे छे

काव्यबंध

विमलप्रबंधनो काव्यबंध मुख्यत्वे 'चउपई'थी बंधायेलो छे. एमां प्रसंगे प्रसंगे दूहा, वस्तु, कलश पवाडु अने गीतोना ढाळ योजाया छे.

'बृहत् पिंगल'मां श्री. रामनारायण पाठके जणाव्युं छे ते मुजब, तेरमा शतकना आरंभमां वस्तु छंद ठीक ठीक प्रमाणमां प्रयोजायेलो जोवा मळे छे. आ छंदमां पहेली पंक्ति बे सप्तकल + एक लघु अक्षरनी, अने पछी चार चरणनो एक अर्धसम ११+१६ ए रीतनो, दरेक अर्धने छेडे बे लघु रहे ए जातनो, आ छंद छे आ छंदने रड्डा छंद पण कहे छे आमांनां विषम चरण ए दोहरानां सम चरणनो ख्याल आपे एवां होय छे. आ पछी आखो दोहरो मूकवामां आवे छे[१९] तेरमा शतका पछी जैन कविओए आ छंदनो छूटथी मुक्तक तरीके उपयोग करेलो जोवा मळे छे एमां पहेला सप्तकलना शब्दोनुं फरी आवर्तन ए वस्तु छंदनुं सूचक लक्षण बन्युं छे. ए प्रकार विमलप्रबंधमां स्वीकारवामां आव्यो छे; जेमके,

विमलइ वासी विमलइ वासी नगर सुविशाल ।
चंद्रावइ पोसाल वर, जेणि धर्म्म-थानक करावीअ ।
सात प्रासाद सोहामणा, जेणि बिंब प्रोटां भरावीअ ।
चतुर्विध श्रीसंघ मेल करि, श्रीसेत्रुजि गिरनारि ।
जात्रा करी घरि आवीआ, वधावइ नरनारि ॥ ८.११५ ॥

'ढाल-लोकीक पवाडानु' आ मथाळे विमलप्रबंधमां बे गीतो रजू थयां छे; आ बंने गीत-खंड ३-१६१ थी १७० अने खंड ६-७० थी ८८-दोहरानी देशीमां छे. खंड ६ २ थी ११ नी ढाल' अने ७-७१ थी ७८ 'राग असाउरी, ढाल वेलिनु -बने गीत चोख्खो दोहरानी ज देशी छे एमां गेयतानी दृष्टिए कोई विशिष्ट फेरफार थयेल नथी. खंड ७-७९ थी १०३ सुधीनी 'चाल' आखा सवैयानी अथवा तो चतुष्कल प्रकारनो देशी छे, जेमां आरंभनी ७९ मी ध्रुव-पंक्तिनी कडी शुद्ध चरणाकुलनी सोळ मात्रानी छे आठमा खंडमां २५ थी ४३ कडी सुधीनुं 'राग रामगिरिनुं गीत' पण सवैयानी अथवा चतुष्कल प्रकारनी देशी छे. ए ज खंडमां ६२ थी ७२ सुधीनुं 'गीत-ढाल चारणियानु'-पण उपरना जेवो ज देशी छे यात्रइ तलावडो' ए मथाळे आ ज खंडमां आवतुं ७४ थी ७६ सुधीनु गीत दोहरानो देशी छे जेमां अक्षरोनी दृष्टिए उमेरण छे; जेमके

के गोरी के सामलि (सोहावु रे)
सोवन-पाटइ बइसारु (कि विमल वधावु रे)

कौंसना शब्दो गेयतानी दृष्टिए उमेरायेला छे. नवमा खंडमां 'करि पडिक्-मणिउ ए ढाल' कडी १६० थी १६५ सुधी देशी प्रकारनी छे; ज्यारे १६१ मी कडी ध्रुवनी छे, जे खंडित दोहरो छे.

१९. बृहत् पिंगळ, पृ १७७

खड ६-९५नी छद मापानी कडी बे दोहरो ज छे, ज्यारे ६-९६ थी ९९ छद चालि ए हरिगीत छे कलश मथाळे खड ६ नी कडी १०० ए जाणीतो छप्पय छद छे, जेमा रोळा छदनी चार पक्ति अने बीजी बे पक्ति उल्लालनी छे.

आठमा खडमा ४४ थी ६१ कडी सुधीमा आवतु युद्धनु वर्णन अक्षरमेळ तोटक छदनी देशीमां छे, एने कारणे लघुगुरुनो मेळ सचवायेलो नथी.

चूलिकामा कवित्त मथाळे आपेल ३९ थी ४२ सुधीनी चार कडीओ पण छप्पय ज छे.

आम दूहा, चउपई, पवाडु, ढाल वगेरेना प्रयोगो करी लावण्यसमये विमलप्रबधमा वैविध्य साध्यु छे

[४]

गुणदृष्टिए विमलप्रबंधमा आपणने सस्कृत परिपाटीनु गुणदर्शन ओछु थाय एम होवा छता साराय काव्यने प्रमादनी दृष्टिए मूलवीए तो एने एक सुचक प्रकारनु काव्य कही शकाय; एमा अनेक प्रसगे माधुर्य, अने वीररसनी कविता आपवामा आवी छे त्या आपणने कविनी शब्दालकिओना ओजस् गुणना दर्शन थाय छे

थई छे.[२०] उपर्युक्त शिलालेख अने नेमिनाथचरितनी प्रशस्तिमांथी वनराजथी कुमारपालना समय सुधीमां थई गयेला एक प्राग्वाटकुळनो तेजस्वी इतिहास' आपणने उपलब्ध थाय छे.[२१]

नेमिनाथचरितनी प्रशस्ति मुजब "चंद्रसूरिना शिष्य हरिभद्रसूरि थया एमनाथी श्रीमालनगरमां थयेलो पोरवाड नामनो वंश हतो [२२] ए पोरवाड वंशमां लक्ष्मीथी समृद्ध ठक्कुर निन्नय नामनो पुरुष गंभूयपुरीमां जई रह्यो.[२३]एक वीजे प्रसंगे पितृबुद्धिथी वनराजे एने अणहिलपुर तेडी मगाव्यो एणे विद्याधर गच्छमां ऋषभदेवनु मंदिर बंधाव्यु [२४] एना पछी निन्नयनो पुत्र लहर नामनो दंडपति थयो ए विंध्यगिरिमां गयो अने त्यांथी अनेक हाथीओ लाव्यो त्यां अनेक राजओ उपर एणे विजय मेळव्यो [२५] लहरे संडस्थल गाममा विंध्यवासिनी देवीनी स्थापना करी, जे देवी लहर-धणुह्यावि नामे प्रसिद्ध छे.[२६] हाथीओनां दर्शनथी प्रसन्न थयेला वनराजे लहरने सडस्थळ गाम बक्षिस कर्युं.[२७] लक्ष्मी अने सरस्वतीनी जेना उपर कृपा थई छे तेवो, टंकशाळमां लक्ष्मीनी जेणे मुद्रा पाडी छे, मूलराज-चामुंड-वल्लभराजना समयमां जेणे भार उठाव्ले छे तेवो चौलुक्यकुल-तिलक दुर्लभराजना विशाळ राज्यमां अगियार सचिवोनो जेणे भार उपाडी लीधो छे तेवो 'वीर' नामनो सचिवश्रेष्ठ थयो.[२८] एनो पुत्र नेढ नामे अमात्य थयो जेना उपर भीम राजानी कृपा हती. बीजो दंडाधिप-पद पामेलो असामान्य गुणोशाळो विमल नामे पुत्र थयो "[२९]

वनराज-योगराज-क्षेमराज-भुवड-वैरसिंह-रत्नादित्य-सामतसिंह आ सात चावडा राजाओनो समय वि. स. ८०२ थी ९९८ सुधीनो गणाय. वि.

२० नेच, गाथा २३

२१. गुरा पृ. १४८. "The Praśastı or colophon which is published by Prof. Jacobı at the end of his edition of सनत्कुमारचरितम् (P. 152) ıs a very ımportant historical document as it narriates the history of an ınfluential family ın which was born the famous General Vımala.' Kāvyānvśāsana-Introduction-Shri R. C. Parikh, CIII

२२ नेच गाथा ३

२३. नेच गाथा ४

२४. नेच. गाथा ५

२५. नेच गाथा ६

२६. नेच. गाथा ७

२७. नेच. गाथा ८

२८. नेच. गाथा ९-१०

२९ नेच गाथा ११

सं. ८०२मां वनराजे अणहिलपुर पाटणनी स्थापना करी[३०] त्यारथी चावडा वंश शरू थयो: अने वि सं. ९९८ मां मूलराजे अणहिलपुर पाटणनी गादी हस्तगत करी[३१] आ एकसो छन्नु—लगभग बसो वर्षना गाळामां तेमज त्यारपछी लांबा समय सुधी प्राग्वाटकुळना वंशजोए आ बधा राजाओनी दंडनायक, सेनाधिपति के महामंत्री तरीके सेवा करेली छे. आमां आथी प्रथम उल्लेख छे 'निन्नय'नो. 'विमलप्रबंध'ना उल्लेख मुजब निन्नयना पूर्वजो गरीबाईने कारणे श्रीमालनगर छोडी गांभूयनगरमां आवी वस्या हता.[३२] आ स्थलान्तरनुं कारण निर्धनता हशे के बधु धन मेळववानी इच्छा हशे एनो स्पष्ट उल्लेख मळतो नथी; परंतु ए युक्त छे के निन्नय' 'लक्ष्मीथी समृद्ध'[३३] हतो. अने एनु कुटुंब भिन्नमालमांथी कोई कारणे पाटणनी पासे आवेला गांभूयनगरमां[३४] रह्यु हतुं.[३५] गांभूयनगरमां निन्नय सुखी अने समृद्ध हतो. वनराज एने पितातुल्य गणतो हतो; सदाचारी वडे करीने लोकोमां अग्रेसरी '[३६] निन्नय वनराजना आग्रहथी अणहिलपुर पाटण रहेवा गयो हतो. एणे ऋषभदेवनु मंदिर बधाव्यु हतु.[३७] आ निन्नयने 'समस्त प्रकारना न्यायनी विधिने जाणनार'[३८] लहर नामनो पुत्र थयो आ लहरने वनराजे दंडनायक तरीके नीम्यो हतो. एणे विंध्य प्रदेशना राजाओ पासेथी हाथीओ मेळवी —राजओनो पराजय करी ए हाथीओ वनराजने भेट धर्या हता, आथी वनराजे प्रसन्न थई लहरने संडथल गाम भेट आप्यु हतु आ गाममां लहरे विंध्यवासिनी देवीनु मंदिर बधाव्यु हतु जे मंदिर ते समये 'लहर–धणुहावि' नामे प्रसिद्ध थयुं हतु[३९]

'विमलप्रबंध'मां लहर 'वनराज पछीना चार राजओ सुधी दंडनायक' तरीके रह्यो एम उल्लेख छे. ए रीते लहर वनराज योगराज क्षेमराज भुवड अने वरसिंहना राज्यकाल दरमियान होय पछी रत्नादित्य अने सामंतसिंहना राज्यकालना समयनो उल्लेख नथी मळतो; पण मूलराजना समयमा प्राग्वाट वंशना महत्तम

---

३० प्रबन्धोमां

३१. COG p. 23

३२ विप्र. ३-१२७

३३ नेच गाथा ४

३४ मुनिश्री जयंतविजयजी 'महेसाणा पासे' आ नगर आव्यानुं लखे छे. तीर्थराज आबु : पृ ३१

३५ नेच गाथा ४

३६. आबु भाग २ : गुजराती भाषांतर पृ. २७०

३७ नेच गाथा ५

३८. आबु, भाग. २ : गुजराती भाषांतर पृ. २७१

३९. नेच. गाथा ७

६. विमल

गुजरात प्रांतनी उत्तर सरहद्दरूप आबु पर्वत उपरना सुप्रसिद्ध जैन मंदिरोथी जेनु नाम अमर थई गयु छे ते 'विमल'ना जीवनचरित्र विशे ज्यारे विचार करीए छीए त्यारे ऐतिहासिक दृष्टिए सुसंगत माहिती आपतु एवु जीवन आपणी पासे उपलब्ध नथी ए जणाव्या वगर रहेवु नथी एना कारणो पण छे अत्यार सुधी मुख्यत्वे लावण्यसमयकृत 'विमलप्रबंध'ना आधारे आ माहिती एकत्र कराई छे, अने अद्यतन जे ऐतिहासिक माहिती प्राप्त थई छे के थाय छे तेना आधारे एमां पुरवणी थती रही छे एक इतिहासकारे विमलने दंडनायक कहेल छे, बीजाए सेनाधिपति, तो त्रीजाए मंत्री[1] अथवा मंत्रीश्वर[2] 'विमलप्रबंध'मां चरितनायक 'विमल' पोते ज होई, लावण्यसमये—एना कर्ताए एने देवी अने महान पुरुष तरीके आलेखेल छे, अने 'विमल'ना जीवननी केटलीक महत्त्वनी हकीकतने एवी चमत्कृतिथी आभूषित करेल छे के ए हकीकतने क्षण माटे मानवाने चित्त इनकार करे.

सामान्यत दरेक कवि के सर्जक पोताने मान्य अथवा इष्ट अथवा आराध्य व्यक्तिनी प्रशंसा करी चरित्रवर्णन करे ए प्रकारनु 'विमलप्रबंध'मांनु विमलनुं चरित्र छे पोताने इष्ट-आराध्य मान्य व्यक्तिनु उत्कृष्टपणु दर्शाववा माटे चमत्कारनो योग ए प्राचीन तेमज मध्यकालीन युगनी एक प्रणाली हती—जोके आजे पण ए मनोवृत्ति लुप्त तो नथी थई—मानवीनो ए प्रकारनो स्वभाव ज छे आ ज रीते लावण्यसमये विमलनी निर्धनता, जमीनमांथी धननी प्राप्ति, बाणविद्यानी कुशळताथी राजा भीमनु मनोरंजन, भीम करतां पण विमलनी बढाई, वगेरे हकीकतोनु कुशळताथी श्रोताओना रंजन माटे गान कर्यु छे, परंतु ए रंजननी पाछळ, विमलनी जे महत्ता छे—जे साची महत्ता छे ते ढंकाई गई छे.

विमलना पूर्वजो

'विमलप्रबंध'मां विमलना पूर्वजो विशे आ प्रमाणे माहिती मळे छे.

---

१. गु म रा. ६ पृ २२४–२२५

२. GTC p 142

भिन्नमालमा प्राग्वाट वंशमा नीन मंत्री नामनो एक कोटयधिपति श्रेष्ठी हतो [3] ए निर्धन थता[4] गाभूनगरमा जई रह्यो [5] वनराज चावडाए वि स ८०२मा[6] एक नगर वसाव्यु[7] अने नीन मंत्रीने गाभूथी ए नगरमा बोलाव्यो [8] नीन एना पुत्र लहिर साथे आव्यो वनराजे लहिरने राजकाजमा नियुक्त करी दंडनायक कर्यो [9] लहिर विंध्याचल तरफ गयो अने हाथीओ लई आव्यो, आथी राजानो ए मानीतो थयो.[10] अने लहिरने साडस्थल बक्षिस कर्यु [11] चारे दिशामा लहिरनु मान वध्यु, टंकशाळमा सोनैया पाडया, अने पोतानी टंकशाळ करी.[12] वनराज पछी योगराज योगराज पछी रत्नादित्य [13]रत्नादित्यनो पुत्र वयरसिंह, आ चारे राजाना समय दरमियान लहिर दंडनायक रह्यो.[14]लहिरनो पुत्र 'वीर' साहसिक अने धीर हतो [15]एने वीरमती नामे पत्नी हती वीरे राजकाज-वेपार छोडी मन शुद्धिथी जीवन गाळवा माड्यु [16]आ 'धीर ने त्या' विमल'नो जन्म थयो [17]

आ ऐतिहासिक वंशावलिने तत्कालीन बे पुरावाओथी समर्थन मळे छे विमलना भाई नेढना पौत्र पृथ्वीपाले विमल-वसहीनी दसमी देरीमा पोताना दादाना दीकरा हेमरथना पुण्यसमूह माटे नेमिनाथ भगवाननी मूर्तिनी प्रतिष्ठा वि स १२०१ ना ज्येष्ठ मासमा करावी, एनी विगत आ प्रतिष्ठा समये तैयार करावायेल शिलालेखमाथी मळे छे.[18] आ शिलालेखमा विमलना पूर्वजो नीनगथी पृथ्वीपाल सुधीनी कडीबद्ध वंशावली छे एवो ज बीजो कडीबद्ध उल्लेख ए ज पृथ्वीपालनी अभ्यर्थनाथी हरिभद्रसूरिए नेमिनाथचरितनी रचना करी तेनी प्रशस्तिमाथी मळे छे [19] कुमारपाल राजाना राज्यमा अणहिलवाडनगरमा वि स १२१६ ना कार्तिक सुदि १३ ने सोमवारे आ नेमिनाथचरितनी रचना पूर्ण

३	विप्र ३-१२६	४.	विप्र. ३-१२७
५	विप्र ३-१३०	६	विप्र ३-१३२
७.	विप्र ३-१३१	८	विप्र ३-१४३
९	विप्र. ३-१४३	१०	विप्र ३-१४४
११	विप्र ३-१४५	१२	विप्र ३-१४६
१३	विप्र ३-१४७	१४	विप्र ३-१४८
१५	विप्र ३-१४९	१६.	विप्र ३-१५०
१७	विप्र ३-१६२		

१८ अर्बुद प्राचीन जैन लेखसंदोह देवकुलपाटक (देलवाडा) जैनमन्दिराणां लेखा', लेख ५१, पृ २४

१९ नेच (सनत्कुमारचरित), गाथा २२, p p. 152-155

८

पुरुष 'वीर'नो उल्लेख मळे छे. नेमिनाथ-चरित 'वीर'ने 'तसु' शब्दनो प्रयोग करी लहरना पुत्र तरीके ओळखावे छे.[४०] वि स १२०१ मां-नेमिनाथचरित लखायु ते पहेला – लखायेल शिलालेखमां पण 'उदारचरित अने श्रेष्ठ' एवा 'वीर'ने लहरना पुत्र तरीके गणावेल छे[४१] ए रीते गौरीशंकर ओझा वीरने निन्नयनो पौत्र जणावे ज छे. आ शिलालेख उपरथी किल्हॉर्न लहरने मूलराज साथे सांकळे छे अने 'वीर' तेमज 'लहर' नामने एक गणीने नेढ अने विमलने लहर'ना पुत्रो तरीके गणावे छे[४२] जर्मन विद्वान हर्मन याकोबी आ वस्तुनो स्वीकार करता नथी, अने सनत्कुमारचरितनी प्रस्तावनामां एओए आ प्राग्वाट कुळनी जे वंशावळी आपी छे तेमां निन्नय पछी लहर, अने पछी चोकडीओ मूकी वीरने गणावेल छे[४३] ऐतिहासिक दृष्टिए जोता वनराजना समयमा

४०. नेच गाथा ९-१० 'तसु पुत्तु लिच्छ-सरसइहिं-..... वीर-नामु हुउ सचिवपुंगवु।'

४१ आबु भाग ३ : पृ २७१

४२ Epigraphia Indica IX S. 151 तथा Sanatkumāracaritam Einleitung p IX
किल्हॉर्न लखे छे : "In the ink impression the first two lines of it cannot be read with any confidence, but so far as I can see, a man (निन्नय) is spoken of in them who belonged to the Shrimāla kula and was an ornament of the Prāgvata Vamśa His son was Lahada who was also some how connected with the King Mūla, and was also khown by the name Vira-mahattama Lahada had two sons The first of them was the minister Nedha and the second Vimala'

४३ Sanatkumārcaritam, Einleitung, p IX
गौरीशंकर ओझाना मत मुजब 'जो निन्नग वनराजनो समकालीन होय तो एनो प्रपौत्र विमळ एनाथी सवा बसें वर्षे थनार भीमदेव सोलंकीनो समकालीन थई शके नहि, तेथी ए तो नक्की ज थाय छे के निन्नग वनराजनो समकालीन नहतो ' 'विमलप्रबंध और विमल मंत्री–' सुधा परंतु प्रशस्ति तथा शिलालेख उपरथी हवे ए चोकस छे के निन्नय वनराजनो समकालीन हतो अने विमल भीमदेवनो, आथी ओझानु मंतव्य निर्मूल बने छे

लहर एनो दंडाधिप अने सेनाधिपति हतो. वनराज पछी पण ए उच्च पदे रह्यो हतो, परंतु ए वनराज पछी–८०२ पछी मूलराजनो राज्यकाल शरू थाय त्यांसुधी वि. स ९९८ सुधी, एटले के लगभग बसो वर्ष सुधी हयात हतो एवु मानी शकाय एम नथी वनराजनो अंतसमय अने मूलराजनु गादी पर बेसवु ए बे वच्चे आशरे एकसो पात्रीस वर्षनुं अंतर रहे छे. लहर'ने वनराजे दंडाधिप बनाव्यो ते समये एनी उमर सोळ वर्षनी गणीए तोय आ हकीकत योग्य ठरती नथी. वळी लहर' अने 'वीर' बन्नेनु आयुष साथे गणीए तोपण आ हकीकत असमवित बने छे. आथी 'वीर'ने प्राग्वाट वंशना 'लहर'नी चोथी के पाचमी पेढीए थयेल वंशज तरीके स्वीकारवो योग्य ठरशे लहर अने 'वीर' वच्चे जे समय रह्यो ते समय दरमियान आ प्राग्वाट कुळमा जे त्रणचार व्यक्तिओ थई हशे तेओ असाधारण–प्रतिभासपन्न नहि होय; अथवा एओए राज्यकारभारथी दूर रहेवानु पसंद कर्युं होय, आथी 'लहर' पछी वीर नो उल्लेख मळे छे अने 'वीर'ने 'लहर'ना पुत्र तरीके गणावायेल छे

श्री. रसिकलाल परीख आ 'वीर'ने चामुड वल्लभ अने दुर्लभना समय दरमियान मत्री तरीके जणावे छे,[४४] परंतु ए मूलराज चामुड अने दुर्लभना समय दरमियान–आ चारे राजाओना समय दरमियान राजकारोबारमा उच्च पदवीए हतो.[४५] दुर्लभराजना समयमा एणे अगियार सचिवोनो भार उठाव्यो हतो, एटले के एवो सर्व मत्रीओमा मुख्य हतो[४६] मूलराजना समयमा ए मत्री अने टकशाळनो अध्यक्ष हतो लक्ष्मीनी मुद्रावाळुं नाणु एणे पाडयु हतु शिलालेखना उल्लेख मुजब अणहिलपुर पाटणना महाराज मूलराजनी दृष्टिरूपी अमृतना झरणाथी सिंचायेलो बुद्धिशाळी दानेश्वरी, उदार–चरित अने श्रेष्ठ[४७] आ 'वीर'ने 'बुद्धिरूपी धनवाळो, धैर्यवान, महत्त्वाकांक्षी'[४८] मत्री नेढ नामनो पहेलो–मोटो पुत्र हतो; अने 'महाराज भीमदेवनो मुख्य सेनापति मत्री विमल नामनो बीजो पुत्र हतो.'[४९] आ दृष्टिए वीरनु आयुष खूब दीर्घ कही शकाय मूलराज (वि

४४ गुरा, पृ १४७

४५. नेच गाथा ९-१० तथा COG p 32 तथा
Lalchand B Gandhi . गुजरातनो प्राचीन मत्री (गुजराती)
' Aioc VI तथा Kāvyānuśasana, Introduction, CXXIX

४६ नेच गाथा ९.' गुरा पृ १४७

४७. आबु भाग २, पृ. २७१ तथा टिप्पण

४८ आबु भाग २, पृ. २७२

४९ आबु, भाग २, पृ २७२ तथा नेच गाथा ११

सं ९९८ थी १०५३),[५०] चामुड (वि० सं १०५३ थी १०६६),[५१] वल्लभ (वि. सं. १०६६)[५२] अने दुर्लभराज (वि. सं. १०६६ थी १०८०,[५३] ए चारे राजाओनो राज्यकाळ चोराशी वर्षनो गणाय 'वीर' मूलराजनी सेवा शरूआतथी स्वीकारी होय तो ए मूलराज गादीए बेठो त्यारे 'वीर'नी उमर ओछामां ओछी सोळ वर्षनी होवी जोईए; ए हिसाबे भीम ज्यारे गादीए बेसे त्यारे 'वीर'नी उंमर सो वर्षनी गणाय एनु अवसान वि. सं. १०८५मां थयु;[५४] एटले एनु कुल आयुष एकसो पांच वर्षनुं गणाय; जे मानवा जेवु नथी कारण के दुर्लभराजना समयमां तो ए कीर्तिना शिखरे हतो; एटले मूलराजना राजकाल दरमियान अधवचथी एणे राजानी सेवा स्वीकारी होय. जे वधु शक्य छे अने त्यारे एनी उमर सोळ वर्षनी होय तो एनु कुल आयुष ˆचोतेर वर्ष उपरांतनु गणी शकाय, अने आ मानी पण शकाय एम छे आ 'वीर' मन्त्रीए 'आंतर शत्रुओना समूहने [५५] जीतवा दीक्षा लीधी हती; एटले भीमदेवना समयमां शरूआतनां पांच वर्ष सुधी ए मुनिवेशे विचरतो हतो.[५६] वीरनो पहेलो पुत्र 'नेढ' भीमदेव पछी कर्णना मंत्री तरीके पण चालु रह्यो हतो,[५७] साथे साथे एनो पुत्र धवल पण कर्णना मन्त्री तरीके स्थान मेळवी शक्यो हतो.[५८] लगभग आ ज क्रम हस्तिशाळामा संगेमरमरना दस हाथीओ परना वि सं १२०४ ना भिन्न भिन्न शिलालेखो परथी जणाय छे.[५९]

१ आम, ऐतिहासिक दृष्टिए 'विमल'ना पूर्वजो दण्डनायक, सेनाधिपति, खजानची, मंत्री के महामन्त्री जेवां पदोने शोभावता हता ए हकीकत छे; अने ए सौए गुजरातना घडतरमां एक या अन्य प्रकारे पोतपोतानी रीते फाळो आप्यो छे [६०]

---

५०. COG p. 22 — ५१. COG p 34

५२ COG p. 34 — ५३ COG p 34

५४ नेच गाथा १०

'सर-वसु-दिसि-वरिसम्मि जस-सेमत्तणु पावेइ।' आबु, प्रकरण ४ : पृ ३२

५५ आबु, भाग ३ पृ २७१

५६ नेच, गाथा १० 'वीर संवत १०८५ मृत्यु पाम्यो.' जुओ टिप्पण ५४.

५७. गुरा. पृ. १४८

५८. नेच गाथा ११, गुरा पृ. १४८

५९ जैसा पृ. २११–२१२, आबु, पृ ३४२ थी ३४४ (लेख न. २३१)

६०. 'विमलप्रबन्ध और विमल मन्त्री' सुधा मासिक तथा जैसाइ. पृ. २१५

'विमलप्रबन्धनी ऐतिहासिक समालोचना' : बुद्धिप्रकाश पु ७६ अंक १, ई. स. १९२९ तथा श्वेतांबर जैन, ता. २०–१२–२८ अने ५–१–२९

बाल्यवय अने किशोरावस्था

विमलनी बाल्यवय तथा किशोरावस्था विशे कोई ऐतिहासिक उल्लेख मळतो नथी. विमलप्रबंध उपरथी जाणवा मळे छे के 'वीर'नुं लग्न गेहुडी गामनी वीरमती नामनी कन्या साथे थयु हतु [61] पछि पती पत्नी बन्ने धार्मिक विधिओमां दिवसरात आनंदपूर्वक निर्गमता हतां [62] आ वीरमतीनी कुक्षिए 'विमल'नो जन्म थयो हतो [63] ए पाच वर्षनो थयो त्यारे एने निशाळे मूकवामां आव्यो [64] अभ्यास पूरो थया पछी वीरे 'विमल'ने घरनो कारभार सोंपी दीक्षा लीधी अने पाटण छोडी विहार कर्यो [65] वीरना विहार पछी विमलना वेरीओ एनी प्रतिभाथी दाझवा लाग्या [66] आथी वीरमती पुत्रना रक्षण माटे पाटणनो त्याग करी गेहुडी गामे-विमलना मोसाळमां रहेवा गई,[67] अने संपत्ति सघळी पाटणमां रही.[68] मोसाळमा विमल घोडाने चारतो अने वछेराने वाळतो,[69] अने खेती करतो [70] ए समये पाटणमा श्रीदत्त नामनो श्रेष्ठी हतो एनी पासे पुष्कळ धन हतु एनी पुत्री 'श्री' विवाहने योग्य थई हती.[71] श्रीदत्ते 'गेहुडी' गामे जोशी मोकलीने विवाहनु कहेण मोकल्यु,[72] अने विमलनो विवाह 'श्री' साथे नक्की थयो;[73] परंतु आर्थिक स्थिति नबळी होवाने कारणे वीरमतीए मन साथे गाठ वाळी के ज्यारे धन मळशे त्यारे पुत्रने परणावीश [74] बीजे दिवसे गायो चारवा गयेल विमलने उज्जड जमीनमाथी सोनानो कलश-धन मळ्यु [75] आथी 'श्री' साथे विमलना लग्न तुरत ज थया [76] श्री'ने लई 'गेहुडी' आव्यां.[77] अने थोडा दिवस पछी सौ पाटण रहेवा गया [78] तेमज लग्न पछी छ महिना सुधी विमले काई प्रवृत्ति न करी [79]

'विमलप्रबंध'मांनी आ हकीकतने ऐतिहासिक दृष्टिए मूलवता आटलु तारवी

---

६१ विप्र ३, १५०
६२ विप्र ३–१५१
६३ विप्र ३–१८७
६४. विप्र ४–३४, ४–३८
६५ विप्र ४–५२
६६ विप्र ४–५५
६७. विप्र ४–५७
६८ विप्र ४–५८
६९ विप्र ४–६१
७० विप्र ४–८२
७१ विप्र ४–६७
७२. विप्र ४–७५
७३. विप्र ४–८३
७४ विप्र ४–८८
७५ विप्र ४–९१; ४–९२
७६ विप्र ५–८०
७७. विप्र ५–९६
७८ विप्र ५–१०३
७९ विप्र ६–१

शकाय के वीरने त्यां विमलनो जन्म थयो हतो; विमलना अभ्यास पछी एना पिता वीरे एने कारभार सोंपी दीक्षा लीधी हती; अने एनुं लग्न 'श्री' नामनी कन्या साथे थयुं हतुं. आ सिवायनी हकीकत विमलना चरित्रने बिरदाववा कविए कल्पेली जणाय छे. पिता 'वीर'नी दुर्लभराजना समयमां पूर्ण प्रतिष्ठा हती मोटो भाई 'नेढ' भीमना राज्यमां उच्च अधिकारपदे हतो; वीरे विमलने कुशळ जोया पछी, कारभार सोंपीने दीक्षा लीधी हती;[८०] आवा संयोगोमां विमलने पोतानी संपत्ति छोडीने मोसाळ जवुं पडे, त्यां गाय वछेरो घोडां चारवां पडे, खेती करवी पडे, अने गाय चारवा जतां उज्जड जमीनमांथी सोनानो कळश-धन मळे, ए विश्वसनीय जणातु नथी मळी 'वीर'नी पत्नीनुं नाम 'वीरमती' होय एवो एकाद पण उल्लेख तत्कालीन शिलालेख के लेखमां मळी आव्यो नथी. एम बनवा संभव छे के प्राचीन समयमां जैन ग्रंथकारो चरितनायकनी पत्नीनु नाम चरितनायकना नरजातिना नाम उपरथी नारी जातिमां परिवर्तित करी देता,[८१] ए ज रीते 'वीर'नी पत्नीनुं नाम 'वीरनी पत्नी वीरमती' एवुं लावण्यसमये के एनी अगाउना ग्रंथकारे प्रचलित कर्युं होय.

लावण्यसमये ए समयनी सामाजिक परिस्थितिनो उल्लेख करतां जणाव्युं छे के बाळक पांच वर्षनुं थाय त्यांसुधी एनुं लालनपालन करवुं वीशे दस वर्ष सुधी एने विद्याभ्यास कराववो, अने सोळमा वर्षे एने मित्र समान गणी व्यवहारमां नाखवो.[८२] विमलना पिता वीरे दुर्लभराजना अवसान पछी तरत दीक्षा लीधी होय तो वि. सं. १०८०मां भीमदेवे गादीए बेसी विमलने दंडनायक बनाव्यो त्यारे विमलनी उंमर सोळथी अढार वर्षनी होवी जोईए; एटले के विमलनो जन्म चामुंडना राज्यकाळ दरमियान (वि सं १०५३ थी १०६६) थयो होवो जोईए; अने एने भणावीगणावी कुशळ कर्या पछी, तेमज एना मोटा भाई नेढने उच्च स्थाने जोया पछी, वि. सं. १०८०मां वीरे आ संसारनो त्याग करी दीक्षा स्वीकारी होय.

दंडनायक

विमलप्रबंधना उल्लेख मुजब, विमल पाटणमां आगमन पछी थोडा दिवसमां धर्मघोषसूरि नामना जैन आचार्य अर्बुदगिरि पासे थई[८३] अणहिलपुर पाटण आव्या.[८४] अर्बुदगिरिमां एक पण जैन मंदिर न जोवाथी[८५] विमलने

८० नेच गाथा ९-१०

८१. जैन कथाओमां आ सामान्य छे.

८२ विप्र ४-३०

८३. विप्र ६-२

८४. विप्र ६-६

८५. विप्र ६-३

एओए ए स्थळे जैनमंदिर स्थापवा उपदेश आप्यो,[८६] परंतु एटलु धन पोतानी पासे नहि होवाथी विमळे पोतानी अशक्ति दर्शावी,[८७] छता ए सूरिसाथे आरासणनी यात्रा करी,[८८] अने एना मनमा महत्त्वाकांक्षा जागी के लहिर-वीरनी साथे पोते ऊभी शके एम छे[८९] आथी अणहिलपुर पाटण पाछा आव्या पछी, नगरनी बहार जई, भीमदेवने पोतानु बाणकौशल दर्शाव्यु[९०] भीमदेवे प्रसन्न थई एने पाचसो घोडाना दळनो उपरी दडनायक बनाव्यो[९१] विमलनो चढती कळाथी बळी रहेलाओए भीमदेवना कान भमेर्या[९२] भीमदेवे आ कानफूसीथी उश्केराई विमलनु युद्ध जोयु[९३] विमलनो प्राण लेवा वाघ छोडयो पण विमळे एने वश कर्यो,[९४] मल्लनी साथे हरीफाईमा उतार्यो, परंतु मल्लनो पण पराजय कर्यो[९५] भीमदेवे अकळाईने विमल पासे बापदादाना समयनु मोटु छप्पन कोडि टकानु लेणु काढयु,[९६] विमळे अकळाईने पाटणनो त्याग कर्यो,[९७] चद्रावती पहोंची एनी गादी पर बेठो[९८]

आ हकीकतमा धर्मघोषसूरिनो उपदेश, ईर्षाळुओनी उश्करणीथी भीमदेवनी विमलना गृहे जई विमलनी संपत्तिनी चकासणी, एनाथी अकळाई 'शरन बदले गोळथी विमलनो नाश करवा'[९९] वाघने छूटो मूकवो, मल्लना बळनी हरीफाई करावची वगेरे वातने ऐतिहासिक समर्थन नथी अगाउ बहु तेम जैन के जैनेतर ग्रंथकारो पोतानी इष्ट व्यक्तिना चरित्रनु वर्णन करता आवी चमत्कृति ओथी एना जीवनने सभर करी दे छे, अने ए पछीना चरितकारो पण आ के आवी ज चमत्कृतिने अनुसरी लोकोनु चित्ताकर्षण करवा सजाग रहे छे[१००] आम करवा जता घणी वार ऐतिहासिक हकीकत पण ढकाई जाय छे छप्पन कोडि टकानु लेणु काढवु ए पण मान्यामा आवे एवी हकीकत नथी ऐतिहासिक

---

८६. विप्र ६–७ ८७ विप्र ६–८ ८८ विप्र ६–९
८९ विप्र ६–१३ ९० विप्र ६–१४
९१ विप्र ६–३८ ९२ विप्र ६–३५ थी ६–३९
९३ विप्र ६–५९ ९४ विप्र ६–८४
९५ विप्र ६–१०० ९६ विप्र ७–२ तथा ७–६
९७ विप्र ७–१७ ९८ विप्र ७–२०
९९ विप्र ६–६६
१०० विमलप्रबध और विमलशाह-गौरीशंकर ओझा- विमलप्रबंध'नी ऐतिहासिक समालोचना-गुजराती अनुवाद बुद्धिप्रकाश पुस्तक ७६–अक १, ई. स १९२९

दृष्टिए चकासणी करी जोतां आ माहितीमांथी एटलुं सत्य तारवी शकाय के भीमदेवे विमलने दंडनायक-सेनापति बनाव्यो हतो, [१०१] अगाउ जणाव्या मुजब पिता 'वीर'नी लांबा समय सुधीनी राज्यनी सेवा भीमदेवनी नजर सामे हती; वळी 'वीरे' दीक्षा लेतां पहेलां भीमदेवने सुचवी उमरलायक थयेल 'विमल'ने दंडनायकनी पदवी केम सुपरत न करी होय? वधुमां 'विमल'नो मोटो भाई 'नेढ' पण, जे उल्लेखो मळे छे[१०२] तेनी गणतरीए, भीमदेवना मानीता मंत्रीओमांनो एक हतो. आम प्राग्वाट वशनी परंपरा लक्षमां लेतां भीमदेवे विमलने एनी किशोरवये-लगभग सोळथी अढार वर्षनी वये दडनायकनी जवाबदारी सोंपी हती ए शक्य छे

विमल चंद्रावती गयो हतो, एने चद्रावतीनो दडनायक नीमवामां आव्यो हतो, ए पण ऐतिहासिक हकीकत छे; परंतु लावण्यसमय जे रीते एनी रजूआत करे छे ते रीते भीमदेवथी रिसाईने नहि, पण भीमदेवे पोते ज विमलने चंद्रावती नगरीना परमार राजा धधूकने वश करवा मोकल्यो हतो. एटले चद्रावती-नगरीमा विमलनुं जवु, त्यांथी रोमनगर परनी चडाई, ठठ्ठाना-सिंधना बभणिया राजा उपरनी जीत, ए हकीकतो आपवामां लावण्यसमये समयना क्रमनी ऊलटा-सूलटी करी छे. वस्तुतः ऐतिहासिक दृष्टिए जोता विमले दडनायकनी पदवी स्वीकार्या पछी, अने एणे चंद्रावतीना राजा धधूक पर विजय मेळव्यो ते समय सुधीमां नीचेना क्रमे प्रसंगो बन्या लागे छे :

भीमदेव वि स १०८० मां गादीए बेठो वि. स. १०८१मां महमूद गझनीए सोमनाथ पर चडाई करी, अने ए ज वर्षमां ए गझनी पाछो फर्यो; ए दृष्टिए 'विमलप्रबध'मा जणावेला विमलना मुख्य जीवनप्रसंगोनो क्रम आ प्रमाणे गोठवी शकाय : वि. स. १०८० मां दडनायक तरीके निमणूक, वि. स. १०८१ मा महमूद गझनी साथेना युद्धना प्रसंग, त्यारबाद सिंध अने रोमनगर उपरनी चडाई अने चद्रावतीनगरी उपरनी जीत.

'सिंध' देश परनी जीत

विमलप्रबधना आठमा खंडमा बभणियाना—ठठ्ठानगरना राजा उपरनी चडाई,[१०२] ठठ्ठाना राजा साथेनु भयकर युद्ध अने एनु वर्णन,[१०३] विमळे एमां

१०१. विनिवु पुस्तक ७६-अंक १, ई स. १९२९
१०२. नेच गाथा ११
१०२. विप्र ८–१८ १०३. विप्र ८–२४

मेळवेली जीत, वगेरे हकीकत आपेली छे.[१०४] खंडना अंतभागमां लावण्यसमय कहे छे के 'छप्पन कोटि धन अने ऋण लाख अश्वो दंड तरीके लई, विमले पोतानी आण मनावी; ए प्रदेश (ठठ्ठानरेशने) पाछो सोंप्यो, अने नगरनरेशे (ठठ्ठाना नरेशे) विमलनो सत्कार कर्यो.'[१०५] त्यारपछी 'पडियो राजा' (ठठ्ठा-नरेश) हमेशां विमलनी आण मानवा लाग्यो अने दर साल एना तरफथी विमलने खिजमत मळवा लागी.'[१०६]

आ ठठ्ठानगर-वमनिया विशे खंडनी शरूआतमां उल्लेख करतां कर्ता कहे छे के 'आ पडियो राजा पश्चिमनो धणी छे'[१०७] अने विमलनी सवारीनुं वर्णन करतां वर्णवे छे के, 'लावलश्कर लई विमले मुसाफरी शरू करी, सिंधु देश उपर पोतानो रोष उतार्यो, ए प्रदेश वमणियाना राजानो छे.'[१०८] आनो अर्थ ए के विमले सिंधु देशमां आवेला वमणिया-ठठ्ठानगरना राजा उपर चढाई करीने जीत मेळवी हती.

आचार्य हेमचंद्र सिंधना राजा हम्मुक उपर भीमे विजय मेळव्यो हतो एनो उल्लेख 'द्वयाश्रय'मां कर्यो छे.[१०९] आचार्य हेमचंद्रना कथन मुजब 'भीमना वे चरोए एनी (भीम) पासे हाजर थई पोताना पर्यटननी माहिती आपतां[११०] कह्युं के 'भूमि उपर अति फुलाई गयेला सिंधुपति अने चेदिराज ईर्ष्याथी आपना यशने क्षीण करे छे, अपयश आपे छे, आपना गुणोनो अपकर्ष करे छे, ने आपने दोष आरोपे छे.[१११] सिंधुपतिए आपने (भीमने) हणवानी इच्छावाळा सुभटो पोष्या छे[११२] आ सिंधुपतिए शिवशाणपतिने हरावेल छे;[११३] तेमज चीन अने बर्बरराजने पराजय आप्यो छे.'[११४] पोताना दूतो-चर पुरुषो द्वारा सिंधुराजनी आ कथा सांभळी भीमदेव, 'शत्रुगणने दीर्घ निद्रामां सुवाडवानी इच्छावाळी तरवार हाथमां लई, बधी हकीकत मंत्रीओने निवेदन करी, केतु थकी गगनने छाई देतु सैन्य आगळ करी[११५] सिंधु नदी सुधी पहोंच्यो.[११६] सिंधु

१०४. विप्र ८-६१ १०५. विप्र ८-८१
१०६. विप्र ८-८२ १०७. विप्र ८-३
१०८. विप्र ८-६
१०९. द्वयाश्रय ८-४० थी १२५ ११०. द्वयाश्रय ८-४०
१११. द्वयाश्रय ८-५२ ११२. द्वयाश्रय ८-५३
११३. द्वयाश्रय ८-५४ ११४. द्वयाश्रय ८-५८
११५. द्वयाश्रय ८-७३ ११६. द्वयाश्रय ८-७४

नदी महासागर गमी होई भीमे एना पर सेतु बांधवानी आज्ञा करी.[११७] सैन्ये शिला अने वृक्षोना समूहथी सिंधु नदी पर सेतु बांध्यो,[११८] अने एना परथी भीमनी आखी सेना पसार थई तोपण ए सेतुनो एक सांधो पण हाल्यो नहि.[११९] भीमना सैन्यने सिंधु नदी पार करेल जोई सिंधुनो राजा हम्मुक रणभूमि पर आव्यो.[१२०] भीम अने हम्मुक वच्चे घोर युद्ध थयु;[१२१] छेवटे सिंधुराज बळहीन थई गयो अने भीम पासे पोतानां यश अने प्राण मागतो बेडीमां पडी बांको थई गयो;[१२२] अर्थात् भीमने शरणे आव्यो.[१२३] आचार्य हेमचंद्र 'सिद्ध-हेम'नी शरूआतमां पण भीमना सिंध उपरना विजयनी प्रशस्ति करी छे.[१२४] मेरुतुंगाचार्ये पण सिंध उपरना भीमना विजयनी नोंध लीधी छे.[१२५] जिनहर्ष 'वस्तुपालचरित'मां नोंधे छे के 'सिंधुराजना दारुण युद्धमां भीमने मोटी सहाय आपी हती.' (प्रस्ताव ८) सिंध उपरना आ ज विजयनी नोंध लावण्यसमये विमलप्रबंधमां द्व्याश्रयकारनी माफक पोतानी रीते विस्तारथी आपी छे, परंतु आ विजयनी वरमाळा विमलने आरोपी छे.[१२६]

आ ऐतिहासिक हकीकत संबंधमां गौरीशंकर ओझा पोताना एक लेखमां जणावे छे के 'ठठ्ठाना ब्राह्मण राजा उपर विमलनी सवारी अने एने कैद करयो वगेरे वातो विश्वसनीय नथी. सिंध उपरथी ब्राह्मणोनो अमल केटलांए सैकां थयां जतो रही मुसलमानोनो अमल चालु थयेलो हतो.'[१२७] वळी ए ज विद्वान

११७. द्व्याश्रय ८–९१ ११८ द्व्याश्रय ८–१०९
११९ द्व्याश्रय ९–११२ १२० द्व्याश्रय ८–११६
१२१. द्व्याश्रय ८–११७ थी १२२ १२२ द्व्याश्रय ८–१२३
१२४. Introduction to सिद्धहेम p. 76

कर्णं च सिंधुराजं च निर्जित्य युधि दुर्जयम् ।
श्रीभीमेनाधुना चक्रे महाभारतमन्यथा ॥

१२५. प्रबंधचिंतामणि तथा GTG p. 141–142. 'गुजरातनो प्राचीन इतिहास' रा. ब. गोविंदभाई पटेल : 'भीमदेवे ठठ्ठाना राजा उपर जीत मेळवी हती.' 'कर्णना पिता भीमदेवे पण हम्मुकने सिंधु नदी पर सेतु बांधीने हराव्यो हतो.' स्व. रामलाल चुनीलाल मोदी लेख-संग्रह, पृ. ५५
१२६. विप्र खंड ८
१२७. विओवि : तथा बुद्धिप्रकाश–जान्युआरी १९२९

'सिरोही राज्य का इतिहास'मां कहे छे के भीमदेवे सिन्धुना राजा हम्मुक (?) पर चढाई करी एने पराजय आप्यो.'[१२८] आ कथनमां 'हम्मुक'ना नाम सामे प्रश्नचिह्न मूकी 'हम्मुक' नाम विशे शंका उठावी छे. दुर्गाशंकर शास्त्री आ वातने कविनी कल्पना गणे छे[१२९] अने वधुमां उमेरे छे के हम्मुक मुसल्मान हतो[१३०] एटले एओ पण गौरीशंकर ओझाना मतने पुष्टि आपे छे. एक वात चोक्कस छे के भीमे सिंध उपर चढाई करी हती; परंतु शंका ए रहे छे के हम्मुक ए मुस्लिम हतो के हिंदु!

'गुजरातना चौलुक्यो मां ए के मजुमदारे हम्मुक विशे गवेषणा करी छे भीमे पराजित करेल हम्मुक ए सिंधु देशनो राजा हतो[१३१] हम्मुक साथेना युद्धनु वर्णन करतां आचार्य हेमचंद्रे 'संधव' शब्दप्रयोग पण करेल छे[१३२] आ संधवोनो कच्छको साथे पण गाढो संबंध हतो आचार्य हेमचंद्रना कथन मुजब सिंधना रहीशो अने कच्छना रहीशो पाडोशीओ हता 'कच्छवासीओ कच्छना प्रसिद्ध घन्दोने साथे तणाता अने सिंधु देशना वासीओ ए देशना उत्तम घोडा उपर जता परस्परने अथडावा छतां परस्पर गुस्से थता नथी'[१३३] थोडा समय उपर पोरबंदरथी बर्डा पर्वतमां ईशानखूणे आवेल घूमलीमांथी मळी आवेल उत्कीर्ण लेखो परथी ए जाणवा मळे छे के 'संधव वंशना स्थापक जयद्रथ (महाभारतनो जयद्रथ)ना वंशजो संधवो पश्चिम सौराष्ट्रमां घूमलीमां राज्य करता हता'[१३४] जो द्वयाश्रयना जणाव्या मुजब कच्छना रहीशो अने संधवो पाडोशीओ होय तो संधव हम्मुकने संधवनरेश तरीके स्वीकारी शकाय, वळी हम्मुक विशेषनाम मुस्लिम राज्यकर्ताना नामनो भ्रम पेदा करे तेवु छे, पण वस्तुत एम नथी. संधव वंशमां अन्य राजाओनां जे बीजा नामो मळे छे तेवु आ 'हम्मुक' नाम छे, जेमके राणक जैक, अग्गुक 'अग्गुक' नाम संधव वंशना त्रण राजाओए

१२८. सिरोही राज्यका इतिहास, पृ. १३४-१३५

१२९. गुमराइ पृ २१५-२१६

१३०. गुमराइ पृ २०६

१३१ COG p 49

१३२. द्वयाश्रय

१३३. द्वयाश्रय १६-३१ । न काच्छके सैन्धवके विमर्दे न काच्छका सैन्धव-केष्वकुप्यन्। तै सैन्धवैर्वाजिभिरुक्षभिश्च काच्छैस्तदा सयमिता व्रजन्त ॥

१३४. Six Coppr Plates: Ed by A. S ALTEKAR, EL XXVI, p 18-5226

धारण करेल छे. सैंधवनो छेल्लो उल्लेख ई स ९१९ नो (वि. स. ९७५) नो मळे छे आथी ए वातने समर्थन मळे छे के सैंधव वश (सिंधमां पण) चालु रह्यो होय अने हम्मुक हिंदु राजा तरीके सिंधमा राज्य करतो होय [१३५] जो आ हकीकत स्वीकारवामां आवे तो ब्राह्मणो साथे संबंध धरावता नगरनो ए राजा होवाने कारणे 'सिंध परथी ब्राह्मणोनो अमल केटलाय सैका थया जतो रही मुसलमानोनो अमल चालु थयो हतो' ए गौरीशंकर ओझानु मतव्य ट्की शके एम नथी [१३६] वळी विमलप्रबंध परथी एक वस्तु स्पष्ट तरी आवे छे : खड सातमामा वर्ताए रोमनगरना मुलतानोनी माहिती 'खडी बोली' मां रज करी 'मुस्लिम संस्कृति' ऊभी करवा सभान यत्न कर्यो छे, ज्यारे खड आठमामा हिंदु राजा साथेनु युद्ध होय ए रीते सिंधु परनी चढाईनु वर्णन छे

विमलप्रबंधमां जणावेल 'बम्भणिया' अथवा ठठ्ठानगर अने द्वयाश्रयमां उल्लेखायेल सिंधु देशनी राजधानी (?) ए बन्ने एक ज नगर हशे के अलग अलग ए प्रश्न पण एटलो ज महत्त्वनो छे द्वयाश्रयकारे भीमे सिंधु देशना नगर पर हल्लो कर्यो अने सेतु बांधी सिंधु नदीने ओळगी एटली ज माहिती आपेली छे, ज्यारे लावण्यसमय ठठ्ठाना 'बंभणिया-पढीआ' राजाने जीत्यो एम कहे छे [१३७] दलपतराम कविए 'बुद्धिप्रकाश'मा 'ब्राह्मणावाद' नी माहिती आपी छे [१३८] आ ब्राह्मणाबाद ते 'बंभणिया' केम न होय ! सिंधमां एक समये ब्राह्मणोनु वर्चस हतु लगभग ई स ९०० मां थयेल देवळे 'देवलस्मृति' सिंधमा-सिंधनी राजधानीमा रहीने लखी हती [१३९] ए दृष्टिए ब्राह्मणोनु वर्चस अगियारमी सदीमा पण होवु जोईए; आ कारणे ए नगर 'ब्राह्मणाबाद' तरीके प्रसिद्ध होय ब्राह्मण'नु अपभ्रंश 'बंभणिआ' थई शके, आथी ब्राह्मणाबाद' अने बंभणिआ' एक होवा संभव छे ब्राह्मणाबाद विशे ए. के मजुमदार जणावे छे के हैद्राबाद सिंधना ईशान खूणामां ब्राह्मणाबाद नामे एक प्राचीन नगर हतु अने एना अवशेषो पर मनसूर नामनु नगर ऊभु थयु हतु [१४०] आ उपरथी एम कही

१३५ COG p 49 and notes 48 to 51, p 536

१३६ विऔवि

१३७. विप्र (व्यास) • प्रस्तावना पृ ६९

१३८ बुद्धिप्रकाश पुस्तक १५ • लेख 'ब्राह्मणावाद'

१३९ सिन्धुतीरे सुखासीन देवल मुनिसत्तमम् । देवल-स्मृति १

१४० COG Notes V-32, p 435 & TABAKĀT-I-NĀSIRI I 82 E & D, II 474-475 • Mansur stood on the old site of Brāhmanābād about 43 miles north-east of Hyderabad-Sind

दाकाय के 'ब्राह्मणाबाद' ए नामनु मूल प्राचीन होवु जोईए महमूद गझनी सोमनाथनो ध्वस करीने स्वदेश पाछो फर्यो त्यारे आ 'मनसूर' थईने पाछो फर्यो हतो[१४१] एनो अर्थ ए थयो के ब्राह्मणाबाद-बमणिया-ठट्ठा-मनसूर ए एक ज नगरनां नामो छे

हवे प्रश्न ए थाय छे के भीमे सिंध उपर चढाई करी छे अने हम्मुकने पराजय आप्यो छे ए क्यारे आ विशे कोई ऐतिहासिक उल्लेख उपलब्ध नथी परंतु प्राप्त माहिती परथी आ जीतनो समय नक्की थई शके छे. ए के. मजुमदार 'गुजरातना चौलुक्यो'मां कहे छे ते मुजब, 'सुलतान महमूदनी विदाय पछी तरत ज संभवतः भीमे सिंधुराजनो पराजय कर्यो होय '[१४२] आ अनुमानमा तथ्य छे, कारण के सोमनाथथी पाछा फरी रहेला सुल्तान महमूदनो पीछो पकडवा माटे भीम सिंधु देश सुधी गयो होय मुसलमान इतिहासकारो आ बाबतमा मौन सेवे छे मात्र एटलु कहे छे के महमूद पाछो फरता 'भट' लोकोए एने हेरान कर्यो हतो[१४३]

ज्यारे सुलतान महमूदनो उल्लेख लईए छीए त्यारे 'सोमनाथनी चढाई'नो पूर्व इतिहास जाणी लेवानी जरूर रहे छ सुलतान महमूदे कोईने पण जाण न थाय ए रीते ई. स १०२५ (वि स १०८१) नी १८ मी ऑक्टोबरे गझनीथी प्रयाण कर्युं[१४४] ९ मी नवेम्बरे ए सुलतान पहोंच्यो अने २६ मी नवेम्बरे गुजरात (वि स १०८१) जवा नीकळयो[१४५] सोमनाथ सुधी कोई पण राजाए विशिष्ट रीते सामनो कर्यो जणातो नथी सुलतानथी

१४१. COG p 47 After suffering terrible priventions Mahmud was able to extricate his army from the peril and reached Mensura

१४२ COG p 48

१४३ The Life and Times of Sultan Mahmud of Gazna *Nazim M Cambridge 1931, p 117 (F N 2)* तथा SOMNATH THE EATERNAL, p 26

१४४. ELIOT II, p 249 SOMNATH THE ENTERNAL, p 25 तथा COG P 44
मध्ययुगीन भारत (मराठी ऐतिहासिक ग्रंथ: श्री चिंतामणि वैद्य) भाग ३, पृ १३३-१३८, गुमराह पृ २००

१४५. COG p 43-45

त्रणसो माईलनु रण बटावी बिकानेर–जेसलमेरने रस्ते ए अजमेर आव्यो[१४६]. रस्तामां एणे लोद्रवा लूंटयु.[१४७] अजमेरना राजाए आ आक्रमण आवतुं जाणीने गुजरातना राजानी सहाय मागी, पण ए मळी नहि [१४८] अजमेर अने आबुनी वच्चेना नाना राजाओए नजराणा आपी पोतानो बचाव कर्यो.[१४९] चद्रावतीने भांगु [१५०] अणहिलवाड खाली थई गयुं हतु एटले त्यां थई[१५१] नजीक आवेला मोढेरा स्थळे पहोंची, भीमना सैन्यनो पराजय करी[१५२] सोमनाथ पहोंची गयो;[१५३] त्यांथी विजय मेळवी वळतां कथकोट (कच्छनी सरहदे), सिंध-मनसूर, मुल्तान थई गझनी[१५४] पाछो फर्यो.[१५५]

१४६. सोमनाथ पृ. ८४
१४७. COG p. 43
१४८. सोमनाथ पृ. ८४
१४९. सोमनाथ पृ. ८४
१५०. जुओ नोंध १५३ तथा जैन साहित्य संशोधक खंड ३, अंक १, पृ. २५२, २५३; 'महमूद गजनवी अने सोरठना सोमनाथ' : मुनिश्री *जिनविजयजीनो लेख*
१५१. COG p. 45
१५२. COG p 45
१५३. भजेविणु सिरिमालदेसु अनु अणहिलवाडउ,
चड्डावलि सोरट्ठ भग्गु पुणु देवलवाडउ,
सोमेसरु सो तहि भग्गु जणमण–आणदणु,
भग्गु न सिरि सचउरि वीरु सिद्धत्थह नंदणु ॥ ३ ॥
महाकवि धनपाल-कृत सत्यपुरीय-श्रीमहावीर, उत्साह, जैन साहित्य संशोधक, खंड १, अंक ३, पृ. २४१
१५४. COG p. 46–48
१५५. जैन साहित्य संशोधक : खंड ३ : अक ३, पृ. २५७ : तथा विविध तीर्थकल्प पृ २९. मुनिश्री जिनविजयजी कहे छे : "अमारी कल्पना छे के महमद सोमनाथ सर करी, कच्छमा थईने सिंधु प्रांतमां नहि गयो हशे, पण ते कच्छनु नानु रण कहेवाय छे तेने कांठे कांठे वागड पासेना प्रदेशमा थई साचोर थईने पछी मुलतान तरफ गयो हशे. मार्गमां जतां जतां साचोरना महावीरने लूटवानु तेनु मन थयु हशे, पण ते कारणथी ते तेमां भग्नमनोरथ थयो छतां जलदीथी त्यांथी कूच करी गयो हशे.'

जे झडपथी सुल्तान महमूद गुजरात-सोमनाथ पर चढी आव्यो ते जोतां भीमने आ चडाई अंगेनी वहेली माहिती मळवी जोइए ते गळी जणाती नथी. वि सं १०८० मा ए गादीए बेठो, अने वि स १०८१ मा आ हल्लो आव्यो एटले सुलतान महमूदना सामनानी ए तैयारी करी शक्यो जणातो नथी. ज्यारे एने समाचार मळ्या हशे त्यारे एणे एम मान्यु होवानो संभव छे के मुल्तानथी गुजरात सुधी पहोंचता लांबो रस्तो कापवानो वच्चे मोटु रण, अने वच्चे जुदा जुदा प्रदेशोना राजाओनो सामनो-ए मुश्केलीओ दूर करता समय वीती जशे, अने सुलतान पाछो जशे परंतु धन्यु एनाथी ऊधु ज आथी अणहिलपुरने तद्दन खाली करी भीम बीजे स्थळे जतो रह्यो अने सुल्तान महमूद सोमनाथथी पाछो फरे त्यारे व्याज साथे वळतर लेवानी तैयारी शरू करी

मुनशीना मतव्य मुजब, राजधानीमांथी दूर गया पछी भीमे जुदा जुदा राजाओनो सहाय लई सयुक्त लश्कर तैयार करी सौराष्ट्रमां सुलताननो सामनो करवानी तैयारी करी [१५६] रत्नमणिरावना कथन मुजब सोमनाथनी बहार 'भीमदेव साथे खूनखार लडाई थई तेमा बन्ने पक्षे मोटी खुवारी थई अने भीमदेव हारीने नाठो.' [१५७] आ बन्ने वात कल्पनायुक्त जणाय छे, कारण के जो भीमदेव शाकभरी, मेदपाट, नड्डूल अने माळवानां लश्करोनी सहाय मेळवी शक्यो होत [१५८] तो सुलतान महमूदने सोमनाथ पहोंचता अनेक मुश्केलीओनो सामनो करवो पडत, कदाच ए त्यां पहोंची ज न शक्यो होत वळी सुल्तान महमूद सोमनाथमां विशेष रोकायो पण नथी, एटले बीजी रीते विचारीए तो सुलताननें हरावबा माटे भीम पासे सैन्य एकत्र करवा जेटलो समय पण रह्यो नथी आथी ए. के. मजुमदारना मतव्यने समर्थन मळे छे के मोढेरामा पराजय

वस्तुत धनपाल कविए सुलतान महमूद कये मार्गे पाछो फर्यो एनो उल्लेख 'श्रीमहावीरउत्साह'मा कर्यो नथी, सुलतान महमूदे आ चढाईमा शु शु कर्यु एनो ज उल्लेख ए नाना काव्यमा छे 'श्रीमाळ-भिल्लमाळने अने लोद्रवाने भाग्यु, अणहिलवाड-पाटणने भाग्यु, चद्रावती, सोरठ, सोमेश्वर वगेरेनो पण भग कर्यो, परंतु 'साचोर'ने काई कर्यु नहि' एनो अर्थ एम पण थई शके के उतावळे निर्धारित स्थळे पहोंचवानु होई महमूदे साचोरने एक बाजु 'अलग' रहेवा दीधु होय – कदाच एना ध्यान बहार ज ए रह्यु होय

१५६. Somanatha The Eaternal p 27

१५७ सोमनाथ, पृ ८७

१५८. Somanatha The Eaternal, p 25

मळ्या पछो, सोमनाथमा सामनो करवानी भीमनी शक्ति न रही होय. कदाच ए पोताना लश्करनो मोटो भाग जेसलमेर तरफ लई गयो होय [159] अने सुलतान महमूद जे रस्ते थईने आव्यो ते ज रस्ते पाछो फरशे एम विचारी जेसलमेर तरफ एने पराजय आपवा व्यूह रच्यो होय साथे साथे कथकोट (कच्छनी सरहदे)मां पण अहहिल ढना दंडनायकनी देखरेख नीचे सैन्य राख्यु हशे [160] जेथी सुल्तान पाछो फरे त्यारे पाछळथी हल्लो थई शके सुलतान

१५९. COG p. 46, गुजरातनो इतिहास, पृ २६९ 'राजा भीमदेव अने अजमेर वगेरे जगाना राजाओ एकसाथे दृढ शातिथी महमूदना पाछा फरवानी राह जोता हता; जेथी करीने एक वखत फरीथी किस्मत अजमावी जुए परतु महमूदने ए ठीक लाग्युं नहि. महमूदनी फोज आम पण थोडी ज रही गई हती. ने वळी हारी जाय तो लूटनो माल हाथथी जतो रहे एवो पण डर हतो आ लोको एम ने एम राह जोता रह्या ने महमूद सिंध पहोंची गयो" –अबुझफर नदवी

१६० COG p 47

"Moreover it has been already shown that the *Param Deva of the Muslim historians was undoubtedly* Bhima, and he was at that time busy preparing his *attack on the retreating Muslim army*; hence he could not possibly have been confined in any fortress. Therefore, the real facts seem to be related by KHOND MIR when he states that after the victory of Somnath, Mahmud 'reduced a fort in which Governor of Naharwālā had taken refuge'

वळी जुओ : Habibu-siyar by KHOND MIR (A. D. 1921) Sultan Mahmud after his glorious victory (Somnāth) reduced a fort in which the Governor of Naharwālā had taken refuge (E & D IV. 183)

Kitab-Zain-UL-Akhbarना कथन मुजब परमार हिंदुओनो राजा रस्तामा आडो ऊभो हतो; आथी महमूदने लाग्यु के सोमनाथनी जीत पराजयमां परिणमे छे. तेथी मनसूरा भई आगळ वध्यो

जुओ Somanath The Eaternal, p 26

जुओ Historical Inscriptions of Gujarat, भाग १, पृ. ७ महमूद एने कथकोटथी हाकी काढी मनसूरा तरफ गयो

भीमनी आ व्यूहरचना पारखी गयो अने तेथी जोखम उठावीने पण कंथकोटनो किल्लो जीती, सिंधने रस्ते पाछो फर्यो. [१६१] गौरीशंकर ओझा एक मुस्लिम तवारीखकार फासीद महमूदना कथनने टांकी जणावे छे के आ समये 'भीमदेवे पोतानी राजधानी छोडी कंथकोटमां आश्रय लीधो हतो.'[१६२] बीजा इतिहासकारोनो पण आवो ज मत छे; छतां ई. स. १५२१ मां थयेल मुस्लिम तवारीखकार खोन्ड मीर स्पष्ट कहे छे के 'कथकोट'मां अणहिलवाडनो सेनाधिपति–दंडनायक ज हतो एमां थजूद छे.[१६३] आपणे ए जाणीए छीए के वि. सं. १०८०मां भीमदेवे गादी उपर बेठा पछी विमलने अणहिलवाडनो दंडनायक–सेनाधिपति नीम्यो हतो; एटले कथकोटमां ल्श्कर लईने मोकलेल अणहिलवाडनो सेनाधिपति ते बीजो कोई नहि, पण विमल होवानो संभव छे. अने महमुदे भीमने नहि पण विमलने कथकोटना किल्लामां पराजय आप्यो जणाय छे.

कथकोटना पतननी तेमज महमूदना सिंधना रस्ते प्रयाणनी वात जेसलमेरना रस्ते तैयारी करी ऊभा रहेला भीमे जाणी त्यारे, एक क्षणनो पण विलंब कर्या सिवाय, महमूदनो पीछो पकडवानु एणे नक्की कर्यु; पण भीम पोताना लावलश्कर साथे सिंध पहोंच्यो ते पहेलां महमूद उतावळे मुलतान तरफ प्रयाण करी रह्यो हतो महमूदने भय तो हतो ज, आथी सिंधु देशना राजा हम्मुक साथे युद्ध कर्यु जणातु नथी; अथवा एम पण कही शकाय के भयना मार्या हम्मुके महमूदने मार्ग करी आप्यो होय. भीमे हम्मुके महमूदने सहयोग आप्यो माटे तेमज अत्यारे आपणी पासे नथी तेवा कोई कारणसर सिंधु सुधी

१६१. COG p. 46–57

"Mahmud in his anxiety to avoid Bhimha's armies in the neighbourhood of Anhilpāṭaka, avoided the route and with the assistance of guides tried to find a shorter and less frequented road to Sind. During these movements he defeated, as Khond Mir says, a section of Bhima's army, which may have been sent from Anhilpāṭaka to Cutch to block that line of retreat."

जुओ Dynastic History of Northern India by H. C. Ray. II, pp. 961–962, सोमनाथ, पृ ९२.

१६२. राजपूतानेका इतिहास, पृ. २४२

१६३. जुओ नोंध १६० तथा COG p. 46–47.

पहोंच्या पछी हम्मुक पर विजय मेळववानो निर्धार करी, भीमे हम्मुकनो पराजय कर्यो होवानो संभव छे.

लावण्यसमय भीमनी आ जीतने विमलनी जीत गणावे छे एमां चरितनायक तरफना अहोभाव सिवाय कांई बीजु जणातुं नथी. भीम तेजस्वी अने बुद्धिशाली हतो, एटले महमूदना पराजय माटे जे आयोजन थयुं तेमां जेसलमेरथी सिंध तरफ हल्लो लई जती वखते, कंथकोटमां पराजय पामेल 'विमल'ने पण पोतानी साथे जोडावा कहेण मोकल्युं होवानो संभव छे. विमलने कंथकोटमां पराजय मळ्यो एनो उल्लेख करतां, विमलना चरित्रने झांखप लागे एम समजी, लावण्यसमये ए पराजयने उवेखी, भीमनी साथे रही सिंधनी जे जीत मेळववामां विमले भाग लीधो हतो तेनो उल्लेख करी एनो यश विमलने आपवा यत्न कर्यो छे. ऐतिहासिक दृष्टिए एम कही शकाय के कंथकोटमां पराजय पामेल विमल जेसलमेरथी सिंध तरफ धस्ये जता भीमने जई मळ्यो अने सिंधनो विजय मेळववामां एणे भीमने सहकार आप्यो.

आ ज समये – ज्यारे भीम सिंध पर विजय मेळवी रह्यो हतो त्यारे– माळवाना राजा भोजे कुलचंद्रने सैन्य लईने गुजरात पर विजय मेळववा मोकल्यो. कुलचंद्रे पाटण लूट्युं.[१६४] आ समाचार सांभळी भीम सिंध तरफथी तुरत पाछो फर्यो;[१६५] एनो अर्थ एम पण घटावी शकाय के महमूदनो पीछो छेवानु कार्य विमलने सोंपी ए तुरत पाटण पाछो फर्यो.

बार सुलतानो परनी जीत

लावण्यसमयना कथन मुजब बंगाळ देशमां रोमनगर अति सुविख्यात छे,[१६६] ए पूर्व तरफ आवेलु छे[१६७] अने त्यां एक एकनो छायामां बार सुलतान रहे छे,[१६८] ए सुलतानो उपर विमले चडाई करीने एमना पर विजय मेळवी[१७०] दंड वगेरे लीधुं[१७१] 'उपदेशसप्ततिका'ना उल्लेख मुजब 'विमले

१६४. प्रबंधचिंतामणि : मेरुतुंग–संपादक मुनिश्री जिनविजयजी, पृ. ३२; COG p 52; GTG p 142–143; शिरोहीका इतिहास, पृ १३४, १३५.

१६५. COG p. 52; GTG p 142–143. गुमराह पृ २१७. 'भीम सिंधु देशनी चडाई करवामां रोकायो हतो त्यारे भोजे पोताना सेनापतिने पाटण जीतवा मोकल्यो हतो.'

१६६. विप्र ७–२२ १६७. विप्र ७–२५

१६८. विप्र ७–२६ १६९ विप्र ७–७०

१७०. विप्र ७–९७ १७१. विप्र ७–१००

पोताना कटक-समूहथी चार पादशाहोने जीतीने एमनी पासेथी पोतानी लीला मात्रथी एटलां (चार) छत्रो लई लीधां हतां' [१७२] 'जैनसंप्रदायशिक्षा' (चार)ने बदले तेर सुलतानोने जीती लीधानु कहे छे [१७३] 'उपदेशसार' अने 'उपदेशमाला'मां पण विमले चार सुलतानो पर अचानक छापो मारीने एमने जीती लीधानो उल्लेख छे [१७४] लावण्यसमयना 'बगाळ' प्रदेश अने 'पूर्व' शब्दने अनुसरी गौरीशंकर ओझा बगाळना रोमनगर उपरनी चडाईने अने त्यांना चार सुलतानोने हराववानी वातने गलत कहे छे [१७५] कारणमां एओ स्पष्ट छे, केमके ए समये बगाळमां मुस्लिमोनो प्रवेश ज थयो नहोतो [१७६] दुर्गाशंकर शास्त्रीना मत मुजब 'लावण्यसमय चरित्रनायकनी प्रशंसामां पूर्वना रोमनगरना चार सुलतानोने जीत्या एवु कहे छे, पण ए कविनी कल्पना लागे छे.' [१७७] मुनशी पण आने दंतकथा कहे छे [१७८] मणिलाल विमलप्रबंधनी प्रस्तावनामां लखे छे के सुलताननु सैन्य पाछु वळतां विमले लाग साधीने एना कोई पटावतो उपर जीत मेळवी होय ने ए पटावतोने जैन साधुओ सुरत्राण नामे ओळखता होय तो ए हकीकत संभवित छे.'[१७९] वधुमा एओ दलील करे छे ! 'विमले चार सुलतान जीत्या ए शब्दोनो खरो भेद आपणने हाथ लागतो नथी पण एमां कई पण ऐतिहासिक तत्त्व होवु ज जोईए.'[१८०]

जो अणहिलवाडथी पूर्व तरफनु नगर लईए तो रोमनगर बगाळमां होवा विशे सहेजे अनुमान थाय; परंतु लावण्यसमये 'बगाळ' अने 'पूर्व' शब्दने निष्प्रयोजन योज्या जणाय छे. ए शब्दो लई लईए तो विमलनु सिंध देशमां

१७२. उपदेशसप्ततिका-द्वितीय तीर्थाधिकार, चतुर्थ उपदेश, पृ. ८७

१७३. अ प्रा. जैन लेखसंदोह, पृ २०४

तदा त्रयोदशसुरत्राण-छत्रोद्दालक-चन्द्रावतीनगरीस्थापक-पोरवाड-ज्ञातीयश्रीविमलमन्त्रिणा श्रीअर्बुदाचल-ऋषभदेवप्रासादः कारितः ।

जुओ विमलप्रबंध (व्यास), प्रस्तावना, पृ ६९.

१७४. विप्र (व्यास) प्रस्तावना, पृ ६८

१७५. विविधु पुस्तक ७६ : अंक १; जैसा पृ २९५

१७६. विविधु पुस्तक ७६, अंक १; जैसा पृ. २९५

१७७. गुमराइ पृ. १४७

१७८. GTG p. 142

१७९. विप्र (व्यास) प्रस्तावना, पृ. ६८

१८०. विप्र (व्यास) प्रस्तावना, पृ. ६९

रोकाण अने भीमे एने महमूदनो पीछो पकडवानु सोंपेलु कार्य एमांथी रोमनगरना चार सुलतानो उपरना विजयनी कडी मळी रहे छे. भोगीलाल सांडेसरा 'वर्णकसमुच्चय भाग २)'मां 'रोम' ए पंजाबनो मीठानो प्रदेश-Salt Range होवानुं जणावे छे[१८१] जो आ हकीकत स्वीकारीए तो 'रोमनगर' ए प्रदेश पंजाबमां आव्यो गणाय. आ पंजाबनो प्रदेश एटले मुलतान महमूदनी हकूमतनो प्रदेश हतो. नवमी सदीथी मुलतान मुस्लिमोनी हकूमत नीचे हतु.[१८२] सुलतान महमूदे एने हिंदुस्तानमांनुं पोतानुं थाणु बनाव्यु हतु. कारण के हिंदुस्तान परनी घणी चडाईओनुं आयोजन एणे मुलतानमां रहीने कर्युं हतु सोमनाथथी पाछा फरतां *सुलतान महमूद सिंध थई मुलतान आव्यो हतो*, एटले हम्मुक्नी हकूमत सिवायना सिंधना प्रदेशथी लई मुलतान सुधीनी सळंग पट्टी पर मुस्लिमोनो अमल हशे भोजना सेनाधिपति कुलचंद्रे अणहिलवाड उपर सवारी करी त्यारे भीम सिंध प्रदेश तरफथी राजधानी तरफ पाछो फर्यो; अने विमल महमूदनी पूंठे पूठे ए रस्ते पाछो फरतो हतो ते ज रस्ते गयो; अने वचे आवता *मुस्लिम प्रदेशोने उत्तरहिंदना अन्य हिंदु राजवीओनो सहकार लई* दबावतो गयो. छेल्ले एणे रोमनगर पहोंची जई एना पर पण जीत मेळवी हशे. आ 'चार' के 'तेर' सुलतानो उपरनी जीतने 'रोमनगर' परनी चडाई अने जीत गणावी शकाय.

चंद्रावतीनो दंडनायक

विमलप्रबंधना जणाव्या मुजब, विमलना उत्कर्षथी बळी रहेला सहकार्यकरोए भीमने उश्केरी विमलनो कांटो दूर करवानु विचार्युं. अगाउ जोई गया ते मुजब, भीम नृपे वाघने छूटो मूकी एने वश करवानु विमलने सोंप्युं; मल्ल साथे स्पर्धामां एने उतार्यो; परंतु एमां न फाववाथी विमल पासे बापदादाना समयनु लहेणु काढयु, जेथी *विमलने चद्रावती जई रहेवु पड्युं. आ* हकीकतो निर्मूळ छे ए आपणे जोई गया छीए. प्रबंधकार विमलना चद्रावती तरफना प्रयाणने वर्णवता जणावे छे के विमले पोतानी साथे अनेक हाथी, अश्वो, रथ, वाहनो, ऊंट साथेनु-मोटु कटक लीधुं हतु.[१८३] जता एणे भीम नृपनी रजा लीधी[१८४] अने कह्युः दुश्मनोए मने जेवी हेरानगति पहोंचाडी तेवी तमने कोई

१८१ वर्णकसमुच्चय, भाग १, पृ. २९; भाग २. पृ. ८०
१८२. COG p 43
१८३. विप्र ७-१३ थी १६ १८४ विप्र ७-१६

पहोंचाडशे नहि.' आम वही विमले अणहिलवाडनो सीमाडो ओळंग्यो.[१८५] त्यांथी विमल माल्यवण पहोंच्यो. त्या जई एणे सत्ताधीश तरीकेनां चिह्नो धारण कर्यां. आ प्रसंगे चद्रावतीनो राजा 'रडाली' गाम तरफ आव्यो.[१८६] विमलना कटकना निशाननो अवाज सांभळी चद्रावतीनो राजा मूर्छा पाम्यो अने एना सर्वे धीकरा नासीने ठठ्ठाना राजा पासे जई रह्या.[१८७] आम विना रोकटोक विमले चद्रावतीनी गादी प्राप्त करी.[१८८]

लावण्यसमयना विमलप्रबंध उपरथी ए ज समयमां सौभाग्यनंदिसूरिए संस्कृतमां तैयार करेल 'विमलचरित'मांथी उल्लेख मळे छे के धाराना परमार राजा साथे विमलने जूनी मैत्री हती तेथी विमल चद्रावती गयो; परंतु परमार राजा विमलने आवतो जाणीने डरथी नासी गयो. एथी त्यांना मांडलिकोए विमलने चंद्रावतीनो राजा बनाव्यो.'[१८९] 'उपदेशसप्ततिका' प्रबंधकारना मतव्यने पुष्टि आपे छे: 'चंद्रावती नगरीमां आवीने भीमराजाथी अपमान पामेलो विमल कोटवाल राज्य करे छे.'[१९०] आ उपरथी मणिलाल व्यास कल्पना करे छे के 'राजखटपटथी विमळने भीमदेव साथे अणबनाव थयो, अने तेथी ए पोतानु धन लईने छानोमानो पाटण छोडीने चाल्यो गयो;' जोके साथे ए पण कहे छे के 'विमळ चंद्रावतीनो राजा थयो होय तो कविनो पूर्वे थयेला घीशा जैन प्रबंधकारोए अवश्य ए हकीकत नोंधी होत. गुर्जरेश्वरना सेनापतिनु पद भोगवनार अने मोटी जीतो मेळवनार पुरुष चद्रावतीमां राजा जेवु मान भोगवतो हतो एम कहेवामां आवे तो ए अतिशयोक्ति भर्यु कहेवाय नहि'[१९१] ए खरुं चद्रावती जई रह्यो, परंतु प्रबंधकारने पुष्टि आपता जे उल्लेखो मळे छे ते बराबर नथी. भीमथी रिसाईने नहि, पण भीमे आदेश आपवाथी विमल चंद्रावती जई रह्यो हतो.[१९२] गौरीशंकर ओझाना मत मुजब 'विमळने चद्रावतीनो राजा मानी लेवो ते गप छे.'[१९३] आ उपरथी एम तारवी शकाय के भीमदेव साथे खरराग

१८५. विप्र ७–१७ १८६. विप्र ७–१८

१८७. विप्र ७–१९. १८८ विप्र ७–२०

१८९ विमलचरित–(संस्कृत) सौभाग्यनंदिसूरि, वि. स. १५७८ तथा विप्र (व्यास) प्रस्तावना, पृ. ६६–६७

१९०. उपदेशसप्ततिका, द्वितीय श्रीतीर्थाधिकार चतुर्थ उपदेश, १–८७

१९१. विप्र (व्यास) प्रस्तावना, पृ. ६६

१९२. प्राचीन जैन लेखसंग्रह न १३२, श्लोक ८

१९३. विविधु पु. ७६, अंक १

थवाथी के राजखटपट थवाने कारणे विमलने अणहिलवाड छोडवु पडयु नहोतुं. परंतु भीमदेव नृपनी सेवानी अवगणना करवाथी चद्रावतीना राजा धधूकराज उपर गुस्से थई भीमे एने भोजनरेशनी पासे मोकली आप्यो हतो अने भीमे प्रतापी अने बुद्धिशाळी विमलने अर्बुदनो दंडनायक बनाव्यो हतो.'[१९४] ओझा आ मतने पुष्टि आपे छे : 'धवूके गुजरातना सोलंकी राजा भीमदेव प्रथमनी सेवा न स्वीकारी आथी भीमदेव तेना पर गुस्से थयो (चडाई करी) अने तेथी ते आबु छोडीने धारानो राजा भोज जे ते वखते चितोडमा रहेतो हतो तेनी पासे जतो रह्यो. भीमदेवे प्राग्वाटवंशी महाजन विमलने आबुना दडपति तरीके नियुक्त कर्यो.'[१९५] दुर्गाशंकर शास्त्री पण कहे छे के 'विमल मत्री भीमदेवथी रिसाईने नहि पण विमलवसतिनो लेख कहे छे तेम एणे दडनायक करीने मोकलवाथी चद्रावती गयो हतो.'[१९६]

वस्तुस्थिति आम हती. मूळराज चौलुक्ये आबुना परमार राजा धरणीवाराहने पराजय आपीने नसाडी मूक्यो हतो.[१९७] एनो पौत्र धधूक परमार मूळराजना पौत्र दुर्लभराजनो खंडियो राजा हतो.[१९८] आ धधूकराजे भीमनी सेवानी अवगणना करी; भीमे एनो पराजय कर्यो, अने तेथी ए माळवाना राजा भोजना प्रदेशमा आवेल चित्रकूट (चितोड) जई रह्यो.[१९९] 'वस्तुपालचरित'ना उल्लेख मुजब, परमार राजा पण एना पराभवनी शकाथी पोतानी राजधानी छोडी गिरिदुर्गमा जई रह्यो हतो. (जिनहर्ष' प्रस्ताव ८८)

, आ चढाई भीमे पोते करी हती के विमलनी सरदारी नीचे सैन्य मोकल्युं हतु ए विवादास्पद हकीकत छे, मुनशी कहे छे के 'आ विजय भीमे

१९४. प्राचीन जैन लेखसंग्रह न. १३२, श्लोक ५-६-८

चद्रावतीपुरीश· समजनि वीराग्रणोर्धन्धु· ।
श्रीभीमदेवस्य नृपस्य सेवाममन्यमानः किल धधुराज· ।
नरेशरोषाच्च ततो मनस्वी धाराधिप भोजनृपं प्रपेदे ।
ततश्च भीमेन नराधिपेन प्रतापभूमिर्विमलो महामतिः ।
कृतोर्बुदे दडपति· सता प्रियः ॥

१९५. राजपूतानेका इतिहास, पृ १९३-१९४

१९६. गुमराइ पृ २१६

१९७. COG p. 31 १९८. COG p. 49

१९९. COG p. 49

मेळव्यो हतो, पण एनो यश विमळने अपायो छे[२००] दुर्गाशंकर शास्त्रीना मत मुजब 'भीमे धधूकने दबाव्यो हतो,'[२०१] परंतु गौरीशंकर ओझा आ बाबतमां वहु स्पष्ट छे धंधुकराजनी पोतानी विरुद्धनी उद्दतताने सरखी करवा माटे भीमे पोताना दंडनायक विमलने सैन्य साथे चंद्रावती पर मोकल्यो हतो[२०२] 'नेमिनाथचरित'नो प्रशस्ति ऐतिहासिक दृष्टिए आ हकीकतनु समर्थन करे छे. 'भीमना वचनथी शत्रुने जीतवा माटे चतुरंग सेनाने लईने गयेलो विमल चंद्रावतीना प्रदेशने पाम्यो शत्रुना मस्तक कबजे करी, अने एम पोताना स्वामीनो हुकम सिद्ध करी त्यां वसतो ए अर्बुद नामना पर्वतने साचवी रह्यो छे'[२०३]

एटले लावण्यसमये विमलप्रबंधमां जे रीते चंद्रावती परनी चढाईनो उल्लेख कर्यो छे ते बराबर नथी विमल भीमदेवथी रिसाई अणहिलवाडमांथी ज चतुरंग सैन्य लई भीमदेवनी रजा लई चंद्रावती जवा नीकळे ए बराबर नथी एम कही शकाय के भीमदेवनी अनुज्ञा लई विमल मोटा सैन्य साथे चंद्रावती जवा नीकळ्यो एने आवतो जाणी चंद्रावतीना रहीशो ठठ्ठानगर जता रह्या वगेरे मात्र कविकल्पना ज छे, श्रोताजनो माटेनी रंजननी रीति छे एम कही शकाय

चंद्रावती उपरनी चढाईनु जे कारण मळे छे ते सिवाय पण बीजां कारणो होवां जोईए उत्तर तरफथी गुजरात पर चढाई थवानो भय होय तो ए भिन्नमाळ—चंद्रावतीने रस्ते थईने हतो सुलतान महमूद ए ज रस्ते आव्यो हतो चंद्रावती अर्बुदगिरिनी तळेटीमां वस्यु हतु त्यारे अर्बुदगिरि गुजरातनो नैसर्गिक किल्लो हतो सुल्तान महमूदनी चढाइ ताजी हती, रोमनगर– बार सुलतानो उपरनो विजय पण एटलो ज ताजो हतो, पूर्व–उत्तर बाजुथी माळवाना राजा भोजनो एटलो ज भय हतो, चंद्रावतीनी उत्तरे आवेल नड्डूलनो राजा गुजरातना तेजने झांखप आपवा तकनी राह जोतो हतो, शाकंभरि (अजमेर), मरुस्थली (मारवाड), मेवाड वगेरे प्रदेशना राजाओनो गुजरात साथे जोईए तेवो मेळ नहोतो. आवा संयोगोमां भीमे डामर–दामोदरने भोजनी राजसभामां सांधिविग्रहक तरीके नीम्यो[२०४] अने विमलने चंद्रावतीना राजा धंधूकना

२०० GTG p 142

२०१ गुजराइ पृ २१३–२१४

२०२ शिरोहीका इतिहास, पृ १३४–१३५

२०३ नेच गाथा १२ २०४. COG

पराजय पछी चंद्रावतीना दंडनायक तरीके नीम्यो एमां एनुं कौशल दर्शाई आवे छे. मुनशी योग्य ज कहे छे : 'विमलमां मन्त्री तरीकेनी जे महत्ता हती तेवी ज महत्ता सेनाधिपति तरीकेनी हती.'[२०५] उत्तर-पूर्वनी सरहदे आवेला राज्योनो जे भय हतो तेने खाळी शके एवी शक्ति विमलमां हती. अने आ विशिष्ट शक्तिथी ज, जेटला समय सुधी ए चंद्रावतीमां दंडनायक तरीके रह्यो त्यांसुधी. कार्य कर्युं हतुं. चंद्रावतीमां स्थिर थया पछी विमले जेनी साथे पोताने जूना समयनी मैत्री छे[२०६] ते परमार राजा धधूकने चित्रकूटथी पाछो बोलाव्यो. 'विविधतीर्थकल्प'ना[२०७] जणाव्या मुजब धंधूकने समजावी, एना उपरनो गुर्जरेश्वर भीमनो रोष भक्ति वडे दूर करावी, धधूकने पाछो चंद्रावतीमां स्थाप्यो.[२०८] शत्रुनुं शूळ हमेशां राखी मूकवा करतां प्रेमथी वश करी लई, एने राज्यनी पडखे राखवानुं विमले उचित मान्युं हशे भोजे, भीमदेव सिंधमां हतो त्यारे तकनो लाभ लई गुजरात पर चडाई करी हती, ते ज भोजे चद्रावतीना पराजय पामेला राजा धधूकने पोताना प्रदेश चितोडमां आश्रय आप्यो हतो एटले भोजना आश्रये धंधूक प्रबळ बनी चंद्रावती पर हल्लो करे एना करता, प्रेमथी समजावी एनु राज्य एने सुपरत करवामां राजनीतिज्ञपणु हतुं. भीमे विमलना आ दुरंदेशीपणानो स्वीकार करी, धंधूकने चंद्रावतीनी गादी पाछी सोंपी. आ समाधान जे वर्षे धंधूकराज चित्रकूट नासी गयो ते ज वर्षे थयु के त्यार पछीना वर्षे थयुं ए विशे कोई उल्लेख मळतो नथी; परंतु, जिनप्रभसूरि तीर्थकल्पमां जणावे छे तेम, 'विमलवसही' विमले बंधावी ते पहेलां धधूकने चंद्रावतीनगरी पाछी सोंपाई हती.[२०९]

माळवा साथेनुं युद्ध

'विमळ सेनापति सहु सेना सज्ज करीने भीमराजानी साथे चाल्यो. भीम

२०५. GTG p. 142

२०६. विमलचरित : (संस्कृत) सौभाग्यनंदिसूरि, वि सं. १५७८, तथा विप्र (व्यास) प्रस्तावना, पृ. ६६

२०७. राजानकश्रीधांधूके क्रुद्धं श्रीगुर्जरेश्वरं ।
प्रसाद्य भक्त्या त चित्रकूटादानीय तद्गिरा ॥
विविध तीर्थ-अर्बुदकल्प

२०८ गुमराइ पृ. ३१४

२०९. 'तीर्थकल्प' गाथा ३४-४२, पृ. ५२-५३
तथा जुओ नोंध २०७ तथा राजपूतानेका इतिहास पृ. १९३-१९४.

अने विमळ सेनापति मळीने भीज सामा थया भोजना देखतां ज तेमणे भोज-सेनानो चूरो कर्यो केटलाएक कागळनी पेठे नासी छूटया. भोजनी सेना घणी मराई. भीम जीतना वाजा वगाडतो पाटणमा पेठो ' आ प्रकारनो उल्लेख व्यासे विमलप्रबंधनी प्रस्तावनामां कर्यो छे, एनो अर्थ ए थयो के भीमे विमलनी साथे रही माळवा पर विजय मेळव्यो छे

रत्नमंदिरगणिना 'भोजप्रबंध'मा माळवा उपर भीमे चडाई करी त्यारे विमल साथे हतो एवो उल्लेख छे,[२१०] पण आ हकीकतने यथाय ऐतिहासिक समर्थन मळतु नथी मेरुतुगे 'प्रबंधचिंतामणि'मा आ चडाई वखते विमल साथे हतो एवो उल्लेख सरखो पण नथी कर्यो[२११] वि स १४९७ मा रचायेल 'वस्तुपालचरित'मा जिनहर्ष उल्लेखे छे के 'विमले मालवीय राजानी साथेना समागममा भीम राजाना सेनाधिपतिपदने पामी विजय मेळव्यो हतो' (प्रस्ताव ८) परतु मजुमदारे 'गुजरातना चौलुक्यो'मा वडनगरनी प्रशस्ति, जयसिंहसूरिना कुमारपालप्रतिबोध तथा प्रबंधचिंतामणिना आधारे माळवा साथेना युद्धनी विगते चर्चा करी छे, ए उपरथी कही शकाय के माळवा साथेना सबधमां भीम उपना साधिविग्रहक दामोदरे (डामरे) महत्त्वनो भाग भजव्यो हतो[२१२] विमल ए समये चद्रावतीमा होवो जोईए; अथवा वि स १०८८ पछी–'विमलवसही'नी स्थापना पछी आ युद्ध थयु होवु जोईए

आ अने आवा ज प्रकारना केटलाक उल्लेख ते ते समयना ग्रथकारोए विमलने नामे चडावी दीधा होय एम जणाय छे. चारसो वर्ष पछी, ज्यारे ऐतिहासिक माहिती मेळववी अति मुश्केल हती त्यारे, आवु बनवा सभव छे अने एकनी हकीकत बीजाने नामे चडी जवानी पूरी सभावना रहे छे; परतु भोज उपर भीमे मात्र एक वखत विजय मेळव्यो हतो अने ए कलचूरी प्रदेशना राजा लक्ष्मीकर्णनी सहायथी ए समये भोज [२१२] मृत्यु पण पामे छे विमलने अने माळवानी चडाईने ए रीते कोई सबंध जणातो नथी.

चंद्रावतीनगरी अने विमलवसही

विमल'ने विमलवसही बधाववानी प्रेरणा कोणे आपी हशे एनो स्पष्ट उल्लेख क्यांय मळतो नथी 'विमलप्रबंध' परथी तारवीए तो विमलना लग्न

२१० भोजप्रबंध · रत्नमंदिरगणि · जुओ बुद्धिप्रकाश, पु १४
२११ गुमराइ पृ. ३३३
२१२ COG pp 51-53

पछी आचार्य धर्मघोषसूरि अणहिल्वाड पाटण आव्या अने एओए आबु उपर जैन मंदिर न होवाने कारणे खेद पामी 'विमल'ने आबु उपर तीर्थनुं स्थापन करवानो उपदेश आप्यो[२१३] वधुमा विमलने साथे लई एओए आरासण (कुंभारिया) तीर्थनी यात्रा करी.[२१४] त्यारपछी विमलनी महत्त्वाकांक्षा प्रगटी के पोताना प्रतापी पूर्वजोनी जेम पोते पण काईक करी छूटवु जोईए[२१५]

प्राग्वाट वंशनी ऐतिहासिक परंपरा जोईए तो मंदिरो बधाववानी वृत्ति साराय कुळमा ऊतरी आवी छे प्राग्वाटवंशना श्रेष्ठी निन्नये' अणहिलवाडमा ऋषभजिन मंदिर बधाव्यु हतु[२१६] एना पुत्र लहरे 'संडथल'मा विंध्यवासिनी देवीनी स्थापना करी 'लहर-घणुद्दावि'नु मंदिर बधाव्यु हतु[२१७] आ ज रीते विमलने पण आबु उपर एके जैन मंदिर न जोई मंदिर बधाववानो स्फुरणा थई होवी जोईए आथी भीम नृपे ज्यारे परमारदेव धधूक परना विमलना विजय पछी एने चन्द्रावतीनो दंडनायक नीम्यो त्यारे गर्भना संस्कारे जोर कर्यु होवु जोईए, अने ए ज अंत प्रेरणाए चन्द्रावतीनगरनी नवेसरथी रचना करवानी अने अर्बुदगिरि उपर जिनप्रासाद बधाववानी वृत्तिने स्थिर करी होवी जोईए. आ वृत्तिने स्थायी करवामा कोई जैन आचार्ये पण महत्त्वनो भाग भजव्यो होवो जोईए, परंतु ए धर्मघोषसूरि नथी ए चोकस छे अंत प्रेरणा उद्भववा माटेनु बीजु पण कारण होवा संभव छे चन्द्रावतीमा दंडनायक तरीके रह्या पछी 'जैन धर्मनु पालन करनार'[२१८] विमलना मनमा आ असार संसार विशे मंथन चाल्या ज करतु होवु जोईए, अने धीमे धीमे एनु मन संसार उपरथी विरक्त थतु होवु जोईए दररोज जैन आचार्यनो उपदेश मन चक्षु समक्ष महमूद गझनीए करेलो मानवसंहार, लूटफाट, अने गामोनां गामोनो संपूर्ण नाश, कथकोटमा पोते जोयेली खूनरेजी अने पोताने मळेलो पराजय, सिंध देशथी सोमनगर सुधीनी पोतानी युद्धयात्रा अने एमा पोते तेमज पोतानां अने साथी राज्योना सैन्योए करेलो तुरुष्कसंहार अने शत्रुसैन्ये करेलो पोताना सैन्यनो संहार-आ संबंधी एनु मन ककळी ऊठयु होवु जोईए. पिता 'वीरे'

२१३ विप्र ६-१, ६-२, ६-३, ६-६, ६-७
२१४. विप्र ६-७
२१५ विप्र ६.२३
२१६ नेच गाथा ५
२१७. नेच गाथा ७
२१८. अप्रार्स पृ २७२

असाधारण प्रतिष्ठा मेळवीने आ असार संसारनो त्याग करी दीक्षा लीधी हती, ए संस्कार एनामा हता ज, पितानु वि स. १०८५मा अवसान थयु ए हकीकते पण एनु मन व्यग्र कर्यु हशे आथी अशोकने जेम खारवेलनी सामेना युद्धमा मानवसहार पछी विजय मळ्यो परतु ए विजये एना हृदयमा अद्भुत परिवर्तन कर्युं, ते ज रीते विमलमा पण चद्रावतीनगरी परना विजय पछी अद्भुत परिवर्तन थयु होवु जोईए एनो सबळ पुरावो धधूकराज साथेनु प्रेमथी समाधान कर्यु एमा छे एणे पोते ज अग्र भाग भजवी, भीमदेवने समजावी चंद्रावतीनु राज्य पाछु सोंपाव्यु ए ऐतिहासिक दृष्टिए महत्त्वनी बीना छे. आ समाधान पछी विमल अणहिलवाड पाटण गयो जणातो नथी, चद्रावतीमा ज ए रह्यो जणाय छे.

विमलप्रबधना कर्ताए चद्रावती नगरनु वर्णन करता जणाव्यु छे के विमल सहेल करवा नीकळयो अने फरीने जोयु तो चद्रावतीनगरीनी रचना जोईए तेवी जणाई नहि, आथी विवेकपूर्वक नगर फरी वसाववानो एणे निर्णय कर्यो.[२१९] अने 'आ ते लका के इद्रपुरी हशे'[२२०] एवु नगर वसावी[२२१] चतुर्विध सघ सहित गिरनार तथा शत्रुजयनी यात्रा करी[२२२] सघपतिनी पदवी पाम्यो. 'एथी विमलना मननी होंश पूरी थई.[२२३]

विमलप्रबधमा जणाव्या मुजब चद्रावतीनगरनी पुनर्रचना पछी विमले सद्गुरुना उपदेशथी पोते जे 'घोर कर्म कर्या छे तेनी आलोयणा मागी–प्रायश्चित्त इच्छ्यु[२२४] सद्गुरुए कह्यु के मिथ्यादृष्टि होय त्या कोई रीते जैन मदिर कराय तो आराधक थइ शकाय[२२५] अने ए दृष्टिए अर्बुद शिखर पर मदिर बधाव्'[२२६] पत्नी श्रीनी सलाहथी अर्बुद शिखर पर एणे जिनप्रासाद करावबानो निर्णय कर्यो[२२७] जगानी पसदगी करवा जतां अर्बुद शिखर पर वसनारा भरडाओए–ब्राह्मणोए एनो सखत विरोध कर्यो[२२८] परतु एमने मनावीने[२२९] जिनप्रासाद माटे स्थळ नक्को कर्यु आम छता भरडाओए आ

२१९ नेच गाथा १०, विप्र ८–८३ २२० विप्र ८–११३
२२१. विप्र ८–८३ थी ११३ २२२ विप्र ८–११५
२२३. विप्र ९–१
२२४ विप्र ९–१५१ २२५ विप्र ९–१६७
२२६. विप्र ९–१६६ २२७ विप्र ९–१९८
२२८ विप्र ९–२०१ थी २०४ २२९ विप्र ९–२१३

स्थळनी किंमत मागी.[२३०] विमले भद्राओए जे रकम मागी ते आपीने एमने संतोष्या.[२३१] त्यारबाद वास्तुविधान संपूर्ण जाणनारा सातसो सलाट तेडाव्या [२३२] एओनी साथे शास्त्रीय रीते देरासरना स्थापत्यनी चर्चा करी[२३३] अने कार्यनो आरंभ कर्यो लाखो मजूरो कामे लागी गया, धमधोकार कार्य शरू थयु [२३४] जिनप्रासाद पूरो थता सुधीमा विमलने अनेक मुश्केलीओनो सामनो करवो पड्यो.[२३५] आरासण-कुभारियाथी आरस मगाववामा आव्यो, [२३६] अने जिनप्रासाद संपूर्ण थयो– मडपो रचाया, मजबूत स्तभो तैयार थया, रूपाळी रंभा जेवी पूतळीओ घडाई घाटीली कमानोमा कोतरकाम दीपी ऊठ्यु, [२३७] अने 'विमलवसही'– जिनप्रासाद तैयार थता वि सं १०८८ मा, पित्तळनी अढार भारनी मूलनायक ऋषभदेवनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा थई [२३८] त्यारे त्या 'लाखो लोक' एकत्र थया हता.[२३९]

जैनसंप्रदायशिक्षा' प्रमाणे विमले सत्ताना बळे आ 'विमलवसही' बधाववा माटे जमीन लीधी हती, परंतु पछीथी किंमत आपीने ए जमीन लीधी [२४०] विमलप्रबधमा जणाव्या प्रमाणे विमले ज्यारे जमीन माटे मागणी करी त्यारे त्या वसता ब्राह्मणोए सखत विरोध कर्यो अने पछी भारे किंमत लई जमीन आपवानु नक्को कर्यु जिनप्रभसूरिना जणाव्या मुजब 'गुर्जरेश्वर (भीमदेव) राजानक (राणा) धधूक पर क्रुद्ध थयो त्यारे एणे (विमले) भक्तिथी भीम-देवने प्रसन्न करी धधूकने चित्रकूट (चितोड)थी पाछो बोलावी, ए धधूकनी आज्ञा लई विमलवसहीनु सुंदर मंदिर बनाव्यु' हतु [२४१] गौरीशकर ओझा पण आ वातनु समर्थन करे छे विमले धधूक पासेथी जमीन लईने आ मंदिर बनाव्यु हतु [२४२]

आनो अर्थ एम घटावी शकाय के चद्रावतीना दडनायक तरीके निमायेला विमले, अर्बुदगिरि पोतानी हकूमतमा होवा छता, पोतानो प्रिय एवो प्रासाद-

२३० विप्र ९-२१४ २३१. विप्र ९-२१९
२३२ विप्र ९-२२० २३३ विप्र ९-२२१ थी २३१
२३४ विप्र ३-२३४ २३५. विप्र ९-२४२ थी २५६
२३६. विप्र ९-२५८ २३७ विप्र ९-२६०
२३८ विप्र ९-२६६ २३९ विप्र ९-२६५
२४० जैनसप्रदायशिक्षा तथा विप्र (व्यास) प्रस्तावना, पृ ७१
२४१. तीर्थकल्पे अर्बुदकल्प, गाथा ३९-४०
२४२. शिरोहीका इतिहास, पृ ६२

विमलवसही बधाववा माटे जोईती जमीन माटे बळजवरी वापरी नथी. 'जैन-सप्रदायशिक्षा' अने 'विमलप्रबध'ना कथन मुजब एम मानी लईए के शरूआतमा विमले दडनायकनी सत्तानी रूए जमीन लेवानो निर्णय कर्यो हशे, पण ए निर्णयनो एणे अमल कर्यो नथी एवु तरी आवे छे, अने 'धधूक'ने चित्रकूटथी पाछो बोलावी चद्रावतीनो गादी पाछी सुपरत कर्या पछी पण 'प्रासाद माटेनी जमीन मेळवरा माटे धधूकनी अनुज्ञा मेळवे छे, तेमज ए जमीनमा मौलिको प्रसन्न थाय ते प्रकारे किंमत चूकवे छे

विमलवसहीनी प्रतिष्ठा

'विमल'नी जेने लीधे विश्वमा प्रसिद्ध थई छे अने आजे पण जे जैन प्रासाद एना अद्भुत शिल्पस्थापत्य मा- सौने मुग्ध करी दे छे ते विमल-वसही' तैयार थया पछी एमा पित्तळनी अढार भारनी मूलनायक ऋषभदेवनी मूर्तिनी प्रतिष्ठा करावी ए विशे जे जे लेखो मळे छे तेमा लगभग एकवाक्यता छे, परतु एनी प्रतिष्ठा कोने हस्ते थई एना विशेना उल्लेखोमा एकवाक्यता नथी.

'विमलप्रबध'मा लावण्यसमय कहे छे ते मुजब वि स १०८८मा आदीश्वर भगवाननी अढार भारनी पित्तलमयी प्रतिमानी विमलवसहीमा प्रतिष्ठा थई[२४३] लावण्यसमय पोते आ बाबतमा सळगसूत्रता साचवे छे वडा गणधर धर्मघोषसूरि'ना[२४४] परिचयमा आव्या पछी, एमनी साथे आरासणानी यात्राए जई[२४५] शत्रुजय अने गिरनारनी यात्रा करी[२४७] पाछा फर्या पछी, चन्द्रावतीना दडनायक थया पछी धर्मघोषसूरिने विमले चद्रावतीमा चोमासु पण राख्या हता,[२४८] ए ज सूरिए कोई तीर्थनो उद्धार करवानु सूचव्यु हतु,[२४९] एटले प्रतिष्ठा प्रसगे धर्मघोषसूरिने निमत्रण अपाय ए स्वाभाविक छे, परंतु एमना हस्ते विमलवसहीनी मूलनायक-प्रतिमानी प्रतिष्ठा थयानो उल्लेख विमलप्रबधमा नथी निमत्रणथी हाजर रह्या एटले धर्मघोषसूरिना हस्ते प्रतिष्ठा थई एम मानी लेवु ए बराबर नथी मणिलाल व्यास कहे छे के 'सवत १०८८मा नागेन्द्र, चद्र निर्वृति अने विद्याधर (जैन श्वेताबर मतना मुख्य सप्रदाय) प्रमुख गच्छना आचार्यो अने चतुर्विध सघनी समक्ष धर्मघोषसूरिने हाथे आदीश्वर भगवाननी

२४३ विप्र ९–२६६ २४४. विप्र ९–२६५
२४५ विप्र ६–२ २४६ विप्र ६–६
२४७ विप्र ८–११५ २४८ विप्र ८–११७
२४९ विप्र ९–३

अढार भारनी पित्तलमयी प्रतिमा प्रतिष्ठित करावी '[250] लावण्यसमयना समयमा ज थयेल सौभाग्यनंदिसूरि[251] अने इंद्रहंसगणि[252] पोतपोताना संस्कृत 'विमलचरित'मां धर्मघोषसूरिना हस्ते प्रतिष्ठा थयानो उल्लेख करे छे, वि. सं १९००मां रूपविजये[253] रचेला 'विमलरास'मां पण आ विधानोने अनुसरीने प्रतिष्ठा माटे धर्मघोषसूरिनु नाम आप्यु छे. जिनप्रभसूरि आ प्रासादनी प्रतिष्ठानु वर्ष सं १०८८ आपे छे,[254] पण कोना हस्ते प्रतिष्ठा थई एनो उल्लेख करता नथी जिनहर्षसूरि 'वस्तुपालचरित'मा उल्लेखे छे ते मुजब बृहद्गच्छनायक रत्नसूरिए आ प्रासादनी प्रतिष्ठा करी[255] आ वस्तुपालचरितनी रचना विमलप्रबंध रचायो ते पहेला एटले के वि स १४९७ मा थई छे प्रबंधकोशमा राजशेखरसूरि जणावे छे के 'चंपकना वृक्षनी नजीकमा ज तीर्थनी स्थापना करी पित्तळनी प्रतिमा मूकी अने वि. स १०८८मा चार सूरिओ द्वारा एनी प्रतिष्ठा करावी' [256] डॉ जे क्लाटना मत मुजब खरतरगच्छना प्रथम आचार्य वर्धमानसूरिए वि. स १०८८मा विमलवसहीमा प्रतिष्ठा करावी हती,[257] प्रोफे

२५०. विप्र (व्यास) प्रस्तावना, पृ ७२ अने ९०

२५१ विमलचरित (संस्कृत), सौभाग्यनंदिसूरि

२५२ विमलचरित (संस्कृत), इंद्रहंसगणि

२५३ विमलरास रूपविजय

२५४ तीर्थकल्पे अर्बुदकल्प, गाथा ४०, पृ ५२-५३

२५५ वस्तुपालचरित-जिनहर्ष तथा जैसास पृ २१०

२५६. चतुर्भिः सूरिभिरादिनाथ प्रत्यतिष्ठिपत् ।' प्रबंधकोश-वस्तुपालप्रबंध, पृ १२१

२५७ 'Extracts from the Historical Records of the Jains.' Dr Johannes Klatt, Ph D (Berlin) Indian Antiquary, Vol II, September, pp 245 to 246, तथा जैन गूर्जर कविओ भा २ : 'खरतरगच्छनी पट्टावलि' पृ ६७३ तथा अर्बुदप्राचीन जैन लेखसग्रह, पृ २०४

Mount Abu, Vimale Templa Inscription of Vikrama Samvat 1378 By Prof F Kielhorn 'Epigraphia Indica Vol IX, pp 148-149

"Dr. Klatt gave an extract from a Paṭṭāvali of the Kharatargachchha according to which the minister Vimala belonged to Porvāda (Prāgvāṭa family), and who broke the parasols of thirteen Sultāns, and

किल्हॉर्न वि. स १०८८मा विमलवसहीनो पायो नखायो एम कहे छे;[२५८] पण मुनि जयतविजयजी कहे छे तेम वस्तुत: आ विमलवसहीनी प्रतिष्ठा कर्यानु वर्ष छे[२५९]

आम विमलवसहीमा आदिनाथ तीर्थंकरनी प्रतिष्ठा माटे जिनहर्षसूरि (वि. सं १४९७) आचार्य रत्नसूरिनो, लावण्यसमय सौभाग्यनदि इद्रहसगणि (सोळमो सैको) वगेरे धर्मघोषसूरिनो अने क्षमाकल्याणजीनो खरतरगच्छनी पट्टावलि (वि. स. १८३०) वर्धमानसूरिनो उल्लेख करे छे, तेमज राजशेखर-सूरि (चौदमी सदीनो उत्तरार्ध) आ प्रतिष्ठा माटे चार सूरिओनो उल्लेख करे छे

धर्मघोषसूरि एक करता वधारे थयाना उल्लेख मळे छे; अने पट्टावलि अथवा लेखमा वि स १०८८ के एनी आसपास कोई धर्मघोषसूरि थयानी माहिती मळती नथी, धर्मघोषसूरिना नामनो उल्लेख वि स १३७८ना विमलवसहीना केटलाक शिलालेखोमा मळे छे, परंतु ए धर्मघोषसूरिनी पाटे ज्ञानचद्रसूरिए प्रतिष्ठा करी'[२६०] ए रीते मळे छे, गौरीशकर ओझा पण माने छे के 'धर्मघोषसूरिना उपदेशथी आबु उपर विमले मदिर बधाव्यु ए वात सदिग्ध छे, कारण के ते मदिरमा महात्मा कवडिए वि स १२२६मा तेना मातापितानी मूर्तिओ बनावी मूकी ने तेनी प्रतिष्ठा करवानु कार्य धर्मघोषसूरिए कर्यु हतु'[२६१] रत्नसूरि पण आ समयमा

established the town of Chandrāvatı, caused a temple of Rishabhadeva to be built on the mount Arbuda–a temple which even now is known by the name Vimal–Vasahi, and which it is added was consecrated by Vardhamānasūri in the year 1088 "

वळी जुओ Prof. Weber's Catalogue of the Berlin Mss, Vol II, pp 1036 & 1037

तदा त्रयोदशसुरत्राणच्छत्रोद्दालकचन्द्रावतीनगरीस्थापकपोरवाडज्ञातीय-श्रीविमलमन्त्रिणा श्रीअर्बुदाचले ऋषभदेवप्रासादः कारित:. .तत्रापि विमलवसही इति प्रसिद्धिरस्ति । तत श्रीवर्धमानसूरि. सवत १०८८ मध्ये प्रतिष्ठा कृत्वा प्रान्तेऽनशन गृहीत्वा स्वर्गं गत ।

२५८. जुओ नोंध २५७.

२५९. अर्बुद प्राचीन जैन लेखसंग्रह, पृ. २०८

२६० अर्बुद प्राचीन जैन लेखसग्रह–जुओ शिलालेख अक ६५, ६९, ७५, ७७, ७९ वगेरे

२६१. विऔवि, बुद्धिप्रकाश, तथा जैसाइ पृ २१५

थयानो कोई ऐतिहासिक पुरावो नथी. आथी राजशेखरसूरि 'चार सूरि द्वारा आदिनाथनी प्रतिष्ठा थया'नो उल्लेख करे छे ए योग्य लागे छे. अमदावादनी स्थापना –खातमुहूर्त पण चार पवित्र पुरुषोए एकत्र थई वि. सं. १४६८ मां कर्यानो उल्लेख छे.[२६२] आ प्रणाली जूनी पण होय, तेथी चार सूरिओ द्वारा आ प्रासादनी प्रतिष्ठा थई होय ए संभवित छे. आ चार आचार्यो कया ए विचारतां खरतरगच्छनी पट्टावलिमां जेमनो उल्लेख छे ते वर्धमानसूरि अने एमना शिष्यो होय ए निश्चित थाय छे. आ वर्धमानसूरिए वि. सं. १०८८मां आ विमल-वसहीनी प्रतिष्ठा करी[२६३] अनशन धारण करी स्वर्गगमन कर्युं हतुं. एमना शिष्यो जिनेश्वरसागरसूरि अने बुद्धिसागरसूरि, अने जिनेश्वरसूरिना शिष्यो जिनचंद्र अभयदेव अने धनेश्वर आ प्रसंगे हाजर रह्या हशे. आ शिष्यमंडळ ए समये समर्थ कोटिनुं विद्वान हतुं.[२६४]

'विमलवसही' बंधाव्यानो खर्च

'विमलवसही' बंधावतां विमलने कुल केटलो खर्च थयो हशे एना विशे चोकस माहिती उपलब्ध नथी. 'विमलप्रबंध'मां आ विशे स्पष्ट उल्लेख नथी. मात्र अवारनवार जे उल्लेख मळे छे तेनाथी कल्पी शकाय के घणो खर्च थयो हशे 'प्रासादनी जगा माटे उपराउपरी पांच पाथ सुवर्ण टंका पाथरी जेटली जमीन जोईती हती तेटली जमीन मेळवी;'[२६५] 'कारीगरोने हाथे सोनानां सांकळां पहेराव्यां;'[२६६] आरासणथी अबुदशिखर पर लई जवा माटे दरेक पथ्थरनी किंमत रूपा जेटली थई;[२६७] 'सोनु रूपु गळावी एनी ईंटो करावी;'

२६२. गुजरातनुं पाटनगर : अमदावाद, पृ. ३१

२६३. 'पाटणमां वाडीपार्श्वनाथना मंदिरनो शिलालेख.' स. १६५२मां ए मंदिर बंधावेलुं. ए देरासरमां मूलनायकनी सामेनी भींत उपर आरसनी तकती छे तेना उपर बावन लीटीनो एक लेख झीणा अक्षरे कोतरेलो छे तेमां खरतरगच्छनी पट्टावलि छे. लेख संस्कृत भाषामां छे :
'तत्पट्टप्रभाकरप्रवरविमलदण्डनायककारितार्बुदाचलवसतिप्रतिष्ठापक (?)–श्री सीमधरस्वामि–सूरिमन्याराधकश्रीवर्धमानसूरि...।'
'वस्तुपाळनुं विद्यामंडळ अने बीजा लेखो'मां 'केटलाक ऐतिहासिक शिलालेखो.' डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरा, पृ. ९५

२६४. जैसाइ पृ. २०७–२०८

२६५. विप्र ९–२१६ थी २१७

२६६. विप्र ९–२३४ २६७. ९–२५९

२६८ आ सर्वेनो अर्थ सरवाळे ए थयो के 'विमलवसही' बधावता करोडो द्रम्म-सुवर्णटकाओनो खर्च थयो हशे. जिनहर्षसूरिना जणाव्या मुजब 'आठ कोटि सुवर्णनो खर्च थयो हतो.'[२६९] सोमधर्म पण आ ज खर्च जणावे छे.[२७०] दुर्गाशंकर शास्त्री आ ज आकडाने रजू करीने कहे छे: 'ए आकडो अक्षरश नथी; बाकी एवी कारीगरीवाळु मंदिर बधाववामा घणु खर्च थयु हशे ए चोकस'[२७१] मोहनलाल देसाई 'आखी दुनियामा आबु मंदिर पहेलवहेलु थयु छे' एम कहे छे.[२७२] प्रोफे. वेबरना जणाव्या मुजब 'देवालय बधावनानी जमीन ब्राह्मणो पासेथी मेळववामा विमळे सोनाना सिक्का जमीन उपर[२७१] पाथर्या अने देवळ बाधवामा एणे १८५३००००० खर्च्या'[२७३]

ए जमानामा अढार करोड त्रेपन लाखनी रकम विमल पासे आवी क्याथी ? मणिलाल व्यास खुलासो करता कहे छे के 'विमल निर्धनावस्थामाथी एकाएक कोटयधिपति अने राजमान्य पुरुष थयो ए बनाव अचबो उपजावे तेवो छे' परंतु ए 'गमे तेम होय विमल मोटो धनवान अने पराक्रमी पुरुष थयो ए निर्विवाद छे'[२७४] व्यास जेवी शका कोईने पण थवा सभव छे विमल-प्रबधकारना कथन मुजब विमल चद्रवतीनगरीनी नवेसरथी रचना करे, गिरिनार अने शत्रुजयना सघ काढे, अने अर्बुदगिरि उपर शिल्पस्थापत्यनी अनुपम कृति सर्जवे त्यारे एने कोईनु पीठबळ तो होवु ज जोईए लावण्यसमये आ शकाने निर्मूळ करवा माटे काल्पनिक रस्तो काढयो छे 'मामाने त्या रही खेतरमा काम करता अने गायो चारता विमलने एक स्थळे पोलु देखीने त्या लाकडी मारतां धम्रधम्र करता ढेफा त्याथी नीकळी पडया, विमळे एने दूर कर्या तो एमाथी सोनानो कळश प्राप्त थयो'[२७५] लावण्यसमयना समकालीन इन्द्रहसगणि पण

---

२६८ विप्र ९-२३७

२६९ वस्तुपालचरित (सवत १४९७)-जिनहर्ष प्रस्ताव ८

२७०. उपदेशसप्ततिका, द्वितीय अध्याय, तीर्थाधिकार, पृ ८७

२७१ गुमराइ पृ २१४

२७२. जैसाइ पृ २१३

२७३ Prof. Weber's Catelogue of the Berlin MSS, Vol II, pp 1006 & 1037, तीर्थराज आबु-पृ ३८ नोंध ५. अर्बुदप्राचीन जैनलेख संदोह पृ २०५

२७४. विप्र (व्यास) प्रस्तावना, पृ १३

२७५ विप्र ४-९१/९२

आ ज मतलबनी माहिती आपे छे.[२७१] परंतु अगाउ जोई गया तेम आ वात साव निर्मूळ छे. सौ प्रथम तो विमलना पूर्वजो धनाढ्य हता: निश्चय अने लहरनी वात एक बाजु राखीए तोपण विमलना पिता पण धनाढ्य हता; 'वीर' टंकशाळनो अध्यक्ष हतो अने महा अमात्यनी पदवी सुधी पहोंच्यो हतो; चार चार राजानी सेवा करवा ए भाग्यशाळी थयो हतो; विमलनो भाई 'नेढ' पण भीमनो एक मंत्री हतो. आ उपरथी एम मानवाने कारण मळे छे के विमलने वारसामां सारी रकम मळेली होवी जोईए. वधुमां पाटणमां जेनी पासे पुष्कळ धन हतुं तेवा श्रीदत्त नामना व्यवहारियाए पण सारी एवी रकम पोताना जमाई विमलने आपी हशे. लावण्यसमयना कथन मुजब '"श्री' साथे वेविशाळ [२७७]थया पछी विमलने तुरत सुवर्णकलश प्राप्त थाय छे एनो अर्थ एम पण करी शकाय के श्वशुर पक्ष तरफथी विमलने सारुं नाणुं मळ्युं हशे. वळी ए समयमां अणहिलवाड पाटणमां अनेक कोटयधिपतिओ अने लक्षाधिपतिओ वसता हता. जेमने त्यां करोड नाणुं होय तेओ पोतानी महत्ता सूचववा करोड दीठ अक्केक ध्वजा फरकावी शकता.[२७८] 'वीर' अने 'श्रीदत्त' आमांना ज श्रेष्ठीओ न होय एम मानवाने आपणी पासे कोई कारण नथी. आम पितृपक्ष अने श्वशुरपक्ष तरफथी मळेलो सुवर्णवारसो धर्ममां आसक्त विमले चंद्रावती नगरनी पुनर्रचनामां, गिरनार शत्रुंजयनी यात्रामां अने 'विमलवसही'मां खर्च्यो होय ए मानवा जेवी वात छे

बीजी एक वस्तु पण विचारवा जेवी छे. भीमदेवने स्थापत्यनो अत्यंत शोख हतो; अने एनो राज्यकाळ भारतवर्षमां स्थापत्यकलाना इतिहासमां अजोड कही शकाय एम छे [२७९] मुस्लिमोना हाथे निष्ठुर रीते तूटयु होवा छतां हजु पण पोतानां भव्य सौन्दर्य अने आकर्षक रचनाथी गौरवपूर्वक ऊभेलां मोढेरानां मंदिरो पोताना राज्यकाळनी शरूआतमां भीमदेवे बंधावेलुः [२८०] सुलतान महमुदे जे

२७६. विमलप्रबंध (संस्कृत)—इन्द्रहसगणि

२७७ विप्र ४–६७

२७८. द्वयाश्रय

२७९. COG p 58.

२८०. सुलतान महमुदे अणहिलवाडथी सोमनाथ जतां पहेलां, एनो रस्तो रोकवा भीमदेवे मोढेरा मुकामे रोकेला वीस हजार सैनिको पर हल्लो करी एनो नाश कर्यो हतो. आ वीरोचित कार्यमां खपी गयेला सैनिकोनी स्मृतिमां वि. सं. १०८३मां भीमदेवे आ मोढेरानुं मंदिर बंधाव्यानो

मंदिरने जीर्णविशीर्ण करी नाख्युं हतुं ते सोमनाथना देवळनो भीमदेवे विशाळ शिलापट्टकोथी जीर्णोद्धार कराव्यो हतो.[२८१] प्रोफे साकळियाना मतव्य मुजब 'विमलवसही'मा जे प्रकारनु रचनाकौशल जणाय छे ते ज प्रकारनु रचनाकौशल सोमनाथना देवालयनी अदरना भागना स्तभोमा तेमज बीजे जणायु छे.[२८२] भीमदेवना राज्यकाळ दरमियान एनी आण नीचेना प्रदेश अमदावादमा-आशावळमां वि. स १०९१ मा सुदर मस्जिद बधायानो पण उल्लेख मळे छे.[२८३] मेरुतुगना जणाव्या मुजब भीमदेवनी राणी उदयमतीए सहस्रलिंगथी पण वधु सुदर तळाव[२८४] अने हजु पण कारीगरीनी दृष्टिए अनुपम गणाय तेवी, तद्दन भगार हालतमा अवशेषरूपे रहेली, 'राणीनी वाव' बधावेला ए जाणीती हकीकत छे.[२८५]

आम मोढेराना अने श्रीसोमनाथ जेवा सौन्दर्ययुक्त देवालयो बधाववा पाछळ भीमदेवे जे खर्च कर्यो छे ते जोता पोताना ज राज्यमा पोताना मानीता दडनायक द्वारा बधाई रहेली 'विमलवसही'ने भीमदेवे अवश्य सहाय करी होवी जोईए, नेमिनाथचरितमानी प्रशस्तिना उल्लेखथी आ मतने समर्थन पण मळे छे: 'एक बीजे समये भीमना वचनथी शत्रुने जीतवा माटे चतुरंग सेना लईने गयेलो विमल श्रीचद्रावतीना प्रदेशने पाम्यो शत्रुना मस्तक कबजे करी, अने एम पोताना स्वामीनो आदेश सिद्ध करी त्या वसतो ए अबुर्द नामना पर्वतने साचवी रह्यो छे. एना पछी अबादेवीना वरदानथी जेने लक्ष्मी मळी छे तेवो, भीम अने नेढना आदेशथी अर्बुद गिरिराजना शिखर उपर ऋषभदेवनु चैत्यघर करावे छे'[२८६] भीमदेवनु शासन सपत्ति अने शिल्पमा विकस्यु हतु[२८७]

उल्लेख छे फारुकीना वर्णन मुजब सुलतान महमूद मोढेरा थईने सोमनाथ गयो त्यारे आ मदिर बधायु नहोतु COG p. 43 and notes p. 433 (17)

२८१. COG pp 372–373, गुमराइ पृ. २२७
२८२. COG p 373
२८३. COG p 56 The Earliest Muslim Inscription in India from Ahmedabad, IHC III (1289). M. A. CHAGTI
२८४. COG p 57; मेरुतुग
२८५ COG p 56
२८६. नेच गाथा १२–१३
२८७ GTG p 136

एटले भीमदेवे तेमज विमलना भाई नेढे पण आ 'विमलवसही' बंधाववा माटे संपूर्ण टेको आप्यो होवानी शक्यताने नकारी शकाय एम नथी.

विमल अने भीम वच्चे अनुराग

आपणे आगळ जोई गया के विमलप्रबंधना कर्तानी मान्यता अनुसार विमल अने भीमदेव वचे अणराग थयो हतो अने तेथी विमल चंद्रावती जई एनी राजगादी पर बेठो हतो; वगेरे हकीकतोमां कांई तथ्य नथी. वस्तुतः विमल-प्रबंधकारे अति उत्साहमां आवी जई विमलनी कीर्ति वधारवा माटे एकबीजाथी विसंगत एवी वातो रजू करी दीधी छे आ अति उत्साहमां एक स्थळे सत्य हकीकत पण रजू थई गई छे: 'भीमदेव मारा राजा छे एम जाणीने हुं एनी सामे थयो नथी. अमारा कुळनी वट केम लोपुं ?'[२८८] आनो अर्थ ए थयो के सिंध उपरनी चडाई अने रोमनगरना सुलतानो उपरना विजय पछी, चंद्रावतीमां सर्वसत्ताधीश थयो छतां, कर्ताना ज मंतव्य अनुसार, विमल भीमदेवने ज पोतानो राजा गणे छे. जैन अने ब्राह्मण श्रमणो वच्चे चाल्यो आवतो द्वेष भीमदेवना समयमां पण हशे ज. आथी ब्राह्मणोए नानी वये विमलनी प्रतिष्ठा अने सत्ता वधती जोई विमल अने भीमदेव वच्चे विसंवाद ऊभो करवा यत्न कर्यो होय; पण एमां ईर्षाळुओने सफळता मळ्यानो उल्लेख मळतो नथी. विमलचरितकार, लावण्यसमयना विमलप्रबंध उपरथी ए कृतिनी रचना थई होवा छतां, एक नवी वात रजू करे छे: 'राजमान अने धनमदथी जेनामां अभिमान आव्युं छे तेवा विमले ब्राह्मणक्षत्रियोनुं अपमान करवुं शरू कर्युं; एक दिवसे राजाना मानीता पुरोहितनुं पण अपमान कर्युं आथी अकळाईने पुरोहिते राजाना कान भमेर्या.'[२८९] इन्द्रहंसगणिए पण आवी ज वात कही छे;[२९०] परंतु विचारतां एम लागे छे के समकालीन कोई उल्लेख नहिं होवाथी आ वात संपूर्ण श्रद्धेय बनी शकती नथी. ब्राह्मणोने उतारी पाडवा माटे जैन ग्रंथ-

२८८ विप्र ७-२८

२८९. विमलचरित-सौभाग्यनंदिसूरि

राजवद्विमलात्रासे शालागजतुरंगमाः ।
प्रफुल्ला सोतिमानी च तृणवन्मन्यते जगत् ॥ ३-४५ ॥
परं राजप्रसादेन स्वशौर्येणाभिमानवान् ।
गणयेत्तृणवत्सोपि सर्वक्षत्रियमंडलं ॥ ३-५१ ॥
तथा विप्र (व्यास) प्रस्तावना, पृ. ६५-६६

२९०. विमलशाहचरित-इंद्रहंसगणि, श्लोक २३८

કારોએ આવી કોઈ કલ્પનાની વાત ઉમેરી દીધી હશે. જો આવુ થાઈ પણ હોય તો ચંદ્રાવતીનો રાજા ધંધૂક ચિત્રકૂટ (ચિતોડ) જઈને રહ્યો હતો તેને એનુ રાજ્ય પાછુ સોંપવાની ભીમદેવને એ વિનંતિ કરે તો ભીમદેવ કદી એ સ્વીકારે જ નહિ. આ અંગે મણિલાલ વ્યાસ યોગ્ય જ કહે છે કે 'વિમલ ચંદ્રાવતીનો રાજા થયો હોય તો કવિની પૂર્વે થયેલા જૈન ગ્રંથકારોએ અવશ્ય એ હકીકત નોંધી હોત.'[૨૯૧] 'ભૂપાલશતસેવિત:' જેવા વાક્યથી એમ કહી શકાય કે 'ગૂર્જરેશ્વરના સેનાપતિનું પદ ભોગવનાર અને મોટી મોટી જીતો મેળવનાર પુરુષ ચંદ્રાવતીમાં રાજા જેવું માન ભોગવતો હતો.'[૨૯૨] અર્બુદગિરિ ઉપરથી મળી આવેલા શિલાલેખોમા, આ જિનપ્રાસાદોની વ્યવસ્થા જે રીતે કરવામા આવી હતી તેનો ઉલ્લેખ છે: 'જેઓને મંદિરની સંભાળ રાખવાનુ સોંપવામા આવ્યુ હતુ તેમા ચન્દ્રાવતીનો સ્વામી, એનો પુત્ર, ચંદ્રાવતીના રાજાઓ, સ્થાનપતિઓ અને ભટ્ટારકો'[૨૯૩] વગેરે છે. એટલે આ 'રાજા' શબ્દ 'શ્રેષ્ઠી' શબ્દની જેમ અમુક પ્રકારના ઉચ્ચ અધિકારીઓ માટે વપરાતો શબ્દ હોવો જોઈએ. 'ચંદ્રાવતીના દંડનાયક તરીકે જવાબદારી સંભાળ્યા પછી વિમલ આવા સો રાજાઓથી વીંટળાયેલો હતો, એ 'સો રાજા' એક પ્રકારના અધિકારી વર્ગને સૂચવે છે.

લાવણ્યસમયના કથન મુજબ ભીમદેવ નૃપે વિમલ ચંદ્રાવતીમા હતો ત્યારે એને 'છત્રચામર' વગેરે મોકલ્યા હતા.[૨૯૪] કથાકોશ અને 'પ્રબંધસંગ્રહ (વિ. સં. ૧૫૧૨)'ના જણાવ્યા મુજબ, ભીમદેવ નૃપે છત્રચામર વગેરે મોકલી વિમલને 'નૃપતિ' બનાવ્યો હતો.'[૨૯૫] આ ઉલ્લેખ પરથી મણિલાલ વ્યાસ શંકા કરે છે કે 'વિમળ છૂટો પડવા છતાં વિમળના પરાક્રમ માટે ભીમદેવને માન હોય ને પાછળથી તેને (ભીમને) પોતાની ભૂલ સમજાઈ હોય અથવા એવા પરાક્રમી પુરુષને પોતાની સાથે દુભાયેલો રહેવા દેવો એ રાજનૈતિક દૃષ્ટિએ અહિતકર ધારીને ભીમદેવે તેને સંતુષ્ટ કરવા છત્રચામર અને રાજાની પદવી આપી હોય.'[૨૯૬] દુર્ગાશંકર શાસ્ત્રીના મત મુજબ વિમળશાહે ચંદ્રાવતીના પરમારને હરાવી એની પાસે ગુજરાતના રાજાનુ આધિપત્ય કબૂલ કરાવ્યા પછી દંડનાયક તરીકે પોતાનુ

---

૨૯૧. વિપ્ર (વ્યાસ) પ્રસ્તાવના, પૃ. ૬૭-૬૮

૨૯૨. વિપ્ર (વ્યાસ) પ્રસ્તાવના, પૃ. ૬૭

૨૯૩ Historical Inscriptions of Gujarat, Part I, p. 132 (Lines 26 to 30) ૨૯૪. વિપ્ર ૮-૭૭

૨૯૫. સાતમી ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદનો અહેવાલ, પૃ. ૬૩-૬૮

૨૯૬ વિપ્ર (વ્યાસ) પ્રસ્તાવના, પૃ. ૬૭

रहेवानु चद्रावतीमा ज राख्यु अने धीमे धीमे पोतानी सत्ता वधारी के भीमदेवने विमळशाहनुं स्वतंत्र राजापणु स्वीकारवु पडयु होय.'[२८७] आ मत एटला माटे निर्मूळ बने छे के विमले पोते ज धधूकने पाछो बोलावी चद्रावतीनी गादी वगरयुद्धे भीमदेव पासेथी पाछी अपावी छे,[२९८] पछी 'नृपति बनवानो प्रश्न रहेतो नथी गौरीशंकर ओझा ए ज कहे छे के 'विमले धधूकने चितोडथी बोलावी भीमदेव साथे समजूती करावी अने आ धधूकनी आज्ञा लई विमलवसही बधाव्यु'[२९९] आम विमल अने भीमदेव वच्चे अणराग नहि, पण अनुराग होय एवा स्पष्ट उल्लेखो मळे छे विमलनु मन गर्भसस्कारे विरक्त होई, अगाउ जोई गया तेम चद्रावतीमा धधूकने पुन गादीए स्थापित कर्या पछी, तुरत निवृत्ति तरफ वळ्यु होवु जोईए, अने भीमदेवने पोते निवृत्त थवानी वात करी हशे भीमदेवे विमलने समजाव्यो होवो जोईए, पण विमले पोतानी निवृत्त थवानी मनोवृत्ति पर भार मूकी, सामान्य मानवी तरीके चद्रावती नगरीमां रहेवानी इच्छा प्रदर्शित करी हशे, जेथी 'विमलवसही'ना बांधकाम उपर पोते ध्यान राखी शके आथी आकर्षाई भीमदेवे 'छत्रचामर वगेरे भेट मोकल्या हशे, साथे साथे 'नृपति पद पण आप्यु हशे आने पण इग्लेन्डमा 'उमराव' पद अने भारतमा भारतरत्न जेवी पदवीओ अपाय ज छे आ 'नृपति'पद मळवाने कारणे लावण्यसमये 'चद्रावतीधणी,' 'चद्रावईश' जेवा शब्दप्रयोगो विमलने माटे उपयोगमा लीधा होय एम कही शकाय दुर्गाशकर शास्त्री कहे छे तेम 'विमळने चद्रावतीईश' जेवां बिरुदो लगाडया होवाने कारणे भीमदेवने विमळनु स्वतंत्र राजापणु स्वीकारवु पडयु होय तेमो सत्य नथी.'[३००] धधूकने चद्रावतीनी गादीए पुन स्थापित कर्या पछी एक पण उल्लेख एवो नथी मळतो जे द्वारा 'विमलवसही सिवाय कोई पण प्रवृत्ति विमले हाथ धरी होय अने भीमदेवे विमलवसही' बाधवानो आदेश[३०१] आप्यो छे ए उल्लेख नेमिनाथचरितनी प्रशस्तिमा बहु ज स्पष्ट छ एनो अर्थ ए थई शके के विमलनी अणहिलवाड पाटणना दडनायक तरीके निमणूक थई त्यारथी वि सं १०८८ मां विमले 'विमलवसही'नु कार्य सिद्ध कर्यु त्यासुधी विमल अने भीमदेव वच्चे अत्यत सुमेळ रह्यो छे

---

२९७ गुजरातना तीर्थस्थानो पृ. १४७

२९८ तीर्थकल्पे अर्बुदकल्प, गाथा ३९, पृ ५२–५३

२९९ राजपूतानेका इतिहास पृ १९३–१९४

३०० गुजरातनां तीर्थस्थानो, पृ. १४७ ३०१ नेच गाथा १३

विमलने पुत्र हतो के नहि?

विमलने पुत्र हतो नहि एवी सामान्य मान्यता आज सुधी प्रवर्ती रहेली छे. ए मान्यताने आधारे गुजरातना सुप्रसिद्ध विद्वान रामनारायण वि. पाठके 'मुकुन्दराय' शीर्षक सुंदर टूकी वार्ता लखी छे.[३०२] 'विमलप्रबंध'कार आ प्रसंगने वर्णवता कहे छे के विमले अर्बुदगिरि उपर जिनप्रासाद बंधाववानो विचार करता, पोतानी इष्टदेवी–अर्बुदादेवीनी आराधना करी.[३०३] त्रण उपवास पछी अर्बुदादेवीए प्रसन्न थई विमलने कई मागवा कह्युं.[३०४] विमले बे वरदान माग्यां. पहेला वरदानमां अर्बुदगिरि उपर जिनप्रासाद रचाववानी इच्छा;[३०५] बीजा वरदानमां पुत्र.[३०६] अर्बुदादेवीए कह्युः 'बे वरदान नहि; एक माग– का प्रासाद का पुत्र.'[३०७] विमले पोतानी पत्नी 'श्री' साथे चर्चा-विचारणा करी सलाह मागी.[३०८] श्रीए जवाब आप्यो के 'पुत्र भक्त नीवडे के नहि; एना करता प्रासाद मागो'[३०९] आथी विमले प्रासाद कराववानुं वरदान माग्युं.[३१०] 'पुरातन प्रबंधसंग्रह'मां मुनिसुंदरसूरिए आ वातनुं समर्थन कर्युं छे.[३११] उपदेशसप्ततिका पण कहे छे : तीर्थस्थापना अने संताननां विचारोमां सस्पृह होवाथी विमले भक्तिपूर्वक अंबादेवीनी आराधना करी.[३१२] गौरीशंकर ओझाना मत मुजब 'विमलने पुत्र हतो के नहि तेनो पत्तो लागतो नथी.'[३१३] मोहनलाल दलीचंद देसाई पण पाके पाये कही शकता नथी.[३१४] गौरीशंकर ओझा कहे छे के 'विमळशाह अने तेमना कुटुंबकबीलानी बाबत अंधारमां रहेली छे.[३१५] आम होवा छतां लावण्यसमयनुं आ कथन चिंत्य बनी

३०२. खेमी अने बीजी वातो
३०३. विप्र ९–१९४
३०४. विप्र ९–१९५
३०५. विप्र ९–१९५
३०६. विप्र ९–१९६
३०७. विप्र ९–१९६
३०८. विप्र ९–१९७
३०९. विप्र ९–१९८
३१०. विप्र ९–२००
३११. श्लाघ्यते स विमलोऽर्बुदाधिपो योऽम्बिकावरमवाप्य सन्मतिः ।
भाविनीमवगणय्य सन्तर्ति, त्वद्विहारमिममाश्वचीकरत् ॥
मुनिसुंदरकृत अर्बुदगिरि श्रीऋषभस्तोत्र तथा जैसाइ, पृ २१५
३१२. उपदेशसप्ततिका : द्वितीय तीर्थाधिकार, चतुर्थ उपदेश, पृ. ८७
३१३. विविधु पु ७६, अ. १
३१४. जैसाइ पृ. २१५
३१५. विविधु पु. ७६, अ. १

रहे छे, कारण के तत्समयना बे लेखो द्वारा विमलने पुत्र होवाना उल्लेख मळी रहे छे.

'पुरातन प्रबंधसंग्रह' प्रमाणे विमलना पुत्र चाहिले रंगमंडप बंधाव्यो हतो एवो निर्देश मळे छे.[३१५] आ निर्देशने अर्बुदगिरि उपरना बे शिलालेखो समर्थन आपे छे. वि. सं. १२०० ना जेठ वदि १ ने शुक्रवारे श्रीवीर मंत्रीना संतानीय-परंपरामां थयेला मंत्री चाहिल्लना पुत्र राणाकना पुत्र नरसिंहे पोताना कुटुंब साथे पोताना कल्याण माटे अगियारमी देरीना मूलनायक श्रीमुनिसुव्रत स्वामीनी परिकरवाळी प्रतिमा करावी; एनी श्रीनेमिचंद्रसूरिए प्रतिष्ठा करी.'[३१६] वि. सं. १३९४ ना जेठ वद ५ ने शनिवारना शिलालेखमां 'विमल मंत्रीश्वरना वंशमां उत्पन्न थयेल ठ० अभयसिंह' वगेरेनो उल्लेख छे.[३१७]

आमांना प्रथम शिलालेख उपरथी जाणी शकाय छे के विमलना पिता वीर; अने विमलनी संतानीय परंपरा एटले चाहिल्ल, राणाक अने नरसिंह. वीरना बीजा पुत्र नेढनी संतानीय परंपरा पूरेपूरी आपणने मळे छे;[३१८] एटले आ परंपरा विमलनी छे, एमां शंका रहेती नथी.[३१९] बीजा शिलालेखमां 'महं० विमलान्वये' शब्दोथी 'विमलना वंशमां उत्पन्न थयेल भाणे मूर्ति करावी

---

३१५. पुरातन प्रबंधसंग्रह पृ. ५२, तथा जैसाइ, पृ. २१५–२१६

३१६. अर्बुद प्राचीन जैन लेखसंदोह, शिलालेख न ४३, पृ. ३२ अने पृ. २८१–२८२

दं० संवत १२०० ज्येष्ट वदि १ शुक्रे म० वीरसंताने महं चाहिल्ल–सुत राणाकं । तत्सुत नरसिंहेन कु[टुं]बसहितेनात्मश्रेयोऽर्थं मुनिसुव्रतप्रतिमा कारितेति । प्रतिष्ठिता श्रीनेमिचंद्रसूरिभिः [पृ ३३]

३१७. अर्बुद प्राचीन जैन लेखसंदोह, शिलालेख नं ९२, पृ ४५ अने पृ. २९५-२९६

सं. १३९४ वर्षे जेष्ट वदि ५ शनौ महं० विमलान्वये ठ० अभयसीह-भार्या अहिवदे–पुत्र मह जगसीह लषमसीह कुरसीह महं० जगसीह-भार्या जेजलदे तत्पुत्र महं भांण,(भाणमदण)केन कुटुंबसहितेन विमलवि(व)सहिकाया देव्याः श्रीअंबिकाया । मूर्त्ति कारिता ॥ प्रतिष्ठिता ॥ [पृ ४५]

३१८. एज

३१९. अर्बुद प्राचीन जैन लेखसंदोह, पृ. २८१–नोंध

एवो उल्लेख छे[३२०] मुनि जयंतविजयजी कहे छे के 'आ नियममां कोई एवी कल्पना करी शके के आ मूर्ति भरावनार मंत्री विमलना वंशमां नहि पण तेमना मोटा भाई मंत्री नेढना वंशमा उत्पन्न थयेल होय; परंतु 'आ विमळ-वसही मंदिर बंधावनार मंत्री विमळ जगप्रसिद्ध होवाथी सौ कोई तेमने ओळखी शके; एटला माटे तेमणे मंत्री नेढने बदले मंत्री विमळना वंशमा उत्पन्न थयेल एम लखाव्यु होय.'[३२१] आथी एओ माने छे के 'आ लेख उपरथी विमळ मंत्रीने पुत्र न हतो एवी अत्यार सुधीनी बंधाओनी मान्यता खोटी पडे छे'[३२२]

आ विमलवसही विमलना जीवता संपूर्ण बंधाई नहि रही होय; चाहिल्ले रंगमंडप बंधाव्यो होय;[३२३] अने नेढना पौत्र पृथ्वीपाळे चाहिल्लनु अधूरु रहेलु कार्य पूर्ण कर्यु होय.[३२४]

विमलनो वंशावळी

विमल ए वीरनो पुत्र हतो ए ऐतिहासिक हकीकत छे. वि सं १२००नी सालना शिलालेखना उल्लेख मुजब विमलनी त्रीजी पेढीए 'नरसिंह' होय ए बराबर छे. विमलवसहीनी वि स. १०८८मा प्रतिष्ठा थई ते समये विमलने पुत्र नहोतो ए पण ऐतिहासिक हकीकत छे. 'विमलसही'नी प्रतिष्ठा पछी 'श्री'ए बाळकने जन्म आप्यो होय ए संभवित छे विमलनी त्रीजी पेढीए एटले के एक रीते एक सो वार वर्ष ए दृष्टिए प्रपौत्र नरसिंह हयात होई शके अने विमलवसहीनी एक देरीमा सुव्रत स्वामीनी मूर्तिनी प्रतिष्ठा करावी ते समये एनी उमर आ हिसाबे आशरे साठ वर्षनी आसपासनी होवी जोईए.

वि. स. १३९४ना शिलालेखमाना उल्लेख मुजब विमलना वंशज भाणे

---

३२० अर्बुद प्राचीन जैन लेखसंदोह, पृ. २९५-नोंध

३२१. अर्बुद प्राचीन जैन लेखसंदोह, पृ २९५-२९६-नोंध

३२२ अर्बुद प्राचीन जैन लेखसंदोह, पृ २९५-नोंध

३२३. पुरातनप्रबंधसंग्रह पृ. ५२ तथा गुरा पृ १४७

३२४. KĀVYĀNUŚĀSANA-INTRODUCTION p CXLIX तथा गुरा पृ १४७-३४८. श्री रसिकलाल परीखे पृथ्वीपालने चाहिल्लना पुत्र तरीके अने विमल्ना पौत्र तरीके गणाव्यो छे एमा सरतचूक थई जणाय छे, पृथ्वीपाल नेढना पुत्र धवलना पुत्र आनंदनो पुत्र छे.

जुओ उपदेशसप्ततिका अथ द्वितीय श्रीतीर्थाधिकारे चतुर्थ उपदेश, पृ ८७ 'पछी तेना चाहिल भ्राताए त्यां मंडपादिक कराव्या; अने मोटा व्यवहारीआओए देवकुलादिक कराव्यु'.

विमलवसहीमां अंबिकानी मूर्ति प्रतिष्ठापित करी. वि. सं. १२०० थी १३९४ना समय वच्चे १९४ वर्षनु अंतर छे; अने एमां विमलना प्रपौत्र 'नरसिंह' पछी 'विमलना वंशज' अभयसिंह, जगसिंह, अने भाणनो उल्लेख छे; एटले नरसिंह अने अभयसिंह अने एना पौत्र भाण वच्चे ओछामां ओछो पचोतेर वर्षनो समय गणीए तो एकसो पचीस वर्षना समयनु अंतर नरसिंह अने अभयसिंह वच्चे रहे; एटले के नरसिंहनी आशरे छट्ठी पेढीए अभयसिंहनो जन्म थयो होय.[३२५]

---

३२५ अर्बुदप्राचीन जैन लेखसंदोह, लेख १, ४३, ९२, पृष्ठ १९९, २८१, २८५

प्राग्वाटवंशनी वंशावली

- निन्नय
  - लहर
    - वीर [अवसान वि सं १०८५]
      - नेढ
        - धवल
          - आनद (पद्मावती–सलुणा)
            - पृथ्वीपाल (नायलदेवी)
              - जगदेव (मालदेवी)
              - धनपाल (रूपिणी उर्फे पिणाइ)
            - नाना (त्रिभुवनदेवी)
        - लालिग
          - महिंदुक
            - हेमरथ
            - दशरथ
      - विमल [१०८४]
        - [महं०वीरसंताने] चाहिल्ल
          - राणाक
            - नरसिंह [सं. १२००)
              - महं० विमलान्वये अभयसिंह [अहिवदे]
                - जगसिंह
                  - भाण (भाणमंडण) [वि. सं. १३९४]
                - लखमसिंह
                - कुरसिंह

155160

आम वि. सं १२०० अने वि. स. १३९४ना बे शिलालेखोथी वर्षोथी चर्चायेल प्रश्न 'विमलने पुत्र हतो के नहि' एनु समाधान मळी रहे छे; पण ए साथे ज ए हकीकत साची ठरे छे के आजे विमलनी जे सुप्रसिद्धि छे ते एना वशजने लीधे नहि, कारण के एमांना कोईनु नामनिशान नथी. परंतु अर्बुदगिरि उपरना प्रासादने लीधे छे– 'विमलवसही'ने लीधे छे

विमलनुं अवसान अने सालवारी

विमलप्रबध अने तत्कालीन जे काई साहित्य—उत्कीर्ण लेखो वगेरे उपलब्ध छे तेमां क्याय विमलना अवसान विशे क्शो ज उल्लेख नथी जन्म विशे तो एटलोय उल्लेख मळे छे के 'वीर'ने त्या ज्ञातिमा शणगाररूप पुत्र विमलनो जन्म थयो.[३२६] अभ्यास पूर्ण करी विमल उमरलायक थयो त्यारे वीरे संसारनो त्याग करी वि. स १०८०मां दीक्षा लीधी, अने १०८५मा मृत्यु पाम्यो.[३२७] विमलना लग्न पाटणना एक श्रेष्ठीनी पुत्री साथे थयु हतु, ने एनु नाम 'श्री' हतु.[३२८] वीरनो मोटो पुत्र नेढ पण भीमदेवना राज्यकाळ दरमियान अधिकारपदे हतो, एटले 'वीर'ना ससारत्यागनी साथे के पहेला मत्री नेढे ज 'विमल'नी दडनायकनी पदवीए निमणूक करावी हशे. वि स. १०८१मा सुलतान महमूदनी सोमनाथ पर चडाई थई त्यारे अणहिलवाड पाटण खाली करी भीम जेसलमेर तरफ पाछो जई सोमनाथथी पाछा वळता सुलतान महमूदनो सामनो करवा तैयारी करीने ऊभो; विमलने व्यूहरचनानी दृष्टिए कथकोटमा मूक्यो. सुलतान महमूदे कथकोटमा रहेला विमलने पराजय आपी मारवाडने बदले सिंधनो रस्तो पाछा फरवा माटे पकड्यो. भीमदेवे आ हकीक्त सांभळी सिंघ तरफ प्रयाण कर्यु अने विमलने पोतानी पडखे रहेवा सिंध तरफ बोलाव्यो; वि. सं. १०८१.

भीमे जेसलमेरथी अने विमले कथकोटथी सिंघ देश पर चढाई करी त्यांना राजा हम्मुकने हराव्यो अने भारे खडणी लीधी. ए ज समये माळवाना राजा भोजना सेनाधिपति कुलचंद्रे पाटण पर चडाई कर्याना समाचार मळ्याथी भीमदेव तुरत पाटण पाछो फर्यो; अने भीमदेवना आदेश मुजब मित्रसैन्य साथे विमले गझनी तरफ पूर झडपे पाछा जई रहेल सुलतान महमूदनो पीछो पकड्यो. छेक रोमनगर सुधी पहोंची सुलतान महमूदना बार सुलतान–सूबाओने

३२६ नेच गाथा ११

३२७. नेच गाथा १०

३२८. वस्तुपालचरित (वि. स १४९७)–जिनहर्ष, प्रस्ताव ८

जीत्या अने गुर्जरराजनी प्रतिष्ठा वधारी; वि. सं. १०८१.

सुलतान महमूदनी गुर्जरराष्ट्र परनी चढाईमां १०८१मां शौर्यपूर्वक रापी गयेला वीर सैनिकोना स्मरणमां भीमदेवे वि. सं. १०८३मां मोढेरानुं सूर्य-मंदिर रचाव्युं.

'विमलवसही'नी प्रतिष्ठा वि. सं. १०८८मां थई, जो 'विमलवसही'ना कामने संपूर्ण करवा माटे ओछामां ओछां पांच वर्ष गणीए तो मोढेराना सूर्यमंदिरनी साथे ज वि सं. १०८३मां 'विमलवसही'नुं बांधकाम शरू थयुं होवुं जोईए एनो अर्थ एवो थाय के भीमदेवे चंद्रावतीना परमार धंधूकने वश करवा वि. सं. १०८२ के १०८३नी शरूआतमां विमलने चंद्रावती मोकल्यो होवो जोईए; अने नासी गयेला धंधूकने समजावी वि. सं. १०८३मां ज पाछो बोलावी गादी सुपरत करी होवी जोईए.

विमल दंडनायक थयो त्यारे, आपणे अगाउ जोयु तेम, एनी उंमर सोळथी अढार वर्षनी होवी जोईए. एटले वि. सं. १०८० मां दंडनायक निमायेल तेथी एनो जन्म वि सं १०६२ थी १०६४नो आसपास थयेल होवो जोईए. आ हिसाबे विमलवसहीनी प्रतिष्ठाना समये एनी उमर खूब ज नानी-मात्र चोवीसथी छव्वीस वर्षनी होवी जोईए

आवा सुप्रसिद्ध अने जैनोमां अतिप्रिय विमलनो विमलवसहीनी प्रतिष्ठा पछी क्यांय उल्लेख नथी मळतो एनो अर्थ ए थई शके के बहु ज नानी उंमरे-विमलवसहीनी प्रतिष्ठा पछी वि सं १०८८ के १०८९मां एनुं अवसान कदाच थयु होवुं जोईए, कारण के विमलवसहीनु बहारनुं रंगमंडपनुं काम अधूरुं ज रह्यु छे. वळी विमलना भाई नेढनी लांबी वशावळी मळी रहे छे, कारण के एना पुत्र, पौत्र अने प्रपौत्र राज्यमां अधिकारपदे हता, ज्यारे विमलनो पुत्र चाहिल्ल वि. सं. १०८८ के १०८९मां जन्म्यो होय तो एने मोटो थतां समय लागे, जोके 'पुरातन प्रबंधसंग्रह'मांना उल्लेख मुजब विमल-वसही'नु अधूरुं रहेलुं रंगमंडपनु कार्य एणे पूरुं करावयुं शरू कर्युं छे; परंतु चाहिल्ल पण नानी वये अवसान पाम्यो हशे, जेथी ए कार्य नेढना प्रपौत्र पृथ्वीपाले पूरुं कराव्युं छे.

आ रीते गुजरातना एक सुपुत्र विमले पोतानी टूंकी एवी कारकिर्दीमां वि. सं. १०६२ के १०६४ थी १०८८ के १०८९ ना समयमां छव्वीसेक वर्षना टूंका गाळामां वीर, तेजस्वी,—धीर आदर्श जैन तरीके जीवन जीवी जाण्यु, जीवी बताव्युं समजाय छे.

७. 'विमलप्रबंध'नुं समाजदर्शन

कोई पण कृति, पछी ए व्यासकृत महाभारत होय के वाल्मीकिकृत रामायण, बाणनी कादंबरी होय के कालिदासनुं मेघदूत, कोई पण सदीमां आ कृतिनुं सर्जन थयुं होय, एमां ते ते लेखकना समयनी राजकीय सामाजिक अने धार्मिक परिस्थितिनुं दर्शन थया विना रहेतुं नथी, कारण के ते ते समयनी कृतिनो सर्जक तत्कालीन वातावरणथी मुक्त रही शकतो नथी; ए ज वातावरणमां एनो उछेर, हलनचलन, विकास, आथी स्वाभाविक रीते ज ते ते कृतिनां पात्रो, वर्णनो, संवादो, पारिभाषिक शब्दो द्वारा ते ते समयनी माहिती–ओछे के वधते अंशे–अभ्यासीने मळी रहे छे. विमलप्रबंधना कर्ता लावण्यसमय पण तत्कालीन परिस्थिति–वातावरणथी मुक्त रही शके नहि एओ अमदावादना रहीश हता, वणिक कुटुम्बमां जन्म्या हता, समग्र गुजरातमां पगे चालीने एओए विहार कर्यो हतो, केटलाय गामोमां चोमासुं कर्युं हतुं; अभ्यासी मनोवृत्ति हती अने उपदेश मुख्य व्यवसाय हतो; एटले सहज भावे ज एओ गुजरातनी धार्मिक, सामाजिक अने राजकीय माहितीथी रंगायेला होय आथी तत्कालीन–सोळमी सदीनुं गुजरातनुं आछेरुं चित्र एमनी कृतिमांथी मळी रहे एम छे. श्री. रत्नमणिराव योग्य ज रीते कहे छे के विमलप्रबंध 'सुलतान महमद बेगडाना समयनो पण सारो ख्याल आपी शके छे,[१] अने एमां वर्णवेला रिवाजो मोटे भागे गई सदी सुधी हता एम कहीए तो चाले.'[२]

'विमलप्रबंध' परथी अवलोकन करीए तो जणाय के एक वखतनुं समृद्ध भिन्नमाल अने भिन्नमालना आसपासना प्रदेशनी जाहोजलाली सोळमी सदीमां लुप्त थई गई हती;[३] अगियार–बारमी सदीमां 'श्री' अने 'सरस्वती'थी

१. गुजरातनुं पाटनगर अमदावाद, पृ ३९५

२ गुजरातनुं पाटनगर अमदावाद, पृ ३९५

३. विन्सेन्ट स्मिथ कहे छे के वलभीना पतन पछी पश्चिम भारतनी

राजधानीनुं स्थान अणहिलवाडे लीधुं.—Introduction to Kāvyānuśāsana, Vol II, P. 332-333

'एम कहेवामां अतिशयोक्ति नथी के गुजरातनुं घडतर श्रीमालनुं छे, अने ए भिन्नमाल-श्रीमालनी गुर्जरता आनर्त सौराष्ट्र अने लाटमां विस्तरी छे, ए निःशंक छे ए अर्थमां आ प्रदेशोनी 'गुजरात' तरीके 'पहेली राजधानी भिन्नमाल के श्रीमाल' गुजरातनी राजधानीओ, पृ. ९२

'जैनग्रंथकारोमा सिद्धर्षि, हरिभद्रसूरि, उद्द्योतनसूरिनुं साहित्यक्षेत्र भिन्नमाल हतुं, महाकवि माघ अने ज्योतिषी ब्रह्मगुप्त पण भिन्नमालमां हता.' गुजरातनी राजधानीओ पृ. १०३-१०४

'तेनुं भौगोलिक स्थान अने मार्ग जोता ए वाणिज्यनुं केन्द्र हशे एम मानवाने कारण छे; अर्थात् भिन्नमाल ए स्थलपत्तन छे, अने तेनी श्री ए कारणथी आवी हशे वलभीनी जेम एनुं महत्त्व राजधानी बन्या पहेलानुं हशे अने एने राजधानी बनाववामां निमित्त बन्युं हशे.' गुजरातनी राजधानीओ, पृ. ११२-११३

'मध्यकालीन जैन इतिहासनो आ भिन्नमाल साथे घणो संबंध रह्यो छे हालनी जे जैन जातिओ रजपूताना पश्चिम भारत अने पंजाब तथा संयुक्त प्रांतमां वसे छे ते बधीनुं मूळ उत्पत्तिस्थान ए भिन्नमाल छे.' जै सा इ पृ. १३२

'अहींनी वस्ती गूब छे. विधर्मीओनी संख्या (वैदिक धर्मने माननारी) बहु अने बौद्धोनी ओछी छे. अहीं एक संघाराम छे जेमां हीनयान संप्रदायना सो साधु रहे छे, जे सर्वास्तिवादी छे. ब्राह्मणोनां देवमंदिरो घणां छे, जेमां जुदा जुदा संप्रदायना अनुयायीओ रहे छे.' रजपूतानेका इतिहास पृ ११

'इ. स. १८२४ (सं. १८८१) मां सर चार्ल्स कोलविल पोताना मित्रो सहित आ स्थळे आव्या हता, त्यारे संगेमरमरथी बनेलां वीस मंदिरो अहीं ऊभां हतां, जेनी सुन्दरतानी प्रशंसा एमोए करी छे, त्यारे एकेय मंदिर सारी स्थितिमां नहोतुं अहीं रहेनार एक वृद्ध रजपूते (ई स १८८८-सं. १९४४) मां अहींनां मंदिरो विशे मने कह्युं हतुं के 'रजपूताना-माळवा रेलवे थवा पहेलां अहीं संगेमरमरनां घणां मंदिरो हतां; परंतु ज्यारे रेलवेना ठेकेदारोए अहींना पत्थरो

लई जवानो हजारो लीधो त्यारे अहींनां रह्यां सह्यां मंदिरोना संगे-मरमरने पण तोडीने एओ लई गया ज्यारे सरकारनी जाण पर आ लावशामां आव्युं त्यारे आ पत्थर लई जवानी मनाई करवामां आवी आथी एकठा करेला संगेमरमरना ढगला चन्द्रावती अने गामडनी वच जगाए जगाए तेमज फेंकाए सानपुरनी पासे पड्या छे आ प्रमाणे प्राचीन नगरीनो खेदजनक अंत आव्यो"

सिरोहीका इतिहास, पृ ४१-४२

"ई स १८९० मां मि फर्क्सिने आ स्थळनी मुलाकात लीधी त्यारे रेल्वे लाईन पसी ता उपरांत गाडां भराय तेटला पत्थरोना ढगला पड्या हता"

स्व रामलाल चुनीलाल मोदी लेखसंग्रह पृ ११५

Dr Gustave Le Bon one of the British Engineer writes "The English pickaxe is unmerciful and whenever avery temple is found situated upon a road under construction, porticoes, columns statues fall under the pick of the demolesher to go and help to consolidate some embakments I had recently made a long journey to Chandrāvati to visit a temple among several other remains A lucky chance at the moment of starting made me aware that the temple had recently reduced to fragments by an engineer to pave a road

' From the account left by Mrs Hunter Blair, who visited Chandrāvati with the Commander in-chief of Bombay in 1824 it appears that this temple made entirely of whole marble was one of the finest in India

" Writing on marble temples General Burgess stated ' Most of what once existed at Chandravati, Bhilādi, Mudetha and many at Anhilpattana appear to have been constructed of this material and the remains of Sarotra and Roho an entirely white marble But marble shrines have now disappeared

शोमतुं पाटण शहेर पण मुस्लिम राज्यनो विस्तार वधवानी साथे झांखुं थतुं जतुं हतु. अहमदशाहे ई. स. १४११ मा अमदावाद वसाव्युं[४] त्यारथी

this material having been carried off to break up for lime, nor is this vandalism of remote date, but has been continued till the present time."

Architectural Antiquities of Northern Gujarat, pp. 96-99

"उज्जड थयेली चद्रावतीनी भव्यतानो खरो ख्याल अत्यारे आपणने आवी शके एवु नथी, पण तेरमा-चौदमा शतकना चंद्रावतीना श्रीमंतोए बंधावेला कुमारियानां दहेरा, देलवाडानां दहेरां अने चद्रावतीनां खंडेरोना पथ्थरो पर सचवाई रहेली कोतरकामनी कारीगरी आपणे जोईए छीए त्यारे आपणने लागे छे के चद्रावती ए खरेखर इंद्रपुरीतु वच्चु होवु जोईए. एकला विमले ज नहि, विमलनी पछीना बीजा धनवानोए एनी शोभामा घणो वधारो कर्यो हशे. पण चंद्रावतीने ए श्रेणी पर मूकवानु मान तो विमलने ज हतु. विमलना दहेरांनी पेठे विमलनी चद्रावतीनो नाश करवानु घोर कर्म अल्लाउद्दीननी फोजना मुसलमानोए कर्यु'

त्रिप्र (व्यास) प्रस्तावना, पृ ७०.

'आ श्रीमालनगरी अत्यारे वेरान स्थितिमां छे. त्यां हतुये 'भिनमाळ' नामनु गामडु छे आ स्थळ आबुना छेल्ला टेकराओथी पश्चिममां एक विशाळ मेदानमा आवेलु छे" गुजरातनी राजधानीओ, पृ. ११०

According to the Śrimāla Purāna Śri left that city in the V. S. 1203 = 1147 A. D.

Kāvyānuśāsana, Introduction, p LXXXIII to CLL.

४ गुजरातनु पाटनगर अमदावाद, पृ. २८

श्रीस्तम्भतीर्थ पुरभेदन च यत्रोभयत्र स्फुरतः पुरे द्वे ।
अहम्मदावाद-पुराननाया किं कुण्डले गुर्जरदेशलक्ष्म्याः ।

हीरसौभाग्य-देवविमलगणि

[अमदावाद जेनु मुख छे ऐवी गुर्जरदेशनी लक्ष्मीनां खंभात अने पाटण ए आबे के बंने बाजु स्फुरायमान थतां कुंडळो छे.]

अमदावाद मुस्लिम सल्तनतनु पाटनगर बन्युं अने पाटणनी प्रतिष्ठा घटी गई. गुजरात समृद्ध हतुं, गुजरातना वतनीओ सुखी हता परंतु विमलप्रबंधमां विमलनी माता वीरमती भाईने घेर जाय छे *त्यारे* एना सुखेथी ज उल्लेख मळे छे के 'मोटी उमरना वृद्धो पण महेनत करे तो ज पूरां अनाजपाणी पामी शकता.' (४-५९) गुजरात एक अने अविभाज्य नहोतुं, एटले टंटा-बखेडा चाल्या ज करता. महमूद बेगडाए जूनागढना हिंदु राजा रा' मांडलिक पर हल्लो कर्यो. *एना पर विजय मेळवी. एने वटलावी मुस्लिम कर्यो त्यांनां* मंदिरोनी सोनानी मूर्तिओ लूटी[५], द्वारिकानां मंदिरोनो नाश करी त्यांना हिंदु राजा भीमने पकडी एना शरीरना आठ टुकडा करी अमदावादना भद्रना किल्ले लटकाव्या[६], अने चांपानेरना हिंदु राजा पताई रावळ तथा एना प्रधानने मुस्लिम नहि थवाना गुना बदल मारी नाख्या[७] आ परिस्थिति सोळमी सदीना पूर्वार्धमां हती. एनी स्पष्ट छाप लावण्यसमयनी कृतिमां पण छे ज—

> जिहां जिहां जाणइ हींदू नाम, तिहां तिहां देस उजाडइ गाम।
> हींदुनउ अवतरीउ काल, जउ चालइ तु करिइ संभाल ॥[८]

एकबीजां शहेरो उपर धाडां धसी जतां अने त्यां वसता लोको दाणा-दाण थई जता (२-५०); विजेताओ जे आवे ते लूटता, पकडी जता, अने मारी नाखता (२-५१), एटले समृद्धि होवा छतां लोकोना जीव ऊंचा रहेता.

नगर-शहेर

लावण्यसमय जैनशास्त्रो-आगमना अभ्यासी हता एटले एमां आवतां नगरोनुं वर्णन एमना मनश्चक्षु समक्ष हतु ज; साथे साथे मुस्लिम बादशाहोए शणगारेल अने विकसावेल अमदावाद एमनु जन्मस्थान हतु; विहारने कारणे गुजरातनां अन्य समृद्ध शहेरो एओए जोयां हतां; एटले विमलप्रबंधमां आवतां नगरवर्णनो उपरथी *तत्कालीन नगररचनानी झांखी थई शके एम छे.*

अनैतिहासिक पुष्पमाळ नगरनुं वर्णन करतां कवि कहे छे : "आ नगरमां देवोए सुंदर वन, वावी वाव, सरोवर अने मोटां मकानो, जाळीओ, गोख अने जडित बारणां बनाव्यां; एमां व्यवहारियाओ वास करता, आ

५ जैसाइ पृ ५१२

६. गुपा पृ. ६४; जैसाइ पृ. ५१२

७. विप्र ७-२४

व्यवहारियाओने त्यां साकर–द्राक्ष सरखी मीठां वचन उचारनारी स्त्रीओ हती नगरने फरती खाई खोदावी, नगरमां चोराशी चौटां मंडाव्यां, नगरने नाके मांडविया दाण लेता. नगरमां मनने मोह पमाडे तेवां जैन मंदिरो हतां, ज्यां नृत्य. गीत अने नाटक थतां. धनधान्यथी सौ सुखी हता. घेरे घेर कथा-वार्ताओ थती., स्त्रीओ आनंदपूर्वक सोगठे रमती. आ नगरना लोक दान आपवामां एक एकथी चडियाता हता. नगरमां तिलोत्तमा सरखी अप्सराओ नृत्य करती अने कौतुकी लोकोना कोड आ नगर जोई पूरा थता आ नगर नव योजन पहोळु अने बार योजन विस्तारवाळुं हतु " (१–५५ थी ६०)

उहडे उएसनगर वसाव्युं तेनुं वर्णन कवि आ प्रमाणे करे छे : " सुर-लोकनु नगर होय तेवुं आ नगर हतु. धनवान लोको त्यां आवीने वस्या हता. मोटां मंदिर, पोळ, पगार अने हवेलीओथी आ नगर शोभतु हतुं, एनी वसती अगणित हती. नगरमां चारे दिशाए तळियातोरण बधातां अने अमर-कुंवरी जेवी नारीओ नृत्य करती. चोराशी चौटां, वाडी, वाव, सरोवर अने कूवाओथी आ नगर शोभतुं हतु. घेर घेर अप्सरा जेवी सुंदरीओ हती; दखीने साकर जेवी वाणी ए बोलती. राजगृह पण शोभे तेवुं हतुं जे नगरजननी पासे करोडनी रकम हती तेओ शहेरमा वसता; लक्षाधिपति हता ते लक्षा-धिपति साथे रहेता. आ नगरनो महिमा एवो हतो के त्यां कोई निर्धन नहोतुं " (२–३५ थी ३७ अने ४०, ४१)

विमले नवेसरथी बंधावेल चंद्रावती नगरीनु वर्णन करतां कवि वर्णवे छेः—" चंद्रावतीनगरीना गढना पाया पाताल सुधी नाख्या. गढने अनेक कोठाओ कर्या, कोटे कोठे अंबाजीनो स्थापना करी. अने दरेक कोठानी आगळ नवी वाव बधावी. दरेक वावने तळिये चार चार कूवा कराव्या, जेथी पणि-यारीओ सहेलाईथी पाणी भरी शके. घेरे घेर खारी अथवा मीठी कूई हती. वळी वरसादथी भराई जाय तेवी वावो, आ, शिवाय, जुदी हती. नगरीमां आरसनां गृहो बंधाव्यां अने एमां कारीगरीयुक्त कोतरणी करावी. कोई कोई धवल गृहो सात सात माळनां हतां. एनां गोख अने बारणां जोतां जाणे बीजुं चंद्रभवन होय तेम जणाय. रूडा राचरचीलांथी आ गृहो शणगारायां. घेरे घेर लक्षणवती सुंदरी हती अप्सराओ होय एवी ए शणगार सजती.

" नगरमां चोतरफ पोळ करावी; चोराशी चौटानी हार मंडावी. पछी ईंटो पाडनारा, आटो दळनारा, घाळवीओ, वाजित्रो वगाडनारा, डबगरो,

ज्योतिषीओ, नवरंगी नायाकनाओ वगेरे वसाव्यां. अढार वर्णथी नगर वस्युं. अढारसो उत्तम मंदिरोथी शोभता आ नगरमां पोळआळो वस्या; चोराशी उत्तम ज्ञातिओ वसी; अभ्यासार्थे ब्राह्मण वस्या; युद्धकळाना अभ्यासार्थे क्षत्रियो पण वस्या. तपस्वी माटे मठ अने सुंदर निशाळो करावी. राजगृह पासे उपाश्रय बंधाव्यां. बागबगीचा, दशे दिशाए पथ्थरनी पाळीथी बंधावेलां अने पाणीथी भरेलां सरोवरो तेमज नगरनी आसपास पाताळे पहोंचे तेवी ऊंडी खाई जाणे नंदनवन अवतर्युं होय, जाणे लंका के अमरावती होय, एवी सुंदर चंद्रावती-नगरीनी विमले रचना करी. ए नगरीमां विमले सात प्रासाद करावी एना शिखर पर दंड कळश मुकावी ध्वजा फरकावी जिनप्रतिमानुं स्थापन कर्युं. (८८४ थी ११२.)[८]

८. "चंद्रावतीनगरीमां ४४४ आर्हत प्रासादो अने ९०० शिवमंदिरो शोभतां हतां "

उपदेशसप्ततिका, चतुर्थ उपदेश पृ. ८७

Travals in Western India : Chapter VII, Page 127–135 ·

"चंद्रावती आबुरोड स्टेशनथी चार माईल दक्षिणे आवेलुं छे. आ नगरी पहेलां आबुना परमार राजाओनी राजधानी हती, अने खूब समृद्ध हती, एनी निशानी खंडियेरो पूरे छे. आबुना देलवाडानी प्रसिद्ध नेमिनाथ–लूणवसही-बनावनार मंत्री वस्तुपालनी धर्मपत्नी अनुपमादेवी अहींना रहेनार पोरवाड महाजन गागाना पुत्र धरणिगनी पुत्री हती परमारो पछी शिरोही वस्यु त्यारपछी देवडाओनी पण ए राजधानी हतु. कहेवाय छे के ज्यारे ज्यारे मुसलमान फोज अहींथी नीकळती त्यारे त्यारे आ धनाढ्य नगरीने पूरेपूरी लूटवामां आवती, तेथी ए उजाड बनी गई; अने अहींना रहीसो गुजरातमां जई वस्या अहीं संगेमरमरनां घणां मंदिरो हतां, जेमांथी केटलांकनां द्वार, तोरण, मूर्तिओ आदि लई जई मंदिरोमां लगाव्यां. रजपूताना-माळवा रेलवेना ठेकेदारोए एने तोडी रेलवेमां उपयोगमां लीधां." ई. स. १८२२ (सं १८७९)मां, रजपूतानाना प्रसिद्ध इतिहासलेखक कर्नल टॉड अहीं आव्या हता. एमणे Trevels in Wastern India नामना पुस्तकमां आ नगरीनां रह्यासह्यां केटलांक मंदिरोनां चित्रो आप्यां छे, जे उपरथी एनी कारीगरी, सुंदरता वगेरेनुं अनुमान थई शके छे

अणहिलपुर पाटण विशे अछडतो उल्लेख करतां कवि कहे छे : आ नगरनो कोट अंकित करायो अने राजगृह तथा मोटां मंदिरो करायां. स्थळ स्थळना व्यवहारिया अने परदेशना वखारियाओने पण तेडी मगांवाया[९] (३–१४१ थी १४२)

---

९. प्राङ्‌ शौर्यवृत्तौ प्राङ्‌ शास्त्रे प्राङ्‌ शमे प्राङ्‌ रमाधिपु ।
प्राङ्‌ सत्ये प्राङ्‌ षड्दर्शन्या प्राङ्‌ पडङ्ग्यामितो जनः ॥ द्वयाश्रय

' अणहिलपुर पत्तननी नगरश्रीने पाटलिपुत्र, उज्जयिनी अने कान्यकुब्ज जेवा सार्वभौम नगरोनी अने गिरिनगर, वलभी अने भिन्नमाल के श्रीमाल जेवी राजधानीओनी ' श्री 'नी परंपरानो वारसो मळेलो छे. एनी स्पर्धा माळवोनी धारानगरी साथे रहेली छे "

गुरा पृ. १२१

" वि. स ९९७ मा मूलराज सोलंकीना राज्यारोहणकाळथी मांडी स १२२९ मा कुमारपाळना अवसान सुधीना लगभग सवा बसो वर्षना गाळामां पाटणनो जे सर्वांगी विकास थयो हतो ते अमदावादे हजु साधवानो बाकी छे. राजकीय दृष्टिए ते काळे गुजरातनुं साम्राज्य दक्षिणे कोंकणथी उत्तरे दिल्ही सुधी, अने पूर्वे समवत. गौडथी पश्चिमे सिंध सुधी विस्तरेलुं हतु. आर्थिक अने व्यापारी दृष्टिए गुजरातनुं पाटनगर पाटण तत्कालीन भारतवर्षनुं समृद्धतम नगर हतु, अने सौथी विशेष तो सांस्कृतिक दृष्टिए पाटण ए पश्चिम भारतनु साचु विद्यापीठ हतु."

इतिहासनी केडी, पृ १–३

" ए काळनु पाटण तत्कालीन भारतवर्षनु समृद्धतम नगर हतु एमा शका नथी. प्रबन्धो अने समकालीन काव्योना वर्णनोने अतिशयोक्ति गणीए तोपण समग्र मध्यकालीन साहित्यमा पाटण विशेनी जे भावनाओ स्फुरायमाण थाय छे ए जोतां ए नगरनी जनसकीर्णता, व्यापार-उद्योग, समृद्धि अने संस्कार विशे कांई शका रहेती नथी. परदेशी मुसाफरोना वर्णनो पण ए हकीकतनी शाख पूरे छे. मौर्ययुगनी जेम ए काळमा वसतीगणतरीनी प्रथा नहोती, एटले पाटणने स्थळे स्थळे केवळ 'नर-समुद्र' तरीके वर्णवेलु छे. पाटणनी अमाप जनसख्या अने एटणी धनपतिओना अढळक वैभवने लगती अनेक किंवदन्तीओ पण प्रचलित

. आ चारे—एक कल्पित अने त्रण ऐतिहासिक—नगरनां वर्णन उपरथी तत्कालीन समयमां नगररचनानो शो ख्याल हशे एनी कल्पना थई शके छे.

चौटुं

आ नगर जेनाथी शोभी रहे छे ते चौटानुं वर्णन पण एटलुं ज चित्ताकर्षक छे. आजे गुजरातमां केटलांय गामोमां दर अठवाडिये बजार भराय छे तेना परथी आ चौटानी झांखी थई शके. फार्बस सभाना हस्तलिखित संग्रहमां एक कागळमां देशनी उत्तम वस्तुओ लखी छे तेमां 'चौटुं तो अमदावादनुं' एवो उल्लेख छे.[१०] कवि चौटानुं महत्त्व दर्शावतां कहे छे: चौटा वगर पीठ थाय नहि[११]; आजे पण ए एटली ज सत्य हकीकत छे

चौटानुं वर्णन करतां कवि कहे छेः—

"काव्यकथाओ चौटामां कहेवाय छे. राजानो पुत्र चौटामां रहे छे. दोशी घाट घडनारा अने घी वेचनाराओनी दुकानो चौटामां होय छे फळ, सोपारी, शाक चौटामां मळे छे. चौटामां कंदोई पकवान करे छे फडिया, मुगडियानां हाट चौटामां होय छे. चौटामां दहींनां माट वेचाय छे. मोटा सोनी अने सोनार मणारा अने मणियार, गांधी अने फोफळिया चौटामां होय छे. चौटामा सर्व वस्तुओनी मांडणी थाय छे; चौटु जोता एने छोडवानु मन थतु नथी नाणावटी, कपासी रूना वेपारी) तेमज सुगंधी वेचनारा अने पटुआ पटवा)ना हाट चौटामा होय छे. सूतरनी दुकानो पण चौटामां होय छे. चौटामां सौ कोई धन माटे आतुर होय छे. परदेशी वछियातो आवे छे, जे चौटु जोईने प्रसन्न थाय छे. चौटे आवेली वस्तुओ वेचाय छे. महेता मांडवियानां हाट चौटामा होय छे चौटा सिवाय कार्य थतु नथी. चौटामां जडिया जडावकाम करे छे; चौटामां सर्व वर्ण देखाय छे. नवलखी वस्तु

छे, जे अक्षरशः सत्य न मानीए तोपण वास्तव परिस्थिति उपर केटलेक अंशे प्रकाश पाडनारी छे ज तो.'

इतिहासनी केडी, पृ. ७

अने हालनी स्थिति-सरखावो—
'पाटण! पुरी पुराण! हाल तुज हालज हाथा!'

—नरसिंहराव

१०. गुरा पृ. ४६३

११. विप्र ८–९१

चौटामां आवी चडे छे; अने एनी परीक्षा पण पारखु लोको करी जाणे छे. चौटामां पाणीनी मोटी परब होय छे; गंधर्व-गायकगण गाता होय छे; भाट लोको चौटामां बेसी बोले छे; अने धर्मनां कार्य पण चौटामा थाय छे. झवेरी, तीरगरा, चितारा, घांची, मोची सौ चौटामां बेसे छे. चौटे आवेलां जीव दयाळु लोकोनी नजरे चडतां बची जाय छे. कणबी, कसारा, कुमार, गाछा, छीपा, दरजी, लुहार, माळी, तबोळी, तेरमा सौ चौटामां मळे छे. चौटामा नवलां पात्रो (नर्तिकाओ) नाचे छे; घरमां संताप पामेलो जीव घरमांथी नीकळी चौटामां जतां पोतानु दुःख भूली जाय छे. जेने घेर चौटु दूझे छे ते घेर बेठां लीला-लहेर करे छे." (८–९२ थी १०३) आ सिवाय रगारा, माळी, अने भरडा (पूजारी) (६–७६/७८) नो उल्लेख पण मळे छे.

वर्ण अने ज्ञाति

आ नगरोमां अढारे वर्ण रहेता. व्रतोमां रत ब्राह्मण, हथियारे शूरा क्षत्रिय, खेती करनार वैश्य अने नाटक करनारा शूद्र ए चार वर्ण (२–७५), कंदोई, काछिया, कुंभार, माळो, मर्दनिया सूत्रधार भैंसाइत, तंबोळी अने सोनी ए नव नारू (२-८१) गाछा घांचो, छीपा, लुहार, मोची अने चमार ए पाच कारू (२-८२) मळी अढार वर्णथी नगरनो लोकव्यवहार चालतो. (२-८५). आ सिवाय माछी, तेलो, तेरमा, वाघर, कसाई (९-१३०) अने वाघरी (९-१३१) नो उल्लेख पण मळे छे.

कविने मन श्रीमाळीनी ज्ञाति सौथी मोटी ज्ञाति छे (२-६३) अने एमांथी घणी ज्ञातिओ उत्पन्न थई छे. (२-६३) श्रावकनी बहु थोडी ज्ञाति हती, पण देखादेखीथी चोराशी गणधर अने गच्छ थया हता. (३-६६)

लावण्यसमये जे स्थळे रही आ प्रबंध रच्यो छे ते स्थळनी आसपास ऊतरती कोमना–खेल करनारा लोकोनी वस्ती वधारे होवाथी 'शूद्र'ने माटे 'नाटकिया'[१२] शब्द वापर्यो जणाय छे. (२–७५) जोगी लोकोनी स्त्रीओ — एक मागण जाति हती. (३–२०), असुर वर्ण—संभवतः मुसलमानोने अलग वर्ण तरीके गणावेल छे (२–८४)

ए समये गुजरात–मारवाडमां प्रचलित एवी वाणियानी चोराशी ज्ञाति आ प्रमाणे गणावी छेः

१२. विप्र (व्यास) पृ. ५१

'ओशवाल, पोरवाड, गूजर, डीट्ट, डीसावाल, राडायता ग्डेर, खंडोल, कठपुरा, बोविला, कपोल नायर, नागर, नाणावाल मोढा लाड, ताडूआ, श्रीमाली, हालर हरसूरा, हुवडा, श्रीगुड जालहरा, जागडा धाकडीआ, मडीआ, सुगड, ब्रह्माणा, वीधु, वायडा, गाभूआ, अडालजा मोड गाडलीआ, पचम, पुष्करा, जधुसरा मुहडवाल, मडोसरा, उचलिवाल, सुरहीआ, मोधर, बवोजा, कराहीआ, सोरठीआ पोरवाड, पलीवाल मडाहरा, मडोरा, मेवाडा, वाल्मीक, वाढा, नित्रावाल वघेर, नरसिंगुरा, सिरिखडेर, गाभू, नागद्रह, अगरवाल थावर, विणपुरा, वेसुर, अस्विकी अष्टावग्री, पद्मारकी, गोल्वाल, नागुरा, वीरोटा, माचोरा मोडेरा जेराणा, नीमा, कडडीआ, कोरंटावाल, सोनीसोध दोहिल, मयाल, राजशाखा लघुशाखा वडीशाखा, चउशाखा, वेशाखा, सुराणा, राजुरा, मेडतवाल मडोरा, आणहूरा अन नागड (२-६३ थी ७२)

राजसभा ·

राजसभामा राजानी सामे राणा अने माडलिक बेसता (६-६७) सौ कोईने राजाने प्रणाम करीने बेसवु पडतु त्या डाकलां, डमरु, भूगळ वंमाला (कासीजोड), निशान ने तूर वागता, अने टोळटप्पा पण चालता (६-४१) राजसभामा चद्र अने चादरणीओ – दीवानो झगझगाट प्रसरी रहेतो (६-४१) सभागृहनु वधारण एवु के दिवस छता रात्रि जेवु लागे [१३] परदेशी चरलोको आ राजसभामा आवता (७-२०)

युद्ध अने युद्धसामग्री

हाथी अश्व रथ वगेरे युद्धना मुख्य वाहनो हता लश्कर चालतु त्यारे रणवाजित्रो गडगडता (७-६४) विमल रोमनगरना सुलतानो पर चडाई करे छे त्यारनु वर्णन सैन्यनो ठीक ठीक ख्याल आपे छे चार हजार साढ पर सिकरी (साकर?) अने सोळ हजार साढ उपर खोराक भर्यो सैन्य साथे पाणी भरेली पोठो चालती अने सैन्यनी आगळनो रस्तो कुहाडाथी साफ थतो साथे ऊभा करी शकाय तेवा कापना गढ लीधा सन्य ज्या थभतु त्या बजार मडाई जतु, अने वटारे वण वेपार करती (७-६५ थी ६६) सैन्य साथे आसनोमा सुखासन, पालखी सेजवाल (म्याना) रहेता श्रीगरणा अने वईगरणा (राजमहोर करनारा, निस्यनोंघ लखनारा) सैन्यना पडाव साथे कामे लागी जता अनाजनी काळजी माटे भडारी रहेता. आम सैन्यनी सगवड साचववा

१३ विप्र (व्यास) पृ. १८८

सर्व प्रकारनी काळजी रखाती. राते चोकीपहेरा रहेता; अने छावणीमा दीवाओ प्रकाश आपता (७–६७ थी ६९).

युद्धनी तैयारीना समये अश्वोने पाखरवामां आवता हाथी उपर अंबाडी बांधी एना दतशूळ आडे अरयति (पडदो) बांधवामां आवतो. हाथीना कुभस्थळने सिंदूर वडे रंगवामा आवता. तरवारोने सारी रीते सजाववामां आवती सैनिको कमरे कटारीओ खोसता वेवडाखवडा एटले के मजबूत एवा काष्ठना किल्ला ऊभा करी देवामा आवता, प्रहार थतां तूटे नहि तेवी काष्ठनी जाडी जोडो बनाववामा आवती. भालाओ भेदी शके नहि तेवा बख्तर अने टोप योद्धाओ पहेरी लेता, योद्धाओने धनुष जीवरखी अने मोटी मोगरी आपवामा आवती (७-८२ थी ८७).

युद्ध केवी रीते थतु एनु वर्णन करता कवि कहे छे ' ए समये अणीदार भाला, तीक्ष्ण अने काळा रंगना पखाळा बाण, खेंचाती तरवारो बौंझाती मोगरीओ अने गोफण', छूटता गोळाओ अने सूर्य जेवा तेजस्वी गुरज, फरता आवता चक्रो, गर्जना करता हाथीओ डम डम वागना डमरु दम दम वागता ढोल आकाशमा ऊडती समळीओ ' युद्धने भयकर बनावी देता (८–४४ थी ५८)

विजय थतां भेरी नफेरीना नाद थता, बदिजनो जयजयकार करता (८-६१).

पराजित राजाने वचनमा नाखवामा आवतो अने विजेतानी शरतो कबूल करे तो राज्य पाछु सोंपवामा आवतु विमले बर्मनियाना राजाने पकडी एना गळा आगळ शृंगिणी (?) धरी, बेडी पहेरावी, लाकडाना पांजरामा पूर्यो हतो (८–६०) अने ज्यारे एणे विजेतानी आण स्वीकारी त्यारे एने मुक्त करी एनुं राज्य पाछु सोंपवामा आव्यु ८-८१

राजा बीजा देश पर चढाई करतो ने एमा विजय मळतो तो पराजित राज्य पासेथी सारी एवी रकम दड तरीके वसूल करवामा आवती, रकम उपरात हाथीघोडा पण सारी सख्यामा लेवामा आवता रोमनगरना सुल्तानो उपरना विजय पछी विमले अनेक घोडा हाथी तेमज चार कोडि टका दड तरीके लीधा हता (७-१०० थी १०१) सिंधु प्रदेशना बभनिया राजा पासेथी छप्पन कोडि धन अने त्रण लाख ताजा अश्वो दड तरीके वसूल कर्या हतां (८–८१). दड माटे 'माल' शब्द पण वपरातो. रोमनगरना सुलतानोने सौ पहेला कहेण मोकलीने विमल कहेवरावे छे के पगे लागी माल आपो ' (७–७७) आ दड अथवा

वसूलात 'खिजमत' तरीके पण ओळखातां; अने दर वर्षे वसूल करवामां आवती. जो एमां चूक थाय तो फरी युद्ध थतुं (८–८२)

युद्धना कहेण माटे अने पोतानी आण वर्ताववा माटे ए समयमां दूत मोकलवानो रिवाज हतो. आ दूतनी साथे एक लेख' मोकली पोतानुं स्वामित्व स्वीकारवानुं कहेण मोकलातुं (८–२) दूतनी पण केटलीक लायकातो हती. अस्पष्ट बोले अने धीमे रहीने चोक्कस उत्तर आपे (८–८). दूतने कोई राजा मारी शकतो नहि (८–११)

युद्धे चडवा माटे पानो चडावातो (८–२५ थी ४३) अने विजयनो उत्सव ऊजववामां आवतो मणिमाणेकथी वधामणी थती. सुंदरीओ गीतो गाती अने राजा समक्ष भेटो धरवामां आवती (७–१०२ थी १०३). जागी ढोल ढमढमता, तळिया–तोरण बंधाता, अबील–गुलाल ऊडता, अने विजेता वीरने वधाववामां आवतो (८–७१ थी ७६)

राजकीय माहिती

शहेरने शणगाररूप होय तेवी व्यक्तिने राजा तरफथी राजमुद्रानुं प्रदान थतुं; अने ए रीते एनुं बहुमान करवामां आवतुं (७–३८).

राजनी आवक माटे शां शां साधनो हतां एनो उल्लेख विमलप्रबंधमांथी आडकतरी रीते मळे छे आमां आयात थती चीजो उपरनो कर ए मुख्य आवक हती[१४] मुख्य नाका उपर राज्य तरफथी माडवियां बेसतां अने एओ दाण वसूल करता १–५७ आम. दाणचोरीनो पण बनाव थवानो संभव छे. भीमदेवे विमलनी साथे अणबनाव थतां दाणचोरीनुं आळ चडाव्युं हतुं अने एमां जणाव्युं हतुं के विमले परदेशथी अश्वो मंगाव्या हतां एनुं दाण अपायुं नहोतुं (७ ७) राजा लोभे भरातो तो ए हठे चडीने कर मागतो (३–९२)

एवो उल्लेख मळे छे के वनराजना समयमां लहिरे पोतानी टंकशाळ करी सोनैया पाड्या हता (३–१४६). लहिर वनराजनो अमात्य हतो, एटले ए टंकशाळनो अधिकारी समजाय छे.

बाणकळामां निपुणता होवी ए राजपुरुषनो मुख्य गुण मनातो. विमलनी बाणकळाथी मुग्ध थई भीमदेवे एने 'अधिकारपद' सोंप्युं हतुं. आ पदना दरज्जा हता. विमलप्रबंधमां एना विशे उल्लेख नथी, परंतु विमलने सौ प्रथम

१४ COG p 242

'दंडनायक'नी पदवी आपी पांचसे अश्वदळनो उपरी बनाववामां आव्यो हतो (६-२८) 'दंडनायक' शब्दनो ए समये 'सेनाधिपति' तरीके पण प्रयोग थतो आचार्य हेमचंद्रना जणाव्या मुजब 'चतुरंगबलाध्यक्ष सेनानी दंडनायक'— आ दंडनायक महामंडलेश्वर अथवा तो राज्योनी सर्वोच्च पदवी पर पहोंची शकतो[१५] मजमूदारना मंतव्य मुजब 'दंडनायक' का तो सेनाधिपति अथवा 'पायदळनो उपरी' रहेतो केटलीक वखत दंडनायकनो न्यायखाताना अधिकारी तरीके पण उल्लेख मळे छे, परंतु आचार्य हेमचंद्रनी व्याख्या मुजब दंडनायक ए सैन्यनो अध्यक्ष हतो, कोई वार तो प्रांतना 'गवर्नर' तरीके पण ए निमातो.[१६]

सारु कार्य करनारने राज्य तरफथी ईनाम-"ग्रास" आपवानो रिवाज हतो (१-१३)

राजा कोई अधिकारीना कार्यथी प्रसन्न थतो त्यारे छत्र चामर वगेरे भेटरूपे मोकली एना कार्यनी कदर करतो (८-७७.

बे के तेथी वधु राज्योनी ज्या सरहद भेळी थता ते स्थळने 'खधि' कहेता (३-३१) दरेक गामे राजा तरफथी ठाकोर रहेता (२-२०)

सामाजिक परिस्थिति

सामाजिक अने धार्मिक परिस्थिति विक्रमनी सोळमी सदीमा हती तेवी ज विक्रमनी वीसमी सदीना पूर्वार्धमा हती.[१७] रत्नमणिरावना शब्दोमा कहीए तो 'लावण्यसमये कलियुगना अनाचारने नामे समाजनी जे स्थिति लखी छे ते रसमय छ कलियुगने नामे एना रोदणा आजे पण संभळावनार मळे छे[१८] कलियुगनी असर वर्णवता कवि कहे छे : 'नित्यधर्म नष्ट थयो छे राजा कुटिल मनना अने लोको लंपट थया छे संत पुरुषो हेरान थाय छे, ज्यारे दुर्जनो खाईपी ल्हेर करे छे पुत्रपिता परस्पर विश्वास करता नथी.

१५ COG p 227

१६ COG p 229

१७ गुपा अमदावाद पृ ३९५

१८. विमलप्रबंधमा 'वर्णवेलो पुत्रजन्मनो आनंदोत्सव आनथी पदर वर्ष उपर लगभग एवी ज रीत ऊजवातो, अने केटलाक रिवाज आजे पण छे फोईआइ ते वखते थतु अने आजे पण थाय छे निशाळगरणानु सुदर वर्णन विमलप्रबंधमा आप्यु छे निशाळगरणानो एवो रिवाज गई सदीमां

घरदास घणी थई बेसे छे वहु सासुने पगे पडती नथी; सासु पाछे पखो नखावे छे, परन्तु काम करतो नथी ससरानो मर्यादा पण राखतो नथी, परण्याना कान भमेरी, मावापथी जुदा रहेवानी तजवीज करे छे (३–४ थी १६)

पुत्रजन्म अने उछेर

बाळक न थतु होय तो देवदहेरे मानता मानवामा आवती उदरमा बाळक छ महिनानु थता सीमत करवामा आवतु गीतो गावामा आवतां अने सौने पकवान जमाडवामा आवतु (३ १७ थी १८) पुत्रजन्मसमये जन्म समयना वधामणा गवाता जागी ढोल अने निशान वागता, अबीलगुलाल ऊडता, किंमती पटकूळना चदरवा अने बारणे तोरण बधाता मानी मा सुदर वांकडी लावती अने पुत्र माटे रंगीन आगला खरीदाता शोभीता वेढ करावाता सुडले सुडले फोफळ (सोपारी) वहेंचाता फईने कापडा अने काकीने रेशमी वस्त्रो अपाता पुत्रने फूमताळी टोपी पहेरावाती फई फईआरु करती हाथनी कडलीओ, मोरा मादळिया, वाकडी (काननी कडी), पगनी मोजडी, अळजइआ आगळा, सोनाना वेढला फईआरुमा अपाता बाळकना पगमा घुघरियालु

हतो हवे कोइ मोटा धनवान साधारण आचार करे छे आ निशाळगरणाना वर्णनमा आपणे धूळीआ निशाळना नामथी जेने ओळखीए छीए तेनु आबेहूब वर्णन छे निशाळ मूकता खाडना खडीआ छोकराने वहेंचवानो रिवाज पदरमी सदीमा हतो ते ओगणीसमी सदीमा पण चालु हतो. राज्यना आश्रय वगर केवळ समाजना ज बळथी आपणे त्या जे निशाळो चालती तेनु विमळप्रबधमा जेवु वर्णन छे तेवु इ स १८७८ना शाळापत्र'मा आपेलु छे ए उपरथी आपणा रिवाजो चारेक सदीओथी बहु फेरफार वगर चालु रह्या एम समजी शकाय छे सोळमी सदीना लग्नप्रसग, ज्ञातिभोजन वरघोडो वगेरेनु वर्णन पण ए प्रबधमा आपेलु छे ज्ञातिभोजन हाल करता गई जुदु जाय छे पहेला फक्त पीरसाता बीजा रिवाज सरखा देखाय छे वरघोडो गई सदीमा सोळमी सदी जेवो चढतो हशे एम मानी शकाय वाणीआना वरने हाल जेवो पोशाक पहेरावे छे तेवो ज लगभग सोळमी सदीमा पहेरावता वधारामा माद्मणना जेवो खुप घालता एम जणाइ आवे छे लाडु भरेला माटला वगेरे आपवानो तथा पहेरामणीनो रिवाज पण बहु जुदो नथी. ए बधुं विमळप्रबधनु वर्णन करतां अहीं लबाण थई जाय परंतु आपणा घणाखरा रिवाज छेक वीसमी सदीमां बदलाया छे एम मानी शकाय.'

घरेणु पहेरायातुं. मामा मोजडी अने टोपी मोकलता. जमण थतु. घी–गोळनी लहाणी थती. बाळकना मस्तक उपरथी ओवारीने अन्न अपातु (३–१७ थी २६, ३–१६१ थी १७०). पुत्रजन्म थया पछी मावाप अळगी पथारी करतां (३–२१).

पुत्रजन्म पछी बारमे दिवसे झोळी (पारणुं) बंधातु. फई फूलीने सारी पेठे जमती. (३–२२).

पुत्र पाच वर्षनो थाय त्यासुधी एने लाड लडावाता (४–३०). पांचमे वर्षे एने निशाळे बेसाडवामां आवतो (३–२७/२८) दशमा वर्ष सुधी निशाळे भणाववामां आवतो, सोळ वर्षनो थाय — सभा बराबर आवे एटले मित्र जेवो गणवामां आवतो (४–३०), अने वाणिज्य शीखववामां आवतु (३–२८). पुत्र सोळ वर्षनो थाय एटले एणे स्वतंत्र थवु जोईए — पोताना पग उपर ऊभतां शीखवु जोईए. तो ज ए कुळदीपक गणाय, नहि तो ए लेणदार गणातो (२–१८).

बाळकने निशाळे मूकवानो समय थतो त्यारे आप्तजनोने निमंत्रवामां आवता; घरनी सजावट करवामां आवती. पंडितने पूछीने मुहूर्त नक्की थतु. आप्तजनो अने महाजनोने पगते बेसाडी 'धारे घो' पीरसी जमण अपातु. उत्सवपूर्वक बाळकने निशाळे लई जवातु. साथे धाणीचणाना सूंडला अने घणा खडिया लेवाता. फूलना खूप भराता, अने बाळकने घोडे बेसाडी निशाळे लई जवातो. आगळ भेरी भुगळ वागता; पाछळ महाजन, खडिया लेखण साथे बाळक, अने एनी पाछळ स्त्रीओ मगळ गीतो गाती चालतो. सारुं नगर आ उत्सव जोवा एकत्र थतु. बाळक निशाळे पहोंची अध्यारु पासे हाथ जोडी ऊभो रहेतो. अध्यारु बाळकना कानमां सारस्वती-मंत्र उच्चारी आशीर्वाद आपता, अने विद्यादान आपवानु शरू करता. धाणीचणा अने खडिया निशाळमां भणता बाळकोने वहेंचवामां आवता, अने ए दिवसे सर्व बाळकोने छूटी आपवामां आवती (३–३० थी ३४ अने ४–३० थी ४–३७).

अध्यारु ए समयमां पण लालचु हता आरंभमां अध्यारु समक्ष दसवीस खीरोदक (नाळियेर या खेस मूकवां पडतां; धोतियांपोतिया पहेरावबां पडतां. अध्यारु दंभ पण करता सूत्रे सूत्रे आरंभनी दक्षिणा मगाती, अने बाळको पण अक्षर मुखे न चडे अने अध्यारु मारे ए बीके छानुंछपनु–चोरी करी अध्यारुने घेर पहोंचाडता (४–३५ थी ३७).

करता अने सौनी समक्ष थाळीमां बीडी वगेरे मूकी रमत रमता; कोण 'हारशे-जीतशे'नु निराकरण करता पछी गुरु-गोत्रजने प्रणाम करी पोताने निवासस्थाने जता (९-७६ थी ९८).

रीतरिवाजो

मा-बाप पैसा लईने दीकरीने वेचता; एटले के कन्याविक्रयनी पद्धति चालु हती (३-५२). साठ वरसनो डोसो जुवान कन्याने परणी शकतो (३-४४). स्त्रीने वीजुं घर मांडता सक्रोच न थतो; एकने मूकीने बीजाने त्यां जवामां हिणपत महोती, अने घणा सबेडा कर्या पछी विधवा वेश उतारती (३-९४). वीस वरसनी नानी उमरे स्त्री विधवा बनती; एटले के वीस वरसनी पहेलां एना लग्न थता अने वरनुं अल्पायुषमां पण मृत्यु थतुं (३-९३). सती थवानो रिवाज प्रचलित हतो (८-६४; चू-६९) परंतु ए युगमां चिता उपर चडेली स्त्री पण नासी जती (३-४७ अने ८७.

घरमां स्त्री, बाळक अने दासदासी पर हाथ उगामी शकातो (८-६७)

अतिथिसत्कार ए धर्म गणातो. आगतुकने सिरामणा कराव्या सिवाय पाछा वळाता नहि (चू-४६) ज्ञातिभेदने कारणे कोई भाणाअंतर हतु नहि. (चू-४७), कारण के एवी मान्यता हती के भाणाअंतर करनार दुर्गति पामे छे (चू-४९)

अस्पृश्यता ए जमानामां पण हती. ढेडनो स्पर्श थतां सौ कोई संकोच पामतुं, पण वाणिया ढेड साथे वेपार करता (३-५१).

बरोबरिया कुळमा लग्न करवानो रिवाज हतो पण गोत्र जुदां जोवातां (९-१२).

घूघट काढवानो रिवाज हतो (३-९), पण स्त्री खुल्ले मोढे पण फरती (३-९४)

स्त्री वगरनाने-वांढाने कोई पोताना घरमां बोलावतुं नहि (चू-७२).

दान करनार दाताओ जेने दान आपवानु होय तेने पोताने घेर बोलावी दान आपता (१-६५). क्वचित् दान आपवामां पण हूंसाईसी थती (१-५९)

पोतानी मोटाई केटलाक घेनवाळा करीने पण देखाडती (३-६९). देवुं करीने वरो करवामां आवतो (३ ७९).

कोईने उधारे अपाती रकम उपर व्याज मागवामां आवतुं (चू-४१). वेपारी अथवा राज्य लेणी रकमनुं खातुं पडावी लेतां (७-८). लेणदार उघराणीए जाय त्यारे देवादार मन वगर एनो सत्कार करतो (४-७३). हाथोहाथ आपेली थापण ओळवाई जवाना प्रसंगो बनता (३-४९).

वचनभ्रष्ट थनारने 'पंचईटाळी'नी सजा करवामां आवती (९-१९२).

रहेठाण माटे लोको विवेकी हता (३-१२५), कारण के दरेक ज्ञातिवाळा पोतपोताना जथ्थामां रहेता.[१९] जैनोनी व्यापक असर होवाने कारणे गळ्या वगर पाणी वपरातुं नहि; कपडां धोवातां नहि (३-११५).

मामा-भाणेजने आदि काळथी वेर मनातुं आव्युं छे; आथी मामाए जो सुखी रहेवुं होय तो भाणेजने पोताने त्यां लावीने राखवो नहि एवी मान्यता हती (४-८५)

जे घेर लक्ष्मी न होय कर्मी प्रजा न होय, दानमान देवातां न होय ते घर घरना लेखामां गणातुं नहि (२-२). अवसर आव्ये धन खर्ची जाणनारनी महाजनमां गणना थती (२-७३).

वाणिया पण खेती करता. विमलना मामा खेती करता; आथी विमलने पण खेती करवामां सहाय करवी पडती ढोर माटे 'कडब' लेवा जवानो रिवाज हतो; अने अन्य ऋतुमां उपयोगी थने ए दृष्टिए कडबने 'सग'(ओघा,रूपे गोठववामां आवती. खेती करनार खेतरे ज जमी लेता. (४-७९ थी ८२). सामान्य रीते गोवाळियाओ ढोर चारवा लई जता, पण वणिक पुत्र पण ढोर चारवा जता (४-९१). वाणुत्र (७-६) अने भारवाहा (मजूरो)नी प्रथा पण हती (१-८४)

परदेश जई कमावानी मनोवृत्ति पण हती (१-६९). वहाणवाट जवानुं होय त्यारे साथे संबल (भाथुं) लई जवातुं (२-२२).

शुभ प्रसंगोए घी-गोळनी लहाणी थती (जमण थतां) (३-१६६), अने माथे उतारीने अन्न अपातां (३-१६९).

कन्यादान वखते वरराजाने धन पण आपवामां आवतुं (५-८१).

अंग्रेजी पद्धतिनी जेम सुप्रभात शब्द प्रचलित हतो (चू-१०६-१०८). वडीलोने 'जुहार' (प्रणाम) करवानो रिवाज हतो (४-५८).

---

१९. विम (व्यास) पृ. ६५

महाजन मोटु गणातु (१-८६) जैनोमां संघ—श्रावक, श्राविका, साधु अने साध्वीनो समूह, मुख्य गणातो (चू-९९) व्यक्ति महाजननी पगनी धूळ गणाती (१-८६) एटले के व्यक्ति करता महाजननी महत्ता हती

मोटा शहेरोमा करोडपति होय ते कोटनी अदरना भागमा रहेता एनाथी ओछी पूजीवाळा होय ते कोटनी बहार रहेता लक्षाधिपति होय ते लक्षाधिपति साथे रहेता. जेनी पासे नवाणु लाख होय तेने कोई—राज्य के सगावहाला—एक लाख आपे तो ए कोटमा जई करोडपति साथे रही शक्ता (२-३ थी ५; २-४१; ३-१२६) जैनग्रंथोमा आ प्रकारना उल्लेखो घणा नगरो माटे मळे छे.[२०]

सामाजिक शिक्षाओ

निशाळियाओने भणवानु मोढे न चडे तो अध्यारु एने मारता (३-३७)

'खोटाना चडे अने साचाना बळे' एवी मान्यता आजे ज नहि, पण त्यारेय प्रचलित हती (३-८२) आथी कूडकपटनी परीक्षा माटे 'धीज' आपवामां आवती (१-१२) आवी परीक्षा माटे पहेला लोढानो गोळो करी पकडाववामा आवतो वळी खराखोटानी पाघडी उतारी बाळवामां आवती जेनी पाघडी बळे तेनी वात खोटी ठरती [२१]

वचन आपीने नहि पाळनारने केटलाक संयोगोमा 'पचईटाळी' द्वारा प्राणदड करवामा आवतो (९-११२)

शकुन अने वहेम

शहेर के गामनी स्थापना मुहूर्त जोई, शुभ चोघडिये करवामा आवती (१-९०) विवाह जेवा कार्योमा मुहूर्त वीती न जाय ए जोवामा आवतु (४-७७) परदेश जतां अथवा सारां कार्य माटे प्रयाण करतां जो सामे मळतो हाथी, जमणा हाथ तरफ जतो वेपारी, मगळ उच्चार करती स्त्री जयजयकार करतो भाट, 'उदय थाओ' एवो उच्चार करती जोगिणी मळे, जमणी बाजुए भैरव पक्षी बोले, डाबा हाथ तरफ गधेडो, देवचकली, समलु, कूतरो जाय वळी पहेले पहोरे हरण निर्भयपणे जमणी तरफ जतु जणाय, साढ घोडो, चास पक्षी जमणी तरफ अने वानरो डाबा हाथ तरफ बोले, तो ए शुकन व्यक्तिनी आशा पूर्ण करे छे (२-२३ थी २६) आवा शुकन थतानी साथे

२० विप्र (व्यास) पृ ३१
२१ विप्र (व्यास) पृ ५ अने ८१

शकुनार्थी लूगडाने छेडे गाठ वाळी लेतो—शकुनगंठी वाळी देतो (२–२६ अने ७७) घेर सदैवत घोडो होवो ए शुभ चिह्न मनातु (२–३१)

बहार जता मस्तक उपरनो टोप पडी जाय, ठोकर वागे, आडो सार्प ऊतरे देवचकली जमणा हाथ तरफ जाय, तो ए अपशुकननी निशानी मनाती (७–८९ थी ९१)

नजर न लागे एटला माटे लूण उतारवानो रिवाज हतो (चू–३२) लग्न समये वरने नजर न लागे ए माटे वरनी पाछळ बेसी बहेन लूण उतारती (५–७६) शुभ प्रसगोए अनाजने ओवारीने दानमां अपातुं (३–१६९)

पुत्र मेळववा माटे मानता मनाती (३–१७) स्वप्न उपरथी सारा-मरसां फळनो आदेश अपातो (९–१ थी ३) दुर्वेश(फकीर), मुल्ला, जोगी, जगम जडिया, शेख वगेरेने भविष्य पूछवामा आवतु (७–९६)

वशीकरण करवा माटे राता वस्त्र अने राता फूलथी, लक्ष्मी मेळववा माटे पीळा वस्त्र अने पीळा फूलथी, शत्रुने मस्तकमा शूळ उत्पन्न करवा माटे काळा वस्त्र अने काळा फूलथी, अने मुक्ति माटे श्वेत वस्त्र अने श्वेत फूलथी देवनी आराधना थती (९–५४/५५).

शक्तिनी पूजा

सौभाग्यवती स्त्रीओ मातानी पूजा करती. मस्तक उपर थाळ मूकी, भूंगळ भेरी ताल वगेरेना नाद साथे वाजतेगाजते माताने मेर घरवामा आवती अबीलगुलाल रंग उडाडता उडाडतां महाजन लोक देवस्थळे जतु (१–९१/९२) श्रीमाळीओनी गोत्रज देवी लक्ष्मी हती (१–९३) एनो उत्सव अपूर्व रीते ऊजवातो. मणिमाणेक वगेरे मूल्यवान पदार्थो भेट धराता, फूलनी छाब माताजीने अर्पण थती नाळियेर, नारंगी द्राक्ष सोपारी, पान, फळफळादि सुकातां, मेवा, मोदक, जूना नागरवेली पान, चूवा-चदनना कटोरा अने अगर-कपूरना धूपनी सुगध देवी समक्ष धराता (१७४/७६) अंबाजीने प्रसन्न करवाना यत्नो थता अबाजीने गोत्रज तरीके प्राग्वाटोए स्थापी एना मंदिर पर दड, कळश, ध्वज चडाव्या हता (२–६१) विमल पोते ज अबाजीनो परम भक्त हतो, अने एनी सहायथी विमलना कार्यो फलित थता हता (९–११६) अंबाजीनी ओलिग (सेवा) थती (२–५६) महापूजा थती (२–५७). लावण्यसमये पण प्रबधना आरंभमा अबाजी, श्रीमाता (लक्ष्मीदेवी) पद्मावती, चक्रेश्वरी अने वागीश्वरीनी स्तुति करी छे (१–१) आ देवीओनी आराधना

पण थती (६-१०/११). छ दर्शन अने छन्नु पाखंडवाळा पण सरस्वती देवीना गुण गाता (१-१२) कारण के विनय, विवेक, सदाचार, लोकव्यवहार अने लग्न वगेरेमां सरस्वतीनुं स्थान मुख्य हतुं (१-१०) देवदेवीओने नैवेद्य धरवानो पण रिवाज हतो (९-२५१). नैवेद्यमां खीर मोदक, लापसी, तलना लाडवा, वडां, वेडमी, चुलेर वगेरे धरातुं. (९-२४६, ९-२५५, ९-२५८)

धार्मिक परिस्थिति

सोळमी सदीमां धार्मिक वातावरण खळभळाट-युक्त हतुं; मतमतांतरो सारा प्रमाणमां प्रवर्तता हतां भिन्नमालमां एक समये नेवु हजार सोहामणां मंदिर हतां, पिस्ताळीस हजार ब्राह्मण हता, अने बब्बे वणिक-कुटुंबो एकएक ब्राह्मणनो निर्वाह करतां (३-१२३/१२४). ए स्थिति सोळमी सदीमां रही जणाती नथी गुरु अने शिष्य पोतपोतानी मनभावती वात करी, पोतपोतानो मत प्रसारता (३-४८) छ दर्शन एकबीजानां खोतरणां करता (३-५३) बौद्ध, सांख्य, नैयायिक, जैन, वैशेषिक, जैमिनीय ए छ दर्शन छे; ए सर्वना सोळ सोळ भेद थतां छन्नु पाखंड पृथ्वी पर प्रसरेलां गणातां हतां (२-८७). कहेवाता योगीओ योगमां रहेता नहि; माकडां कूकडा, किंनर वगेरे लईने फरता अने भीख मागता; व्रतादिनुं पालन करता नहि (३-४७)

'पुरुषसूक्त'नी मान्यतानुं हजु पण जोर हतुं : ब्रह्मना मुखथी ब्राह्मण, हाथथी क्षत्रिय, हृदयथी वैश्य अने पगथी शूद्र उत्पन्न थया छे (२-८०). ब्रह्मचर्य पाळे, तप करे कनककांकरामां निःस्पृह वृत्ति राखे ते ब्राह्मण (२-७६); शूरवीर, घणा आरंभ करनार, परिग्रही, निर्दयपणे हाथमां हथियार धारण करे ते क्षत्रिय (२-७७), खेतीने लगता धंधा करे पंडितोमां डाह्या गणाय अने अनेक प्रकारना वेपार करे ते वैश्य (२-७८), तेमज जे मूर्ख रहे, बीजानुं शरीर समारवानुं काम करे, जेनां राछपीछ निकृष्ट होय ते शूद्र गणाता (२-७९) आमांथी कोई जिनवरने, कोई ईश्वरने, कोई ब्रह्माने, कोई गोविंदने भजतु. आ चार वर्ण उपरांत एक असुरवर्णने पण जुदो गणाव्यो छे (२-८४). आ पाछलो वर्ण मुसलमानो संभवे छे

जैन धर्ममां बे मुख्य भेद हता : श्वेतांबर मूर्तिपूजक अने दिगंबर. श्वेतांबर मूर्तिपूजकमां स्थानकवासी संप्रदायनी उत्पत्ति लावण्यसमयना समयमां थई. लोंकाशाह नामना साधु आ संप्रदायना प्रवर्तक हता अने मुस्लिम संस्कृतिनी असरने कारणे मूर्तिपूजानो एमणे निषेध कर्यो हतो कविए आ हकीकतनो आडकतरी रीते उल्लेख करी कह्यु छे के श्रावको नवा मतनुं

स्थापन करे छे[२२] (३–६४). मुस्लिम राज्यशासन गुजरातमां स्थिर थयेलुं हतुं, परंतु एओनी रीतिनीति—वटाळप्रवृत्ति, लूटफाट वगेरेथी प्रजा त्रासी ऊठती, ए चित्र कृतिमां स्पष्ट रूपमां आवे छे मुसलमानो ज्यां ज्यां हल्लो लईने जता त्यां त्यां रस्तामां आवतां गामो ने प्रदेशोने उज्जड करी देता मुस्लिम सुलतान हिंदुओनो जाणे काळ अवतर्यो होय एम कहेवातुं (७–२४) मुस्लिमो हिंदुओने 'बकाल' अने 'गोबरडा' कहेता (७–७७)

जैन साधुओ जैन धर्मना उपदेश माटे सतत जाग्रत रहेता (९–१/१५८) अने भक्तो पासे नवां मंदिरो–उपाश्रयो बंधावडावता (९ १९४) नाना बाळकोने दीक्षा आपवानी प्रथा चालु हती, कारण के लावण्यसमयने नवमा वर्षे ज दीक्षा अपाई हती (चू–८८)

विमले सांप्रदायिक मनोवृत्ति नहि राखता तपसीओ माटे मठ, निशाळ, पौशाळ, अने दर्शनना उपासको माटे विश्रामो कराव्या हता[२३] (८–११२)

ब्राह्मण अने जैनोने बनतुं नहोतुं, आथी विमले ज्यारे आबु पर्वत उपर जैन देरासर बंधाववा निर्णय कर्यो त्यारे त्यां रहेता ब्राह्मणोए-भरडाओए जमीन सुध्धां आपवानी ना कही हती विरोध पण कर्यो, अने छेवटे भारे दाम लईने जमीन आपी (९–२०१/२१९)

आहार—भोज्य पदार्थो

भोजननी चीजोमां लाडु, दाळ भात (३–३०), खाजां, सुवाळी, सोळ शालना (शाक) (५–६३), घोल छीणेलुं दही मठो, करंबो (दहींमां राखी मूकेलो भात) (५–६४), सुखडी (१–३१), तल्वट चाकुण, वडा, वेढमी लाह (लापसी) (९–२५५) खीर (९–२४६) दूध, अणघालेलुं दहीं (६–१६), घेंश–छाश (६–२१), कूर (भात) (चू–४८), कुलेर (९–२५८) हतां घी (३–३०), तेल, हींग (६–११) गोळ (३–२०), मलतारी गोळ (९–३६),

२२ सं १५०८ मां अमदावादमां लोंकाशाह नामना लहियाए साधु प्रत्ये अणराग थतां अने सं १५३० मां लखमसी नामनो शिष्य मळतां—बनेए चालु परंपरामां केटलेक विरोध दाखव्यो जिनपूजा–जिनप्रतिमानो निषेध कर्यो साथे जैनोनी आवश्यक क्रियाओ (पौषध, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान) करवामां तथा दान देवामां मान्यता न राखी'

जैसाइ–पृ ५०६–५०७

२३ जैसाइ – पृ ५१२

खांड (९-२४६), पक्वान (चू-५६), टोपरां (३-२०), धाणी चणा (३-३१), धाणीनां फूल (४-३७) पापड, वडी (५-६०) पण खरां कंदमां सूरण, वज्रकंद, आदु, लीली हळदर, गाजर, कमळकंद, मूळा, आलु (अळवी), गरमर, लसण वगेरेनो उल्लेख थयेलो मळे छे (९-२६/२७). रींगणां पण गणावायां छे (९-३२).

भोजनमां सौ प्रथम फळफूल पीरसातां (५-६३) पछी खाजां, लाडु, भात वगेरे पीरसातु (५-६३). पछी छणेलु दहीं अने छेवटे भात जमी रह्या पछी झारीमां भरेला पाणीथी हाथ धोवाता पछी फूलहार अने पान अपातां (५-६४/६५). घी धारे पीरसातु (५-६३). वळी घी गोळनी लहाणी पण थती (३-१६९). धाणीचणा पण वहेंचातां (४-३७)

मुखवासमां पानसोपारी (३-३१) फोफळ (सोपारी) (३-१६५) वरियाळी (९-२६), केवडियो काथो (५-६५) अपातां. उपर कह्यु तेम, भोजनांते फूलहार अने पान अवश्य अपातां (५-६५).

कन्यापक्ष तरफथी जानने गोरव (५-८१) अने वरपक्ष तरफथी मरोठी अपाती (५-८२).

हाथपग धोई बे द्वारमां सौ एकी साथे पगते बेसी जमण जमतां. जमवा माटे आसन अने आडणो मुकातां (५-६२).

पोशाक

फूमतावाळी टोपी नानां छोकरां माटे (३-२३) आंगुलां (झभलुं (३-२४) पगनी मोजडी (३ ३४ अने ३-१६५), रत्नथी जडेल टोपी (३-१६७), बासरथाना फेंटा (५-९२), पाघडी (९-८५), प्रतापगढनां पट्टकूळ (५-९२), पोतवाळा परदेशी साडला (५-९२), मशरू (५-९२), जेना उपर घणां वेलबुट्टी अने दाणा पाडेल छे तेवी धोळी घुमराई (छींट), पटी (कटिवस्र, चणिया?), चीर, जेना उपर हस सूडा सारस आलेख्यां छे तेवा चारसा (५-९३), आछां छायल, दामणी, नारंगी-नवरंगी-तारामंडळनी भातवाळां वस्रो (५-९४), धोतियां अने पोतियां (३-३५), खेस (५-९१), चोळी (१-८), कंचुकी (५-७३), घुघरीवाळी ओढणी (५-७५), कापडा अने रेशमी वस्रो (३-१६५), पानेतर पटोळुं (५-७१), छछणडुं (रूमाल) (५-६९), पगनां मोजां (६-५२), पावडी (९-८१), खासडां (९-८३), वगेरे चीजोनो उल्लेख थयेलो मळे छे.

अलंकार

मुक्ताफळना हार नेपुर, कानना कुंडळ (१–५), रत्नजडित राखडी (१–६), छोकराओ माटे हाथनी कडलीओ (३–२३), मादळिया थाकडा (काननी कडी), कान माटे सोनाना वेढला (३–२४), पगनी घूघरी (३–२५), वेढ (३–५१), एकाउलि हार (५–३७), खींटली अने झाल (कानना घरेणा), वींटी (५–३८), सादी राखडी (५–७२), सोनानी झाल (काननुं घरेणुं) (५–७३), चूडी कंकण, झाझर (५–७४), गडगडता गोडिया (मारवाडमा पहेरातुं घरेणुं), भारे मेरव जोडो (काननुं घरेणुं) (५–९०), खरवास (?), खाडिका (?), गजवाडी (?), झूना (?), झरमर, तली (?), नीलनेत्र अने मुग्मावली (५–९१), दामणी (५–९४), वगेरे अलंकारोनी नामावलि मळे छे मोती कोडी, शखला (९–१२०) मणि, माणिक अने सोनानो (५–११ उपयोग अलकार बनाववामा थतो.

शृंगारमा चाल्लो (१–७), कपाळे टीलडी (५–७३), सुंदर वेणी (१–५), वेणीदड (गूथेलो चोटलो) (५–३८) – नो उल्लेख अवारनवार मळे छे नेत्रो अजाता (५–७३), सेंथामा सिंदूर पुरातु (५–७२), मस्तके अगर (५–१००) अने बावन चंदन (सुगंधी) महेकी रहेता (५–७४) चूआ चदन ने चपेलयी सुगधनी रेल वहावाती.

सगपण

सगपण विशेनी थोडी माहती विमलप्रबंधमां मळी रहे छे 'बाप'ने 'काका' कहेवानो रिवाज त्यारे प्रचलित हतो (३–१४). 'बाप'ने 'साजन' पण कहेता (३–२३). माय–बाप (३–२१), फईअर (३–२२), फोई (३–१६६), वडी आई (मानी मा) ३–१६४, मा (३–२५), पिता (३–७), पुत्र (३–७), बेटु (३–४०) काकी ३–१६५) चाची (काकी ?) (३–७१), भत्रीजउ (९–२६२), *माउला (४–१८) मामा (४–७९) भाणेज (४–८१), सासु, ससरा,* दियर (५–३४) नणद (५–८५), साळा (५–७९), वहु (५–८४), पति (५–७२), वर (५–८०) भर्तार (५–२०), भाई-बहेन (४–८४)—सामाजिक दृष्टिए सगपणसूचक शब्दो आ प्रकारना हता

संबोधन

राजकारभारनुं मुख्य कार्य ए समये वणिकोना हाथमा हतु, आथी सामान्यत: एओ 'महेता' शब्दथी सबोधाता (२–४७) अत्यारे अधिकारीओने

'साहेब' कहेवामां आवे छे. परंतु ए समये राजा अने बीजा उच्च अधिकारीओने 'स्वामी' शब्दथी संबोधवानो रिवाज हतो (२–५२)

जैन संघ श्रावक, श्राविका, साधु अने साध्वीनो बनेलो छे, आमां साध्वीने 'महासती' कहेता (२–५७).

निशाळना शिक्षकने अध्याय (३–३३) अथवा पंड्या (३–३५) कहेता.

तीर्थनी यात्राओ माटे संघ काढनार ' संघपति ' तरीके ओळखाता (९–१).

रमत–उत्सव

सोळमी सदीमां सोगठाबाजीनी रमत खूब ज प्रचलित होय एम जणायछे, कारण के एनो उल्लेख थयेलो वारंवार मळे छे (१–५९). एमां इच्छित पासो पडवो ए रमनार माटे सौभाग्यनी वात गणाती (३–४२). रमतां रमतां पोतानी इच्छा मुजब पासा पडे अने सामा पक्षथी सोगठीने रमतना नियम मुजब दूर करवानुं थाय त्यारे ए नियमने सोगठी मारवी ' एम कहेवानो उल्लेख मळे छे (८–८९). सोगठाबाजी द्वारा अथवा स्वतंत्र रीते द्यूत–जुगार पण खेलातो हतो (४–४२) (९–८४)

गेडीदडानी रमत पण ए समयमां प्रचलित रमत हती (९–८३).

विजयोत्सवो अति आनंदपूर्वक ऊजवाता. भातभातनां सुदर तोरण बंधातां; मोटां ढोल अने निशान गडगडतां; अबोल गुलाल ऊडतां; प्रतिष्ठित कुटुंबनी कन्याओ विजेताने वधाववा जती (८–७०/७६). मंगळ प्रसंगे तळिया–तोरण बंधातां (६–५०) अने अबील गुलाल उडाडातां (१–६२).

जैनोना पर्यूषण पर्वना समये श्रावको क्षाकझमाळ करी, ए पर्व ऊजववा माटे, बीजाओथी पोते वधु धर्मिष्ठ छे ए बताववा, चडसाचडसी करता; गानतान करता (३–६७)

दिवाळीना दिवसो उत्सवपूर्वक ऊजवाता (२–५७), – त्यारे हजारो दीवा प्रकटाववामां आवता (७–१०६).

तरु, फळफळादि, पशु, पंखी

वृक्षोमां अशोकवृक्ष उत्तम मनातु (२–४०). वड, पींपळो, ऊंबरडो, सादडो (९–३०), लिंब (लींबडो) (६–६२), आंबा, रायण (९–११७), आंबली (९–२५), वांस (९–२५) ए वृक्षोनो उल्लेख थयेलो पण मळे छे.

फळफळादिमां सिरोदक (नाळियेर) (चू–१०२), नारंगी (५–९४), द्राक्ष (६–६१), लिंबोळी (६–६१), केळ (५–१६), दाडिम (५–३५), शेरडी (६–२९), चंपानु फूल (५–३७), करेणनु फूल (९–६९), कमलकद (९–२७) नामो मळे छे, आमा कमल'नु फूल (१–६) अत्यत पवित्र मनायुं छे.

पशुपखीना नामो ठीक ठीक मळे छे : मोर (४–१०), मयूर, पोपट, मगर, मच्छ, काचबो (४–११/१२) सुडा, सारस, हस (५–९३), माकडु (५–२९), कूकड (कूकडा), किंनर (रींछ) (३–४७), हरण (५–७), माछली (६–३६) झोटडी (भेंश) (६–७९), जबूक (शियाळ) (८–५७), गूहड (घूवड) (८–६०), काग (८–६०), खर (गधेडो) (९–८७), सालही (?) (९–१२९), माजार (९–१२९), वृषभ (४–१०), बलद (३–१११), सरडउ (कांचीडो) (३–१३९) सिंह (४–११), वाघ (६–८५), कायह (धकरु) (६–८४) वगेरे प्रचलित नामोनो उल्लेख थयेलो जोवामा आवे छे. हाथी अने अश्वनु जाणे शास्त्र ज अपायु छे

नाणुं, माप अने समय

विमलप्रबंधमा नाणु, माप अने समयनो आछो उल्लेख मळे छे. चलणी सिक्का माटे 'द्राम, द्रम' अथवा 'द्रम्म' शब्द वपरायेलो मळे छे (२–४७, चू–४१); 'दाम' शब्द पण मळे छे (३–१११) सुवर्णटका माटे 'वदिरा' शब्द वपरायेलो छे (९–२३६) सुवर्णटका शब्द पण मळे छे (९–२१६). सोनईआ (९–२१८, ९–२३६), रूपईआ (९–२३६) अने टका (७–६) शब्द पण उपयोगमा लेवाया छे.

पाणी मापवा माटे 'द्रोण'नु [24] माप हतु (४–२०) लबाई माटे 'अगुल'नु माप गणातु (४–२१) तीर जेटलु अतर सूचववा 'तीर–वा' शब्द पण वपरातो (७–९३) अतर मापवा माटे जोजन (१–२८), कोश (गाउ) (१–३१), गाउ (७–९३) धनुष (१–३६) हाथ (३–८४)ना मापनो उपयोग थतो

सौदु, अनाज वगेरे चीजोना माप माटे 'पाळी'नो उपयोग थतो, अने वस्तुओ जोखवा माटे तुला (त्राजवा)नी मदद लेवाती (६–२२). प्रवाही चीजोना माप माटे 'पली' साधन हतु (३–७१)

वर्ष (९–६), मास, पहोर, घडी, पल अने अक्षरनो उच्चार वगेरे काळने मापवा माटेना माप हता (९–५)

२४ द्रोण ए प्राचीन माप छे. चार तोलानो एक पल, पचास पलनो एक आढक, अने चार आढकनो एक द्रोण विप्र (व्यास) पृ. ११६

८. विमलप्रबंधनी भाषाभूमिका

१. प्रास्ताविक

स. १९७० (ई. स १९१४)मां स्व. श्री. मणिलाल बकोरभाई व्यासे पंडित लावण्यसमयकृत विमलप्रबंधनी वाचना जुदी जुदी त्रण प्रतो परथी तैयार करी[1] प्रसिद्ध करी त्यारथी ए युगनी एक नोंधपात्र ऐतिहासिक काव्य-कृति जूनी गुजरातीना अभ्यासीओने सुलभ बनी. श्री. व्यासे ए ग्रंथनी प्रस्तावनामां, ए समय सुधीमां मळेलां साधनोनो उपयोग करीने, विमलप्रबंधनी भाषाकीय तेमज ऐतिहासिक दृष्टिए विशिष्टता दर्शाववानो प्रयत्न कर्यो छे. आ विमलप्रबंधनी अत्यारे अनेक हस्तप्रतो मळी आवे छे; आमांथी, प्रस्तावनामां जणाव्या मुजब, मुनिश्री पुण्यविजयजीए मने जे चार प्रतो आपेली तेमांनी एक जूनी प्रतनो पाठ मान्य राखी मारी पासेनी वि. सं. १६४१नी प्रत तेमज श्री. मणिलाल व्यासनी मुद्रित वाचनानां पाठांतरो नोंधी मारा आ अभ्यासमां उपयोगी थवा आ कृतिनुं में नवेसरथी संपादन कर्युं

मुनिश्री पुण्यविजयजीए मने जे चार प्रतो आपेली तेमां एक प्रत वि. स १६२७ नी हती ज्यारे बाकीनी त्रण प्रतो लिपि-वर्ष विनानी हती. मुनिश्री पुण्यविजयजीनी सूचना मुजब मूलपाठ माटे में जे प्रत पसंद करी ते जूनी ,प्रत ६१ पत्रनी छे अने भाषानी दृष्टिए वि. सं. १६२७ नी प्रत करतां पण वधु जूनी अने शुद्ध छे, लावण्यसमयना पाठनी वधु नजीक लई जनारी सरख्ला करनारी छे. आ प्रत देवनागरी जैन मरोडनी छे अने एमां वर्तमान पद्धतिए मळे छे ते प्रकारे शब्दो छूटा पाडेला नथी; वाक्यखंडो तारव्या नथी, पण सळंग लीटीए लेखन करवामां आव्युं छे. शब्दने गमे त्यांथी तोडवानी रीत चालु छे. केटलीक वार अनुसंधान माटे ∠ आवुं के — आवुं निशान करवामां आव्युं छे केटलीक वार शब्दमां कानो पण तोडवामां आव्यो छे (पृ. —१ करी, ९—७१), ज्यां छंद बदलाय छे त्यां

---

१. - विप्र (व्यास) प्रस्तावना, पृ. १५

छदनु नाम, प्रत्येक कडीए आक तथा दरेक खडनी पुष्पिकाना अक्षरो गेरु रंगथी रगेला छे. वि सं १६४१नी मारी पासेनी प्रत पण आ ज पद्धतिनी छे

२. लिपि अने उच्चार

आ जूनी प्रत (जेनो 'अ' एवा टूका वर्णथी उल्लेख कर्यो छे ते)मा व्यजनोमा आवता एकार अने ओकार प्रतिमात्रा(पडिमात्रा'मा ग्रोटे भागे लखायेल छे आम छता वर्तमान पद्धतिए वर्णनी उपर मात्रा लखायेली होय तेवा स्थानो पण थोडा नथी, एटले के प्रतिमात्रानु स्थान वर्ण उपरनी मात्राए लेवा माड्यु छे तेवा सक्रातिकाळनी आ प्रत छे ए स्पष्ट छे व्यजनमा आवता ऐ अने औ प्रतिमात्रा अने वर्ण उपर एक मात्राना रूपे जोवा मळे छे, एकलो आवतो ए अने औ जोवा मळता नथी, जेमके भैरव ८-१६, वैताढ्य ९-६, नैरत ९-६०, गोडी ९-९३; भैरव ९-९६, सौख्य ९-१०१; जैन ९-१११, गोहला ९-१७७ कैलास चू-१८, गौतम चू ७६ एकलो आवतो ए' प्राय 'ए'ना रूपमा ज मळे छे (ए आगमनु एहवु मतु १-४७). कोईक वार अ'ना रूपमा पण ए जोवा मळे छे एकलो आवेलो 'ओ' मुख्यत्वे उ'ना रूपमा लखायेल छे

क्वचित् स्वरमा ओ दीर्घ ऊ ने स्थाने लखेलो मळे छे एनी आकृति अ शिरोरेखा विनाना मराठी प्रकारना अ'ना रूपे मळे छे (जुओ ओपरी ५-७६) व्यजनमा आचारना ख'ने मळतो 'ख' पण जाणे के षाट लेतो आवे छे (जुओ सिरीपु ९ २३०) इ अने ई तेमज उ अने ऊ एक ज प्रकारना छे

अनुस्वार अने अनुनासिक वच्चे वत्र प्रतोमा कई प्रकारनो भेद जोवामा आवतो नथी व्यजनोना विषयमा ध्यान खेंचनारो ष' छे ख उच्चारण थाय छे तेवा लगभग बधा शब्दोमा पण ष' लखायेलो जोवा मळे छे (हरष ८-७२) क्वचित् 'दोष' जेवा तत्सम शब्दोमा मूर्धन्य 'ष' लखायो होय तो त्या ए मूर्धन्य होवानी शक्यता छे, बाकी तद्भव के तत्सम सर्वत्र 'ष' लखायो होवा छता उच्चारण 'ख छे 'हरिष' के 'हरष' जेवी जोडणी अर्वाचीन तद्भवोनी मळे छे तेवा सयोगोमा पण उच्चारण स्पष्ट ख होवानी शक्यता छे (आवा स्थानोमा मे मारे तैयार करेली वाचनामा 'ख' ज वापर्यो छे)

सामान्य रीते तत्सम 'श' धरावता शब्दोमा मोटे भागे दत्य 'स' जोवा मळे छे आम छता केटलीक वार तत्सम शब्दोमा अने इ ए य ना योगमा आवति वेळा तद्भव शब्दोमा पण तालव्य 'श' जोवा मळे छे आवा स्थानो

मधा ज तद्भव साचवी लेखामा आव्या छे : (रोशइ=रोषथी ७-४३, रोसि ८-३६) वगेरे

अनुनासिक व्यजनोमा 'ण, न अने म' वधे प्रतोमां वपरायेला छे आमाना 'न' अने 'म' शब्दारंभे पण आवे छे. आ त्रणे व्यजनोनी पूर्वेना स्वर उपर अनुस्वार जेवु बिन्दु (ं) लखवानो आ प्रत समादर करे छे, उच्चारणनी दृष्टिए पूर्व स्वर ज सानुनासिक उच्चारातो होवाथी जूनी गुजराती प्रतोमा आवा अनुनासिक व्यजनो पहेला अनुस्वार जेवु बिंदु लखवानो रिवाज पडयो हतो, आम छता आ बधे प्रतोमा एवा सख्याबध स्थळो मळी आवे छे ज्यां आवा अनुनासिक व्यजननी पूर्वे बिंदु जोवा मळतु पण नथी

अर्धस्वरोमां 'य' शब्दना मध्यभागमा मळे छे, जेमके गोय्यद (१९४८) आवे स्थळे ए हमेशा लघुप्रयत्नतर छे इकार उपरथी आवेलो 'य' सर्वत्र आम लघुप्रयत्न छे. 'य' जो शब्दारंभे होय तो एनो उच्चार तद्भव शब्दोमा हमेशा 'ज' छे

'व' शब्दारंभे होय के शब्दनी मध्यमां होय ए पूर्णप्रयत्न छे ' यतप तीआला (७ ६१), विनती (८-७८)

'ल'ने स्थाने जिह्वामूलीय 'ळ' उच्चारण थतु हशे तोपण 'ल' स्वरूपे नोंधायेल मळे छे ' भमरमाला (१५२), आगलि (६-३५)

हश्रुति-ह व्यजन तरीके शब्दारंभे तेमज शब्दना मध्यमा पण छे, परंतु ज्यारे ए शब्दना मध्यमां व्यजन साथे जोडायेल होय छे त्यारे ए लघुप्रयत्नतर (स्वरने महाप्राणित करतो होय ते रीते आवेलो) होवानी शक्यता छे साह्यु (२ ११), नाह्वड (२-१३), उल्हासी (२-६२), अने छुट्टो पण : तेहवा (३-६२), विहिचिणि (९-२१४), साहामा (३-६५) वगेरे

'ख्य' पण 'क्ष' रूपे कोईक वार मळे छे : विक्षात (८-२८)

आजे लघुप्रयत्न अ, ई उ, ए, ओ जीवत गुजराती भाषामां छे तेवा ज ए युगमां हशे के नहि ए कहेवु मुश्केल छे

लखाणमां तु अने तु, त्र अने त्त घणी वार सरखा लागे छे, जाणे के एक ज होय एवी भ्रांति थाय ज्यारे अक्षर के शब्द छेकवाना होय छे त्यारे अक्षर के शब्द उपर ॥ आवी लीटीओ द्वारा निशान कर्यु होय छे, अथवा ए अक्षर के शब्द हरताळथी छेकेल होय छे केटलेक स्थळे आवा छेकवाना शब्दोनु मथाळु बांधेलु होतु नथी; एवे समये ए अक्षर के शब्द वाचवानो नथी एम समजी लेवानु होय छे

मारी पासेनी जे प्रतनो में 'क' तरीके उल्लेख कर्यो छे तेमा पण प्रायः आ ज विशिष्टता छे

३ भाषाभूमिका

विमलप्रबन्धनी हस्तप्रतमा प्राप्त थतु भाषास्वरूप ए समयनी उच्चरित भाषानु प्रतिनिधित्व धरावे छे के नहि एनो निर्णय करवो खूब कठिन छे मुनिश्री जिनविजयजी साथे चर्चाविचारणा थता एओए भारपूर्वक एवु कह्यु के ए समयनी बोलाती अने लखाती भाषामा खूब फेर होवो जोईए अने हस्तप्रतमा लखाती भाषा ए जूना समयनी चाली आवती रूढिप्रणालि मुजबनी होवी जोईए (जेमके रोहिड़ ए लखाणनी भाषा छे, बोलाती रोहि के रोरो होवी जोईए) टूकमा, हस्तप्रतोमा भाषा विभिन्न भूमिकाओमाथी पसार थई आज सुधी ऊतरी आवी छे विमलप्रबंधनी आ हस्तप्रतमा प्राप्त थतु रूप ए रीते मध्यकालीन गुजराती भाषानी, श्री केशवराम शास्त्रीए जे चार[१] भूमिकाओ आपी छे तेमानी, बीजी भूमिका'नु छे उत्तर अपभ्रंशमा जोडाक्षरो तूटये स्थपायेला रूपो व्यापक रीते मध्यकालीन गुजरातीनी पहेली भूमिकामा वपरावा लाग्या हता, छता अपभ्रंशनी परंपरामा रहीने अ+इ, अ+उ, अ+उ आ क्रमाश्री छेल्ला अउ ने बदले दीर्घ ऊ अथवा क्वचित् उ थयानु विकल्पे जोवा मळे छे, अ+इ अने अ+उ हजु छूटा रहे छे. मध्यकालीन गुजरातीनी बीजी भूमिकामा स्वरसकोच थाय छे अने अ+इ=इ अने अ+उ=उ विकल्पे लखावा लागे छे. मध्यकालीन गुजरातीनी पहेली अने बीजी भूमिकामा वपराता अइ अने अउ अने सकोच पामेला इ अने उ धरावता रूप लखाय छे ते प्रमाणे खरेखर उच्चरित थता हशे के नहि एनो चोक्कस निर्णय लाववानु काम अघरु नथी, कारण के आ रीते जुदा अ+इ अ+उ लखाता अथवा सकोच पामी इ अने उ रूपे आवी मळेला संकेतोने ठेकाणे सधिजन्य ए अने ओ—अर्वाचीन गुजराती भूमिकानी लाक्षणिकतावाळा मध्यकालीन गुजरातीनी चोथी भूमिकामा लिखित स्वरूपे प्राप्त थता उच्चारण आ प्रतमा जोवा मळे छे, जेमके—

तणे (१-२०), मानो (३-५०), हाछे, पाले परहरे, करे (४-५३), माणे (५-२३) छाडे (५-२४), लिखे (१-३५) ए वर्तमानकाळना रूपो, थवणे (१-८९), सुगनाफले (२-३३), मायबापे (३-१६), सोनाने फूले (३-४०), ग्रहे (३-५७), चेडे (३-११७), भरे प्रतापि (३-११), माळले

१ अनुशीलन : के. का शास्त्री

(૨-૧૬૭), રાતે, પીલે (૪-૧૭), દુગે (૪-૭૩), માલોટે (૭-૩૭), એ ત્રીજીનાં રૂપો; ચરણે (૧-૧૬), મરને (૧-૧૪), યમલે (૧-૧૪), મત્રે (૨-૧૭), પાયે (૨-૬૬), જ્ઞાતે (૨-૮૩), ઘરે (૩-૬), દેવદેહરાડે (૩-૧૭), મુગે (૩-૩૭) દીઠે દઠે (૩-૫૭), પ્રાટલે (૩-૧૬૩), ગુડલે (૩-૧૬૫), હાલ્હડે (૪-૨), મારે ઘરે (૪-૫૬), ચરણે (૫-૧૬), ગાલે (૫-૨૫), જાતે દીઠ (૫-૨૬), મેલ્હાવે (૬-૬૪), ઘાંચીને ઘરિ (૬-૭૭), અને ઉંચે ગુખી (૭ ૭૪) એ સાતમીનાં રૂપો, સાચુ ઉચ્ચારણ શુ હશે એની આ પ્રતીતિ કરાવે છે લહિયાઓએ જૂના રૂપો સાથોસાથ પોતાના તત્કાલીન ઉચ્ચરિત રૂપો અજાણતા પણ લખી નાખ્યાં હોય એમ લાગ્યા વિના રહેતુ નથી જ્યા ઉચ્ચરિત અત્ય એ અને ઓ સ્વરસંકોચને લઈને ઇ અને ઉ ના રૂપમા લખાયા છે ત્યા એનુ ઉચ્ચારણ એ યુગમા ખરેખર હ્રસ્વ ઇ અને ઉ રૂપમાં હશે કે એ અને ઓ ને બદલે લખાયા હશે એનો નિર્ણય લાવવો આ રીતે સહેલો થઈ પડે છે છદ આવા બધા સ્થાનોમાં ગુરુતા માગી લે છે; એટલે ઉચ્ચરિત એકારને સ્થાને પ્રતમા દીર્ઘ ઈકાર પણ ક્વચિત્ લખાયેલ જોવા મળે છે, જેમકે હથી (૫-૫૦) એ ત્રીજનુ રૂપ અને ઘરી (૪-૬૦), મદિરી (૬-૫૬), ચચલીઇ (૭-૬૩), ગુખી (૭-૭૪) એ સાતમીનાં રૂપો અજાણતા લખાઈ ગયેલાં જોવા મળે છે

જ્યા ઇ નો એ નથી થયો હોતો તેવા સ્થળોમા ઇ નો ય થયેલો જોવા મળે છે ક્રિયાપદમા આ જોઈ શકાય છે, જેમકે વવરાય (૬-૧૧૧), કહિ-વાય ૬-૧૨૦), આ બન્ને કર્મણિના રૂપો છે ત્રીજી અને સાતમી વિભક્તિમાં લુપ્ત-પ્રત્યગ રૂપોમાં ઇ ઘસાઈ ગયો છે · લીલા (૧-૫), જિણ (૩-૧૩૪) એ ત્રીજી વિભક્તિના, અને કોટિ (૧-૭), સિદ્ધિ (૧-૬), રાચ્ચા (૧-૩૦), પર્ષદ (૧-૪૩), મદિર (૧-૬૪), નયર (૨-૪૦), સુપનતર (૨-૪૭) એ સાતમી વિભક્તિના રૂપો છે

હસ્તપ્રતોની લિખિત ભાષા ઉપરથી તત્કાલીન બોલાતી ભાષા એ જ છે કે નહિ એનો નિર્ણય લેતા પૂર્વે ખૂબ જ સાવધાની રાખવી આવશ્યક થઈ પડે છે એ ઉપર આપેલા નમૂનાઓમાંના એ, ઓ વાળાં રૂપો ઉપરથી જોઈ શકાય છે અર્વાચીન ગુજરાતી ભાષાનુ ઉચ્ચરિત સ્વરૂપ કેટલા જૂના સમયથી પ્રચારમા હતુ એ પણ આનાથી સમજી શકાય છે આ ઉપરથી સિદ્ધાંત બાંધવો હોય તો એવો બાંધી શકાય કે લહિયાઓ સામાન્ય રીતે જૂની ભૂમિકાનાં રૂપોને વર્ષો સુધી વળગી રહેતા હતા, આમ છતા ઉચ્ચરિત

भाषास्वरूप अजाणतां ए लोकोने हाथे लखाई जतुं हतुं एथी मोडेथी स्थापित थयेलां अर्वाचीन भूमिकानां रूपो जेटलां जूना समयमां मळे तेटली अर्वाचीन भूमिका जूनी गणाय.

४. भाषानी लाक्षणिकता

मध्यकालीन गुजराती भाषानी लाक्षणिकता विमलप्रबंधनी प्रतना आधारे आ रीते तारवी शकाय :

१. संयुक्त व्यंजननो लोप अने पूर्व स्वरनी ह्रस्वता के दीर्घता; जेमके— सरसति (सरस्वती), मझु (मज्झ) (१-२), सहस (सहस्र १-२९), अलगु (अलग्न ३-१५), हथी (हस्त ३-५६), उछक (उत्सुक ४-३९), विणसइ (विणस्सइ-विनश्यति ९-२९), वणसइ (वनस्पति ९-१३८) आ रूपोमां संयुक्त व्यंजननो नाश थाय छे, ज्यारे नीचे जणावेलां रूपोमां सयुक्त व्यजननो नाश थई पूर्वना स्वरनु दीर्घत्व थाय छे : लाछि (लक्ष्मी १-४८), ऊधम (उद्ध्वस्त २-१४), साजन (सज्जन ३-२३) साचउ (सत्य ३-५९), सूधी (शुद्ध २-७५), ऊजम (उद्यम ३-९७), ऊछह (उत्सव ४-८३), नीलजनइ (निलज्ज ८-१२), आखा (अक्षय चू-४५)

२. तत्सम शब्दोनो थहोळो उपयोग जोवामा आवे छे :

आदि (१-२), प्रणम (१-१), अर्बुदा (१-१), सकल (१-१), विमलमति (१-१), विमलप्रबध १-१), वगेरे सेंकडो तत्सम शब्दोनो उपयोग थयेलो छे

३. छइ नो सहायकारक तरीके उपयोग थयेलो जोवा मळे छे :

वात हुइ छइ सरल सभावि (४-६६)

कमि कर्म ज्ञाति हुइ छइ घणी (२-६३)

४. संयुक्त क्रियापदोना वपराशनो आरंभ जोवामां आवे छे; जेमके जई पडिउ (१-६७), मेल्ही करी (२-२०), लेई करी (२-३१), नासी रहिउ (२-८७), लावीउ (लई आव्यो) (३-१४४), लई सकइ (४-२६), जाइ मरी (५-२२).

५. कर्मणिरूप बनाववा माटे आ य) प्रत्ययनो वपराश वधतो जतो जोवामा आवे छे :

कहाइ (१-१४, २-७५ ४-२०), सीदाइ (१-७२, ३-६), लुसाइ (२-५२), मराइ (३-१४)

६. 'आपणे' नो पहेला-त्रीजा पुरुषना संयुक्त अर्थमां उपयोग शरू थयेलो जोवा मळे छे: आपणे आपण+इ त्रीजी विभक्तिनो (१-२१), आपण (आपणे चे, ३-११)

७. वर्तमान कर्मणि त्रीजा पुरुष एकवचननो वर्तमान पहेला पुरुष बहुवचनना कर्तरि रूप तरीके वपराशनो आरंभ थयो छे :

लागीइ, मागीइ (२-५)

बंधव तोरइ पाय लागीइ, एक लाख अम्ने मागीइ (२-५)

भरीइ (धन मेलीनइ भरीइ कूआ ३-११)

जईइ (४-७२, ६-२२ चू-१६)

मागीइ (७-२), ज्याचीइ (६-२)

वलीइ, रहीई (चू-१४)

८. इंश्रुतिनो उत्तरोत्तर वधतो विकास जोवा मळे छे: साहुं (२-११), नांहडं (२-१३), साह्यो (२-२३), उल्हासी (२-६२), साम्हडं (२-४१), तेहवा (३-६२), त्रिहिचिणि (९-२१४), साहामा (३-६५)

उपर्युक्त प्रकारना फेरफारोथी मध्यकालीन गुजरातीनुं अर्वाचीन तरफनुं स्वरूप स्पष्ट जतुं हतुं.

५. जूनी लाक्षणिकताओना अवशेष

उपर्युक्त फेरफारोनी साथे साथे जूनी लाक्षणिकताओना अवशेषो पण आ मध्यकालीन गुजरातीनी भूमिकामां जोवा मळे छे :

१. प्राकृत तत्समोनो उपयोग :

जिणवर, थय, चक्केसरी आयस कवीयण (१-१), जीह (१-७), पीण, पयोहर (१-८), जाण (१-९), सायर (१-१७), सहस्स (१-२७), पुहुलप्पणि (१-३५), समाणी (१-३९), गयणि (१-६२), वइरागर (१-६९), रयणमाल (१-५५), खंधि (२-३१), नअर (३-१३१), चव (४-१९), दीह, लीह (५-२६), मयण (५-७४), किंत्ति (चू-३९), भणति (चू-११०) वगेरे

२. अपभ्रंशनी केटलीक लाक्षणिकताओ :

सरसति वरसति (१-२ दीर्घ ईकारने बदले ह्रस्व इ); देवि श्रीमात (१-१ अंत्य स्वर ह्रस्व); मझु, तसु (१-२ अंत्य उकार); वाणि, राणि

(१–१५ इ ह्रस्व थयेल छे), पूरे (१–१९ आज्ञार्थ बीजो पुरुष एकवचन), लद्धउ (१–१७)), मग्गु (२–८), चल्लियु (२–३४), मज्झि (४–५१/१), पुहलपणि (९–३४) आ रूपोमा प्राकृत तत्समने अपभ्रंश प्रत्यय लाग्या छे

२ प्रायोगिक असरो

(अ) मध्यकालीन गुजराती अने मध्यकालीन मारवाडी विमलप्रबंधना रचनाकाल पहेला जुदी पडी गई छे, छता कोई कोई रूपोमा मारवाडी लाक्षणिकता जोवा मळे छे, जेमके मु (माह १–१९) सोनिमय (१–२७), जिमणा (२–२५) छेल्ला बे शब्दोमा इकार उमेरायो छे, ज्यारे सर्वनामोमा जके (गुजराती जे ५–३९, चू–५७, अने जिको (चू ६४) रूपो जोवा मळे छे

वळी सामान्य कृदतने बदले क्रियावाचक नामनो प्रयोग ए पण मारवाडी लाक्षणिकता छे एनी असर आ दाखलामा जोई शकाय छे मेटणि माटि (८–७७)

(आ) अरबी-फारसी भाषाना शब्दो भरतेश्वरबाहुबली रास (स १२४१)ना रचनासमयथी वपरायेला जोवा मळे छे सावाण (तबू) रूप एनलु जूनु वपरायेलु छे पछीथी समराराम़ु (स १३७१), रणमल्ल छद (स १४५० आसपास), कान्हडदेप्रबध (स १५१२)मा उत्तरोत्तर अरबी-फारसी भाषाना शब्दोना वपराशनु प्रमाण वधतु जाय छे एटलु खरु के पाछळनी बे कृतिओमा अरबी-फारसी शब्दोनी जे विपुलता मळे छे ते सर्वसामान्य प्रकारनी नथी विमलप्रबंधमा आमाना जे चलणी शब्दो वपराया छ ते अछता रहेता नथी, जेमके

जगि (३–३३), मिराती (३–३६), खरची (सबधक भूतकृदत ३–३८), लाच (३–४१), चाची (३ ७१), खरचइ (३–७४), असवार (४–३३), ताभी (५–९४, ८–४८), सावाण (७–१५), सुलतान (७–२३), बाजार (७–६६), बीबी (७–७३), सुरताण फुरमाण खुदा (७–७४), हादरि, वकाल (७–७५), हदि चे (अन्दे) (७–७८), हाजरि (७–७९), साहिब (७–८१, ७–९०), बादी (७–९०), मतालिक (७–९५), पइगर, पाका (७–९५), दुर्वेस (७–९६), मुलाणा (मुल्ला ७–९६), सेख (शेख ७–९६), कमाल (७–९९), खजमति (७–१०५, ८–८२), खुशी, खुदा (७–१०६), मीर (८–३), तीरि (८–५३), नजीर (८–६०), कमाद्ध (८–६६), तेजी, तोखार (८–६८), सुरतान (८–७२), कारीगरि (८–८६), जवहरी, तीरगरा (८–१००), मजूर (९–२३४), सरचिउ (चू–२१), मीरमलिक (चू–९१) वगेरे

(इ) विमलप्रबंधना सातमा खंडमां, विमल ज्यारे रोमनगर उपर चतुरंग सैन्य लई सवारी करे छे त्यारे, रोमनगरमां खळभळाट मचे छे अने सुलतानना पत्नीओ–बीबीओ मूछमां हसता सुलतानोनी मश्करी करे छे. ए प्रसंगथी शरू करी रोमनगर उपर–चार सुलतानो उपर विमले विजय मेळव्यो त्यांसुधी (७–७१ थी १०३) मुस्लिम वातावरण खडु करवा माटे कवि हिंदी प्रकारनी भाषानो आश्रय ले छेः—

कया कीजइ हवइ आया, खुदा तणा फुरमाण । (७–७४)

कमका दल हादरि हूआ, जब पूछइ सुरताण ।

आया विमल बकाल ए, मुरडि मनावइ आण ॥ (७–७५)

आया हिंदु गोवरे (७–७७)

हींदु अम्ह हकि गया (७–७८)

हमकु देवइ दोट बकाला (७–७९)

हमके हाजरि नहि असवारा (७–७९)

हमे सुरतान समान समाने, हमकु नासुं कोटि । (७–८०)

देखे बीबी लोक लूटाउ, मारि कराउं लोट । (७–८०)

ए तेरे पाय पडाउ, तु हू साहिब तेरा ।

हिंदू कटक कराउ हेरा, कसुं कहु ग्रुह तेरा ॥ (७–८१) वगेरे

आ कडीओमा खडी बोलीना होय तेवा रूप स्थपायेलां जोवा मळे छे.

५. वाक्यरचना

विमलप्रबंध पद्यात्मक होई एमां गद्यप्रकारनो वाक्यविन्यास नथी. पद्यने लीधे कदाचित् विभक्तिना प्रत्ययो अने अनुगोनो लोप थयेलो होय छे. नवी कर्मणि रचना शरू थई ते पहेलां संस्कृतमाथी उतरी आवेली रचना चालु हती तेना अवशेष धर्मकर्म बोल्यां (१–५०), पामिउ सिंधु देश प्रसिद्ध (२–२७), मइं नवि चालइ घरतु भारु (३–१५) वगेरे रचनामा जोवा मळे छे क्रमने 'नइ' अनुग लागवानो आरंभ विमलप्रबंधमां जोवा मळे छेः सरसतिनइ कवइ (१-१२) आ 'नइ' मां तादर्थ्यनो अर्थ विमल-प्रबंधनी भूमिकामा व्यापक हतो : सर्व जीवनइ आणइ दया (२–७६). आमाथी पाछळथी अमुक क्रियापदोना योगमां नइ' लागवानी परंपरा

उत्तरोत्तर विकसी अने अर्वाचीन गुजरातीमां ऐवा खास स्थानोमा ए स्थिर थई छे.

नामने बदले विशेषणने प्रत्यय के अनुग लगाडवानी पद्यमय पद्धति क्वचित् विमलप्रबंधमां जोवा मळे छे :

देश घणानी आवी संधि (२-२१)

सति सप्तमी (Locative Absolute)

संस्कृतमां व्यापक 'सति सप्तमी'नो प्रयोग आजे अर्वाचीन गुजरातीमा लगभग लुप्त थई गयो छे पण विमलप्रबंधनी भाषाभूमिकामां ए मुक्तपणे चालु जोवा मळे छे :

लेता लोक अखूटइ थया (१-६७), गुण किद्धइ (३-२), खित्री नासइ दीठे दले (३-५७), आते दिन (३-८१), झेरइ ओछइ हुइ करार (३-९६), छडे पीयाणे (४-७२), जाते दीह (५-२६), प्रहि ऊगमतइ (५-८१), परदल दीठइ मोरु नाह (८-३८), हुते हसारथि (८-६३), सिरि अजरइ (९-१४) जिण दीठइ (९-८८), आवि मत्री (चू-४३)

६. समास

सामासिक पद्धति अपभ्रंश युगथी ज तद्दन घसाई गई हती अने नाना नाना समासोमा ज ए क्वचित् जोवा मळती हती; विमलप्रबंधमा पण आ ज स्थिति जोवा मळे छे .

रत्नावलि-जडिउ, अखूटइ (१-६७) अणतेडिउ परघरि (२-१८), रोसभरि, ओढ्ड-हृटि (२-१९) साकरवाणी (२-३७), प्रासादजिन (२-४९), हाथोहाथि (३-४९), हरिलको (५-३६), उद्भुतवेश (८-१), पयलंक (८-३१), विरूपगति (चू-९०) वगेरे

७. रूढिप्रयोग :

कोई पण भाषानी लाक्षणिकता एना रूढिप्रयोगोमा छे नीचे तारवी आपेला थोडा रूढिप्रयोगो जोवाथी ए वस्तु विमलप्रबंधनी भाषाभूमिकामा अछती रहेती नथी; जेमके

जिम गहलॉहि पुरु वास (१-५) मोटा घरनी आणी देढी (३-८), घर भरइ (३-१०), रोतु रहइ (३-१९), चडइ मुने (३-३७, थोडइ दाणि घणी मनि मान (३-६३), कर वावरइ (६-३१), वाई चाकरी (६-९३), चिटु गदे वरतावी आण (८-७०) वगेरे

परिशिष्ट १ : संदर्भ ग्रंथोनी सूची

संस्कृत-प्राकृत

१. तीर्थकल्प : श्रीजिनप्रभसूरि (वि. सं. १३६०)
Bibliotheca Indica Series : New Series No. 1459, 1923 A.D, Calcutta (Asiatic Society of Bengal)

२. द्व्याश्रयकाव्य : हेमचन्द्राचार्य; सं० आ. वि. कायवटे बोम्बे संस्कृत सिरीस, A.D. 1915

३. पुरातनप्रबंधसंग्रह : सं० मुनिश्री जिनविजयजी : सिंघी जैनग्रंथमाला, बम्बई, A.D. 1936

४. प्रबन्धकोश : राजशेखर : सं. मुनिश्री जिनविजयजी : सिंघी जैनग्रंथमाला, A.D. 1935

५. प्रबन्धचिंतामणि : मेरुतुंगाचार्य; सं. मुनिश्री जिनविजयजी : सिंघी जैन-ग्रथमाला, A.D. 1932

६. प्रभावकचरित : सं. मुनिश्री जिनविजयजी : सिंघी जैनग्रंथमाला, A.D. 1940

७. प्राकृतद्व्याश्रयकाव्य : हेमचन्द्राचार्य; सं. श. पा. पंडित, बोम्बे संस्कृत सिरीझ, A.D. 1900

८. वस्तुपालतेजपालप्रशस्ति

९. विविधतीर्थकल्प : जिनप्रभसूरि, सं० मुनिश्री जिनविजयजी : सिंघी जैन-ग्रथमाला, A.D. 1924

१०. विमलप्रबंध : सौभाग्यनंदिसूरि, प्रकाशक पंडित हीरालाल हंसराज, जामनगर [आ प्रबंधनी हस्तप्रत उपरथी तैयार करावेल नकल मुनिश्री जिनविजयजी पासे छे.]

११. विमलशाहचरित : श्रीइंद्रहंसगणी (श्रीधर्महंसगणीशिष्यरचना, वि. सं १५७८ पछी); प्रकाशक, पंडित हीरालाल, जामनगर

१२. सुकृतसंकीर्तन : पंडित अरिसिंह (स. १२८५). मुनि चतुरविजय : श्री जैन आत्मानंद सभा, भावनगर, सं. १९७४

१३ सुकृतकीर्तिकल्लोलिनी : आचार्य उदयप्रभ (सं १२३०)

१४. हम्मीरमदमर्दन : जयसिंहसूरि (सं० १२८६): सं. चिमनलाल हीरालाल, एम.ए. The Central Library, Baroda, A.D. 1920

१५. नेमिनाथचरिउ-प्रशस्ति : (सनत्कुमारचरितग्रन्थान्ते) जुओ अंग्रेजी संदर्भग्रंथ : सनत्कुमारचरितम्.

ENGLISH

1. Architectural Antiquities of Northern Gujarat, Burges and Cousens
2. Chālukyas of Gujarat : Asoke Kumar Mazumdar-Bharatiya, Vidyabhavan, Bombay, A.D. 1956
3. Dynastic History of Northern India, Part II, H. C. Ray.
4. Early History of the Gahadavala Dynasty, Prof. Dhirendra Chandra Ganguly, Proceedings and Translation of the Seventh Oriental Conference, Baroda, A.D. 1933
5. Epigraphica Indica, Vol IX : Mount Abu, Vimal Temple Inscription of Vikram Samvat 1378, Prof. F. Kielhorn, C.I.E., Gottingen
6. The Glory that was Gurjaradeśa, Part III, The Imperial Gurjaras-K. M. Munshi, Bharatiya Vidyabhavan, Bombay, A.D. 1944
7. Gujarāta & its Literature : Shree K. M. Munshi, Longmans Green & Co Ltd Calcutta, A. D 1935
8. Historical Inscriptions of Gujarat, Part I : Acharya Girijashanker Vallabhji, Shree Forbes Gujarati Sabha, Bombay, A D. 1933
9. Introduction to Kāvyānuśāsana : Acharya Hemchandra, Vol. II, Part I, By Rasiklal C. Parikh, Shree Mahavir Jain Vidyalaya, Bombay, A.D. 1948
10. Sanatkumāracaritam–Herman Jacobi–Munchen, 1921
11. Somnath, The Shrine-The Eternal-K. M. Munshi : Somnath Board of Trustees, A. D. 1951
12. Studies in the Historical and Cultural Geogaraphy and Ethnography of Gujarat : Hasmukh D. Sankalia, Deccan College, Poona, A. D. 1949
13. Study of Sixteenth Century Gujarati, Dr. T. N. Dave, Royal Asiatic Society, London
14. Travels in Western India'. Lieutenent Coronel James Tod : W. H. Allen & Co., London, 1839

गुजराती-हींदी

१. अनुशीलन : श्री. केशवराम का. शास्त्री. जीवनसाहित्य मंदिर : वडोदरा, १९४८
२. अर्बुद-प्राचीन-जैन-लेख-संदोह (आबु-भाग बीजो) : संग्राहक-संपादक मुनिश्री जयंतविजयजी; श्री विजयधर्मसूरि ग्रंथमाला : उज्जन, वि सं. १९९४
३ इतिहासनी केडी : श्री. भोगीलाल ज. सांडेसरा, पद्मप्रकाशन लिमिटेड, मुंबई-१, ई. स. १९४५
४. उपदेशसप्तिका याने देवगुरु अने धर्मतत्त्वनुं स्वरुप : पंडित सोमधर्मगणि (सं. १५०३). संस्कृतमांथी गुजराती अनुवाद : प्रकाशक श्री जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, सं. १९७७
५. आनंदकाव्यमहोदधि-मौक्तिक ३ अने ७ : सं. जीवणचंद साकळचंद झवेरी, मुंबई ई. स. १९१४ अने १९२६
६. आबू : प्रथम भाग : श्रीमद् जयन्तविजयजी महाराज, प्रकाशक शेठ कल्याणजी परमानंदजी, देलवाडा (आबु), ई स. १९३३
७. ऐतिहासिक राससंग्रह भा. १, २ ३ : संशोधक श्रीविजयधर्मसूरि, प्रकाशक श्री यशोविजयजी जैन ग्रंथमाला, भावनगर, सं १९८८
८. कान्हडदेप्रबंध : संशोधनकर्ता अने प्रकाशक श्री. डाह्याभाई पीताम्बरदास देरासरी, आवृत्ति त्रीजी. ई स १९२६
९. कान्हडदेप्रबंध खंड १, २ [पद्मनाभ-विरचित]-प्रा. कान्तिलाल बळदेवराम व्यास : त्रिपाठी (प्राइवेट) लि, मुंबई, सं. २०१५
१०. कविचरित भा. १, २, श्री. केशवराम काशीराम शास्त्री, गुजरात विद्यासभा, अमदावाद, ई. स. १९५२
११ कीर्तिकौमुदी-श्रीसोमेश्वरदेव (सं १२८२)-भाषांतर आचार्य वल्लभजी हरिदत्त, गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी, अमदावाद, सन १९०८
१२. कुमारपालरास-ऋषभदास (सं १६७०) : आनंदकाव्यमहोदधि मौक्तिक ८, श्री जीवणचद साकळचंद झवेरी, ई. स. १९२७
१३. खंभातनो इतिहास : श्री रत्नमणिराव भीमराव श्री गुजरात साहित्य सभा, अमदावाद. ई स. १९३५
१४. गुजरातना ज्योतिर्धरो : श्री कनैयालाल माणेकलाल मुनशी

१५. गुजरातना तीर्थस्थानो : श्री दुर्गाशंकर केवळराम शास्त्री एम. सी. कोठारी, वडोदरा, ई स १९२८
१६. गुजरातनी राजधानीओ (मुस्लिमयुग पूर्वे) श्री रसिकलाल छोटालाल परीख, गूर्जर ग्रथरत्न कार्यालय, अमदावाद, ई स १९६८
१७. गुजरातनुं पाटनगर : अमदावाद श्री रत्नमणिराव भीमराव श्री गुजरात साहित्य सभा, अमदावाद
१८ गुजरातनो इतिहास : भा १, प्रो. मौलाना सैयद अबु झफर नदवी, गुजरात विद्यासभा, अमदावाद
१९ गुजरातनो मध्यकालीन राजपूत इतिहास भाग १, २ सस्करण बीजुं : श्री दुर्गाशंकर केवळराम शास्त्री, गुजरात विद्यासभा, अमदावाद, ई. स १९५३
२०. गुजराती भाषा अने साहित्य पुस्तक १ २ : श्री नरसिंहराम भोळानाथ दिवेटिया सक्षेप श्री फार्बस गुजराती सभा, मुबई ई. स १९५८
२१. गुजराती साहित्यना मार्गसूचक स्तभ : श्री. व कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी, गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी, अमदावाद, ई स १९२३
२२. गुजराती साहित्यना स्वरूपो (मध्यकालीन तथा वर्तमान) पद्य विभाग : प्रो. म र मजमूदार आचार्य बुक डीपो वडोदरा ई. स. १९५४
२३. गुजराती साहित्यनु रेखादर्शन, खड १ · श्री केशवराम काशीराम शास्त्री, अमदावाद : ई स. १९५१
२४ गुजराती साहित्य-मध्यकालीन प्रोफेसर अनतराय म रावळ, मेकमिलन अॅन्ड कु. मुबई, ई स. १९५४
२५. चतुर्विंशतिप्रबन्ध (मलधारी राजशेखरसूरि कृत) नो गुजराती अनुवाद : प्रोफे. हीरालाल रसिकदास कापडिया फार्बस गुजराती सभा, मुबई, ई स. १९३४
२६. जैन गूर्जर कविओ भा १, २, भा ३. खड १, २ : संग्राहक अने प्रयोजक श्री मोहनलाल दलीचद देसाई श्री जैन श्वेतांबर कॉन्फरन्स ओफिस मुंबई, ई. स १९२६, १९३१ अने १९४४
२७ जैन साहित्यनो सक्षिप्त इतिहास · लेखक, प्रकाशक श्री मोहनलाल दलीचद देसाई, मुबई, ई. स १९३३
२८. द्व्याश्रय गुजराती भाषांतर) : श्री. मणिलाल नभुभाई, वडोदरा १८९३
२९ पश्चिमी राजस्थानी · डो तेस्सितोरीना ग्रथनो अनुवाद–अनुवादक

प्रोफे॰ केशवराम काशीराम शास्त्री, गुजरात युनिवर्सिटी, अमदावाद, १९६३
३० प्रबंधचिंतामणिनु गुजराती भाषांतर : भाषांतरकर्ता श्री दुर्गाशंकर केवळराम शास्त्री, प्रकाशक श्री फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, ई स. १९३४
३१. पदरमा शतकनां प्राचीन गुर्जर काव्य : संपादक श्री केशव हर्षद ध्रुव, गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी, अमदावाद, ई स १९२७
३२. प्राचीन तीर्थमालासंग्रह भा. १, श्रीविजयसूरि, १९२२
३३. बृहत् पिंगल · श्री रामनारायण विश्वनाथ पाठक, गुजराती साहित्य परिषद, मुंबई, ई. स १९५५
३४. रजपूताने का इतिहास [The History of Rajputana Vol. I. Second Edition] श्री गौरीशंकर हीराचंद ओझा, ई. स. १९३७
३५. रामलाल चुनीलाल मोदी-लेखसंग्रह, ई. स. १९५३
३६ वर्णकसमुच्चय भा. १, २ : संपादक डॉ भोगीलाल ज. सांडेसरा, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, ई स १९५६
३७. वस्तुपालनु विद्यामंडळ अने बीजा लेखो : अध्यापक श्री भोगीलाल ज सांडेसरा, जैन ऑफिस, भावनगर
३८ विमलप्रबन्ध स श्री मणिलाल बकोरभाई व्यास
३९ विमलप्रबंध अने विमलशाह,' श्री मणिलाल छबाराम भट्ट, 'बुद्धिप्रकाश' पुस्तक ७६, अंक १, जान्युआरी, ई स १९२९
४० विमलचरित रूपविजयरचित (मुनि पद्मविजयजी शिष्य), सं १९००
४१. सज्झायमाला प्रकाशक शा भीमजी माणेक मुंबई
४२. सिरोहीका इतिहास : गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, स १९६८
४३ सिद्धांत चोपई' जैनयुग पुस्तक ५ अंक ९, १०, स १९८६
४४ सोमनाथ श्री रत्नमणिराव भीमराव, गुजरात साहित्य सभा, अमदावाद, ई स १९४९
४५ हंसाउलि ग्रंथ १ (असाइत नायक) संपादक प्र केशवराम काशीराम शास्त्री, गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी, अमदावाद ई स १९४५

आ सिवाय जैन साहित्य संशोधक, त्रैमासिक पुरातत्त्व, गुजरात मासिक फार्बस त्रैमासिक, जैनयुग मासिक, बुद्धिप्रकाश मासिक वगेरेनी फाईलो —

परिशिष्ट २ : शब्दसूची

परिशिष्ट ३ : वर्णक-सूचि

परिशिष्ट ४ : नेमिनाथचरितनो अंतभाग

[प्रो. डॉ. हर्मन याकोबीए संपादित 'सनत्कुमारचरित' (ई. स. १९२०) ना परिशिष्टमां अन्तभागमा 'नेमिनाथचरित'नो अन्तभाग पृ. १५२-१५५ मां छाप्यो छे ते विमल विशे प्रकाश पाडे छे तेथी अहीं आप्यो छे.]

एहु अणन्तरु हुयउ **जिणु पासु**। पासाउ वि **वीर-जिणु**।
इन्दभूइ अह तह **सुहम्मु** वि ॥
ता **जम्बूसामि,** अह पहवु, तयणु गुरु-गणु असंखु वि ॥
अह **कोडिय-गणि चन्दकुलि** विउल-**वइरसाहाए**।
अइगच्छन्तिहि अणुकमिण बहु-गणहर-मालाए ॥ १ ॥

हुयउ समहर-हार-कुन्दुज्जल-जस-पसर-भरिय-भुवणु **वडगच्छ** मण्डणु।
जिणचन्द मुणिन्दु धर-वलय-भविय-जणहियय-रंजणु।
तसु पुणु पट्टह जस-कलसु आसि जगुत्तिमु सीसु।
अवितहरत्थ-नामिण पयडु **सिरि-सिरिचन्द**-मुणीसु ॥ २ ॥

एहु पयडवि(?) हुयउ **हरिभद्द-सूरि** त्ति विनेय-लवु।
असम-विविह-गुण-रयण-भूरिहि ॥
सारय-ससि-विमल-जस-भरिय-धरह **सिरिचन्द-सूरिहि** ॥
तह **सिरिमाल**-पुरुब्भविउ। **पोरुयाड**-अभिहाणु ॥
चिट्ठइ वसु बसख-गुण-नर-माणिक्क-निहाणु ॥ ३ ॥

जोय-सठिउ नयरि **सिरिमालि**। लच्छीए पयडीहुविवि।
विहिय-असम-सव्वङ्ग-रिद्धिउ ॥
गंभूय-पुरीए गउ। वद्धमाण-सुहि-सयण-सुद्धिउ ॥
हत्थि-तुरङ्गम-घट्ट-सय-भय-किरियाण य धामु ॥
तम्मि वसि सुपसिद्ध हुउ। **ठक्कुरु निन्नय**-नामु ॥ ४ ॥

अवर-अवसरि जणय-बुद्धीए। **वणराय**-नराहिविण।
नीउ सन्तु **अणहिल्लपाडइ** ॥
विज्जाहर-गच्छि कय-उसह-भवण-सय-छलिँ भरांडइ ॥
नियय-किति-कामिणि दिसिहिँ। नीसेसिहिँ वि ललन्त ॥
अइँ तज्ज वि कोरण कस-वि। ताम नियत पसरन्त ॥ ५ ॥

तयणु सारय-समय-रयणियर- किरणावलि-निम्मलिहिँ ।
गुणिहिँ पत्त-असरिस-मडप्फरु ॥
हुउ निन्नय-अन्नरहु । लहर-नामु दण्डवइ मणहरु ॥
तेण य विन्झ-गिरिहिँ गइण । गहिय अणेग करिन्द ॥
निज्जिय पुणु करि-हरण-मण । बहुविह समरि नरिन्द ॥ ६ ॥

घणुहि वि पहिय जीए अवयारि । लीलाइ वि रिउ जिणिय,
अज्जु वि देवि सा विन्झवासिणि ॥
तिण कारिय सण्डथल-गामि अच्छि-दुरिओह-नासिणि ॥
किं तु लहर-नामिण स तहिँ । घणुहावि त्ति पसिद्ध ॥
हूय सयल-धरणियल-कय-पूय-विसेस-समिद्ध ॥ ७ ॥

तत्थ-पत्तिण हत्थि-दंसणिण । वणराय-नराहिविण ।
सुप्पसन्न-चित्तेण लहरह ॥
तं चेव य सण्डथल- गामु दिन्नु कज्जेण यइयह ॥
तसु पुणु लच्छि-सरस्सइहिँ । देविहिँ विहिय-पसाउ ॥
महियल-विलसिर-जस-पसरु । असम-गुणिहिँ विक्खाउ ॥ ८ ॥

टङ्कसालहँ सिरि-वरुवलद्धु । जिण ठवियउ चित्त-पडु ।
लच्छि निमिय मुद्दासु जेण य ॥
जसु सच्चिण वहइ इह । मूलराय-मज्झाय......... ॥
मूलराय-चामुण्डनिव- वल्लहरायहँ कालि ।
दुल्लहरायह चुलुग कुल-तिलयहँ रज्जि विसालि ॥ ९ ॥

दसहँ एगहँ सचिव-पय-भार- उद्धरणि सुधुर-वलु ॥
वीर-नामु हुउ सचिव-पुङ्गवु ॥
अन्तम्मि य सुगुरु-पय- मूलि चरणु सेविवि अणासवु ॥
जणिवि पुत्तु सव्वायरिण । निय-जीविय-फलु लेइ ॥
सर-वसु-दिसि-वरिसम्मि जसु- सेसत्तणु पावेइ ॥ १० ॥

तसु वि नन्दणु विउसु सुकुलीणु । सुरसत्थउ खन्ति-परु ।
सीलवन्तु सोहग्ग-सुन्दरु ॥
नेढु त्ति अमच्चु हुउ । जसु पसन्नु सिरि-भीम-नरवरु ॥
बीउ वि दण्डाहिवइ-पय-पाविय-असम-पइट्ठु ॥
विमलु नामु नन्दणु हुयउ । असरिस-गुणिहिँ गरिट्ठु ॥ ११ ॥

अवर-अवसरि भीम-नरराय- वयणेण विवखिल-जय-.
हेउ विमलु चउरङ्ग-सेणिण ॥
सिरि-चड्डावलि-वर- विसइ पत्तु निय-सत्ति-जोगिण ॥
अह संगहिय-विवखिल-सिरि । कय-निय-पहु-आएसु ॥
तत्थ वसन्तु सु सच्चवइ अब्बुउ सिहरि-विसेसु ॥ १२ ॥

तयणु पसरिय-गरुय-उच्छाहु । सिरि-अम्बाए वि वर-
वंसिण दिट्ठ-असरिस-वसुन्धरु ॥
तक्कालु वि लद्ध-सिरि- भीम-नेढ-आएस-सुन्दरु ॥
अब्बुय-गिरिरायह सिहरि । निम्मल फालिह-वन्नु ॥
उसह-जिणेसर-चेइहरु । कारावेइ रवण्णु ॥ १३ ॥

तयणु हरि-करि-रयण-संगयह । सवङ्गिय-लक्खणहँ ।
नीलउ सण्ड-नामिण य तियसिण ॥
निच्चं पि हु विरिय-बहु- संणिहाणु गुरु-भत्ति-तरसिण ॥
नच्चाविय-निय-कित्ति-बहु । भुवण-रङ्ग-मज्झम्मि ॥
उवजुञ्जिय-मणि-कणय-धणु । सयण-सुयण-कज्जम्मि ॥ १४ ॥

हुयउ नेढह तणउ धवलु त्ति । सिरि-भीमपय-अणुरुह-
कन्नपय-निवइहि महामइ ॥
तसु वि जयसिंह-निव- रज्ज-समइ........ ॥
धणुदाविहिँ य विइस-वरु । कय-रेवन्त-पसाउ ॥

अणन्दु त्ति जहत्य-अभिहाणु सचिवु संजाउ ॥ १५ ॥
चन्द-निम्मल-सील-कय-सोह । निक्कारणु कारुणिय ।
सगुणवन्त-पणमन्त-वच्छल ॥
पउमावइ नामु तसु हूय दइय सद्धम्म-पच्चल ॥
अह सिद्धादिव-कुमरनिय- पुन्नय-भरिण भमन्त
न अवलोइवि सयले घर । अमुद्दिय-जण-संजुत्त ॥ १६ ॥
विहिण करुणा-रसिण सित्तेण । सिद्धाहिव-कुमरनिय-
रज्ज-कालि नय-मग्ग-निट्ठिउ ॥
वयगरण-रितरिगरण- भार-धवलु धम्मि-सम-दिट्ठिउ ॥
सचिवाहिवइ विनिम्मविउ । सिरि-अणन्दह पुत्तु ॥
सरसइ-वर-उवलद्ध-सिरि । पुहइपालु निरुत्तु ॥ १७ ॥

तेण **अब्बुय-**गिरिहिँ सिरि-**विमल**- निम्माविय-जिणभवणि ।
अगम-रूव-मण्डवु कराविवि ॥
तसु मज्झि करेणु-गय । सत्त मुत्ति पुव्वयहँ ठाविवि ॥
निय-जणहय पुणु सेय-कइ । **जालिहरइ** गच्छंमि ॥
जणणीए वि **पल्लासरइ** । **पास**-जिणिन्द-गिहंमि ॥ १८ ॥

माय-मायह **सीलि**-नामाए । पुणु **चड्डावलियह** ।
वीरनाह-जिणहरह पट्टणि ॥
इहि मण्डव काराविय । असम-रूव **अणहिल-पट्टणि** ॥
तह **रोहाइय- वारहइ** । **सावणवाडइ** गामि ॥
स-जणणि-जणयहँ वोल्हयहँ । सेय-कज्जि अभिरामि ॥ १९ ॥

तिजय-तिलयह **सन्तिनाहस्सु** । काराविउ जिणभवणु ।
सयल-नीइ-सत्थअत्थ-निविण ॥
नर-नारि-तुरङ्ग-करि- रयण-विमय-लक्खण-विसिट्ठिण ॥
तयणु लिहाविवि पुट्ठयहँ । सइहिँ सयल सिद्धन्त ॥
आराहिवि तित्थाहिवहँ । वयण जणिय-जम्मन्त ॥ २० ॥

समण-सङ्घु वि विविह-वत्थुहिँ । पडिलाहिवि अप्पु कय-
किच्च करिवि सद्धम्म-कम्मिण ॥
निय-जणणि-जणयहँ वि । धम्मियाहँ जिणनाह-भत्तिण ॥
पुहइप्पाल-महामइहि । अब्भत्थणह वसेण ॥
इहु **हरिभद्द**-मुणीसरिण । चरिउ रइउ लेसेण ॥ २१ ॥

मह न तारिसु वयण-विन्नाणु । न य मन्त-तन्त-प्फुरणु ।
जइ वि तह वि पहु-भत्ति-जोगिण ॥
इहु **नेमि-जिणेसरह** । चरिउ रइउ मईं गुरु-पसाइण ॥
इय इहु भुवण-सुहावणुँ । सुयण हु । सुणहु चरित्तु ॥
अइव सयं वि हु लेन्ति तुह । चिन्तामणि सुपवित्तु ॥ २२ ॥

कुमरवालह निवह रज्जंमि । **अणहिलवाडइ** नयरि ।
अतणु-सुयण-हुदयणहँ संगमि ॥
सोलुत्तर-वार-सय- कत्तियंमि तेरसि-समागमि ॥
अस्सिणि-रिक्खि रवि सोम-दिणि । सुप्पवित्ति लग्गंमि ॥
एहु समत्थिउ कह वि निय- परियण-साहज्जंमि ॥ २३ ॥

पच्चक्खर-गणणाए सिलोग-माणेण इह पबन्धम्मि ।
अट्ठेव य साहस्सा वत्तीस सिलोगया होन्ति ॥ २४ ॥

जं किंचि मए अणुचिय उवइट्ठ तुच्छ-मइ-विसेसाओ ।
त पसिउ मह सुयणा सोहन्तु सक-प्पसाय त्ति ॥ २५ ॥

यस्याङ्घ्रि-द्वय-नखमणिमयूख-सङ्क्रान्त-सुरपतिश्रेणी ।
निजलघुतामिव पुष्यति. . जयत्वसौ नेमि' ॥ २६ ॥

यावच्चन्द्रो आवद्दिवाकरो यावदमरगिरिरत्र ।
राजति तावज्जीयात् श्रीनेमिजिनेन्द्रचरितमदः ॥ २७ ॥

उपलक्षणशास्त्रसञ्चयनिधीन् सद्धर्ममुद्रावधीन्
सिद्धान्तैकसहस्रपत्रतरणीन् सद्वादिचूडामणीन् ।
सूक्त-चैत्रतरून् मनोभवमधूवैधव्यदीक्षागुरून्
साहित्यामृतसागरान् मुनिवरान् श्रीचन्द्रसूरीन् स्तुवे ॥ २८ ॥

इति श्री-श्रीचन्द्रसूरिक्रमकमलमराल-श्रीहरिभद्रसूरिविरचितं नव-भवोपनिबद्ध श्रीनेमिनाथचरितं समाप्तमिति ॥

सारांश

श्रीचंद्रसूरिना शिष्य हरिभद्रसूरि थया. एमनाथी श्रीमालनगरमां थयेलो **पोरवाड** नामनो वंश हतो. ३

ए पोरवाड वंशमां लक्ष्मीथी समृद्ध ठक्कर **निन्नय** नामनो पुरुष **गंभूय-पुरी**मां जई रह्यो. ४

एक बीजे प्रसंगे पितृबुद्धिथी **वनराजे अणहिलवाड**मां एने लई मगाव्यो. एणे विद्याधरगच्छमां ऋषभदेवजीनुं भवन बनाव्युं. ५

एना पछी निन्नयनो पुत्र **लहर** नामनो दंडपति थयो. ए विंध्यगिरिमां गयो अने त्यांथी अनेक हाथीओ लाव्यो; त्यां अनेक राजाओ उपर एणे विजय मेळव्यो. ६

एणे **संडथल** गाममां विंध्यवासिनी देवीनी स्थापना करी, जे देवी **लहर-घणुदाचि** नामे प्रसिद्ध छे ७

हाथीओनां दर्शनथी प्रसन्न थयेला **वनराजे लहरने संडथल** गाम बक्षिस आप्युं. ८

एने लक्ष्मी अने सरस्वतीनी जेना उपर कृपा थई छे तेवो, टकसाळमां लक्ष्मीनी मुद्रा पाडी तेवो, मूलराज चामुंड वल्लभ राजना समयमां भार उठाव्यो तेवो, चौलुक्यकुलतिलक दुर्लभराजना विशालराज्यमां जेणे अगियार सचिवोनो भार उठावी लीधो तेवो **वीर** नामनो सचिववर्य थयो, सद्गुरुना चरणना मूलमां दीक्षा लई सं. १०८५ मां जे मृत्यु पाम्यो ९ १०

एनो पुत्र **नेढ** नामे अमात्य थयो, जेना उपर **भीम** राजानी कृपा हती. बीजो दंडाधिप-पद पामेलो, असामान्य गुणोवाळो **विमल** नामे पुत्र थयो. ११

एक बीजे समये **भीमना** वचनथी शत्रुने जीतवा माटे चतुरंगी सेना लईने गयेलो **विमल** चंद्रावतीना प्रदेशने पाम्यो. शत्रुनां मस्तक कबजे करी अने एम पोताना स्वामीनो हुकम सिद्ध करी त्यां वसतो ए **अर्बुद** नामना पर्वतने साचवी रह्यो छे. १२

एना पछी अंबादेवीना वरदानथी जेने लक्ष्मी मळी छे तेवो ए **भीम** अने **नेढना** हुकमथी **अर्बुद गिरिराजना** शिखर उपर ऋषभदेवजीनुं चैत्यघर करावे छे. १३

एने **संड** नामना देवनु सनिधान हतुं. एने लई एने घणी कीर्ति प्राप्त थई हती १४

नेढने **धवल** नामनो पुत्र थयो, जे **भीमदेवना** पुत्र **कर्णदेवनो** सचिव हतो जेने **जयसिंहना** राज्यसमयमा धणुहाविदेवी अने गिरनारनी कृपाथी **आणन्द** नामनो सचिव थयो १५

एने **पद्मावती** नामनी सद्धर्मशाळी पत्नी हती. एणे सिद्धाधिप अने कुमारपालना सुकृतना बळे पृथ्वीनी यात्रा करी हती १६

ए अणंदने सरस्वती पासेथी वरदान मळ्यु छे तेवो **पृथ्वीपाल** नामनो पुत्र थयो. १७

एणे अर्बुदगिरि उपर आवेला विमले बनावेला जिनभवनमा असामान्य सुदर मडप कराव्यो. ए मडपमा एणे पूर्वजोनी सात मूर्तिओ हाथिणीओ उपर बेठेली करावी आलिहरगच्छमा एनी माताए **पंचासरमां पार्श्वजिनेंद्र**-ना मदिरमां पोताना पितानी मूर्ति करावी. १८

मातानी माता **सीलिनी** मूर्ति **चंद्रावतीमांना वीरनाथना** मदिरना आंगणामां करावी- वळी अणहिल्पाटणमा मडप कराव्यो. **रोहाइय, वारहइ** अने **सावणवाडामां** पण माता पिताना श्रेयने माटे **शांतिनाथनुं** मदिर बनावडाव्यु. १९-२०

एवा **पृथ्वीपालनी** अभ्यर्थनाथी **हरिभद्रसूरिए** आ चरित्रनी रचना करी. २१

मारामा वचन अने विज्ञान एवां नथी के नथी मत्र तत्रनु स्फुरण, छता प्रभुभक्तिना योगे नेमिजिनेश्वरनु चरित गुरुकृपाथी रच्यु छे २२

कुमारपाल राजना राज्यमां अणहिल्लवाड नगरमा अनेक सुजन अने बुध जनना संगमां रही सं बारसे सोल (१२१६) ना वर्षमा कार्तिक (सुदि) तेरस, अश्विनी नक्षत्र अने सोमवारे सुपवित्र लग्नमां पोताना परिजनोना साहाय्यमा कोई रीते आ चरित्र समर्पित कर्युं २३ ...वगेरे.

खंड १

[वस्तु]

आदि जिणवर आदि जिणवर-पय प्रणमेवि ।
अंबाई धुरि अर्बुदा, सकल देवि श्रीमात ध्याउं ।
पुमावइ चक्केसरी, वागवाणि-गुण रंगि गाउं ।
सहिगुरु-आयस सिरि धरी, आलस अलग करयोस ।
कहइ कवीयण हुं विमलमति, विमलप्रबंध रच्योस ॥१॥

चउपई

सरसति वरसति वाणीसार, कहइ कवीयण मझु तसु आधार।
सरसति विण जे बोल्या बोल, ते प्रमाणि नवि चडइ निटोल ॥२॥

नवइ खंड जोज्यो निरमला, विमलकीर्तिगुण गंगाजला ।
नीनग लहर वीर विख्यात, गाइसु विमलमंत्री अवदात ॥३॥

ब्रह्मानी बेटी सरसती, गौरवर्ण चालइ गजगती ।
कमल कमंडल वीणा साथि, पुस्तक परठिउं जिमणइ हाथि ॥४॥

---

१. a जणवर...जणवर क ...जिनवर म. b प्रथम क म प्रणम्योसि क, प्रणम्योसु म. c पुमावि क, पुमावय म. f वाग्वाणि म. मनि रंगि गाऊं क. g आयश क. सरि धरी क, शरि धरी म. h करेशि म. i कहि कवीअण हूं क; कवियण म. j रच्योस क, रचेशि म.

चुपई क, चुपै म.

२. a वांणीसार अ, वांणिसार म. b कहि कवीअण मझ तस...क; कविअण म. c विण ये म d ते प्रमाणि नव चडि क.

३. a नवि पंड जोग्या नर्मलां क, नवइ पड जोयो निर्मलां म. b गंगाजलां क म. c लहिर क म. विख्यात क. d गाय क, गायशि म. ०मंत्रि क म.

क म 'दूपद' उमेरे छे.

४. a ब्रम्हानी क. सरसति म. b गजगति म. d दक्षणि हाथि क, दक्षण...म.

उरि मोटउ मुक्ताफल-हार, पाये नेउर रणझणकार ।
काने कुंडल वेणीदंड, लीला मोहिउ जिणइ ब्रह्मांड ॥५॥

रतन-जडत रूडी राखडी, लोचन जस्यां कमल-पांखडी ।
निर्मल नाशा तिलनूं फूल, दंत तणउं कुण करसि मूल ॥६॥

राता अधुर ते विद्रुम रोल, जाणे जीह अमीतु घोल ।
चंदलडइ जीतु मयंक, कटि क्षीणउ लाखीणउ लंक ॥७॥

उन्नत पीण पयोहर कुंभ, सदली साथल कदली-थंभ ।
काली चोली सवि शणगार, जाणे बीज तणउ झवकार ॥८॥

वाहनि हंस विश्वविख्यात, ते सरसति त्रिभुवननी मात ।
विण सरसति नवि कहीइ जाण, सरसति विण नही वेद पुराण ॥९॥

विनय विवेक वडा आचार, लक्षण लगन लोक-विवहार ।
माई अंक न पकू कला, सरसति विण थाइ आकुला ॥१०॥

आगइ सिद्ध अनंता थया, सरसति-बलि ते सिद्धि गया ।
सरसति विण नवि लाधां ज्ञान, विण सरसति नवि कहनइ मान ॥११॥

---

५. a मोटु मुगताफल क. b पाए क म. रणझिणकार म. c काने क. वेणिडड क म. d लीला क म मोहिउ म. जेणि क, येणइ म. ब्रम्हाड क, ब्रह्मंड म.

६. a रतनजडी क म. b जिस्या क, यशां म. –पांपडी क म. c न्यारशा क, नाशा म. तिलनु क. d तणु क कुण क. करशि म.

७. a अधर...म; अधूर विद्रुमतु रोल क.– जांणे अ क म. c चदलडि क म, जीतुअ क, जितलउ म. d कटि क म. क्षीणु क. लाषीणु क.

८. a पीन क म. पयोधर म. b साथलि क. c छवि क. शिणगार क. d जाणे म. तणु क.

९. a वाहनि हस म. b म मां 'ते' नथी. त्रिभोवननी क म. c जाण म. कहाइ म. d वण...क; विण...नवि...पुराण म.

१०. b लग्न क म. d आकला म.

११. a सधि क. b सरसति वण नवि सुगति गया क, सरसति विण नवि सिद्धिइ गया म. c नवि लाधु ज्ञान क; म पाठांतर 'नाण' पण आपे छे. d कहइनि मान क, कहिनि मान म.

सरसति मुक्ति तणउं छइ बीज, कूडउं हुइ तु आपुं धीज ।
छप दरशण पाखंड छन्नुवइ, ते सघलां सरसतिनइ कवइ ॥१२॥

जेहने वयणे सरसति-वास, ते खाइ गिरूआना ग्रास ।
जेहनइ सरसति सुपनि मली, ते मूरखथी जाइ टली ॥१३॥

सरसति मानइ मोटा राय, सरसति विण नाणउं न कहाइ ।
मांहि लक्ष्मी हुइ खरी, तुहइ सरसति जो सिरि धरी ॥१४॥

भरह-भेद पिंगलनी वाणि, तर्क छंद जोतिषनी खाणि ।
धर्म कर्म बोल्यां संसारि, ते सवि सरसतिनइ आधारि ॥१५॥

तुं भारति तुंह जि भगवती, तुं पद्मा तुं पद्मावती ।
तुं योगिणी तुं ज्वालामुखी, ताहरइ तेजइ त्रिभोवन सुखी ॥१६॥

दूहा

सायर-जल लवथी अधिक ते ताहरु भंडार ।
तूठी कवीयण कोडिनइं, केणइ न लहइ पार ॥१७॥

सवि कहइ नव नव वयण रस, तिइं आप्यां आभरण ।
कविजन वइठा केलवइ, तेह जि तेता वर्ण ॥१८॥

---

१२. a तणु क. मुगति म. b कूइ म. आपूं म. c छ म. दरशन क. छन्नवइ क, छिनवइ म. d सघला क. सरसतिनि क.

१३. a येहने म. नेवास क. b गहुआना क c जेहनि क म. सपनित्रि क, स्तपनि म. न मिली ! म d मूरप थ्या म जाई क.

१४. a मोनई म. b नाणूं म. किहाइ म c जु माहालिषिमी म d तुहि म. जउ सरि क, जोइ शरि म.

१५. a वाणि क b तर्क क, तर्क म. ग्योतिपनी क, ज्योतिप म. वखांणि म. c धर्म क म. बोल्या क, बोला म. d सरसतिनि क म. आधार क.

१६. a तूह जि म. b तूं म. पुमा क; पदमा तूं म. c ग्योगनि क. ज्वालामुखी क म. d ताहारि क, ताहारिइ म. तेजि क, तेजिइ म. सहूइ सपी क.

१७. a तेहिथी क. c तुठी म. कविजन क, कवीअण म. कोडिनि क म. d कणि क, किणइ म. लिहु क.

१८. a कहि क म. b ति क. आस्यां क. आभर्ण क म. c बइठा क, बिठा म. केलवइं क. d तेह ज क. वर्ण क म.

ताहरी परि तुंह जि लहइ, तुझ चलणे मुं वास ।
मुनि लावण्यसमइ भणइ, पूरे मनची आस ॥१९॥
कर जोडी पतुं कहुं, अहिनिसि नामी कंध ।
रखे मात अधवचि रहइ विमलरास प्रबंध ॥२०॥
अलीय न जंपुं आसनउं, अनइं माया न करूं माय ।
कांई जे अक्षर कवुं, ते सवि तुझ पसाय ॥२१॥
अणजाणतु अनेक परि, जं जं बोलइ बाल ।
माता मुखि हुलावती, ते तं करइ रसाल ॥२२॥
कहइ सरसति वलतुं वयण, भगत म आणिसि भ्रंति ।
विमलमंत्री-गुण गाइतां, हुं आवेसि पकंति ॥२३॥
अंगि जि तोरइ अवतरी, बोलीसु वयण-विलास ।
नव नव वाणी वयण रसु, पूरिसु तारी आस ॥२४॥
कवण विमल ते किहां हुउ, बोलिसु तसु उतपत्ति ।
धर्म्मकाज कीधां किस्यां, चतुर सुणु एकचित्त ॥२५॥

---

१९. a ताहारी म. तूंह ज क, तूंह जि म. लहि क, लई म. b तुझ अ, मुझ क, मझ म. d मनकी क.

२०. a एतू कहू क, तूंह जि कहूं म. b अहनिस क, अहनिशि म. करवी सार क म. अ मां 'करवी सार' उपर सुधारी 'नांमी कंध' मूकेल छे. c अधविचि म. रहि क. d विमलरास विस्तार क म.

२१. a जंपू म. आसनुं क, आंमतू म b अनइ क म c काईं क कांइं म. ये म. अप्यर क. कवू म. d तुज्झ पसाइ म.

२२. a अणजांणतु म. b बाल म. c मुप्य क, मुपिइं म. हूलावती क म. d करि क. रशाल क.

२३. a करि क म. वलतूं क म. b भगति क. आणसि क, आणेसि म. b गायतां क, गाअतां म. d हू क म. आविसि क, आविशि म.

२४. a अंग जि क. तोरइं क. b बोलस क, बोलेशि म. रसाल अ, विशाल क. c वाणि म. रस क, रसि म. d पूरसि क, पूरिसि म. ताहरी क, ताहारी म.

२५. a कविण क. हुउ म. b बोल्इं क म. तस क म. उत्पति क. c धर्मकाज क म. किशां म. d सुणउ म. एकचति क, एकचिति म.

चिहुसइ जोयण आपणे, जोअण एक प्रमाण ।
जोअण लाख जि देयकां, जंबूदीव वखाण ॥२६॥

चुउपई

भरतखंड बाहरि जयवंत, सोविनमय पर्वत हिमवंत ।
एक सहस्स बावन जोयणे, बार कला पहुलपणि गणे ॥२७॥

सत जोयण उंचउ ते होइ, तस ऊपरि पद्मद्रह जोइ ।
निर्मल जल खीरोदक जसिउ, दश जोयण ते ऊंड इसिउ ॥२८॥

पंचसयां पहुलुं मंडाण, जोयण सहस ते तलप्रमाण ।
तेहनुं वारि न विणसइ किमइ, तल पांसइ पेखु वज्रमइ ॥२९॥

तीणइ पद्मद्रहि लक्ष्मी तणइ, कनक-कमल छइ कविजिन भणइ ।
वास तणउ छइ सयल विवेक, लांबुं पहुलुं जोयण एक ॥३०॥

जलमांहि दश जोयण रहिउं, दोइ कोस जल ऊपरि कहिउं ।
परिघ जोयण त्रिणि झाझी लही, नीरजमूल वज्रमइ सही ॥३१॥

---

२६ a चहूसि क, चिहुसइ म. जोअण क म. c लाप ज क. d जम्बूद्वीप क. प्रमांण अ, वषाणि क, वषाण म.

चुपई म

२७. b सोवनमई क, सोवनमय म. हैमवंत क म. c सहस क, सहस म. जोअणे क म d पुहलपणि क, पुहलप्पणि म.

२८. a शत क म. योजन क, जोअण म. ते उचुं क, ऊचु ते म. b म. पद्मद्रह क म. होइ म. c नर्मल क. नीर षीरोदक क; षीरोदक म. जसिउ क, यश्रू म. d दस क म. जोअण क म. ऊडु क, ऊचू म. असिउ क. इश्रू म.

२९. a पचसया क. पहूलं क, पुहुल्ड म. मडाण म. b जोअण क म. 'ते' क म मा नथी. लव प्रमाण क; ...परमाण म. c तेहनू म. वणसि किमि क. d तलि म. पापल क, पापलि म. पेषउ म.

३०. a तेणि क म. पदमद्रहि क म. लिषिमी म. तणि क. b छि क म. कविजन क, कविअण म. भणि क. c तणु क. तिहा शयल विवेक क. d लांबू म. पहुल्ड म. जोअण क.

३१. a जलमाहि क, ...मांहिइ म. दस क म. जोअण क म. b दोइ म. कोश क. कहिउ म. c परघि क, परिधि म. जोअण क म. त्रणि क. सही म. d नीर तलउ क; नीरज मूल वज्रमिइ सही म.

रिष्टरत्नमइ कांडु घडिउ, नालरत्न वैडूर्ये जडिउ ।
बाहरि भ्यंतर वर्णविचित्र, कनकरत्नमइ बोल्यां पत्र ॥३२॥
रत्न सुवर्ण जसी र्वणिका, कोश रूप्य सोहइ कर्णिका ।
लांबुं पहुलुं बोली दोइ कोश, ऊंचपण[इ] एक ज बोल्योस ॥३३॥
सोइ सकेशरि वृत्ताकार, त्रिणि कोश झाझां विस्तार ।
कमल-कर्णिका वचि अभिराम, लखिमीवास भुयन ते ठाम् ॥३४॥
कोश लंब पुहुलप्पणि आध, ऊणउं कोश उच्च ते लाध ।
कमला-मंदिर वक्खाणीइ, त्रिण्य बार त्रिहु दिशि जाणी[इ] ॥३५॥
उत्तर दक्षण पूर्व भणउं, पंच शत ते ऊंचु घणुं ।
धनुष पंच ते पुहुलां बार, बोलिसु त्रिहु दिशि तणउ विचार ॥३६॥
भवनमध्य मणिमय कोटडी, तिणि शय्या श्रीदेवी चडी ।
दिनकरनी परि तेजइ तपइ, त्रिहु भवने चालइ नवि छपइ ॥३७॥

---

३२. a रिष्टरत क. घडउ क b नीलरत्न क c बाहरि भ्यतरि क म. वरण क विचत्र क. d कनकरत्नमि बोल्यं क.

३३. a रक्तिसूवर्ण क यशी म. कर्णिका अ. b रूप क म. सोहि क. c लव क म. पहुल क, पुहल म. कोश म. d उंचपणि क, उचपणइ म एक जि म. बोल्येश क.

३४. a सकेसरि क म. वृत्ताकारि क म. b कोस म. वस्तारि क, विस्तारि म. c विचि म अभिराम क म d लक्ष्मीवास क, लिखिमिवास म भवन क म ठांम अ क म

३५. a पहुलपणि क, पुहलप्पणि म आधा क b ऊणु क. ऊचु क c वषाणीइ क d त्रणि बार क, तिणि बार म. त्रिहू दसि क, त्रिहु दिशि (उपरांत 'तिदिशि' पाठांतर) म जाणीइ क, जाणीइ म.

३६. a पूरवि क, पूरव म. भणु क b पंच पच शत क म 'ते' नथी क म.—ऊचा क, ऊचउ म. घणउ म c धनुष अडीसि पहुल वार क; पुहलां बार. म. d बोलु क, बोलिशि म तिहू क तणु क.

३७. a भुवण मध्यि क, भवन मदि म मणिमि क. c तिहां क म. सव्या क. c परि तेजि क, तेजिइ म. d त्रिहू क, त्रिहु म. भुवने म. चालि क.

वडइ कमलि श्री रावइ रुली, कमल अठ्ठोत्तर पाखलि वली ।
वडां कमलनुं अर्ध प्रमाण, श्री-आभरण तणां अहिठाण ॥३८॥

बीजउं कमल-वलय सांभलउ, तेह तणउ छइ अति आमलु ।
लक्ष्मी देवि समाणी देवि, च्यारि सहस्स करइ नितु सेव ॥३९॥

तेहना कमलवासना जाणि, वाय कुणि उत्तर ईसानि ।
च्यारि सहस्र विशेष विचार, मुख्य कमलथी अर्ध उतारि ॥४०॥

च्यारि महत्तर पूर्व पासि, चिहु कमळे ते देव विमासि ।
आठ सहस्स सुर गुरुनइ ठामि, आठ सहस नीरज अभिराम ॥४१॥

अग्निकूणिनइ पासइं रहइ, श्रीनी पहिली पर्षद लहइ ।
बीजी परपद मित्र समान, दक्षण दिशि दश सहस प्रमाण ॥४२॥

जेहना देव कमल जेतला, बार सहस किंनर छइ भला ।
ते पुण बीजी पर्षद रहिया, निरती नैरति कूणइ लहिया ॥४३॥

---

३८ a वडि क, वडी म. b अठोतर क. c वडा अ क. कमल्नुं म. अर्द्ध म d आभर्ण क म. तणु क, तणउ म.

३९ a बीजु क, बीजू म. कमल वली क म. साभलु क सभलु म. b तणु क आमाछु क, तणउ अति छि आमलु म c लिपिमी म देव म. समाणा देव क म. d सहिस क, सहस म. नतु क. शेव म.

४०. a तेहनि क, तेहनइ म कमलवासिना क b वावि कूणि क, वायु कूणि म. ईशानि क. c च्यार क. सहश्र म, सहिस क, सहस म. विशेषि क. विचारि क d अर्द्ध म. उतारि क, उतार म.

४१. a महुत्तर क म. पूरव क म. पासि म. b चिहू क, चिहु म. देवि क. विमासि म. c सहिस क, सहस म. सुर क. गुरुनि क म. ठामि म. d नवी ज लीटी छे—लक्ष्मीदेवि वसि अभिरामि क,...अभिराम म.

४२. a अगनि कूणनि क,. अग्नि कूणिनइ म. पासि क पासइ म रही क. b श्रीनी क पुरषद पहिली क. लही क c समाणि क. d दक्षि क, दिशि म. दस क. प्रमाणि क.

४३. a जेता कमल देव तेतला क. जेता देव कमल तेतला म. b सिहिस क. किंनर क. छि म. c पणि क म. बीजी क म. पइषद क. रिह्या क. d निरति नैरति म. कूणि रह्या क, कूणिइ हुआ म.

गज घोटक पायक रथ तणां, महिप नाट्य-गंधर्व जि घणां ।
सात सैन्यना सातइ धणी, सात कमल ते पश्चिम भणी ॥४४॥

त्रीजइ विलय रहइ रखवाल, सोल सहस वर झाकझमाल ।
सोल सहस कमल-कुंडली, आगलइ त्रिण्य वलय छइ वली ॥४५॥

पहिलइ कमलि लाख बत्रीस, बीजइ कमलि लाख च्यालीस ।
त्रीजइ वलय लाख अठताल, रहइ सुर-सेवक झाकझमाल ॥४६॥

ए आगमनुं पहवुं मतुं, ए बोलिउं छइ सवि श्यास्वतुं ।
कहुं कमल-संख्या तेतलां, सावधान सुणिज्यो जेतलां ॥४७॥

एक कोडि वीस लाख वखाणि, ऊपरि सहस्स पंचास प्रमाण ।
एकसउ वीस अधिक वली जोइ, लाछि कमल सवि संख्या होइ ॥४८॥

इणि परि लखमी देवति तणी, कवि कहइ रद्धि अवर छइ घणी ।
एक वार कृतयुग अवतारि, संपत्ती सुरलोक मझारि ॥४९॥

---

४४. a घोडा क. रथ पायक तणा क; पायक तणा म. b म पाठांतरथी 'महिप' आपे छे. तणा क. घणा म. c सैन्यना क म. साति क. d पश्चम क म.

४५. a त्रीजि म. वलि क, वलइ म रहि क म. रखवाल क म. b सहिस-सुर क. c सहिस क. कमले म d आगलि क म. त्रणि क, त्रिणि म वलइ क म.

४६. a पहलि कमल क b बीजि क. वली क, पाठांतरथी 'वलय' म. c त्रीजि क. मलि क, वलइ म. d मंदिरमाल क; रहशिइ (पाठा० रहइ) सुर कि मंदिर माल म.

४७. a आगमनु म. एह ज म. मतू क, मत्त म. b बोलु क. छि म. शाचि क सास्वतू क, शाश्वत म c कहू क. सविध्यां जेतलां क. संख्या जेतलां म. d सुणियो अ, सुणयो- क म. तेतलां क म.

४८. a वखाणि क b ऊपरि क म. सहिस क, सहस म. प्रमाणि क, प्रमाणि म. c एकसु बीस क म. d लाछ क. कमलि क. संख्या म.

४९. a ए परि म लक्ष्मी क, लिछिमी म. मणी क, तणी म. b कही क, कहि म. अवरि रद्धि क, रिद्धि अवर म. छि म. c कृतयुग मझारि म. d संपति म.

इंद्रइं तव अर्धासन दिद्ध, मात मया अह्म ऊपरि किद्ध ।
कल्पवृक्ष-कुसुमची माल, लखिमी-कंठि ठवी स-रसाल ॥५०॥
आलिउं थीहुं जे कर तणउं, इंद्राणी गुण गावइ घणउं ।
अति सनमानी पाछीं वलइ, पडी माल दीठी तरु-तलइ ॥५१॥
विमल माल परिमल विस्तरइ, भमरमाला गुंजारव करइ ।
लखिमी जाणइ अति अभिराम, इहां कांइं छइ उत्तम ठाम ॥५२॥
माहरी माल न त्रूटइ किमइ, त्रटकइ त्रूटी जु इणइ समइ ।
कांई महिमा थानिक तणउ, लेई परिवारि रही आपणउ ॥५३॥
दिशि देखीनइ वाधिउ मोह, थानक प्रति चडाविउ सोह ।
देव प्रति दीधउ आदेश, नीपायु गढ पोढ प्रवेस ॥५४॥
वारू वनवाडी अभिराम, वावि सरोवर सुंदर ठाम ।
मंदिर मोटां कीधां घणां, जाली गुख जडित वारणां ॥५५॥
सपतभूमि सोहइ आवास, मांहइ व्यवहारीआना वास ।
घरि सुंदरि मुखि मीठी भाख, जाणे साकर सरसी द्राख ॥५६॥

---

५०. a इंद्रि क, इंद्रिइ म. 'तर' म मा नथी b अम्ह क, अम म. कीध क. c -कुशमाची क, -कुसमानी म d -कठ क सर माल क.

५१. a आलिउं थीइ ये म. तणु क. b गाइ क म घणु क. c सनमानी क म. d -तलि क.

५२. वस्तरि क. b भमर मला क म. करि क. c जाणि क. d ए कांइ क म; वाई अ. उत्तम छि ठाम क

५३. a त्रूटि कमि क त्रुटइ किमहि म. b जउ त्राटक त्रूटी इणि समइ क, जु नटकि त्रुटी एणइ समइ म. c थानक क. थानक म. तणु क. d लई क. परवार म. आपणु क.

५४. a दिसि क. देपीनि क म. b थानक म चडावउ क, वडाविउ म. सोहि क c प्रतिइ म. दीधु क म आदेस म. d नीपाउ क म. पोलि प्रवेसि क, पोलि प्रवेस म.

५५. a वनवाटी क. उत्तम ठाम क (क इयमां उत्तमनी नीचे 'सुदर' पण बीजा लहियाए लखेल छे.) c मदरि क. मोटा क. घणा क. d जाली जडति गुप वारणा क, ...जडित गुप वारणा म.

५६. a सप्तभूमि म. सोहि क. b माहइ ख, माहि क, माहि म. व्यवहारीना क. c सुदिर क. सुप्य क. d जाणे म. सरषी म.

सरली सेरी नवि सांकडी, राई वलणि वली वांकडी ।
चउरासी चउहटे मंडाण, मांडवीआ ते मागइ दाण ॥५७॥

जिनप्रासाद तें मन मोहींइ, नाटक नाच गीत सोहींइ ।
सालि दालि भोजन घृतघोल, वइठा करइ कथा कलोल ॥५८॥

रामा-रंगि रमइ सोगठे, देता दान न भाजइ हठे ।
नाचइ रंभ तिलोत्तम जोड, कुतिगीआना पहुचइ कोड ॥५९॥

पंच शब्द वाजइ नीसाण, नगर सवे मुंकाव्यां माण ।
लोक तणउ नवि लहींइ पार, वसिउं नगर नव जोयण बार ॥६०॥

मणि माणिक सोनानी कोडि, भरियां घर नवि दीसइ खोडि ।
राजलोक राजा थापीउ, पुण्यश्लोक पाट थापीउ ॥६१॥

इंद्र चंद नरनायक तणां, आव्यां वली वधावां घणां ।
ऊडी गूडी गयणि अनेक, तलीआ तोरण तणा विवेक ॥६२॥

देवदुंदुभि जगि वाजइ जाम, प्रगटिउं पुष्पमाल तव नाम ।
वासीं नगर लाछि तव हसी, पद्मद्रह जई वासु वसी ॥६३॥

---

५७. a नही म. b पाई क म. वली वलि म. c चुराशी क, चुराशी म. चुहुटे क, चहुटे म. मेंडाण क. d माडवीआ क. दांन म.

५८. a जिनप्रासादे मनि मोहीइ क, जिनप्रासादे मन मोहींइ म. c शालि क. d विठा क म. करि क.

५९. a रमि क म. b देतां क म. भाजि क; दांन भोज्ञ म. c त्तिलोत्तमं अ, त्रिलोतम क. d कुतगीआनां अ. पुहुचइ क, पुहचि म.

६०. a नीसांण क म. b शद्ब म. मुंकाव्या अ, मूंकाव्या क, गूंकाव्यां. म. c तणु क. नव क. b जोअण क म.

६१. a मांणिक सूनांनी कोडी म. b भरिया अ, भरिय क भारिआं म. घरि क. दीशि क म. c राजलोकि म. d पुण्यसलोक क.

६२ a इंद चंद क म. नारायण क, नर नायर म. b आवां मनुर वधावां क. c उडी क. गयण क. अनेकि क. ववेक क.

६३. a वाजी क; दुंदभि तिहां वाजां आम म. b परगटिउं पुष्पमाल क. तस म. नांम अ म. c वासी म. नगरि क. लाछि मनि क. d पदमदह क, पदमद्रिहि म. जँ म. वसी म.

कोइ न मागइ कर कहइ, घरि जईनइ कीजइ विनइ ।
मंदिर तेडी दीजइ दान, जोड कृतयुग तणउं मंडाण ॥६४॥

वउल्यां वरस सतर जव लाख, ऊपरि सहस अठावीस भाख ।
कालि कृतयुग उछउ करिउ, त्रेतायुग त्रिभुवनि विस्तरिउ ॥६५॥

लखिमी दिन लीला नीगमइ, कृतयुग पूरिउ जाणिउ जिमइं ।
रमलि चडइ मनि भावइ जिहां, त्रेतामांहि पधारियां तिहां ॥६६॥

मणि माणिक रत्नावलि-जडिउ, त्रूटउ हार भूमि जई पडिउ ।
रत्यां रत्न नगरीमांहि गयां, लेता लोक अखूटइ थया ॥६७॥

इक रूडां नइ रलीआमणां, लीला लखिमी दीधां घणां ॥
अवर लोक आवइ ऊलटया, वीणइ वेगइ न दीसइ घटया ॥६८॥

घरि बइठां देसाउर फल्यां, रतन अमूलिक आवी मिल्यां ।
करि प्रगटिउ वइरागर ठाम, रतनमाल ए बीजउं नाम ॥६९॥

---

६४. a मागि नर कहि कनि क, मागइ कहिनइ कहई म. b जईनि क म. कीजि क. विनि क. c मदिरि म. दीजी क. d जूड क. कृतयुग क. तणु क. प्रमाण क, वपांण म.

६५. a वुलां क. जउ क. b सहिस क. c कालि क, कालिइ म. उंछु थयु क. d त्रत्तायुग अ, त्रितायुग क. त्रिभवनि क, त्रिभोरनि म वस्तिरिउ अ, निस्तरु क.

६६. a लिखिमी म. लीला दिन क निगमि क. b पूरु क. जाणु क. जमि क, यमइ म. c रमल क चडि क करइ म. मन म. भाति क. यहा म. d पध्यारा क, पधारी म.

६७. a रतनावलि क; मणिमाणिक्मय हीरे जडिउ म b जई क; जै भूमिइ म. c रत्या अ, रत्ना क. रतन क म. नगरीइ म. d लेता क म. अखूटी क म थया क म

६८. a एक क. नि क म. रलीआमणा क म b दीधां क, लीला म. लषमी क, लिखिमी म. लीधा क. c आवा क. ऊलटयां क म. d वैणइ क, वींणइ म. वेगि क म. दीसि. क.

६९. a बिठां क म. देसाअर क. b मल्या क. c करिउ म. परगटउं क. प्रगट म. विरागर क d रतनपुर ए रूडु नाम क, रत्नपूर ए रूडूं नाम म.

चार लक्ष सहस्स छन्नवइ, त्रेता वरस जि पतां हवइ ।
घरि आव्यां दीइ बहुमान, त्रेतायुगमांहि दीजइ दान ॥७०॥

चइठी लाछि विमानइ चडी, जोउं नगर घडी अधघडी ।
कर जोडी पय लागइ राय, पाछी पद्मसरोवरि जाइ ॥७१॥

त्रेतायुग ते थयु विसराल आविउ द्वापुर पडतु काल ।
माहारुं नगर रखे सीदाइ, लाछि पुहुती तीणइ ठाइ ॥७२॥

जयजयकार हूउ जगमांहि, प्रगट पधारियां लखिमी माई ।
दानी मानी ज्ञानी लोक, थानकि थानकि मलीया थोक ॥७३॥

लिज्जइ किज्जइ बहु भेटणां, मणि माणिक बहुमूल्य घणां ।
भरीआं छाब कुसमची कोडि, श्री भेटी सज्जन कर जोडि ॥७४॥

मात भलइ पधारियां तह्मो, आज सनाथ थया छउं अह्मो ।
नालकेर नारंगी द्राख, मेल्हां फल फोफलना लाख ॥७५॥

मेवा मोदिकनां माटलां, चंदन चोआनां चाटलां ।
पान पुराणां नागरवेलि, वाही अगर कपूरे रेलि ॥७६॥

---

७०. a सहिस क, सहस म. छन्नूवि क b वरसज म. एता क. हवि क. गमइ म. c आवा क दीजि क, देई म. बहू मान क. d. त्रेता-युग-अ, त्रेतायुगमहि क, त्रतायुगमाहि म. दीजि क, दीधा म. दान म.

७१. a चिठी क म विमानि क, विमानिइ म. चिठी क b जोऊ क c पगि क. लागि क, लागिइ म d पाछां क. –पद्म क म. –सरोवर जाय क.

७२. a थिउ म. b आविउं अ, आवु क. द्वापर क म. c माहारु अ, माहरु क, माहारू म. सीदाइ म. d लषिमी क. पहूता क, पुहती म. तीणि क. ठाय क.

७३. a हूउ अ, हूआ म. जगमाहि क. b परगट क. पध्यारां क, पधारिआं म. माय क c ज्ञानी म. d थानकि थानकि म. मिलीआ क म. लोक अ.

७४. a लीजइ कीजि क. बहू म. b माणिक म. बहू क म.–मूलां क म. c भरी क म. कुसमाची क, कुसमांची म. d सज्जनि क.

७५. a भलि क. पध्यारां क, पधार्यां म. तम्हे क, तह्मे म. b हूआ म. अम्हे क, अह्मे म. d मेहल्या क, मेहल्या म.

७६. a मोदकनां क म. b चूआनां क, चूयानां म c पांन म. पराणां क. d कर्पूरि क कपूरिइ म.

श्री संतोखी भगति करी, कंठ हती जे माला धरी ।
ते आली आशिका विशाल, श्री थिर थाप्यां श्रीश्रीमाल ॥७७॥
वेगि वधावी हरखी सिरी, पहुती पद्मसरोवरि तुरी ।
माल एक नइं महाजन बहू, वदइ वाद नइ जोइ सहू ॥७८॥
[एक भणइ नहीं आलूं अह्मो, एक भणइ किम लेशु तह्मो ।
एक भणइ घरि मारूं मरूं, पणि हूं पाछउ नवि उसरूं ॥७९॥]
एक भणइ अह्म सिरखु भाग, मेटि तणउ जिहां लागु लाग ।
स्या मोटा [स्या] नान्हा वाल, भागि भगती लेसिउं माल ॥८०॥
एक भणइ कटका किम थाइ, एक भणइ ए लेसइ राय ।
भेदि भेद जु न कहत अह्मे, तु किम लखिमी भेटत तुह्मे ॥८१॥
एक भणइ सहू आव्यउ साथि, [माल समोपी माहारि हाथि ।]
माहरइ मस्तकि मोटउं कर्म्म, सविकहनइ लागु मनि मर्म ॥८२॥

---

७७ a भगति क, भगतिइ म. b कठि क म. ये म. c आपी म. आसका क आशका म. माल म (पाठा० विशाल). थाप्या अ. d थरि क.

७८. a वध्याव्या क. करी क. सरि म. b पुहुत्ती म पदम- क म. सरोवर क म. पुरी क तुरी म c एक नि क म. माहजन क, माहाजन म. d वदि क म. जन जोइ क म.

७९. अ प्रतमा ७८ना आंकने बदले ७९ नो आंक मळे छे ने ए रीते ७९ मी गाथा लखवी रही गई जणाय छे, जे ममाथी उपर [ ] मां मूकी छे. a भणि क आलु अम्हे क. b लेसु काम क. c भणि क. मारु मरु क d पाछउ क.

८०. क मा पूर्वार्ध आ रीते छे–

मेटि तणु जहा लागु लाग, एक कहइ अम सरिखु भाग ।

a अम म. शरषु म. b मेट म. लाधु म. c स्या क, स्या म. मोटां क. स्यां नानां क, शा नाहा म. लागि भगती क, भागिइ भगती म. लेसु क, लेशु म.

८१. a भणि केम कटका क. b भणि क. लेसि क. लेशि म. c भेद क म. अम्हे क. d लखिमि म. तम्हे क.

८२. a भणि क. आवु क, आविउ म. b अ मां आ चरण लखवु रही गयु छे. माहारि क. c माहारि म. मोटु क, मोटउ म. कर्म क म. d ०कहिनि मनि लागु मर्म क म.

भटकी भटकी ऊठिउ साथ, माल भणी के वाहइ हाथ ।
वडा भणी तु दीधउ शोभ, तु डोकरनइ वाधिउ लोभ ॥८३॥

भारवाहा-सिरि मेल्हिउ भार, तु सिउं भारवाहु भंडार ।
वइ फरी वइसारिउ आज, तु सिउं तुह्म घरि आविउं राज ॥८४॥

हाथि हुइ अंगुलडी च्यारि, अंगूठउ पांचमु विचारि ।
एक एक विण न सरइ काज्ञ, पंच तणइ मेलावइ राज ॥८५॥

हाकिउ ताम हसीनइ रहिउ, बुद्धि विण बोल विरासइ कहिउ ।
वडपण थिकु विणासिउ मूलि, हुं महाजनना पगनी धूलि ॥८६॥

बोलइ बोलइ वाधइ राढि, कांटइ कांटइ वाधइ वाडि ।
एक भणइ कहीइ एतलुं, माह्येमांहि प्रीछ्या भलुं ॥८७॥

एक भणइ हुं भाजुं वाद, नीपाउ श्रीनु प्रासाद ।
थापु मूरति ए घन वडइ, वाईनां फूल बाईनइ चडइ ।८८॥

सुणिउ बोल श्रवणे जेतलइ, सचिकहिनइ सिरखुं तेतलइ ।
मेटणि भाग अछइ जेह तणा, रहिया सोइ बीजा ग्या घणा ॥८९॥

---

८३. a उठु क, उठिउ म. b के वाचि क. एक वाहि म. c ०थी शोभ क, जु दीधी शोम म. d डोकरनि क म.

८४. a सरि क, शरि म. मेल्हउ क, मेहलिउ म. b सु क, सूं म. भारवहा क, भारवहि म. c वडउ क. विसारु क विसारिउ म. d सु क, शू म. आवु तम घरि राज क; तम घरि म.

८५. a होइ म. अंगलडी क c सरि क. d पच तणि क मेलाणि म.

८६. a हांकिउ म. हसीनि क, हशीनि म. b वरासि क, विरासिइ म. किहिउ क. c वडपणे थकी क, वडपणमाहि म. वरासउ क, विरांशिउ म. d हू क म.

८७. a बोलि क म. वाधि राढि क. b वाधि काटि थाइ वाडि क. c भणि क. कहीइ क. एतलुं म. d माहोमाहि क. प्रीछउ क; ने प्रीछिउं भलु म.

८८. a भणि क म. हू क म. भाजूं म. c थापउ क. वडि क. d वाइना अ. वाईनि क म. चडि क.

८९. a सुणउ क. श्रवणे म. जेतलि क, येतलइ म b ०कहिनि सरखु तेतलि क, ०कहि मनि गमीउ तेतलइ म. c अछि म. येह तणा म. d रिहा क, रह्या म. सोर क.

मेटि तणी लखिमी वावरी, श्रीप्रासाद सुरंगु करी ।
थापी मूरति महूरत जोइ, लखिमी लखयणवंती होइ ॥९०॥

वाजइ भुंगल मेरी तालं, मेटि भणी ते श्रीश्रीमाल ।
करि सोहासणि सोयिन थाल, ते ऊपरि ते मेल्ही माल ॥९१॥

आगलि मलीया महाजन थाट, रंग तणी ऊघाडी वाट ।
नवि कम्माइ नितु नवनवी, श्रीमाल श्रीकंठि ठवी ॥९२॥

द्वापरमांहि हुई थापना, जेहनइ भय टलीआ पापना ।
श्रीगोत्रज श्रीमालो तणी, करु चित्त प्रासादह घणी ॥९३॥

द्वापरमांहि इस्यां छइ मान, दीजइ मानव माग्यां दान ।
त्रीजइ युगि श्री करइ संभाल, नगर नाम दीधुं श्रीमाल ॥९४॥

वस्तु

लछि थप्पइ लछि थप्पइ जाति श्रीमाल ।
नगर नाम श्रीमाल तव, रयणमाल आगइ प्रसिद्धइं ।

---

९०. a मेट क म. b सुरंगउ म. c महूरति क. d लषमी क. लक्षणवंती क म.

अ मां ९१ ने वदले ९२ लखेल छे, तो नीचे ९३ वैं वार छे.

९१. a वाजि क. भूंगल क म. b मेट षणी क, मेट तणी म. c सोहासण क, सोहाशणि म. सोवन क. d ऊपर क, उपरि मं. मेहली ते क, ते मेहली म.

९२. a मलीजे क, मिल्या म. माहाजन क म. b तणु क. ऊघाडि हाट क. c कुरमाइ क, करमाइ म. नितु नितु नवी क; नित म d श्रीमाला क म. श्रीकंठि क, श्रीकंठिइं म.

९३. a द्वापरमांहि क. हुई क, होइ म. b जेहनि क. टलीया म. c भणी क. d करि क, करइ म. चित क, चींत म प्रासादइ म. तणी क.

९४. a द्वापरमाहि क. इसां क. मांन क. b दीज क. c त्रीजि युग क. आ गाथा म प्रतमां नथी.

९५ a लच्छि म. थपइ क. लच्छि म. थपइ क. b न्याति क. श्रीश्रीमाल म. d आगि क, अग्गइ म. प्रमद्दिउं क, थप्पिउं म. c रयणगार

सकल ज्ञाति श्रीमालधुरि, अचल नाम श्रीमाल दिधुं ।
लाछि भणइ निर्धन नहीं, हु तुह्म गोत्रज जेण ।
श्रीश्रीकार सु अप्पीउ, श्रीश्रीमाली तेण ॥९५॥

[चउपई]

खंडि खडि छइ मति निर्मली, भणतां सुणतां संपति मली ।
मुनि लावण्यसमयची वाणि, पतलइ पहिलु खंड वखाणि ॥९६॥

इति श्रीमालमंत्रि-प्रगटप्रबंध । नवरग नवखडे । सरस्वती वर्णन । लक्ष्मीचरित्र कृतयुग त्रेता प्रमाण । पुष्फमाल रत्नमाल । श्रीश्रीमालज्ञातिस्थापनाधिकार प्रथम खड समाप्त ।

धुरि म f नाम म दीधु अ, दीधु क, अप्पिउ म g लछि क, लच्छि म भणि क h हू म तुम्ह क, तम म. जेणि क म i अप्पीया म j तीणि क, तेणि म.

९६ a पडि पडि क छि म. नर्मली क b भणता गणतां क म सपद क, सपत्ति म वरी क, मिली म c ल्याव्यनसमइची क, लावण्य समयचि म वाणि म d एतलि क पहिलु अ, पहिलउ क, पहिल म पड क षपाणि क

क प्रतमा अत—

इति पडित लाव्यणसमइगणिकृते । विमल्मतमनोहर प्रगट प्रवध नवरंग नवपडे प्रथम षड सपूर्ण ।

म. मां अत —

इति श्री विमल्मन्त्रि प्रगन प्रवधे नवरंग नवपडे सारस्वतीवर्णन लक्ष्मी चरित्र । कृतयुग त्रेता प्रमाण । पुष्पमाल रत्नमाल श्रीमाल नगर, श्री श्रीमाल-थापनाधिकारे प्रथम षडं ॥ श्री ॥ श्री ॥

खंड २

दूहा

पदमनि परिमल पूरीउं, जिम सायर सलिलेह ।
तिम श्रीमाली पूरीउं, व्यवहारीया सबलेहि ॥१॥

जेह घरि लच्छि न लब्भोइ, नहीं करमि संतान ।
ते घर लेख न लेखोइ जिहि घरि दान न मान ॥२॥

चुपई

कोटमांहि कोटीधज वसइ, ऊणा ते गढ बाहरि खसई ।
लाखोणा लख भेला थाइ, इसिउ न्याय छइ नगरीमांहि ॥३॥

थोहड दोहड भाई दोइ, दोहड बहू कोटीधज होइ ।
थोहड-घरि नवाणुं लाख, भाई सरसी घाली भाख ॥४॥

बंधव तोरइ पाय लागीइ, एक लाख अह्मे मागीइ ।
कोटीधजनी पुहुचइ आस, जिम गढमांहि पूरुं वास ॥५॥

---

१. a पंदम ति क म. परमल क. b यिम क. यम म. सलेहिं क, सलिलेहि म. c श्रीमाल ति क (म पाठ॰ थीं) d व्यवहारी क म.

२. a लछि क. लभ्भीइ म. b नहीं म. करमी क म. संतान म. c तेह म. घरि क. लेपि म d जेइ क.

चूपै म.

३. a ध्वज म. वसि क. b ऊणा क म. पसि क, पिसइ म. c लष म. थाइ अ. d असिउ क, इशु म. छइ म.-माहि क,-माहि म.

४. a उहड क म. दोय क. b ध्वज म. c थहड क म. नव्वाणउं म. d भाष म.

५. a तोरे क पय म. लागीइ म. b अम्हे क घन मागीइ म. c -ध्वजनी म, पुहुचि क. पूरू आस म. d जइ क. यम म. -माहिइ म. पुरूं म.

छेहडइ केन्हइ नावइ साथि, तुहइ धन नवि छूटइ हाथि ।
कहिउं वचन तव कोपइ चडिउ, तुह्म पासइ गढ रहिउ छइ अडिउ ॥६॥

महु मचकोडइ भाभी ताम, ईंटाले घसि लाभइ द्राम ।
पाय तणइ ठेऊइ अह्लाणीउ, ओपमानिउ वलीउ वाणीउ ॥७॥

माई तणउ भरुंतु हतु, ओहड-मनि थयु ऊरतु ।
सूयण म मगु अंचल ओडि, मोटा माणस लागइ खोडि ॥८॥

भाजइ गति सर क्षीणउ थाइ, सिरि परसेवु भय मनमांहिं ।
दयामणु देखइ सहू कोइ, मगण मरण समाणउ जोइ ॥९॥

चंद तणइ छइ सूरिज मित्त, घटिउ तेज तव थयु चलचित्त ।
आविउ सूरज घरि करी आस, दीठउ शसिकर पत्रपलास ॥१०॥

अणतेडिउ जे परघरि जाइ, मान महुत नवि पामइ राय ।
साहुं! कांइ चडइ कलंक सूर तणइ घरि गयु मयंक ॥११॥

---

६. a छेहडि क; पाठा०थी 'रोहड' म. नावि कहिनि क, नावइ कहिनइ म b तुहि क म. हवि क. c कोपि क, कोपिइ म d तू म. पापि क. 'छइ' म मा नथी. अडउ क.

७. क म मा ७ मी गाथा नथी

८. a तणु क. भरतु म. एतु क म. b तु उहड क म थिउ म. उरतु क म. c सूअण क, सजण (पाठा० सुजण) म मा 'म' पाठा०मां छे मगु क, मगइ (पाठा० मागउ) म. उडि क म. d मोटा म. माणस क म. लागि क, लागी म

९. a भाजि क, भागइ म. गुर म. षीणु क. b सरि क, शरि म. प्रासडुं क, परशेवु म. मनि भय म. –माहि क. थाइ म. c दयामणउ म. देषि क. d मरगण म. समाणउं म.

१०. a तणि क. सूरज क. मित क, मित्र म. b घटउ क, घटिउ म. थिउ म. चित क. c सूरि क, सूर म करि घरि आस क. d दीसि क, दीसइ म. ससिकर क, शशिकर म.

११. a अणतेडउ क 'जे' क म मा नथी, 'जे'ने बदले क म मां 'नर' छे. आय क. b मान क. महूत क, मुहत म पामि क c साहमु क, साहामु म काइं क, कांई म चडि क म. d सूरि क. तणि क.

आ कडीनो अंक अमा नथी,–पछीनीने ११ आप्यो छे, ए '११–१' थशे.

तव थोहड मनि थयु निराश, मागिउ अर्थ नवि पहुती आस ।
आणी दंस रहिउ मनमांहि, ईणइ अवसरि जोउं कर्म्म पसाइ ॥११-१॥

नगरमांहि राजानु पुत्र, गर्वि मागइ ग्रास जे बहुत ।
राय न आपइ मागिउ ग्रास, कहितां छयल हुआ छ मास ॥१२॥

भणइ मंत्रि भूपति अवधारि, कुंअर मनावु चडइ विचारि ।
नाहउं सीह तणउं बाचहं, मोटा मयगलथी ते वडं ॥१३॥

राय भणइ रूठइ सिउं हुस[इ], जाणे ऊधस को वाससइ ।
नवला योवन नवला वेस, कांइ न वासउ नवला देस ॥१४॥

माथुं मूलि न काढिउं जेह, पछइ तृणउं न छूटइ तेह ।
तरुणा तेज सुरिज सारिखां, लहीइ पुरुष तणां पारखां ॥१५॥

किसिउं करेसइ माहरइ ग्रासि, बइठा रहु आपणइ आवासि ।
पहूनइ कांइ आलुं आज, बीजा बेटा मागइ राज ॥१६॥

११-१. a उहड क म. नरास क, निरास म. b माणि क. न क म. पुहती म. c डस क म. d एणि म. जो क; पाठा०थी 'जोइ' म. कर्म क म. पसाय क.

१२. a नगरमाहि क. पूत म. b गरवि क, गर्विइ म. मागि क. गरास क. 'ज' क अने म मां नथी. c आलि क. मागउ क. मोटउ म. d पाठा०थी 'छइल' म. म्मास म.

१३ a भणि क. b कुअर म. वडि क म. वचार क. c नाहना क, नाहान् म. सीह क, शीह म. तणु क, तणउ म. बाचइ (पाठा०'बाचइं') म. d मयगल तेथी वड्ड म; वडउ क.

१४. a राउ क. भणि क. रुठि क. सु क, शुं म. हसि क, हसइं म. b 'जाणे' म मां नथी. ऊरस अवर कोइ म. वाससि क, वासशिइ म. c यौवन क म. नवलु क. वेश क. d वासि क म. नवला म. देस म.

१५. a माथउ म. मूल क. काडउं क, काढिउ म. जेहि क, येह म. b तृणं क. त्रूटि क म. c तरुणां क. तेजि म. सूरि क, सूर म. सारिषां क म. d परूप क, पारिषां म.

१६. a कसिउ क, करिउ म. करेसि क, करेशि म. माहारे क, माहारि म. पास क, प्राशि म. b बिठा रहु क, बिठा रहु म. आपणि क म. आवाशि म. c एहनि क. कांइ म. आलउ क, आल्ह म.

माहरइ बेटा सवे सारिखा, जोड कर्म्म तणा पारिखा ।
धन ऊपायु खाउ सवे, गाढिम ग्रास न आपुं भवे ॥१७॥

सोल वरसनु बेटु जेह, धन भोगवइ पितानुं तेह ।
ते कुलमंडण कवि वखाणि, पुत्र-रूप ते रणीउ जाणि ॥१८॥

कुंअर तणे काने श्रति पडी, नगरमांहिं हिव न रहुं घडी ।
भमइ रोस-भरि नवलइ घाटि, कुंअर पहुतु ओहडहाटि ॥१९॥

ओहड आसण मेल्ही करी, वइठउ राजनीति अणुसरी ।
पाला पहुता आणइ ठामि, किसिउं अणूरूं ताहरइ स्वामि ॥२०॥

कहइ कुंअर तव मनची वात, इस्यां वचन मझ बोल्या तात ।
परहुंसि पूर्यां बेऊ निटोल, साल सरीखा सालइ बोल ॥२१॥

एक सूत्रि थया ते बेऊ, वाट सरीखुं संवल लेऊं ।
घरि मोकलावी चालइ जसइ, मारगि सबल शकुन हुइ तिसइ ॥२२॥

---

१७. a माहरि क. माहारि म. सवि क म. सारपां क. b कर्म क म. तणां क म. पारषां क म. c ऊपाउ क म. सव्वे म. आछ क, आपूं म. अम्हे क, अम्हे म.

१८. a व्ररसनु म. जेय क, येह म. b भोगवि क म. पितानू म. तेअ क. c त्रिपाणि क, वपांणि म d-रूपि म. जांणि क म,

१९. a कूंअर म. श्रुति क म. b नगरमांहि क म. 'हिव' क अने म मां नथी. नवि क. रहिइ क. रहूं म. c भमि क. नाति क, नावइ म. d कूंअर म. पहुतउ क. पुहत्तु म. उहड क म.

२०. a उहड क म. मेहली क म. b विठउ क म. c पुहता म. आणि क म ठामि क. d किसु क किस्यूं म. अणऊरूं म ताहरि क, ताहारि म.

२१. a कहि क म. कुमर म. b इसां क, इशां म. वचन क. 'मझ' म मां नथी बोलि क म. c परिहुये क परहूंसि म. पूरया क, पूर्यां म. बेहू क म d सरिपा क म. सालि क

२२. a एकि क. तव थया बेय क. थया तव बेउ म. b सरीसां क, सरीपू म. शबल म. लेअ क, लेउं म. c चाल्या क म. जसि क. तिशइ म. d शकुन सबल म हुई क हुइ म. तिसि क, तिशइ म.

पहिलु मलपत मयगल मलिउ, व्यवहारीउ दक्षण करि वलिउ ।
मंगल भणती साह्मी नारि, भाट घघावइ जयजयकारि । ॥२३॥

उडुय भणंती योगिणि मली, तु दक्षण भयरव कलिकली ।
सर डावउ नइ डावी देवि, सबल सुणहु डावु लेवि ॥२४॥

हरण अधुरां जिमणां जाइ, पहिलइ पुहुरि पलुतां माइ ।
सांड तुरी नइ दक्षण चास, वामा वायस पूरइ आस ॥२५॥

डावा लाली बोल्या जाम, कुसली कुंअर हरखिउ ताम ।
शकुनगंठि बांधी दृढ करी, मेल्हइ पंथ घणा परहरी ॥२६॥

वाटघाट जोता मनरंगि, चालइ चंचलइ चडया तुरंगि ।
अति पोढां पीआणां कीध, पामिउ सिंधु देश प्रसिद्ध ॥२७॥

राउ मेटिउ जई ठठा तणु, ठाकुर गाम ठाम दिँ घणु ।
रहु राजइ पुरु मन-रली, कहइ वाणि कुंयर कुंअली ॥२८॥

अह्मे न आव्या लेवा ग्रास, जाणुं ऊवसइ वासुं वास ।
भूमि तणु जिह्नां नुहि घणी, ठाम देखाडु तेह जि भणी ॥२९॥

---

२३. a पहिलुं क, पहिल्ल म. मयगल मलपतु क. मिलु क, मिलिउ म. b व्यवहारी क. c साहमी क, साहामी म. d विघावि क. वधावि म.

२४. a अडु क, अदु म. मिणंती क. जोगिणि म. मिलि क म. b 'तु' कमां नथी. दक्षण तव डावी भयरव कलकली क; भइरव कलगली म. c पर क म. डावु नि डावी क म. d सबलु क. सुणहू क, सणहु म. डावु म.

२५. a हरिण क. अधुरां क. यमणा म. b पहिलि क म. पहुर क, पुहरि म. पलुता क. –माहि क. c सांड क. नि क म. दक्षणि क d पूरि क.

२६. b कुशली क म. कूअर म. c शकुनि क. बंधी क, वधइ म. द्रढि क, दड म. d मेहलि क. मेहल्इ म. परिहरी म.

२७. a मनिरंगि क b चालि क, चालिइं म. चंचलि क म. c पीयाणां म. कीद्ध म. d पामु क, पामिउं म. संधु क देस म. परिसिध क.

२८. a रा म. जई म. ठठा म. तणउ म. b गाम क. ठाम क. दिइं म. घणउ म. c रजि क, राजि म. मनिरली क, मनरली म. d कहि क म. वाणि म. कुंअर क. कूंअर क, कूअली म.

२९. a अम्हे क. b जाणउं म. उवसि क, ऊवशि म. वासुं म. c तणउ म. जहां क. d ठांम क म. देखाडु म. तेहति क, तेह ज म.

जोयुं राइ विमासी ताम, ठाकुर विना न देखइ ठाम ।
पश्चम दक्षण पूर्व भणी, जोतां जोयुं उत्तर भणी ॥३०॥

देश घणानी आवी संधि, एक थलीउ छइ तेहनइ खंधि ।
अछइ सदैवत्त अह्म घरि तुरी, पुहुचउ उत्तर लेई करी ॥३१

जातां जे थल आवइ जाम, ताम तुरंगम करीय प्रणाम ।
चींती भोग करे जे भलु, आठ पुहुर मेल्हे मोकलु ॥३२॥

हयवर चंपइ जेती सीम, पछइ पाछउ आवइ जीम ।
वेगि वधावे मुगताफले, नगर वासजे ते तुं थले ॥३३॥

वस्तु

कुमर चल्लियु कुमर चल्लियु तुरीय सो हाथि ।
ओहड सरिसु आवीउ, तेणि ठामि ते तुरीय रक्खइ ।
हयवर मेल्हिउ मोकलु, अट्ठ पहुर भल भूमि अक्खइ ।

३०. a जोइ क म. राय क म. विमाशी म. ताम क म. b देषि क. ठाम क. c पूरव क म. घणी क म. d जोउ क, जोयू म. उतर क

३१. a दश म. b तेहनि क; आ शब्द ममां नथी; एने बदले 'आवी' छे. थलि उछइ क म. कधि क म. c अम म. पहुचु क. पुहुचु म. उत्तरि म.

३२. a जोतां क म. आवि क. b करी क म. प्रमाण अ. c चंती क, चिंती म. d पुहर म. मेहले क म

३३. a येती म. शीम म. b पछी क वलतु ('पछइ'ने स्थाने) म. पाछु क आवि क. जीम क. c नगर वासिये म. d तू क (म मां नथी); तीणे क, तेणे म.

वस्तू क.

३४. a कुंअर क, कुमर म. चलु क, चल्लीय म. कुअर क, कुमर म चलु क, चल्लीय म. b तुरीअ क म. सोय क, सोइ म. साथि क म. c उहड क म. सरसु क म d तेणइ म ठामि म. तुरीअ क म. रषि क e हयवर अ क. मेहल्डि क म f पुहर म. भूमि म. अपि क. उयरु क. वसावीउ क h नाम क म छएस क, छएसि म. हां त्यार-

ऊवसि वास वसावीउ, नगरनाम ऊवेस ।
मुनि लावण्यसमय भणइ, धन धन उदय-नरेस ॥३४॥

चउपई

वासिउं नगर जसिउं सुरलोक, धन धन धनद समाणउ लोक ।
पोढां मंदिर पोलि पगार, वास नगर नवि लहीइ पार ॥३५॥

चिहुं दिशि तलीया तोरण बारि, अमरी कुमरी नाचइ नारि ।
चुरासी चउहुटां जूजूआं, वाडि वावि सरोवर कूआ ॥३६॥

घरि घरि नारी रंभा जसी, साकर-वाणी बोलइ हसी ।
राजगृह रूडां झगमगइ, ओहडनां घर गढ मूलगइ ॥३७॥

पूंठि-हतु तेडिउ परिवार, ओहड नगर तणउ सिणगार ।
राजमुद्रा पहिरावइ राइ, ओहडनु जागइ जसवाउ ॥३८॥

दूहा

जे जे चित्रा बोलडा, ते ते चडिया प्रमाण ।
भाई सरिसुं रूसणुं, नवि भागुं निरवाणि ॥३९॥

ण्यसमि क, लावण्यसमइ म. भणे क. j धिन धिन म.

'चउपई' शब्द म मा नथी; चपई क.

३५. a वासु क, वाशिउ म जसु क, यशू म. b धिन धिन म. घनद क. समाणां क म. c पोढा अ म. मदरि क. पोलि क. d वसु कं. तणउ ('नगर' ने स्थाने.) क. नव क. [न]र लीहीइ अ.

३६. a चहु क, चिहु म. दसि क. तलीआ क म. b नाचि क म. c चुराशी म. चुहुटा क, चउहुटा अ, चहूटां म. जूजूआ अ. d वावि सरोवर वाडी क.

३७. a यशी म. b बोली क म. हशी म. c राजग्रह अ. रूडा अ. झगमगि क. d उहडना क, उहडना म मूलगि क.

३८. a पूठिहतु क, पूठिइधु म परवार म. b उहड क म. शण-गार क म. c पहिरावि क म. राय क म. d उहडनु क, उहडनु म. वाधिउ क, वाधइ म. जसवाय क, जसवाद म.

३९. a ये ये म. b चडया क म प्रमाणि क, प्रमांणि म. c भाई क. सरसु क, सरसू म. रूसणू क. d निवि क. भागू म. निर्वाणि म.

उत्तर दक्षण पूरवी, पश्चिम केरा लोक ।
नयर वस्या तें निर्मला, जिम तरुमांहि अशोक ॥४०॥

कोटीधज कोटी वसइ, लाखीणा लख जोइ ।
नगर तणउ महिमा अछिउ, निर्धन जन नही कोइ ॥४१॥

ओढड-घरि एक धेन छइ, ते निति चरवा जाइ ।
खीर झरइ झावल भरइ, नितु नितु तीणइ ठाइ ॥४२॥

दोहींती दूझइ नही, जोतां जाणिउ मर्म्म ।
पास जिणेसर प्रगटीआ, ओढड उदभुत कर्म्म ॥४३॥

ओढड निशि निद्रा भरि, सुपनंतरि सचि आवि ।
आवी देवी इम भणइ, हुं तुझ पुण्य-प्रभावि ॥४४॥

संतुट्ठी ओढड सुणे, तुज्झ समोपि राज ।
नगर तणी रखवालि हुं परतखि आवी आज ॥४५॥

---

४०. b पथम क c नगरि क म वस्या म. d यिम क, यम म. तुरमाहि क

४१. a कोडिइ म वसइ म, वसि क b होई क. c नगर तणु क. मिहिमा क. इछु म. d नर निर्धन क, निरधन नर म

४२. a उहड क म. छि क म. b ति क. वन ('निति'ने स्थाने) क; वनि म. जाय क c झरि क. भरि क d नित नित म. ताणी क. चरवा ('तीणइ' –ने स्थाने) म ठाय क, जाइ ('ठाइ'ने स्थाने) म.

४३. a 'दोहींती' सुधारी अमां 'दोहती' कर्युं छे, दोहींते म. दूझि क. b जाणिउ क, जाणउ म र्मम क, मर्म म. c वीर ('पास' ने स्थाने) क. d उहड क म. अदभूत म. र्कम क म.

४४. a. उहड क म नशि क. भरि क, भरिई म b सपनतरि क म सुची म, सची क. यावि म c भणि क d हूं क म पुनि क.

४५. a संतुठी क उहड क म. b सुंण क म. समोपिउं क, समप्पिउं म c रखवाल क. हू क म.

आ कडी पछी क प्रतमां वधारो'—
एग यंदनी भावना, श्रीरत्नप्रभसूरि ।
वीर मध्यमि गए थका, सत्तर वरस प्रसिद्धि ॥

ओस वंसनी थापना, श्रीजिनवरप्रासाद ।
पासइ मम्र मंदिर करे, वलीय सुणावे साद ॥४६॥

चउपई

जागिउ ओहड पुहुतु राजि, कुहु मुहुता आव्या सि काजि ।
त्रिणि वाणि सुपनंतर सुणी, हुं आविउ तुझ कहिवा भणी ॥४७॥

सुणीय वात मनि रंजिउ राय ततक्षिण मेली सवि सुमवाय ।
जिण-प्र[ा]साद देविनुं ठाम, परठिउं ओस वंसनुं नाम ॥४८॥

वस्तु

नगर वसीउं नगर वसीउं नाम ऊवेस ।
ओहड पुढिउ नींद्र भरि, सुपन मज्झि सची आवि आवी ।
तिणि वचनि प्रासाद-जिन देवि, ठाम निश्चल करावीअ ।
ओस वंसनी थापना, ओवसि वसीआ जेणि ।
ओसवालनी थापना कारणि कहीयो तेणि ॥४९॥

---

४६. a ऊएस क. गछनी क, वशनी म. b जिनतु क. c पासि क. मुझ क. अछइ ('करे' ने स्थाने) म. d वली क म.

चुपई क, चुपै म.

४७. a उहड क म. पहुतु क. b कहु क. महिता क म. सि काज क, कणि काजि म. c त्रणि क. वार म. सपनतरि क. सणी क. d हू क म. तुझ क, तम म.

४८. सुणी क म. रंगिउ क b ततष्यण क, ततक्षणि म. समदाय क म. c जिनप्रासाद क म. देवतु क, देवनू म. d प्रगटिउ म उस क म. वंशनूं क, वशनू म. नाम क म.

४९. b उएस क म. c उहड क म. d सपन क, सुपन म. माझि क, मद्धि म. सचि म. आवीअ क, आवीय म. e तेणि क म. जिण म. f देव क म. ठामि क, ठांम म. उत्तम करावीय म. g उस क, उश म. वशनी क म. h ऊतसि क म. वांसिआ क. i उसवाल अरउकमल क म. j कहीआ क म.

चउपई

पहुतु वछ राजा अवगणी, निबल हूआ श्रीमालइं धणी ।
आवइ घ्याडि घसंती घणी, नगरलोक सह थयुं रेवणी ॥५०॥

आवइ लुसइ लगडइ हणइ, ते सरिसुं नवि चालइ किणइ ।
खंभनअरथी काढी खवा, जई भेटिउ चक्रवर्त्ति पोरवा ॥५१॥

स्वामी नगर वडुं श्रीमाल, ते लूसाइ विण रखवाल ।
रक्षा करु म लाउ वार, भड मोकलु भला जूजार ॥ ५२ ॥

कटकमाहि जे गाढा कटा, ते टाली कीधा पकठा ।
सुभट सहस दश केरी जोड, जे भाजइ भूपतिनी कोडि ॥ ५३ ॥

मनि चींतव्या मनोरथ फला, व्यापारी ते लेई वल्या ।
आव्या नगरि अस्या असवार, भय भागु वरतिउ जयकार ॥ ५४ ॥

नगर थकी बाहरि ऊतरया, उतारा पूर्व दसि करया ।
ते थानक अंबाई तणउं, करइ लोक आराधन घणउं ॥ ५५ ॥

रहीआ सुभट वीटी प्रासाद, भागा वइरीना उन्माद ।
जिहां जिहां जाइ तिहां जय वरइ, अंबाईनी ओलग करइ ॥ ५६ ॥

चुपई क, चुपै म.

५०. a पुहतु म. वच्छ म. b हूउ क म. c आवि क. d सवि
ध्या क; थिउ अति म.

५१. a आवी क म लुसि क. लगडि क. हणि क. b तेह क.
सरसु क. सरसू म. चालि क. कुणि क. c नगरिनी क, नयर ते म. d
'जे' नथी क म मा (म मां पाठा०थी छे.). भेटउ क. चक्रवर्ते क. पोरवा क.

५२. a वडउ क, वडूं म. b वण क. d सभट क. झूझार क म.

५३. a-मांहि म. b एगठा क. c समट क. सहिस क. दस क म.
d भाजि क, भांजइ म. भूपतिना क म कोड क म.

५४. a मन क. चिंत्या क, चितव्या म. फल्या क म. b चल्या
क म. c इस्या म. d भागो क. वरतु क.

५५. a बाहरी म. ऊतरीया म. b पूरव दसि क; पूरव दिशि
ऊतारा करिया म. c तिहां क. तणु क. d करि क. घणु क.

५६. a रिह्या क, रह्या म. वीटी क. b वइरीना क, विरी तणा म.
अनुमाद क, निनाद म. c वरि क. d उलग क म. करि म.

आविउ दिन दीवाली तणउ, मंडइ भस उस्सव अति घणउ ।
महापूज मंगल आरती, तूठी अंबाई महासती ॥ ५७ ॥

मया करइ अंबाई मात, रयणिमाहि गढ दीधा सात ।
प सत्त पडा दीधा इस्या, वयरी विकट न भेद नहि कस्या ॥५८॥

तु तुम्हे मानो माहरी आण, तु वसिवा आपुं अहिठाण ।
खंधि तुह्मारइ कीधउ वास, वेगइ वालु वयरी त्रास ॥ ५९ ॥

चडइ कटक वइरीनइ नडइ, जे वांका ते पाये पडइ ।
मोटां मंदिर कीधा वास, अंबाई पूरइ मनि आस ॥ ६० ॥

नगरथी पूर्व दशि रहिया, प्रागवाट तेणइ कारणि कहिया ।
दंड कलश सिरि दीधी धजा, थापी अंबाई गोत्रजा ॥ ६१ ॥

वस्तु

नगर निर्मल नगर निर्मल, सहिजि श्रीमाल ।
भय माटइ भड मोकल्या, सबल सहस्स दश कोडी कीद्धा ॥

---

५७. a तणु क. b मंडि क. मडाविउ म. सभट उछव अति घणउ क,...उच्छव अति घणउ म. c माहापूज क d माहासती क

५८ a करे क. b रयणमाहि क, रयणिमाहि म. कीधा क म. c सति क, सत्तइ म. पड सबला अछु क. सबला गढ इस्यां म. d विरी क. 'न' क ममा नथी नही क, नहीं म कसु क, किशा म.

५९. a तमे क, तुह्मे म. मानी क, मानु म. माहिरी क, माहारी म आण क. b वसवा क म. आपु क, आपू म. c तुम्हारि क, तुह्मारि म. कीधु क म. d वेगि क, वेगिइ म. वाल्ड म. विरी क, विरीनु म.

६०. a चडि क विरीनि क, वइरीनि म नडि क. b वका म. पाए क म. पडि क. c मोटा अ क. मदरि क d अंबई तिहु पूरि आस क. मन म.

६१. a नगर थकी क म. पूरव क म. दसि क, दिशि म. रह्या क. b प्रागवाट म. तीण क, तेणि म. इक कारणि क. किहा क. c सरि म. d अंबाई थापी म.

६२. b सहिज क, सहजि म. c माटि क, मइइ म. d सहिस क, सहस म. दश क म. जोड क, जोडि म. किधा क म. e चक्वर्त क.

चक्रवर्त्ति ते पौरवा, तास पुत्र पहुवि प्रसिद्ध ।
अंबाई थिर थापीआ, अति उछव उल्हासि ।
प्रागवाट तिणि कारणि, वसीआ पूरव वासि ॥ ६२ ॥

चउपई

क्रमि क्रमि ज्ञाति हुई छइ घणी, वडी ज्ञाति श्रीमाली तणी ।
ओसवाल प्रगट्या पोरूआड, गूजर डीडू डीसावाल ॥ ६३ ॥
खंडाअता खंडेर खंडोल, कठ्ठुरा कोकिला कपोल ।
नायल नागर नाणावाल, प्रौढ लाड ला[डू] श्रीमाल ॥ ६४ ॥
हालर हरसुरा हुंबडा, श्रीगुड जालहरा जागडा ।
धाकडीआ भडीआ भुंगुडा, ब्रह्माणा वीधू वायडा ॥ ६५ ॥
गांभूआ अडालजा गहिगहिया, मोढ वली मांडलीआ कहिया ।
पंचम पुष्कर जंबूसरा, सुहडवाल अनइ मंडोसरा ॥ ६६ ॥
ऊंच उचतिवाल सुरहीआ, मोथर कंबोजा करहीया ।
पोआड सोरठीआ सही, पलीवाल ज्ञाति वली कही ॥ ६७ ॥

जे क, ये म. f पुहवि क, पुहविइ म. प्रसिद्ध म. g थापीया म. h उच्छवि म. उल्लासि म. i तेणि क म. कारणिइ म. j वसीया म. पूरवि क. पासि क, पाशि म.

चुपई क, चुपै म.

६३. a क्रमि क्रमि क. न्याति क, जाति म. हुआ अ, होई म. छि क म. b न्याति क म. c पोरोआड प्रगटया उसवाल क, पोरुआड प्रगटिया उसवाल म. d डीडू क म दीसावाल म.

६४. a खडायता म. खडेर म. खडोल म. b काठ्ठुरा क, कठिणुरा म. काकिला अ. c नाइल क, नाइल म. d लाडूया क, लाडूआ म.

६५ b जाल्हरा म. जांगडा क म. c धाकडीया म. भडीया म भुगडा क. भूंगडा म. d ब्रम्हाणा क, ब्रह्माणा म. वीडू क. वीधू म.

६६. a गोभू क, गांभू म. अडालिजा म. गहगहिइ म. b वलि म. d सुहुडवाल नि मंडेअरा क. सुहडवाल नि मंडेउरा म.

६७. a अछति अछतिवाल सुरहीआ क, अच्छति अच्छतिवाल सुरहिआ म. b मापर क म. कंबोआ क, कंबोजा म. करहीआ क, करहिया म. c पोरोआड क, पोरूआड म. सोरठीया म. d पल्लीवाल म. न्याति क.

मंडाहरा मंडोरा जाणि, मेवाडा वाल्मीक वखाणि ।
वाह्मा चित्रावाल वघेर, नरसिंगुरा सिरिखंडेर ॥ ६८ ॥
भाभू नागद्रहनी ज्ञाति, अगरवाल बायरनी जाति ।
चिणधुरा वेसुर अस्थिकी, अष्टावग्गी कइ पद्मारकी ॥ ६९ ॥
गोलवाल नागुरा नरा, वीरोटा साचउरा खरा ।
मोढेरा जेराणा पाहि, नीमा ज्ञाति कही जगमाहि ॥ ७० ॥
कथ्ररीया, कोरंटावाल, दोहिल सोनीसोध मयाल ।
राजसखा नइ लहुडी[सखा], वडीसखा चउसखा दोसखा ॥७१॥
सूराणा राजुरा जोइ, मेडतवाल मंडोरा होइ ।
आणंदुरा न गणइ रेख, वली ज्ञाति वागड् विशेख ॥ ७२ ॥

वस्तु

ज्ञाति निरमल ज्ञाति निरमल ज्ञाति निकलंक ।
ज्ञाति वडी सविकहइ तणी, ज्ञाति कोइ नाह्नी म जाणु ।

---

६८. a मडाहडा क म. जाणि क. b वषाणि क, वषांणि म. c वांटा क, छाग म. चत्रागाल क d नरसंगुर म. सरपडेरे क, शरपडेर म.

६९. a भासू क, भूसा म. नागदहिनी क. न्याति क म. b अग्र-वाल क, उग्रवाल म. c वघणुरा क म. वीसर क, वेंसुर म अष्टकी क. d अष्टवर्गी क, अष्टवग्री म. के क, कि म पदमारकी क, पद्मोदकी म.

७०. a नागुहरा क. b वेरोटा क, तेरोढा म. साचुरा क म. c मोडेडा क. d न्याति क. वडी कहिवाइ क, वडी जगमाहि म.

७१. a कथ्रउडीआ क, वघ्रढीया (पाठा०थी कथ्रउटिया,) म. कारंटा-वाल म. b दोहल क, दाहिध (पाठा० थी 'दाहिल) म. सोनीसाय म. c राजासपा क. नि क म. लहुडीसपा क म. d चुसपा दोसपा क, दोसप चुसपा म.

७२. a राजरा क. b मेलितवाल म. मुडेरा म. d न्याति म. वागलीम विशेप म.

७३. a नर्म्मल क, निर्मल म. (क प्रतमां बेवडावी नथी.) निर्मल म. b श्याति क. नकलंक क, निकल्क म. c विही क. कहि क म. b न्याति म. कोय क. नाहनी क, नाहानी म. मि क. जाणु क, जाणउ म.

जे अवसरि वित वावरइ, वसुह मज्झि तसु वड्ड वातु।
ज्ञातिमाहि नर केतला, सकल ज्ञाति-शिणगार।
बिरद बोलावइ वंदिणा, महाजन राइ साधार ॥ ७३ ॥

चउपई

बोल्या वर्ण विशेष अढार, तेहनु केतु कहिउ विचार।
वर्ण अढार सहु मुखि कहइ, विगति विवेकइ विरला लहइ ॥७४॥

व्रत करीनइ ब्राह्मण जाति, करि हथीआरे खित्री ज्ञाति।
करसणकारक वैश्य कहाइ, नाटकीया नर सूद्र कहाइ ॥ ७५ ॥

ब्रह्मचर्य पालइ तप करइ, काकरि कनक समी मति धरइ।
सर्व जीवनइ आणइ दया, सकल ज्ञाति मांहि ब्राह्मण कहिया ॥७६॥

सूरवीर विक्रमना धणी, बहु आरंभ परिग्रह भणी।
निर्दय कर हथीआर वखाणि, सकल ज्ञाति क्षित्री अहिनाण ॥७७॥

---

e त्रित्त क. वार्गरि क. f वसुह मज्झि तस वडउ वातु क, वसुह मद्धि वेहतु वातु म. g -माहि क म. h न्याति म. -सिणिगार क, -शणगार म. i वोलि क, वोलावि म. वदीजणा क, वदिणह म. j माहाजन क म. राय क म. पाठा० थी 'सधार' म.

चुपई क, चुपै म.

७४. a वशेषि क. b वहू क म. c सहू क म. मुखि क. d विगति वशेषि वरला लहिं क; विवेकिइ म.

७५ a व्रति क, व्रतिइ म. नि क म. बभणि क. ज्ञाति क म b कहि म. हियीआरे क. क्षत्री म. यात्ति क, जाति म c करसणकारी क म. d नाटकीआ क. शूद्र क म. भणइ क.

७६. ब्रम्हचर्य क. करि क. b काकर क. कनकि म. समय क. मनि क. धरि क. c सकल म. जीवनी क म. आणि क d ते ('माहि' ने स्थाने.) क म. ब्राम्हण क.

७७. a शूरवीर क म. b बहू क म. परिग्रह क म c निरदय क. करि क म. वखाणि क, वखाणि म. d न्याति क म. क्षत्रि म. अहि-नाणि क, अहिठांण (पाठा०थी अहिनाण) म.

करसण कर्म्म सकल व्यवहार, सुकुली डाहा पंडितमांह ।
जाणइ कला करइ व्यापार, सकलशाति ते वैश्य विचारि ॥७८॥

मूरख अव[र] समारइ अंग, नीच कर्म नाटकनु रंग ।
जेहना राछ-निखर निरखीइ, सूद्र सकल ज्ञाति पेखीइ ॥ ७९ ॥

ब्रह्मा-मुखथी ब्राह्मण हुआ, बाहु थकी ते खित्री हुआ ।
वैश्य हृदय उतपत्ति वखाणि, प्रगटिया सूद्र पयथी जाणि ॥ ८० ॥

कंदोई काछीआ कुंभार, माली मर्दनीआ सूत्रधार ।
भइसायत तंबोली सार, नवमा नारू सुणि सोनार ॥ ८१ ॥

गांछा छीपा नइ लोहार, मोची चर्म करइ व्यवहार ।
ए चिहु ऊपरि बोल्या सई, पंच ज्ञाति ए कारू कही ॥ ८२ ॥

जेहनुं विवाह जेसिउं मिलइ, तेहनी ज्ञाते तेहनइ मिलइ ।
नीच कर्म्म अति नीच कहाइ, वर्ण अढार ए हिंदूमांहि ॥ ८३ ॥

---

७८. a कर्म क म. व्यवसाय क म. b कुशली क. सकली म. डाहु क म. -माहि क, -मांहि म. c करि क. कमां "जाणइ सकल कला वव्यहारि", 'जाणइ कला करी व्यापार' (पछी पाठा०थी अने मळतो पाठ); जाणइ कुल व्यापार अपार (पाठा०थी अनो पाठ) म. d याति क, न्याति म. वचारि क. उदार म.

७९. a अवर क म. समारि क म. b नाटकनु क म. c जेहनां म. नघर क. देवीइ क म. d शूद्र क. जाति क.

८०. a ब्रम्हा क. मुखिथी म. ब्रामण क. हूआ क म. b थिकी म. क्षत्री क म. जूआ क, भया म. c रदय क. उतपति क. वयाणि क. d प्रगटया क. शूद्र क म. पायथी क, पागथी म. जाणि क.

८१. a काछीआ म. b सूत्राह म. c भिसाइत क, भिइसाइत म. d तुसु क म. सुणि क म.

८२. a नि क म. लुहार म. b चर्मकरि क, चर्मकार म. c 'ए' क मां नथी. चहू क, चिहु म. बोला क. ते सहीई क; सही म.

८३. a जेहनु क, येहनु म. वीवाह अ; जेसु वीवाह मलि क, वीह्रा येहशू मिलइ म. b तेहनी क म. न्याति क म. तेहमाहि क. तेमांहिइ म. मलि क, मिलइ म. c नीचे म. करमि क, कर्म म. ते नीच क. ['अति' अथवा 'ते' नथी म मां] d वरण क, वर्ण म. अढारइ क, अढार म. हीदूमांहि क, हीदूमाहि म.

को जिनवर को ईश्वर ध्याइ, कइ ब्रह्मा के गोव्यंद गाइ ।
वर्ण वखाणइ मारगि रह्या, असुर वर्ण ए अलगा कह्या ॥ ८४ ॥
नव नारू नइ कारू पंच, वर्ण च्यारे ओजो प्रपंच ।
ए[त]लइ मिलीअ वर्ण अढार, चालइ सकल लोकव्यवहार ॥८५॥
बौद्ध सांख्य नैया[यि]क नाम, जैन अनइ वैशेषिक ठाम ।
जैमिनीय छ दरसणि जोइ, मारगि धर्म्म चलावइ सोइ ॥ ८६ ॥
छ दरसण ए वरतइ भेद, सोल सोल एकेकइ भेद ।
सोल छक छन्नुं पाखड, प्रगट्या पृथिवीमाहि प्रचड ॥ ८७ ॥
खडि खडि छइ मति निर्मली, भणता सुणता संपति मली ।
मुनि लावण्यसमयची वाणी, एतलइ बीजु खड वखाणि ॥ ८८ ॥

इति श्रीविमलप्रबंधे नवखडे ओसवंसस्थापना अवर ज्ञाति-प्रगटीकरण *अष्टादशवर्णव्यवस्था षट्दर्शन[ा]भिधाने द्वितीय खड* समाप्त. ॥ २ ॥

---

८४ a के क म के क म b के क म ब्रम्ह क गोवद क c वरण क वषाण्या क म. d ते क म. रह्या अ

८५ a नि क म b चारिना क, च्यारि म जोइ क जोव्यो म c एतलि क मलीआ क, मिल्या म. d चाली क व्यापार म

८६ a बौध्य म साख्य म नीआक क b जैन म अनि क विशेषक क वैशेषिक म ठाम म c जेमनी क जैमनीय अ म दरसन क, दरसण म धर्म क म चलावि क म

८७ a दरसन क वरति क वेद क म b इकेकि क, एकेकि म भेदि क c छक क छनू क छनउ म d प्रगटया क प्रगटयां म पृथवि क

८८ a छि म नरमली क b शुणता क सपद क, सपत्ति म वली क, मिली म c वाणि क d एतलि क म बीजु क खड म वषाणि म

कनी पुष्पिका –इति श्रीपडित लावण्यसमिगणिकृते । विमलमनमनोहरप्रगट प्रबधे । नवरंग नवखडे । द्वतीय खड सपूर्ण ॥२॥

१ मनी पुष्पिका –

इति श्री विमलप्रबधे उसवशस्थापना, प्राग्वाट वश स्थापना अवर ज्ञाति नाम प्रगटीकरण, अष्टादश वर्णव्यवस्था, षट्दर्शनाभिधाने द्वितीय खड ॥२॥
श्री । श्री । श्री ।

खंड ३

[चउपई]

चउसठि सहस आठ लख होइ, द्वापरि वरस विमासी जोइ ।
द्वापुर पूरु पहुतु सही, श्रीउर भिन्नमाल तव थई ॥ १ ॥
चउथउ युग हिव लागु जाम, प्रगटिउ भिन्नमाल तव नाम ।
कलियुग नाम कहावइ सोइ, जिहां गुण किजइ अवगुण होइ ॥२॥
ते कलयुग बोलिउ जगदीस, च्यार लाख नइ सहस बत्रीस ।
वरस पतलां चडिउ प्रमाणि, सहिजइ लहीइ सेव्यां दान ॥ ३ ॥
नित्य धर्म्म ते पर्चि गयु, तप करवुं ते कपटि थयुं ।
राजा मनि वंकडा अपार, ब्राह्मण हाथि लीइ हथीआर ॥ ४ ॥
सत्य शोच नहि सुहणामांहिं, पृथिवी सदा सफल नहि माइ ।
लोक घणा ते लंपट थया, घरि आचार हता ते गया ॥ ५ ॥

चुपई क, चुपै म.

१. a चुसठि क म. सहिस क. लाप क. होय क. b द्वापर क. वास विमासि क, वरस विमांशी म. जोय क. c द्वापर क पूरु क. पुहुतु क. हौउ म. d भनमाल क. हूई क, प्रही म.

२. a चुथु क, चुथउ म. हवि लागु क, आ लागु म. जांम म. b प्रगटिउ म. भिनमाल क भिल्लमाल म. तस म. नांम म. c कुलयुग क. नांम म. कहावि क म. सोय क c जिहा क, यहां म. गण क. कीधि क, कीधिइ म. अवगण क.

३. a कुलयुग क, कलियुग म. बोहलु क, बोहिलु म. यिगदीस क. b च्यारि क म. नि क म. सहिस क. c वडउं क, वड्‌ई म. प्रमाण क, प्रमांण म. d सहिजि क, सहजिइ म. सेवा क, शेवा म दांन म.

४. a धर्म क म. म मां 'ते'ने स्थाने 'तप'. पर्ते क, सर्वे म. गयुं अ म. b करवु क, करवू म. कपटे क म. थयुं क, थयू म. d ब्राम्हण क. लीइभे क. हथीआर क, हथीयार म.

५. a साचशोच क, स्नान शौच म. नही क, नहीं म. सहुंणा क. -माहि क. b पृथवी क. फलदीणी क. 'नहीं' क मां नथी. -माहि क.

संत सीदाइ सविहु परे, खाजइ पीजइ दुर्जन घरे ।
करइ कर्म केतलां कठोर, लूसइ प्रथिवी पयसइ चोर ॥ ६ ॥

पुत्र पिता न करइ वीसास, धणी थई पइसइ घर-दास ।
वहूअर सवि वीजावइ वाय, नवि लागइ सासूनइ पाय ॥ ७ ॥

घरकइ तरकइ मांडइ वेढि, मोटा घरनी आणी छेढि ।
कांई न करइ घरनुं काज, ससरा तणी न आणइ लाज ॥ ८ ॥

सरंगट बोलइ फणगट दीह, सासू ससराथी नवि बीहइ ।
पिण पयसइ परण्यानइ कानि, छाली कहिउं अह्मारुं मानि ॥९॥

छोरू घरि कूआरां सात, कहिनु तात नइ कहिनी मात ।
रलइ रपइ तुंह जि घर भरइ, ते खाई घर ठालां करइ ॥ १० ॥

आपण विहुं जण केहु वरो, माह्मारु बोल मानु खरु ।
मायबापथी थायु जूआं, घन मेलीनइ भरीइ कूआ ॥ ११ ॥

---

६. a–हू क, –हु म. b पाजि क, पाजइ म. पीजि क. c करी क. केतला क d लूसि क. पृथवी क, पृथ्वी म. पयसि क, पिसइ म.

७. a पता क नि क. करि क. वीसास क म. b थईनि म. वइसि क, बिसि म. घरि क. a वीटावी क, वीजावी म. वाय क म. d सासूने क, सासूनि म.

८. a घरकि क. माडइ क. b आणी म. c कोअ नव नवं करि क. कर्कुंचि न करि (पाठा०थी कउ अछि न करि) म. घरना क, घरनू म. d आणि क, आणइ म.

९. a सरगट क. बोलि क म. फरंगट क म. देइ म. b बीहि क, बिहइ म c प्यणी क, क्षणि म. पयसि क, पइसइ म. परण्यानि क म. d कहु क अमारू क, अह्मारू म. मानि म.

१०. a छेरु क. कुआरा क, कूआरां म. b कहिनी क. मात क. 'नइ' कमां नथी; नि म कहिनु क. तात क. c रलि क, रल म. पपि क. (ममां नथी). d तुह ज घरि भरि क, तूह नि ते घर भरइ म. घरि ठाला करि क, सहु ठाल्ह करइ म.

११. a वेहू क, बे म. केरु म. वरु क म. b मांनु म. अम्हारु क, अह्मारु म. c थाउ क म. d मेलीनि क म. भरेसु क.

रात्रिदिवस रलसिउं घर भणी, किसी वात मावीत्रह तणी ।
राछपींछ घरि पीहर तणां, आणी घरि भरीसइ घणां ॥ १२ ॥

मोटी छोटी मानइं मात, मइ पीहरनी मोटी वात ।
वहूआरीने बोलें फरिउ, बाप बोलावइ रोसइ भरिउ ॥ १३ ॥

कहु काका करगर सी करु, सिउं करसिउ तेडीनइ अरु ।
वेगि वछ चालि वांकडुं, तुणि तणउं छइ घरि सांकडुं ॥ १४ ॥

बेटउ बोलइ वागड बोल, विनय गयु सिरिमांहिं निटोल ।
मइं नवि चालइ घरनु भारु, करिसिउं अहे अलगु व्यवहार ॥१५॥

मायताय तव पडयां गराण, पुत्र तणउं अह्म टलि पराण ।
जोज्यो कलियुग करणी अस्यां, मायबापे दुख सह्यां छइ जिस्यां ॥१६॥

---

१२. a रातिदवस क, रातिदिवस म. रलसु क, रलशूं म. घरि क. b कसी क, किशी म. मावत्रह क, मावित्रह म. c राछपीछ क म. वरि क, मह्म म. पीहरि क. d आणी क म. पर क म. भरसु क, भरेशूं म. आपणां क.

१३. a डोटीकीटी क, डोटी छोटी म. मांनइ क, मांनि म. b मह्म क, मुझ म. c वहूआराने म. फिरिउ म. d बापि क. बोलाविउ क म. रोसि क, रोशिइं म. भरु क.

१४. a कुहु म. करगर शी म. b सु क, शू म. करसु क, किहिशू म. तेडीनि क म. अहर क, अरहु म. c वेगिइ म. वच्छ म. टाले क, वलिउ (पाठा०थी बोलिउ) म. वाकडु क, वांकडु म. d तुंणि क, तुहि म तणु क तणउ अ. घर छि म. साकडु क सांकडू म.

१५. a बेडु क. बोलि क म. वांगड म. b वनय क. सरमाहि क. नि हुउ म. नटोल क. c मइ म. चालि क. भार क. d करसु क, करशू म. अम्हे क.

१६. a मायतायना ढल्यां गरांण म; पडया गराण क. b तणु अम्ह टलि उपराण क, टलीयु पुत्र तणउ उप्रांण म. c जोउ क. कुलयुग क, कलयुग म. इसा क, इशां म. d मायवाप क मायबापि म. दुष क म. सह्या अ, सहहीआ क, सहीआं म. 'छइ' क ममां नथी. क़स्या क, किशां म.

देवदेहराडे मानइ भोग, माततात मिली संयोग ।
पुत्र तणउं आविउं आधान, छठइ मासि करियां पकवान ॥ १७ ॥
जासक जिमण जमाडइ सहू, गाई रंग वधारिउ बहू ।
दश मसवाडा दोहिलु धरिउ जणिउ पुत्र किम पोढ करिउ ॥१८॥
पहिलुं माता मेल्हइ लाज, प्रगट पयोहर कीधा आज ।
प्रेमिइ पुत्र तणइ मुखि ठवइ, लीधु खोलइ रोतु रहइ ॥ १९ ॥
जण जोइ नइ योगिणि गाइ, धवल दीइ धूतारी जाइ ।
दिइ टोपरां लाडइ गुल घृत, बोलइ मधुरां वचन अमृत ॥ २० ॥
मायताय तव हरखि भरयां, धन वेची घर ठालां करयां ।
जोज्यो धन बेटानउं हेज, मायबाप बिहु अलगी सेज ॥ २१ ॥
बेटानां धोयां मलमूत्र, जाणिउ राखेसिइ घरसूत्र ।
झोली बांधी दिन बारमइ, फूली फईअर जासक जिमइ ॥ २२ ॥

---

१७. a -देराडे क, -देवाडे म. मान्या क, मान्या म b मायताय म. मलिआ क, मिल्यां म. सयोग क. c तणु क. आविउ म. आधान म. d छिठि क, छठ्ठइ म. मास क, माशि म. करिया अ, करिउ म. पक्वांन क म.

१८. a जमण क, यमण म. जमाडिउ क, यमाडिउ म वहू म. b गाई क म. वधारिउ अ, वधारु क, वधारि म. सहू म c दस क म. दिहिलि क धरु क, धरउ म. d जणु क यणिउ म. किम पोढउ क, नि पोढउ म.

१९. a पहिलु म. मेहलि क म. लाज्ज क b पयोधर क म. कीधु क c प्रेमि क, प्रेमिइ म मुख्यि क ठविउ क. d लईं क, लेईं म. पोलि क म रापविउ क, राहनि म.

२०. a जन क. जोइनि क म योगणि क, जोगिणि म. b देइ म. ध्रतारी क, धुतारी म. c दिउं क, देउ म. लाडू क. लाडु म. (गुल' मर्मां नथी.) d बोलिइ क म मधुरा अ. अमृत्त अ.

२१. a मात तात म. मनि हरषि क, तव हरषिइं म. भरिया क, भरियां म. b करियां क करिआं म c जाण्यो क. जिन बेटांनां क, ते बेटानां म d बहू क, बिहू म सेजि क, शेज म.

२२. a बेटाना अ धोआं क. b जाणिउ क, जाणिउं म. राखेसि क, राखेशि म. c बाधी क. बारमि क. d यमइ म.

साजन हरखि हीयइ हसिउं, नाम ठविउं नारायण जिसिउं ।
मस्तकि टोपी मदफू तणी, करि कडली ते फैअर तणी ॥ २३ ॥

मोटां मादलीमां वांकडी, पाए पहिरी अति मोजडी ।
अलजईआं आण्यां आंगुलां, काने कनक तणा वेढला ॥ २४ ॥

पाए घूघरडी घमघमइ, वालूथड्ड ते अंगणि रमइ ।
साहमू जोइ करती काम, माडी हीइ धवारइ ताम ॥ २५ ॥

जई वलगइ आलिंगणि अडइ, प्रेमइ पूरी पान्हउ चडइ ।
घुसट करी धवारइ माइ, पालणडइ पुढाडी जाइ ॥ २६ ॥

करइ काम हालरूडां गाइ, माता-हीइडइ हरख न माइ ।
पोढउ थातु पगलां भरइ, पंच वरस जु वुल्यां परइ ॥ २७ ॥

माततात तव करइ विचार, वेटउ आविउ कुल-सिणगार ।
कांई उछव कीजइ नवु, हवइ सुत नेसालइ ठवु ॥ २८ ॥

---

२३. a साजण हरिपउ हीअडि क; हसउं अ; साजन हीअडि हरषिउ इश्यं म. b ठविउ क. जसिउ क, यशउ म. c मदफू पणी म. d फ्रइअर क म. भणी क.

२४. a मोटा अ क. मादलीआ क. वाकडी क. b पाय क, माय म. तणइ मानि मोजडी क, तणि मानि मोजडी म. c आण्यां म. आगल्या क, अगला म d वेटलां म

२५. a घुघरडी म. घमघमि क b वालुअडउ क c साहामू म काम म d माडी क. हैअडी म धरती वइ क, धरती म हाम क, हांम म

२६. a जै म वलगि क. आलगणि क, आल्यघन म अडि क b प्रमि क, प्रेमिइ म. पानु क. पाहानु म चडि क c घुमट म धवारि क म. माय क. d पालणडि क. पुढीटी क, पुढाडि म. जाय क.

२७. a करि क काम म. हालरडा क हालरडा म b हीअडि क, हैअडि म. हर्ष म. d जर म. वुल्या अ, वुला क. परि क

२८. a करि पचार क b आवु क शणगार क म. c काई म. उच्छव म. कीजि क म. d हवि क, हव म. नेसालि क, नेसालं म. पाठवु क, पाठउ म.

मूरख पुत्र न आवइ काजइ, मूर्ख कोइ न मानइ राजइ ।
हंसमाहि बग वइठउ जिसिउ, पंडित पासइ मूरख तिसु ॥२९॥

मेल्या सज्जन केरा घाट, मोटा मोदिक केरा माट ।
सालि दालि प्रीसइ घृत घोल, पांति वइठा करइ कलोल ॥३०॥

चोआ चंदन फोफल पान, मंडपि मोटां दीजइ दान
भरीआ सुंडल धाणी चिणा, साथि खडीआ लीधा घणा ॥ ३१ ॥

फूल तणा तव भरीआ पगर, जोवा मलीउं सारूं नगर ।
खुंप भरावी घोडइ चडइ, मुंगल भेरी भली गडअडइ ॥ ३२ ॥

चालइ महाजन मोटइ जंगि, सुत नेसालइ पहुतु रंगि ।
अध्यारू आगलि जई रहिइ, पाटी खडीउ लेखण लहइ ॥ ३३ ॥

कर जोडावी राखिउ ध्यानि, कहिउ मंत्र सारस्वत कानि ।
सकल शास्त्र-धुरि माई लखो, नेसालिआ करवा सवि सुखो ॥३४॥

२९. a आवि क कजि क, कायि म. b मूरष क म मानि क, मानइ म. राजि क म. c माहि म बिठउ क म. जसिउ क, यशउ म d पासि क. तसिउ क तिशउ म

३०. a मेला क साजन क म. थाट म. b मोदक आणी भरीआ माट क, मोदक करी भराव्यां माट म. c शालि क. प्रीसि क, प्रीसइ म d पातिइ म बिठा क म. करि क म. कल्लोल म.

३१. a चूआ क, चोया म. पांन म. b मोटा अ क. दीजि क. मान म. c भरीयां म. सडल क. चणा क. d साथिइ म. खडिया म. लीधा क म. धणा म.

३२. b मिलिउं क, मिलीउ म. सारु क. c षुप क म. घोडि क म. चडि क. d भूगल क. भेर क म. गडमडि क.

३३. a चालि क, चालिइं म. माहाजन क म. मोटा क. रंगि म. b नेसालि क, नेसाल म. पुहतु म. चगि म. c अध्यारु क. जं म. रहि क, रहइ म. d षडीआ क. लहि म.

३४. a ध्यांनि म. b कांनि म. c धरि क. लिपी म. d कराव्या म. 'सवि' क मर्मा मधी. सधी क.

आल्या सहीआ शचि सुराही, गाइ गोरी गर्वि चडी ।
पहिरयां मेलावइ पोतीयां, पंडित पहिराव्यां धोतीआं ॥ ३५ ॥

सूत्र सूत्र मागइ आरंभ, पंडित मांडिउ मोटउ दंभ ।
लोभी हुइ बांभणनी जाति, पंडित ताकइ घर-मीराति ॥ ३६ ॥

भणतां अक्षर न चडइ मुखे, जाणे पंडित मारइ रखे ।
छानुं छपनउं चोरी करइ, पुत्र पंडयानुं घर भरइ ॥ ३७ ॥

पुत्र पुढाविउ लखिमी माटि, वाणि सीखवा मेलाइ हाटि ।
परणाविउ जव पोढउ थयु, आतुं पोतुं सरची रहिउ ॥ ३८ ॥

तालुं तां संवडिउं रहइ, जिहां कुंची मारग नवि लहइ ।
कुंची सरसी आवी वहू, घरि भंगाणुं पाडिउं वहू ॥ ३९ ॥

रातिदिवस नव परहुसीउ, सोनाने कुले पोसीउ ।
ईणी परि कीधो घरनी फेडइ, बेटइ नीछोडिउ नीमेडि (?) ॥४०॥

---

३५. a पहिआ क, पहीया म. सचि क म. सुपही क म. b गाई क. गोरी म. गर्विइ म. c पहिर्या अ, पहिलुं क. मेल्हा क, मेहलाव्यां म. पोतीया अ, पोतीआ क. d पहिराव्या अ. धोतीआ अ, धोतीया म.

३६ a सुत्रि सुत्रि क म. मागि क. b पडि क. माडिउ अ, माबइ म. मोटु क. c ब्राम्हण क याति क. d पडिउ क.

३७. a चडि क म. मुखे क म. b जाणि क, जाँणि म. पडिउ क. मारि क म. c छानु म. वछनउ अ, छपनु क, विछनु म. करि क. d पिडयानु अ, पडानु क, पडयान् म. जइ घर भरि क.

३८. a लषमी क. माटि क. b वाणि म. सीषवी क, सीषववा म. मेहल्देउ क, मेहलिउ म. c पोढु म. थिउ क. d आतूपोतू म d वेची रहिउ क.

३९. ताल्ह क ताल्ह म. सा क. सडीतु अ क. रहि क. b जा क, जां म. कूची म. मारगि नवि मारिग नवि लहइ क. c कूची म. विहू क. d भगाणु क, भगाणउ म. पडिउ क, पडीउ म.

४०. रातिदवस मनि परहूसीउ क; ते पर हुशीउ म. b सोनावेकुले क, सोनाने फूले (पाठा० कूले) म. पोसिउ क, पोशीउ म. c इणी क, एणी म. कीधु क. घरनु फेड क, घरफेडि म. d थबेटिनी क; पोडिउं क; बेटइनी मेडिउ नीमेडि म.

आज अह्मारइ वडपण इसिउं, बेटउ बोलइ छइ प किसिउं ।
वलतु बोलइ साम्हउ धसइ, जई बेटउ अनेथइ वसइ ॥ ४१ ॥
वहुअरना तव माग्या पडिया, मन-चींतव्या मनोरथ चड्या ।
सासू पडती बइसइ पाटि, वहू बइसइ खुंखारी खाटि ॥ ४२ ॥
तुम्हे जोउ कुलयुगनु व्याप, चिसा अढार जि वरतइ पाप ।
धरती इढविसु धर्म्म जाणि, सत्य वली अधविसउ वखाणि ॥४३॥
साठि वरसना डोसा जेथ, तरुणी कन्या परणइ तेथ ।
खत्री सेसि वालइ गाइ, म्लेच्छ वली मूं[का]वा धाइ ॥ ४४ ॥
न गण[इ] घरमाटी कुण मात्र, नारि ऊजाई जोया जात्र ।
घरना वालक मेल्हइ बारि, चपलपणइ हीडइ संसारि ॥ ४५ ॥
गुरु सूधा नवि दीइ उपदेस, चेला आणइ गुरु सिउं खेस ।
योगी योगणि नकटां थाइ, जोउ कलयुग तणउ पसाइ ॥ ४६ ॥

---

४१ a अमाहरु क, अह्मारू म. असिउ क, इस्य म. b ए बेटउ क, वेटइ म. बोलि छइ क. कसु क c वलतूं क, वलतइ म. बोलि क. साहसु क, साम्हउ म शसि क, धशउ म. d जं म अनेथि म. वसि क, वशउ म

४२. a तवि क. पड्या क म. b मनवछित म. फल्या म. c पडता म. विसि क, विसइ म. d वयारी विसि पाटि क; विसि म.

४३. a तमे म, तुम्रे म. कुलयुगनी क, कलियुगनु म. b वसा क, ज क. वरति क. c धरमी म. वसु क, विशउ म. धर्म क. मनि जाणि म. d अधरसु क, अध व्यसउ म. वपाणि क, वपाणि म.

४४. a वरसनु क. डोसा क. येह म. b परणि क, परणइ म. तेह म c पित्री क, क्षत्री म पेसि क, पेसिइ म. वालि क. d मूकावा क, मूकावा म. धाय क, जाइ म.

४५. a गणि क, गणइ म. घरिमाटी क. c घरनां क म. वालिक क. मेल्हि क, मेहलि म. d चपलपणि क. हिडि क.

४६. a दि क, दिइ म. उपदेश क. b गुरु सिउ आणि क; गुरुस्यु म. c जोगी क म. योगणि क, जोगिणि म. नगटा क. d जूउ क. कुलयुग क, कलियुग म. तणु क. पसाउ म, पसाय क.

मांकड कुकड किंनर वहइ, योगी योग-मारग नव लहइ ।
व्रत नवि पालइ सूधां व्रती, अघवलती ते नासइ सती ॥ ४७ ॥

गुरु चेला चेली महासती, करइ वात जे मनि भावती ।
आपआपणा श्रावक कहि मारग अवर अनेरइ रहइ ॥ ४८ ॥

थापिणि थापी हाथोहाथि, नवि आलइ नु आवइ हाथि ।
पर सिउं प्रेम घणां सूसणां, बंधव सज्जन साथि रूसणां ॥ ४९ ॥

अल्प खीर ते मेल्हइ गाइ, उत्तम मध्यमनइ घरि खाइ ।
वारू ब्राह्मण हेरा करइ, लोभी अधम हेठि कर धरइ ॥ ५० ॥

चउवटीआ थापइ अन्याय, लीइ लांच हरखइ मनमाहि ।
सोविन झलकावइ वेढ, वारू विणक वुहरावइ देढ ॥ ५१ ॥

कलयुगि वात असंभ[म] करी, लेई वित्त वेचइ दीकिरी ।
वाछलडीनइ धावइ गाइ, प दृष्टांत हुऊं कलिमाहि ॥ ५२ ॥

---

४७. a मावड क. कूरड म कीदर क वहि क. b मारगि क रती म नव क. c व्रत सूधा नवि पालइ व्रती म. d अघरच मूकी जाइ यती क, अघविचि जाइ छाडी यती म.

४८ a माहासती क b करि क ये म c कहिया क वहइ म d मारगि क अनेरा क, अनेरि म रिहिया क

४९. a थापणि क, थापिणि म. आपी क, आपि म b आलि क. जउ क. आवि क म. वाथि क, वाथी म c परसि क परशू म c नूसणा क; प्रेम करइ अति घणा म. d रुसणा क; बंधव साथि घरा रुसणा म

५० a धीर क म मूकि क, मेहलइ म गाय क. b मध्यमनि क म पाय क, पाइ म c वारु क. मामण क. हेरा क म करि म d लोभिइ म. धरि क

५१ a चुवटीआ क, चउवटीया म थापि म. b मनि हरष न माय क, -मांहि म. c करि क म. झलकावि क. सोवन वेढ क म d वारु क वणग क, वणिक म वुहरावि क, वुहावि म

५२. a कुलयुग क, कलियुगि म. असभम क म b वत्त क, वित म. वेचि क, वेची म. दीकरी क म c वाछडलीनि क, वाछडलीनि म. धावि क म. गाय क. d द्रष्टांत हुऊ म, हूआ क, हूआ म. जगमाहि म.

छ दरिसण ते छंदा करइ, जाणइ पात्र अह्मारां भरइ ।
उत्तम नमइ नीचनइ पाय, वरतइ वरस वीसासु आयु ॥ ५३ ॥

धर्म्म तणी थोडी वासना, अनइ मृत्यु आणइ आसना ।
दीसइ जेह घणी घातली, भावि भगति करइ पातली ॥ ५४ ॥

महीयां मोटी मांडइ वात, जाणुं सोवन रूपा धात ।
फाडइ पाडइ भोला लोक, धूतारा धूतारइ फोक ॥ ५५ ॥

करइ पुण्य के दिन नइ राति, तेहनी करइ निरंतर ताति ।
न टलइ देव अनइ गुरथी, खाइ गरथ चडइ जे हथी ॥५६॥

राइ राणा ते रूध्या छले, खित्री नासइ दीठे दले ।
न्यायी नृप थोडइ परिवारि, निष्फल मंत्र घणा संसारि ॥ ५७ ॥

दाता नर दारिद्री घणा, कृपण तणइ घरि [नही] ऋद्धि मणा ।
पापी जीवइ धर्मी मरइ, कामधेनु ते ओसर करइ ॥ ५८ ॥

---

५३. a द्रिसण अ, दरशन क, दरशण म. छदो क छादा म. करि क b जाणु क, जाणइ म. अह्मारा अ, अमाहरा क

५४ a धर्म क. b अल्प क म थोडी क. आवि म c दीसि क. देह क म. d भाविइ म. करि क

आ कडी क म मा '५७ मी छे

५५. a महीआ क, मुहीया म. माडि क, माडइ अ. b जाणउ म. सोनिन म. रुपा क. c फाडइ क म पडइ क धुतारि क म

५६. a करि क नि क म. b तेहनीव करि नरंतर क, करइ निरंतर तेहनी ताति म. c टलि क म. गुरु न टलि देवथी क म d पाइ म. गुरुनि क. चडि क, चडे म.

c d लीटी क मा ५६ मी कडीनी बीजी लीटी छे.

५७. a राय क. रुध्या क, रुध्या म. b क्षत्री म नासि क, नाहासि म c न्याइ क. थोडि क म d निष्फल म.

५८. दालिद्री क. b कृपण म घरि नहि थाइ मणा क, घरि नही रिधि मणा म a जीवइ म. धरमी क. d कामधेन क म उपर क म. करि क.

जे जूठउ ते वखाणीइ, साचउ नर ते अपमानीइ ।
अलवि पइठा बोलइ मर्म, धोइ पातक करइ विकर्म ॥ ५९ ॥

मा देखी मुह पाछउं करइ, नारी देखी हीयडउं ठरइ ।
बेटा देखी मांडइ मोह, बाप तणउ आणइ अंदोह ॥ ६० ॥

कृतयुगनइ घरि त्रेता फली, द्वापरइ गाम नगरि को वली ।
कलयुगि नर वरला दातार, देशमाहि को दीसइ सार ॥ ६१ ॥

परना अवगुण काढइ घणा, दोष न देखइ को आपणा ।
हालइ बोलइ तेह्वा बोल, जाइ जूनी प्रीति निटोल ॥ ६२ ॥

थोडइ दानि घणां मनि मान, कुलमंडण थोडां संतान ।
गाजवीज घण थोडा मेह, वयर घणां नइ थोडा नेह ॥ ६३ ॥

कुलयुगि कुल-मारग छांडीइ, श्रावक नवला मत मांडीइ ।
के नावइ देहरइ पोसालि, मुनिवर देखी बोलइ गालि ॥ ६४ ॥

---

५९. a ये म. b सालु क म. उपमानीइ म. c अलवि क, आलिइ म. विठा म. बोलि क म. d धोइ पातक करि विक्रम क, हीइडि आणि न सकि धर्म म

ममां c d नो क्रम d c छे.

६०. a महु क, मुहु म. पाछु क. करि क. b हैअइ म. c मंडइ म. d तणु क नाणइ क म.

६१. a क्रतयुगि म. ('नइ' क ममा नथी.) त्रेता घरि क; घरि घरि म. b द्वापर क, द्वापरि म. गामि क, गामि म. नगर क. c कुल्युग क, कलियुगि म. वरलु क, विरलु म d देशमाहि क, देशमांहि म. लहीइ क, दीसि म.

६२. a अवगण म. काढिइ म: b देषि क म. c हासि क, हासिइ म. बोलि क. एह्वा क. d जूनी म.

६३. a थोडि क. दानि क, दांनि म. घणा अ. बहूमान क, अभिमान म. b कुलमडन क. c घणा अ. नि क म.

६४. a कुल्युग क, कलियुगि म. मारगि क. छाडीआ क, छांडीया म. b लोके क, श्रावकि म. माडीआ क, मांडीआ म. c नावि क. देहरि क, देहरे म. पोशालि म. d बोलि क.

गुरे भणाव्या धुरि हित करी, अमी समी विद्या नवि जरी ।
कलिना भाव कवीश्वरि कहिया, ते श्रावक गुरु साह्मा थया ॥६५॥
श्रावकनी धुरि थोडी जाति, कलियुगमाहि घणी पडी भाति ।
ते विहिचिणि आव्या जूजूआ, गणधर गछ चउरासी हुआ ॥६६॥
जां हुइ पर्व पजूसणमाल, तां सहू मांडइ डाकडमाल ।
मांहोमांहि मोटा थाइ, नाचइ खुंदइ गीत ज गाइ ॥ ६७ ॥
पछइ कोइ न दीसइ वली, वाटइ घाटइ भेटइ लली ।
लही अवसर तु अलगा टलइ, जाणइ यती रखे अह्म मलिइ ॥६८॥
मूंछ जि मरडइ मोडइ काय, वइठा फूलइ चउटामाहि ।
आवइ कोइ पही-परहुणइ, भार घणउ छइ घरि आपणइ ॥ ६९ ॥
घरि आणिउ आपणि वावरइ, नाम घणउं दीधानुं सरइ ।
कलियुगइ वात कही जेतली, कहितां नवि शोभइ तेतली ॥ ७० ॥

---

६५. a भणावा क. धरि क. हेति क. b अमीअ समाणी क. वाणी क. सरी क. c कलना क, कलि म. कविश्वर क. कह्या म.

६६. a धरि क. मोटी क. ज्ञाति क, न्याति म. b कुलयग- क. -मांहि म. पडी घण क म. c वहिचणि क. d गच्छ म. चुरासी क, चुराशी म. हूआ क म.

६७. a जा क. हूइ क. पसूअण म. काल क. b ता क. माडि, क, माडइ अ. डाकडमाल म. c माहोमाहि क, माहोमाहिइ म. थाय क. d नाचि क. घूदि क, घूदइ म. गेलि गाई क, गर्विइ जाइ म.

६८. a पच्छइ क. कोय क. दीसि क. b वाटं म घाटि क घाटं म. वली अ म. c लहि क म. तु क. अलगया क. टलि क. d रषे यती म. अम्ह क, अम म. मलि क, मीलइ म.

६९. a मूछ क, मूछह म. मरोडि क, मोडइ म. मरडि क, मरडइ म. b वयठा क, विठा म. फूलि क. चहुटा क, चहूटा म. -माहि म. c आवि क, आविइ म. कोय क. पही-परहणइ अ, पईपरहूणि क. d घणु क. अम्ह तणइ क.

७०. a आणिउ म. आपण क. वावरि क म. b घणु क, घणउ म. दीधानूं म. सरि क. धरइ म. c कुलयुग क, कलियुगि म. हूइ क. करि म. येतली म. d कहिता अ. शोभि क, शोभि म. तेटली म.

चाची बइठी करइ टकोल, आप वखाणइ योलइ योल ।
जे कहि पाइ पाणी पली. ते कियारइ पचारइ वली ॥ ७१ ॥

थोडा सकल विकल नर घणा, जाति-हीण ते सोहामणा ।
करइ कुथानिकि झाझु वग, कलियुगि को न रखिउ खरु ॥ ७२ ॥

घर्म तणां थानक सोदाइ, धर्मि पली न पाणी पाइ ।
दिई धंछइ वलतु अपगार, ते दीधातु किसु विचार ॥ ७३ ॥

घणा रोग थोडा संयोग, झाझी भावटि थोडा भोग ।
धन नवि खरचइ लोभी भणी, कूडी कीरति वंछइ घणी ॥ ७४ ॥

सुधी विद्या दीसइ नही, फल नीसरते झाझां सही ।
कपटी वेष धरइ कापडी, नर भोलाव्या भाजइ भडी ॥ ७५ ॥

जोउ कलयुग केरी कथा, जे वाणी बोलइ ते वृथा ।
जिमणी याचइ जे जे लवइ, पाणि ते सुधी थोडी पलइ ॥ ७६ ॥

---

७१. a चाची बयठी क, हाटे बिठा म. करि क. d वपाणि क. वोल क. c जु क. ये म. कहि क म. पाणी म. d ते क्यारि पचारि वली क, ते व्यहतां पचारि वली म.

७२. a विकल सकल क. b याति क. हीण नर सोहामणा क, हीन ते सोहि घणा म. c करि क. कथानक क, कुथानकि म. झाझउ क म. d कुलयुग क. केअ न पारप क. कोइ न पालइ (पाठा॰ थी पारखइ) म.

७३. a धरम क. तणा अ क. थानिक क. सीदाय क, शीदाइ म. b धरमि क, धर्मिइ म. पलीअ क. पाणि म पाय क c दि क, देइ म. उपगार क. म. d कसिउ वचार क; ते कलियुग तणउ विचार म.

७४. b भावठि क. थो[०] भोग क. c परचि कूडी कीरति क; कुडी म

७५. a विद्या थोडी ठामि क; थोडि ठाहि म. b नीरसि क, नीरस म. झाझा अ. धारामि क, संसारि म. c धरि क. d भोला नरनि जाइ भडी क, नर भोलावि आपइ जडी म.

७६ a जोग्यो कुलयुग क; जोउ कलयुगनी कथा म. b ये म. वांणि म. बोलि क म. c यिमणी क. यमणी म. वाचा क म. देई वलइ क म d ते पणि सूधी क; पणि ते सूधी थोडे म.

तु कहिनुं पडिउं देखइ तृणुं, तु मन लेवा हीडइ घणुं ।
जोउ कलियुग तणउ व्यापार, वाधइ लोभ रंक नइ राय ॥ ७७ ॥

यौविन माटइ मोडइ अंग, परनारी सिउं झाझु रंग ।
घरघरणी सिउं नावइ घाटइ, करइ वेढि नर फोकट माटि ॥७८॥

मनि मयला नितु करइ सनान, वधइ जीव नइ आपइ दान ।
धन ऊधारइ करणी करइ, विण आलि रणीउ थई मरइ ॥ ७९ ॥

धन पीआरूं जे घरि मलिउं, ते धन खातां लागइ गलिउं ।
मागइ धन नर आवी अडइ, धन माटइ पग आपी पडइ ॥ ८० ॥

जे जाणइ ए महारु मित्र, जाते दिन ते थाइ सित्र ।
वयरीनी परि वलगइ वली, रहइ मनमांहि घणउं परजली ॥ ८१ ॥

ए कुलयुगनी मोटी खोडि, कूडां चडइ कलंकह कोडि ।
खोटा सूझइ साचा वलइ, रस नीपना अलग जो ढलइ ॥ ८२ ॥

---

७७. a कहि क म. देपि क. त्रणु क, तृणउ म. b तु मनि लेवा हिंडि घणु क, तु लेवानि हींडि घणउ म. c जूउ क कुल्युग क केरु वाय क, केरु अपाय म. d नि क; लोभिइ वाधइ रंकह राय म.

७८. a यौवन क म. माटि माडि क. b परनारीशुं म. अतहि सु क. झाझा म. c घरघरणीशुं म. नावि क म. घाटि क म. d करि क.

७९. a मिला क म. करि क सनान म. b वधि क. जीव नि क. यीव नि म. आपि क म दान म. c ऊधारि क म. करणि म. करि क. d आलइ म. थई क, थै म.

८०. a धन्न म. पीआरु अ. पीआरूं म. ये म. मलिउ अ, मिलउ म. b पाता अ, पातां क म. लागि क. गलिउ म. c मागि क. नि आवी अडि क. d माटि क.

८१. a ये जाणइ ये म. माहरु क, माहारु म. b दवसे क, दिन म. 'ते' कमां नथी. शत्रु क, शत्र म. c विरीनी क. वलगि क. d रहि क म. मनमाहि घणुं परिजली क.

८२. a कलियुगनी म. b कूडा अ क. चडि क. कलंक क. c सूझि क. d निपना क. अई क. टलइ क.

क्षण क्षण पयसइ कलयुग-पूर, यार-गणउ ते तपसइ सूर ।
वसुहां हसइ घणा विखवाद, सायर मेल्हेसि मर्याद ॥ ८३ ॥

अऊठ हाथना हवडां देह, कालि हाथनु थास्यइ छेह ।
छठइ वरसि स्त्री धरसि गाभ, घणी हाणि जय थोडा लाभ ॥८४॥

आवि‌उ कलयुग चउथउ काल, मायबाप ते मेल्हइ बाल ।
को कहिनइ नवि मानइ गणइ, सहू चालइ छंदि आपणइ ॥ ८५ ॥

साम्हुं बोलतां नही खल खंच, पकइ ऊतर आपइ पंच ।
विनय गयु नइ वाधिउं मान, लवि परि लोभइ मांड्या कान ॥८६॥

क्रोध कलंकी मुहवडि थयु, उपशम-रस ते नासी रहिउ ।
माया मांडइ मोटा यती, अधयलती ते नासइ सती ॥ ८७ ॥

मनि कूडइ मित्राई करइ, कोइ न मांडइ हीयडइ खरइ ।
जां देखइ तां खंखेरी खाइ, पछइ रूपि आपणडइ थाइ ॥ ८८ ॥

---

८३. a क्षणि क्षणि म पसरि क, पसरइ म. कुलयुग क, कलियुग म. b -गणु क तपसि क, तपशि म. c विसुहा घणा होसि विषवाद क। वसुधा म; हसि म. d सागर म. मेल्हेसि क, मेल्हेशि म.

८४. a उठ क. हवडा अ क. b कालिइ म. हाथज क म. होसि क, थासि म देह म. c छट्टइ म. वरशि म. धरेसि क, धारशि म. (क म मा 'स्त्री' नथी.) d घणि हाणि म 'जय'ने स्थाने 'नि' क म.

८५. a कुलयुग क. चुधु क. b मेहलि क, मेहलइ म. c कहिनि क मानइ म. गणि क. d सहूइ चालि क. छदिइ म. आपणि क.

८६. a साहमू क, साहामू म बोलता अ लवता क, लवता म. नहीं म. b आवि क. c नि क (म मा 'नइ' नथी). वाधु क. d लवि म परि म. लोभि क, लोभिइ म. माडया क.

८७. a मुहवडि क b नाहाशी म गयु क म. c माडइ क. d नासि क, नाहासइ म.

८८. a मन म कूडि क, कूडइ म. करि क. b कोय क, कोए म. नवि म. मानि आडि परि क, माडइ मन परइ म. c देषि क. पेरी क म. पाय क. d. रुप क. आपणि क, आपणइ म. थाय क.

धर्म्म तणा मारग के रहिया, सात व्यसन ते सबलां थयां ।
करइ तप घर-खुणइ खाइ, महीअलिमाहि मोटा थाइ ॥ ८९ ॥

लेता हाथइ लहिका देइ, देतां धर्म भणी धूजेय ।
मोटा माणस मेहलइ माम, धर्म्म ध्याननां थोडां ठाम ॥ ९० ॥

पेट तणइ कारणि सहू रलइ, सूधा मारगि कुणइ नवि पलइ ।
सीदातु लंखाइ गलइ, जोइ अरथ अचितु टलइ ॥ ९१ ॥

हाट घाट ते मंडया जाल, करइ कूड ते नाहा बाल ।
मोटां नयर गयां ते घटी, रा लोभी कर मागइ हठी ॥ ९२ ॥

निराधार ते निर्द्धन थाइ, दुर्बल दोहिल्या पेट भराइ ।
देव तणा ते महिमा टल्या, बीस बरसना मारी पल्या ॥ ९३ ॥

नारी हीडइ मोडामोडि, बीजउं घर मांडतां नही खोडि ।
घणे खमेडइ पाडइ वेस, घसइ नेस नइ ऊवस देश ॥ ९४ ॥

---

८९. a धर्म म. मारगि क. ने क. ते रह्या म b व्यशन क. थाइ अ, थया क. c न करइ म, करि क. घरि क पूणि क, पूंणइ म. पाय क. d महिअल मांहिइ म. थाय क.

९०. a लेतां म. हाथज क म. लहि को म. b धूजेइ क म. c मोटां म. मांणस म. मेहलि क, मेहलइ म. लाज अ, मांम म. d धर्म क म. थोडा अ.

९१. रलि क. b मारग क म. कणिहि म. न म. c सीदातु नापइ साही गलि क. d जाणइ अरथ अचितु फलि क, जोतां अर्थ अचितु मिलइ म.

९२. a माहा क, माहपां म. b करि क. जे क. नाहना क, नान्हां म. c मोटा अ क. नगर क म. गया अ क. घठी म. d राय क.

९३. a निर्धारा म. के क नरधन क. थाय क. b दोहिला क. दोहेलइ म. भराय क. c देव तणा क म. d मारी क म.

९४. a हीडि क. b बीजु क, बीजू म. माडता क. न क म. c घणइ क म पछाडि क, घवेडइ म. वेश क. d घसि देस नि ऊवरा वेश क, घसइ वस्त्र नि ऊवस देस म.

वरसि वरसि मागइ वरसात, ते कलयुगनी मोटी वात ।
एक वार वरसतु रसाल वरस सहस दस हतु सगाल ॥ ९५ ॥

एक वरस अणवूठइ जाइ, तु दुर्भख्य पडइ जगमाहि ।
क्षेरइं ओछइ हुइ करवरुं, कलयुग जोउ पारखुं खरुं ॥ ९६ ॥

धर्म्म तणी जु मांडइ वात, आवी कोइ करइ उपघात ।
पापि ऊजम अंगि न माइ, जिनवर जपतां आलस थाइ ॥ ९७ ॥

आवइ निद्रा घणउं लडथडइ, थयु उपवासी आडु पडइ ।
देव तणां ते न गम्यां नाम, पूजा तणां ते परांहां करियां काम ॥ ९८ ॥

एह कुलयु[ग] एहवु लागतु, आगलि किसिउ हुसि जागतु ।
कलियुग ठेसी करसि धर्म्म, ते छूटसइ अनंतां कर्म्म ॥ ९९ ॥

थोडइ करणी लाभ ज घणउ, ए कुलयुगनु महिमा भणिउ ।
कृतयुगनी ते मोटिम तजु, जेहनां दान तणउं नहीं गजुं ॥ १०० ॥

---

९५. a वरशि वरशि म. b कृतयुगनी क म. d सहिस क.

९६. a अणवूठि जाय क b दुर्भक्ष क. जगमांहि म. c क्षेरि उछि क, उछे क्षेरइ म. हुइ क. करवरू म. d कुलयुग क, कलियुग म. जोइ क. तणउं म. पारपू क म. परुं म

९७. a धर्म तणी क म. जउ क. मंडइ म. b करि क. c पापी क. पापिइ म. उजम क. अंग क. माय क. d थाय क.

९८. a आवि क. नद्रा क, नींद्र म. घण क, घणउं म. लडथडि म. b थियु क, थै म. अपवासी क, उपवासी म. आडउ म. पडि क. c गमि क, गमइ म. नाम क. d पूजा तणा क. पराहा अ, परिहा क. पहां म करि क. कांम म.

९९. a ए क म कुलयुग क. कलियुग म. b कसु क, किस्यूं म. होसि क, हशि म. c कुलयुग क. टेशी म. करिस क, करशि म. धर्म क म. d छूठसि क, छूटशि म. अनंता क. कर्म क म.

१००. a थोडे क म. लाभजि म. घणु क. b ते क म. कलियुगनु म. गणु क, गुणउ म. c कुलयुगनी क. मोटम ते तजउं क; तिज्यूं म. d येहना म. तणुं क. नहीं म. गजु क, गज्यू म.

सहस-गणउं जउ देता दान, एक-गणउं ते लहिता मान ।
जोउ कुलयुग तणउं वखाण, सहस-गणउं हुइ दीधउं दान ॥१०१॥

जेहमांहि आपण ऊपना, धर्म्म तणां स्थानक नीपनां ।
ते कलिकाल न बोलउं दाख, महावीर जिन पहुता मोख्य ॥१०२॥

जिहां अग्यारइ गणधर हुआ, पोढा पट्टोधर ते जूआ ।
वली वशेखि जंबूस्वामि, सालिभद्र राजगृह ठामि ॥ १०३ ॥

थूलिभद्र नइ वह्निर सात, सती सुभद्रा सुलसा मात ।
नंदषेण नइ आर्द्रकुमार, कालिकसूरि हऊआ गणधार ॥ १०४ ॥

महानुभाव ते मोटा यती, जीणइ कलियुगि वाली सरसती ।
गर्दभल्लनु फेडी ठाय, आण्या शाक नवाणु राय ॥ १०५ ॥

देवसूरि जीणइ जीतु वाद, कुमदचंद ऊतारिउ नाद ।
बंभ अट्ट जीता नव बुद्ध, जिता भगवा अढार प्रसिद्ध ॥ १०६ ॥

---

१०१. a सहिस गणु क. जे क, जु म. देतां अ क. दांन म. b गणुं क. तु म. लहता म. मांन म. c कलियुग म. तणु क. वर्षाण म. d सहिस गणुं क. दिधु क, दिद्धउ म. दांन म.

१०२. a जे म. माहि क, मांहिइं म. आवी क. आपणि म. b धर्म क म. तणा क. थानक क, थांनक म. नीपना अ क. c बोल्या क, बोल्ह म d माहावीर म. जहां पाम्या मोक्ष क, जेणइ पुहता मोक्ष म.

१०३. a जहां क, जिहां म. अग्यारि क. हूआ क म. b पटोधर क. ('ते' क म मां नथी.) जूजूआ क म c विशेषि क, विशेषिइं म. स्वांमि म. d शालिभद्र क. राजग्रह अ. गांमि म.

१०४. a थूलिभद्र नि क म. b सभद्रा क. सलसा क. c नंदषेणि नइ क, निदिषेण नि म. d हूआ क, हूउ म. गुणधार क.

१०५. a माहानुभाव क म. मोटउ म. b जेणइ क, जेणि म. कुलयुग क. सरस्वती म. c गर्धभलनु क, गर्दभिल्लनु म. d नवाणूं म.

१०६. a जीणि क, जिणइ म. जतु क, जित्तउ म. b कुमदचंद्र क, कुमरचंद्र म. ऊताड क. c बभ क, लंब अ. जित्ता म. बूद म. d जित्ता म. भगव क म. अढारि क.

55160

शैव सोल दश भट्ट प्रसिद्ध, जिण गंधर्व जीता जिण सत्त ।
सत्त दिगंबर खित्तीय च्यारि, जोगी दोइ जित्ता संसारि ॥ १०७ ॥

इक मिछी पोढउ प्रतिमल्ल, इक भोई जित्त पक भिल्ल ।
इत्ता जीपी पट्टणि मज्झि, आविउ कुम[द] वादनइ कज्जि ॥ १०८ ॥

जहीइ सिद्धराय जेसंग, जिप्पी किद्धउ कुमद कुरंग ।
च्यारि जोडि लीधां नीसाण, पंच पंच्यासी वर केकाण ॥ १०९ ॥

जे साथि सबला झूझार, सुहडा सइ लिद्धा अग्यार ।
विसइ पंच्यासी सीस वहंति, लिद्धा जे बहु विरुद कहंति ॥११०॥

वलद च्यारसइ जोडां लीया, सेवक पंच बहुत्तरि लीआ ।
ग्रंथ लक्ष पण वीस प्रसिद्ध, दाम दोइ लख्य बहुत्तरि लद्ध ॥१११॥

ढोडर बिर[द] सिंहासण लेउ, नग्रउ वली ते नग्रउ केउ ।
जस कीरति जेहनी बोलाइ, देवसूरि हुउ कलयुगमांहि ॥ ११२ ॥

---

१०७ a दस क, दह म. पवित्त क म. b जिणि क म. गंधव क, गधव्व म. जगि जित्त सत्त क; जित्ता म. जण म. c पित्ती क, क्षत्री म d ग्योगि क. दोय क. जित्त क.

१०८. a एक क. मछी क, मच्छी म. पोडिउ क, मोटउ म. प्रति-मल क. b एक क म. भोइ म. जत्त क. जित्तउ म. ते म. भल क. c इेता क जित्ती क, जिप्पी म पट्टण क म. मझि क, मद्धि म. d कुमद वादनइ क, कुमद वादनि म.

१०९. a जहीई क जिहीइ म. सिद्धराय क म. जेशग म. b जित्ती कीधु क. कुमर म. c जोड क म. नीसाण म. d केकाण म.

११०. a साथिइ म b सुहडसर क लिद्धा क. c विसिनइ च्यासी स[हस] महति क; च्यासी सहस महत म d लिद्धा क. ये बहू म. बरद क, विरद म. भणति क, महत म

१११. a च्यारसि क, च्यारिसइ म. जेडोलीआ क, ये डोलिया म. b शेवक म. बहुतरि क, बहुत्तिरि म. लीया म. c लंप क, लख्ख म. d दम्म क म. दोय क. लप क म. लिद्ध क म.

११२. a टोडर क म वरद क म. सपासण क. नगु बेवली नगु क, मगु ते वळी नागु म. कीड क म. c येहनी म. d देवसूर क. हूआ क. कलियुग म. -माहि क.

हेमसूरिनां मोटां चरी, टाली अमांवस पूनिम करी ।
जेहनइ पुमावइ परतस्य, जितु देवबोध कीय सिख्य ॥ ११३ ॥
श्रेणी अभयकुमर प्रसिद्ध, विक्रम दान संवत्सर दिद्ध ।
मुंज भोज संप्रति उद्धरी, जीणइ जैन-मंडित प्रथवी करी ॥ ११४ ॥
कुमरपाल हऊउ भूपाल, जे जगि जीवदया-प्रतिपाल ।
मारि निवारी देश अढारि, चीर न धोइ अणगल वारि ॥ ११५ ॥
जेहनइ साहण लाख अग्यार, गलीउं नीर पीइ निरधार ।
ते पुण कलियुगमाहि हऊआ, जीवदयाना कहीइ दूआ ॥ ११६ ॥
कुलयुगमाहि जगति जाणीइ, जिणि चेले लोटण आणीइ ।
गुडीमंडण पार्सनाथ, संकट पडीआं आपइ हाथि ॥ ११७ ॥
जीराउलानु महिमा घणु, खंभनयर अछइ थंभणु ।
सिद्धखेत्र तीरथ गिरनार, कलियुगमाहि हुऊ उद्धार ॥ ११८ ॥

११३ a मोटा अ क. b अमवास्या क, अमावशि म. पूनम क, पूनिम म. c जेहनि क. पुमावि क, पुउमावइ म. परतक्ष अ क, प्रतक्षि म. d जित क जित्तउ म. देवबुध क, देवबोधि म. कीउ क म. सिक्ष अ, शक्ष क, शिष्य म

११४. a श्रेणिक क. अभयकुमार म. b सवछर क, सवच्छर म. c पुज अ भंज क d जेणि क म. जिनमडिति क, जिनमदिर (पाठा० श्री जिणमडित) म. प्रृथ्वी क, पृथिवी म.

११५. a कुमारपाल क. हूउ क म. b ते क. जिग क. c नवारी क. देस म. d वावरदू नही अणगल वारि क म.

११६. a जेहनि क लाप क म. अग्यारि क. b गलु क गलीउ म. नरधार क, निर्धार म. c ते कुलयुग क, ते पणि कलियुग म माहिइ म. हूउ क म. d जीवदयानु क, यीवदयानु म. कुउ क, कूउ म,

११७. a कलियुग मांहि म. जगत्र क म. जाणिउ क, जाणिउ म. b जे चेणे क, ये चेले म. आणीउ क म. c पारसनाथ क म d पडिआ क. हाथ क म.

११८. a जीराउलिनु क, जीराउलानउ म. घणउ म b थंभनयर अ, थभनयर क, थभनयरि म छि क. थिरथभणु क, थभणउ म. c सिद्धष्येत्र क, सिद्धषेत्र म. सेत्रुजि गिरिनारि क. d कुलयुग- क, कलियुग- म. -माहि म. हूआ क, हवू म.

छाहड वाहड पेथड तणी कलियुगि कीरति वरतइ घणी ।
जांझणदे धज दीधी घडी, खरची सोवन त्रिसठि धडी ॥ ११९ ॥

वस्तुपाल जगडु जगसीह, भीमसाह भलु भडसीह ।
जावड भावड साह सारिंग, कलियुगमाहि रहाविउ रंग ॥ १२० ॥

हूउ विमल जे कलियुगमाहि तेह तणी करणी कहियाइ ।
सांभलजो सहू करीअ निरोल, जेहनु सरस कथाकलोल ॥१२१॥

वस्तु

लछि थप्पइ [लछि थप्पइ] प्रथम युगमाहि ।
पुष्फमाल तव प्रगटीऊं, रत्नमाल युगि जोइ बीजइ ।
श्री श्रीमाली स्थापना, हवउं नाम श्रीमाल त्रीजइ ।
चउथइ युगि हवइ जोअज्यो, जाणइ बालगोपाल ।
सचराचरि सोहामणुं, भलुं नगर भीनमाल ॥ १२२ ॥

---

११९. a वाहड जाहड म. b कुलयुग क. कीरती म. वरति क. c झाझणदे क झाझणदे म. d त्रिसठी म.

१२० a वस्तपाल क. जगसीह म b भलने स्थाने 'भिसु' क, भइ-सइ म. c साह सरंग क साहा सारंग म. d कुलयुग- क. माहिइ म. रहाव्या क, राख्या म.

१२१. a ए म. कुलयुग ए क. -मांहि म. b तणा अ, तणां क. कहिवाय क, किहाइ म. c सामलयो क, सांभलयो म करी क म d रस (पाठा०थी सरस) म. कल्लोल म.

१२२. *a लछ क, लच्छि म. थपइ क. (अ मां बीजी वार नथी)* लछ थपइ क, लच्छि थप्पइ म. b -माहि म. c पष्फमाल क, पुष्पमाल म. प्रगटीय क, प्रगटिउ म. d रतनमाल क. युग क म. ('जोइ' म मां नथी.) e थापना क, थापवा म. f हवू क म नाम म. g चुथि क, चुथइ म. हवि क, हव म. जोअयो क, जोइयो म. h जांणइ म. i सोहामणू क म. j नगर नाम मनमाल क; भलु म; भींनमाल म.

चउपई

निऊ सहस श्रीमाली तणां, मंदिर मोटां सोहामणां ।
पंचतालीस सहस विप्र ज वसइ, वेद पुराण-अर्थ अभ्यसइ ॥१२३॥

बिहुं विहु मिली कीउ परिहार, मुनिवर तणी सहस्स पोसाल ।
असिउं नगर निरखु भीनमाल पुण्य तणउ जिहां अछइ सगाल ॥१२४॥

कलयुग कल्पवृक्ष-अवतार, वसइ छइल छाना दातार ।
नानाविधि छइ ज्ञाति अनेक, वसवानु छइ वडु ववेक ॥ १२५ ॥

कोटमाहि कोटी-धज थोक, बाहरि ते लाखीणा लोक ।
प्रागवाट तिहां वासइ रहिउ, नीन मंत्रि कोटी-धज थयु ॥१२६॥

घटिउं धन तव भूटी आस, महिता पुरु बाहरि वास ।
ब्राह्मण भणइ वि[मा]सु चींति, नगर अह्मारइ पहवी रीति ॥१२७॥

चुपई क, चुपै म.

१२३. a नेऊ सहिस क. तणा अ क. b सोहामणा अ. c पचताली क, पचितालीस म. सहिस क. 'ज' क म मां नथी. वसि क. d पुरांण क म. अरथ क. अभसि क.

१२४. a बिहू मली करिउ प्रवाह क; करिउ निरवाल म. b क मां आ b ए c छे. सहिस क, सहस म. पोशाल क c क मां पछी d छे. असिउ क, इश्च म. नरिषु क. निरषिउ म. भनमाल क, भिनमाल म. d छइ यहा म. अने कनु b 'ब्राम्हण तणु करि नरवाह.'

१२५. a कुलयुग क, कलियुगि म. b छयल क, छल (पाठा० थी छइल) म. c वधि क, विध म. छि म. ग्न्याति म. d वसवा केरु वडु, विवेक म.

१२६. a माँहि म. –धज म. b बाहिरि क; लापीणा ते बाहरि लोक म c तिहां वासि रहिउ क, तिहां वाशिइ रहिउ म. d –धज म कहिउ क.

१२७. a घटिउ अ म. b पूरिउ (पाठा० थी पूरु) म. बाहिर क. c ब्राम्हण क. विमासु क, विमासु म. चीति क, चिति म. d नगरि क अम्हारि क अह्मारि म. ए छइ रीति क.

मध्यरात्रि दोहिलुं दुख धरइ, महालखिमीनुं चिंतन करइ।
आची वात लाछि कहइ कथी, ईणइ थानकि तुझ भायग नथी ॥१२८॥

मानि वात तूं महारी खरी, जा थानक वेगि परहरी ।
गुज्जर देश तणउ सिणगार, गांभू नयर हसि जयकार ॥ १२९ ॥

तिहां तुं पामेसि धननी कोडि, लाछि-वचनि चालिउ परहोडि ।
भागु भीनमालथी घसिउ, गणधंतु जई गांभू वसिउ ॥ १३० ॥

नीना-अंगि नही कांई खोडि, नीनइ मेली धननी कोडि ।
ईणइ अवसरि चाउडउ वणराज, चिंतइ नअर वसावुं आज ॥१३१॥

दूहा

संवत आठ बिडोत्तरइ, जगि जू ठउ वणराउ ।
जई जोइ जंगल वडां, नयर वसावा ठाउ ॥ १३२ ॥

अणहलीउ गोवालीउ, जंगलि चारइ ढोर ।
पतां तेह जि चाउहु, जे जगि पाडइ सोर ॥ १३३ ॥

---

१२८. a दोहलि क, दोहिलु म. दुप क म. धरि क. b महालपमीनु क, माहालिपिमीनु म. करि क. c लाछि वात क म. वही क, काहि म. d इणि क, एणइ म. थानकि क म. भाइग म.

१२९. a मानि म. ते क. माहरी क म. b वेगिइ म. परिहरी क. c गूजर क, गूजरात म. ('देश' म मा नथी.) तणु क. शणगार म. d गाभू क, गांभू अ. नगर क, नयरि म. होसि क, हशि म.

१३०. a तु अ, तू म. पामसि क, पामिशि म. c भागउं म. भीलमालथु क, भीलमालथी म. घशु म. d गुणवतु म जै म. वशु म.

१३१. a अग क. नि क. एकू क, इक म b नीनि क, नीनइ म. c एणइ क, इणि म. चावडु क म. वणराज म. d चितइ क. नगर कॅ, नवू म वसावू म. गाम म.

१३२. a विढोतरि क, विलोत्तरि म. b जग क. ज क. वणराय क. वणराज अ. c जोइ जे क म. वडा म. d नगर क. ठाय क, ठाम अ.

१३३. b जगल क. c तेहज क. चाहडु (पाठा० थी चाउडु) म. d ये म. सोहोर म.

म म वीहसि गोवालीआ, आ मह्म माने धीर ।
जिण कारणि जंगलि भमु, कहुं दीयानुं हीर ॥ १३४ ॥
नगर वसावा सोघीइ, सुंदर रूडुं ठाम ।
थाकु थानक जोअतां, वडि लीधउ विश्राम ॥ १३५ ॥

चउपई

अणहलीउ तव पाछउ वलिउ, वणराजनइ आवीनइ मिलिओ ।
राजि अम्हारुं राखु नाम, तु देखाडुं रूडउ ठाम ॥ १३६ ॥
आणइ जाल जे देवता, तेहनइ देव घणा सेवता ।
पइ भूमिनु जे रखवाल, ते समरथ छइ सुणि भूपाल ॥ १३७ ॥
आहेडी आहेडइ चडिउ, आणइ जंगलि आवी पडिउ ।
करइ सुणहउ धाउ कीम, ससलउ त्रुहि न छाडइ सीम ॥ १३८ ॥
सरडउ सणहु दि छइ फाल, सहु सुंहालु नाहनुं बाल ।
ससलु साहामुं थई थरहरइ, नासइ करइ कुकर डरइ ॥ १३९ ॥

---

१३४ a बीहशि म b अ म मुझ क माने म c जेणि क, जिणि म जगल क भमू म d कहू क म हीआनउ क, हैआनू म

१३५ b रूडु क म ठाम म c थकउ म थानिकु क जोयता क d वड क लीधु क म विश्राम म

चुपई क, चुपै म

१३५ a वणराजानि क म आवी क म मलिउ क c राज क. राय म अह्मारू म नाम म d देषाडू म सारु क, रूडु म ठाम म

१३७ a जालि क, जाणइ (पाठा० थी ठाणइ) म b जेहनि क c ठामनु क भूमिना म ये म d तेह क छि म

१३८ a आहेडी आहेडि क चटिउ क c सणहु क सुणहु म धायु क म यीम म. d ससलु क, ससलइ म छाडि क, छांडी म सीम म

१३९ a सरडु क म सुणहु क म दिइ म छि क b संहालु क, सुहालउ म नाहनु क, नाहानू म c साह्मु क, साहामु म थैं म थरथरइ क, नि धसइ म. d नासि क, नाहासइ म थरहि क, करइ म कूकर क, कुम्कर म डराइ म

वाल हुई ते वनह मझारि, कुतिग जोइ घडी विचारि ।
आती सीम ते आविउ सहु. भलुं नगर ते पाटण वसउं ॥१४०॥
आलेखी गढ पायु दिद्ध, राजन मोटां मंदिर कीध । -
अणहलीआनइ नामि असिउं, अणहलवाडं पाटण वसिउं ॥१४१॥
ठाम ठामना व्यवहारीया, परदेसी जे वखारीआ ।
ते तेडी वास्या आवासि, पायक राख्या मोटइ ग्रासि ॥ १४२ ॥
नीन मंत्रि गांभू जाणीउ, बेटा लहिर सहित आणीउ ।
राजिकाजि वहिलु वापरिउ, लहिर देखी दंडनायक करिउ ॥१४३॥
लंखइ लहिर लहिर आपणी, वेगि गयु वंध्याचल भणी ।
गरथ वडइ गजघट लावीउ, राजा तिहां सनमुख आवीउ ॥१४४॥
साढथले दीधउं मेलाण, गज देखी रा थयु हराण ।
सांझ थकु तिहां किद्ध पसाउ, लोक भणइ न वरासिउ राउ ॥१४५॥

---

१४०. a हुई क, होई म. ए क, इ म. मज्झारि क. b जोयु क, जोयूं म. विच्यारि क म. c आणी म. सीमि क, सीमिइ म. ['ते' क म मां नथी.] आवइ म. ससउ म. d भलू म. ['ने क म मां नथी.] पुरपाटण क म. वसिउ क, वसउ म.

१४१ b राजहर म. रूअडा क. कीद्ध क, किद्ध म. c अणहलीआनि क म. नामि क, नामिइ म. इद्ध म. d अणहलवाडुं म. वसिउ क, वशिउ म.

१४२. a ठाम ठामना क. व्यवहारीआ क. b जे परिदेसी क, जे परदेशी म. वखारीया म. c वाशा आवाशि म. d मोटा ग्राशि म.

१४३. a मंत्र क. गाभू क. b बेठा म. लिहिर क. आवीउ क, आंणीउ म. c राजकाजि म. d मुख्य ('देपी'ने स्याने) क डंडनायक क म (ममां पाठा०थी 'दंडनायक'). करिउ म.

१४४. a लपइ क. लील लहिर क. आंपणी क b विंध्याचल क. c वडि क. ल्याविउ म. d तु राजा सनमध्य आवीउ क, तु राजा सन्मुख मानीउ म.

१४५. a साढथलि क, सांढथले म. दीधु क, लीधू म. मेल्हाण क, मेहलांण म. b राय क. थियु क. हराण म. c साढथलुं दीधु सपसाय क, साढथलई तव किद्ध पसाइ म. d भणि क. वरासिउ अ, वराशिउ म. राय क, राइ म.

चिहुं दिशि महीत लि[हि]रानइ चडया, टंकसाल सोनईया पडया।
टंकसाल कीधी आपणी, राजन मया करइ छइ घणी ॥ १४६ ॥

श्रीवनराज विधगत हऊ, जोगराज पटोधर थयु ।
जोगराजनुं पतीऊं आऊ, रत्नादित्य ते तव हुउ राय ॥ १४७ ॥

रत्नादित्य आयनइ घाटि वयरसिंह राय वइठउ पाटि।
चिहु पाटे चालिउ हूउ, दंडनायक ते लहिर जि हुउ ॥ १४८ ॥

लहिर-पुत्र हुउ साहस धीर, चडइ वडउ वीरातन वीर ।
वीरनामि बेटउ ऊछरइ, पाप भणी पगलां नवि भरइ ॥ १४९ ॥

वीर कुमर गेहणी मझारि, वीरमती परणावि नारि ।
राजकाज छंडया व्यापार, मन सुद्धइ मंडइ व्यवहार ॥ १५० ॥

उभयकाल पडिक्रमणउं करइ, पूजा ध्यान धर्मनुं धरइ ।
न करइ प्रेम पीआरी ताति, श्रीनवकार जपइ दिनराति ॥१५१॥

---

१४६. a चिहू दसि क गुहुत क म लहिरनि क म चडया म b टक्शालि क, टकसालि म. सोनईआ क, सोनैआ म. c टंक्शाल सोना कीधी आपणी क d करिइ क, करि म. छि म

१४७. a श्रीवणराज क भयु क, हूउ म b योगराज क. पट्टोधर क म c योगराजनु क, जोगराजनू म पहुतु क, पत्तिउ म आय क, रांज म d रत्नादित्य अ हूउ तवि राय क, हूउ तव राज म

१४८ a आयनि क म b वयरसिह क, वज्रसिंह म रा म विइठउ क, विठउ म c चिउ क, चिहु म. हे पाटे क, ए पाटे म. चाल्ड क d डंडनायक क लहिरज क म.

१४९ a हुउ म b वीरि वड्ड क, वरइ वड्ढ म वीराततनि म. c नामि म. ऊछिरइ म d नवि पगलां म, पगला अ

१५०. a गेहणी क. b परणाव्यु क, परणाविउ म c छांडया क म. वापार क d मनि शुद्धि क, मन शुद्धिइ म माडिउ क, माडिउ म

१५१ a अभयकाल पडिकमणु क b धम्म ध्यानजु अ, ध्यान धरमनु क, ध्यान धरमनू म. धरि क. c करि क पीयारी म जपि दनिराति क.

वीरमती रहि प्रीयनइ हेजइ, अन्न दिवसि पुढो छइ सेजिइ ।
मनि चिंतइ मुझ प्रीयनुं मान, पणि घर सूनुं विण-संतान ॥१५२॥

आवी निद्रा रयणीमाहि, सुपन लहइ वीरमती माइ ।
जाणइ देवि आप्यां कमल, मइ पूज्या तीर्थंकर विमल ॥ १५३ ॥

जागी सपन लही ते सती, प्रीय आगलि आवी मलपती ।
कही सपन तव हरखिउ कंत अह्म एक पुत्र होसइ पुण्यवंत ॥१५४॥

उत्तम गर्भ उदरि अवतरिउ, दश मसवाडा ऊअरि धरिउ ।
जाणइ जिणवर-पूजा करूं, देउल भुवनि पडयां उद्धरुं ॥ १५५ ॥

भगति करुं गुरु गुरुणी तणी, संतोखुं सवि सोहासणी ।
जांणइ जाउं सेत्रुंजयात्रा जाणइ दान दीउं सुपात्रि ॥ १५६ ॥

जे जे करीआं मनोरथ अंगि, ते प्रीय पहुचाड्या मनरंगि ।
पुत्र प्रसविउ हूउ सहिकार, आविउ ज्ञाति तणउ सिणगार ॥१५७॥

---

१५२. a रहि क. प्रीउनि क, प्रीयनि म. हेजि क म. b अन क. दिवस क, दिवशि म. छि म. सेजि क म. c चंतइ क. मझ म. प्रीऊनां क, प्रीयन् म. 'नाम' म. d पण म. सूनू क म. वण. क. संतांन म

१५३. a माहि म. b सपन क, स्वप्न म. माय क. c जांणि म. आल्या देवे क, देवे आप्यां म. d मिइ म. तित्थकर म.

१५४. a स्वप्न म. सही ('सती'ने स्थाने) क. वीरमती ('ते सती'ने स्थाने) म. b प्रीऊ क. गहिगही क. c कहिउं क म. सुपन म. हरिखिउं क. d अम्ह क, अम म. कुलि पुत्र होसि क. कुलि पुत्र हुशि म.

१५५. a दस क म. पूरु क. ऊअरिइ म. c जांणइ म. जिनवर क म. d देउल्ल क. भवर क म. पडया श्र क. ऊधरु क, उद्धरूं म.

१५६. a करू म. गुरगुरणी क म. b संतोपू क म. सोहागणी म. c जांणइ म. सेत्रुंजि क, शत्रुजय म. यात्र क, जात्र म. d जांणइ म. दीजइ दान क, देउ दांन म. स्पात्रि श्र, सपात्र क, सुपात्र म.

१५७. a करी क, कर्या म. b प्रीऊ क, प्रीय म. पुहुचाडि क, पुहुचाडया म. मनि रंगि क, सवि रंगि म. c प्रसविउ पुत्र म. हुउ म. जयकार क म. d आविउ म. न्याति म. तणु क. सणिगार क, शणगार म.

जोसी लगन जोइ जे जाण, उदयवंत छइ मूरति भाण ।
शसिहर दशमइ घरि आपणइ, उच्च ठामि गुरु गुरूअडि भणइ ॥१५८॥

सूर ग्रह सवि नीचइ ठाय, उत्तम उच्च पड्या छइ माइ ।
छठइ मंगल शमलु राहु, वयरीनइ सिरि डावउ पाय ॥ १५९ ॥

लगन मह[र]त वेलां मान, कइ ठाकुर होसइ परधान ।
संतोषिउ जोसी घरि गयु, जन्मयोगि करमइं तु कहिउ ॥ १६० ॥

ढाल लोकीक पवाडानु

लावइ रे लक्ष वधामणां, करइ भामणां रे भोला कुअर काजि तु ।
अहिचि दीइ आसीसडी, होज्यो चडतु भरे प्रतापि तुह्म राजि तु ॥
जोउ जोउ० ॥ १६१ ॥

---

१५८. a जोशी म. लगनु क. लग्न म. जाइ क. जाण म. b मूरति छइ क. छि मूरति म भाण म. c ससिहर क. शशिहर म. दसमि क. दसमु म आपणा अ. d उच्च क. ठाम क. ठामि म. गरुअड क. गरुयडि म.

१५९. a सुर म. ठाइ म. b उतम क. उच क पडि क छि म माय क. c म मा अहीं कुडली आपी छे. छडइ अ, छठ्ठइ म. d वयरीनि क. विरीनि म. सरि क. शरि म. डावु क म पाउ म.

१६०. a लग्न म. महूर्त क, महूरत म. वेला क म मान म. b कि म. कि होसि क, कि हशि म. प्रधान क. प्रधान म. c सतोषु क. जोशी म. d जन्मयोग म. करि महितु क, महितानि म

ढाल लोकीक पवाडानी म.

१६१. a ल्यावइ रे क, ल्यावइ रे म वधामणा अ क b करि क. भामणा रे अ कुअरनि केव तु क, भला कुअर (पाठा० श्री 'कुंअर नइ') काजि तु म c थहिव क. d हुयो क, हुज्यो म चडतलु रे प्रताप क. चडतु प्रताप म तुम्ह क. राज क, राजि म

जोउ जोउ विमल-जनम हूउ, जोउ जोउ रे हूआ त्रिभुवन जाण तु।
जोउ जोउ नाम विमल ठविउ, प तु वागिला रे जांगि ढोल नीसाण तु॥
जोउ जोउ० ॥ १६२ ॥

उद्दी गूडी पट्टुलडी, त्राटले बांधीआं तोरण वारि तु ।
नाटक नवरस खेलती, प तु नाचइ छइ नाह्नी अपछरा बाल तु ॥
जोउ जोउ० ॥ १६३ ॥

करी वडीआई वांकडी, प तु आंकडीआ लडे आंगले रंग तु ।
वेढला लालडीआ लडा, प तु गालडा लालडा चाहीय चंग तु ॥
जोउ जोउ० ॥ १६४ ॥

दिन दिन दान दीजइ घणां, प तु कापडां केतलां काकीनइ देस तु।
अमीझरणइ मांडवइ, प तु सुंडले साजण फोफल देलि तु ॥
जोउ जोउ० ॥ १६५ ॥

१६२　a जन्म क हुउ रे म　b जूउ जूउ रे क. हूआ क, हौआ म　त्रभुवन क त्रिभुवनि म　जाणि क　c नाम म　ठविउ म. d वागीआ क, वागिलां रे म. जगीआ क, जागिलां म　नीसाण म. जूउ० क

१६३.　a ऊही क म. वे रुडी क. पटउलडी क　पटकूलनी म b बाधीआ अ, तोरण बाधीआ क, बाधीया म　c पेलीइ क　['ए तु' म मा नथी] नान्ही म　बाल तु म　d ए तु वावीइ रे रंगि रुडीय रद्धि तु क. (... रुडी रिद्धि तु म.)

१६४.　a वाकडी क. b आकडीआ क　लाड क, आलडी म. आगला क　आगलि म　रंगि म　c लालडीयालडा म　d 'ए तु　क मा नथी जूउ० क. [म मा कडी १६६ मी छे, क मा पण १६६ मी छे].

१६५　a दिनि　दिनि म　b ए ता क　कपडा रे क, पाठा०थी 'कापडा रे' म　केतला अ. काकीनि क म　रैस क, रेशि म　c अमीअ म　झरइ क, झिरि म　एणि माडवि क, एणइ मांडवइ म. d सुडले क म साजिन क, साजनी म　देशि म. जूउ क. [b c d म मा १६६मां छे, आ त्यां नथी]

फईअर दीजइ फूटडी, प तु आपणा पुत्र तणी प्रसिद्धि तु ।
सात खेत्र सोहावीइ, प तु वावीइ रे रुडी रंगि रद्धि तु ॥
जोउ जोउ० ॥ १६६ ॥

माउले मोजडी मोकली, प तु रे जडी रतननि टोपी उत्तग तु ।
टीलइ त्रिभोवन मोहीऊ प तु जोईऊ सोहीउ अद्‌भुत अग तु ॥
जोउ जोउ० ॥ १६७ ॥

जग माड्या जगि जागता, प तु मागता मनह मनोरथ पूरि तु ।
भोजिन साजन सामटा भामटा केलव्या कूर कपूर तु ॥
जोउ जोउ० ॥ १६८ ॥

गुल नइ घृत घणा लाहीइ, प तु वाहीइ अन्न अवारीय आज तु ।
पुत्रजन्म राउ जाणीउ, भलु वाणीउ वीरनइ विमल घरि आज तु ॥
जोउ जोउ० ॥ १६९ ॥

लोक तणा लख जोइसइ भलु सोहसि तु हसइ रूअडउ राज तु ।
वीर पुत्र बोलाविवा प तु आविवा राउ करइ अगाज तु ॥
जोउ जोउ० १७० ॥

---

१६६ a फैअर क c सातइ म d रंगि रुडि म रिद्धि म [b c d क मा अहीं नथी ते उपरनी १६५ मा छे]

१६७ a माउला क मोकलि मोचडी क b तु रे उ जडी रतने ते टोपीउ तग तु क ए तु उज्लीए रचिउ टोपीनू तुंग तु म c त्रिभुवन क मोहीउ क म d जोइउ क म सोहीउ क उद्‌भत क, उदभूत म जूउ क

१६८ a यग म माडया क जागतु अ b मागता रे क पूर तु क c भोजन क म सामठा क सामटा म d भामटा अ तु रे भामग्ग क, ए तु भामटां म केलव्या अ जूउ क

१६९. a गुल नि म घणा म b अन क अवारी क, अवारीय म रेउ तु अ, पाठा०थी राज तु' म c जनम म राइ क जांणीउ म d भलउ क, भलू म वाणीउ म वीरनि क म विमलि म जूउ क

१७०. a लोक तणा म लक्ष क म जोयसि क जोइशिइ म b भलू सोहशि म जो क म हसि क हशि म रुअडु क रूअडं म c वीरतु म d आववा राय क करि क जूउ क

वस्तु

पुत्र जनमिउ पुत्र जनमिउ वीर-घरि विमल ।
ढमढ[म] ढोल ढमकीया, पंच शब्द नीसाण वजइ ।
नवरस नाटक खेलीइ, भरह-भेद वरमल्ल गज्जइ ।
जन्म-लगन रलीआमणउं, राजजोग तेणइ ठामि ।
मंत्रिमुकुट मोटउ हुसइ कइ कय मोटउ राय ॥ १७१ ॥

[चउपई]

खंडि खंडि छइ मति निरमली, भणतां सुणतां संपति मली ।
मुनि लावण्यसमयची वाणी, पतलइ त्रीजु खंड वखाणि ॥ १७२ ॥

इति विमलमंत्रिमनो[हर]प्रबंधे नवखंडे कलिकालवर्णन उत्तमो-उत्तम गणधर प्रभावक पुरुष नामो(उ)च्चार महावीरचरित्र विमल-जन्ममहोत्सव । मंगलवर्णनो [नाम] तृतीय खंड समाप्त ॥ ३ ॥

वस्तु क.

१७१ c ढमढमे क म. ढमकीआ क, ढमकीया म. d शबद क नीसाहाण म गजइ मे. e पेलीइ क. पेषीइ म. f भेदि म. वर भेरवि क. भेरिअ म. जइ क. वजइ म. g जनम म. लगि क, लग्न म. रलीआमणु क, रुलीआमणउ म. h राजियोगि क, राज्योग म तीणइ क तेणइ म. ठाय क, ठाइ म. i मुगट क म. हसि क, हशि म. j कइ को क म राई म.

१७२ a पडि क. नरमली क. b भणता गुणता संपदि वली क c मनि क. लाव्यणसमइची क. वाणि क d एतलि क म. त्रीजउ क, त्रीजू म. पंड क म. षपाणि क, बपाणि म.

पुष्पिकाओः—

क इति श्री पडित लाव्यणसमय गणि-कृते विमलमन मनोहर प्रगट प्रबंध नवरंग नव षडे त्रितीय षड संपूर्ण क,

म इति विमलप्रबंधे नव षडे कलिकाल-वर्णन, उत्तमोत्तम प्रभावक पुरुष नामोच्चारण, ...नीन, लहिर, वीरचरित्र, विमलजन्ममहोत्सव मगलगानवर्णन तृतीय षड ॥ ३ ॥ श्री । श्री । श्री । म

क मां छ ॥ श्री ॥ छ ॥ श्री ॥ 'त्रीजु षड' बाजुमा हांसियामा छे.

खंड ४

दिन दिन वाधइ विमलकुमार, अहनिशि अंगि विमल आचार ।
हरखि माता हूलावती, विमल वाणि बोलइ भावती ॥ १ ॥
विमल कुंअर पुढइ पालणइ, मा हींडोलइ ऊलट घणइ ।
हालरूडे हुलावइ बाल, क्षणि क्षणि मावी करइ संभाल ॥ २ ॥
बीज तणउ जिम वाधइ चंद, वाधइ विमल-हीइ आणंद ।
जे बोल्या लक्षण बत्रीस, विमल-अंगि सोहइ निसिदीस ॥ ३ ॥
सत रक्त छइ उन्नत मिली, सूक्ष्म पंच दीर्घ ते वली ।
त्रिणि विपुल त्रणि लघु गंभीर, लक्षण बत्रीसइ ते वीर ॥ ४ ॥
हाथ-पाय-तलि लोचन-अंति, अधर होठ बोल्या पकंति ।
जिह्वा तालू वीस नख रहिया, सात रक्त सामुद्रकि कहिया ॥५॥
कक्षा कूख नाक नइ हीउं, खंध ललाट सरीखुं कहिउं ।
छ उन्नत भायगनु धणी, ए वाणी सामुद्रक तणी ॥ ६ ॥

षड चुपइ ॥ म ॥

१. a दिनि दिनि म. b अहिनस क. c हरखिइ म d वाणि म. बोलि म.

२ a कुमर म. b हींडोलि क, हीदोलि म. c हालरडि क, हालरडे म. हूलावि म. d ष्यणि ष्यणि क. करि क म.

३. a तणु क. यिम क, यम म. b लही म. बोल्यां म. d सोहि क म. नसदीस क, निशिदीस म,

४. a छ क म उ[न्न]त मली क. b तम क. c त्रणि क. त्रणि क. लघू म d बत्रीस क, बत्रीसउ म.

५. a तल क म. अंति अ. b अधुर क. c ताल क. नप क म. कहिया अ, रिह्या क, कहइ म. d सामुद्रक क, सामुद्रिक म. कह्या क, कहइ म.

६. a कष्या क. नाक नि क म. हैऊं क, हिउं म. b सरीखां क, सरीखूं म. कह्या क, कहिउं म. c छउ उनत क. d वांणी म. सामुद्रिक म.

बाहु नेत्र नइ अंतर्जानु, नाशा घणुं अंतर प्रधान ।
पंच दीर्घ सामुद्रकि कहिइ, ते जसवाउ अनंतु लहइ ॥ ७ ॥

अंगुल-पर्व दंत नख वाल, सूक्ष्म वेह पंच सुकुमाल ।
लक्षण पंच जिहा सिरि होइ, सामुद्रिक सोभागी सोइ ॥ ८ ॥

मोटउ मस्तक विपुल ललाट हृदयस्थल ते पुहुलुं पाट ।
सामुद्रिक बोलइ सन्मुखी, ते नर सदा समुहुतु सुखी ॥ ९ ॥

कलश कमंडल कमल मयूर, पुष्फ वृक्ष वारिधितुं पूर ।
अष्टापद अंकुश अभिराम, चामर वृषभ सिंह श्रीदाम ॥ १० ॥

श्रीगृह आरीसु गिरि छत्र, धज चामर जव वाजि पवित्र ।
मकर मत्स्य रथ शुक साथीउ, काछव शंख शुक्ति हाथीउ ॥११॥

---

७ a बाहु क नेत्र नि य म अतरज्ञान क, अतर्यानु अ b नास्या क. घण क घणउ म अतरु क, अतरू म c सामुद्रक क, सामुद्रीक अ कहइ क म d जसवाय क म घणेरु क

८ अगल क, अगुलि म b देह अति हि क देह चर म c जेहा क येह म सिर क, शरि म हाय क d सामुद्रीक क, सामुद्रिक अ सोय क

आ कडी पछीं क म मां १ कडी वधु —

जव लघ ग्रीवा लघुमानि प्रथवीपति कइ हुइ प्रधान ।
सत्व नाभि नइ स्वर गभीर, सामुद्रक बोलउ ते वीर ॥ ९ ॥ क

a ल्यग म मान म b प्रथ्वीपति म ते म प्रधान म c सत्त्व म नि म d सामुद्रिकि म ते बोलिउ म

९ a मोटउ अ म, मोटु क मुस्तक क लाट क b रदयस्थल क पहुलु क, पुहल्द म c सामुद्रक क, सामुद्रीक अ बोलि क सनमुपी क समुहतु क म सषी क

१० a कलश म b पुष्फ क, पुष्प म वारधनू क वारिधनू म c अभिराम म d स्वस्तिक वृषभ सह श्री क, चामर छत्र रषभ श्रीदाम म

११ a श्रीगृहि म गरि क वाजि विचत्र क b मुघ्य क, मच्छ म

तोरण तुरीय थाल अभिषेक, सर कुंडल श्रीवत्स घवेक ।
वज्रबंध नइ मणिबंध, बोल्या ऊरध रेखा प्रबंध ॥ १२ ॥

हाथ पाय-रेखा जेह तणी, ईणइ आकारि दीसइ घणी ।
जु बत्रीसइ पूरां नंग, नर लक्षण बत्रो[स] सुचंग ॥ १३ ॥

पहिलां लक्षण शायरनां कहियां, था लक्षण रेखानां जूआं ।
बत्रीस बोल्यां बहु भेदइ, लक्षण प्रीछइ चडइ घछेदि ॥ १४ ॥

पह लक्षण सामुद्रिक तणां, जु सिरि लहीइ थोडां घणां ।
तुहइ ते नर नही समानि, जई पयडइ प्रथवीपति कानि ॥ १५ ॥

सिरनुं मंडन मुख सोहीइ, मुख-मंडन नाशिका जोईइ ।
तेहथी निरतां निरखुं नयण, चंद सूर सरिखां बि रयण ॥ १६ ॥

---

१२. a तुरी क म. अभषेक क b सरि क b श्रीवछ क. श्रीवस्र अ. विशेष क, विवेक म. c नि म. नावीवध क, नीवीवध म. d बोल्या क. उरध क रेष क म

१३ a येह म b एणि क, इणि म. आकारिइ म. दीसि क c जउ क बत्रीसि क. पूरा म d बत्रीसु म सचग क, चग म

१४. a पहिला अ सरिना क, शरना म. कहिया अ, हूआ क, कह्यां म. b अ क लष्यण क रेषाना अ म जूआ अ. c बत्रीसि क. बोल्या अ क बहू क, विहू म. भेदि क म लष्यण क प्रीछउ क म विछेदि क म.

१५. a ए क म सामुद्रक अ b सरि क, शरि म. थोडा घणा अ क c हुइ नर ते नही सामानि क, तुहि म; सामानि म. d जै म. पइसइ क पृथिवीपति म. कानि म

१६. a शरनू क, सिरनू म मडण क. जोईइ क म. b मुष मडण क म. नाकि क, नाकिइ म मोटीइ क म c नरता क. नरपु क d सूरि क, सूर म सरषा क, शरषा म बे नयण अ.

क म मा आ कडी पछी १ वधु:—

पहिलु जोईइ विपुलु वान, तेह पाइतु तेज प्रधान ।

तेह थकी सर बोलिउ सार, सरसत्व जगत्र आधार ॥ १८ ॥ क

a पहिलु म वपुनु म. b पाहिइ तनु तेज म c थिकी स्वर म. d स्वरथी सर्व जगत्र आधार म.

राते लोचनि रामा घणी, पीले पद्मनि पामइ घणी ।
लंब बाहु ठकराई लहइ, सर पुष्टुं ते सुखि गहगहइ ॥ १७ ॥

हृदय विलासी भोगी नलु, मस्तकि मोटइ भूपति भलु ।
पहुली कटि नइ पाय विशाल, बहू बेटा सुख सुंदर सार ॥ १८ ॥

आंखि सतेजी कहइ सोभाग, दंत सारु भोजन भाग ।
चंच सनेह सेजि सुकुमाल, चरण नेहि चडण चउसाल ॥ १९ ॥

पुरुष समी जल-कुंडी भरइ जोजि नर वइसारी करी ।
द्रोण-नीर जउ ऊछउ थाइ, मानोपेत पुरुष कहाइ ॥ २० ॥

गणतां जे पहुचइ जेह तणां, अष्टोत्तर अंगुल आपणां ।
शास्त्र तणउ साचु संकेत, बोलिउ पुरुष-प्रमाणोपेत ॥ २१ ॥

---

१७. b पदमा क म c बाहू ठकुराई क d शिरपु क, शरि म. पुष्ट क, पुष्टउ म. d गिहिगहि क.

१८. a निशले क, त्रिसाले म निलु क, निलउ म b मस्तक म. भल्ड म c पुहुलि क पुहली म कटि नि म. d सदा रशाल क, सदा रसाल म

१९ a आपि अ, अपि क म सनेहि क म करि क कहि म. b दते म सार भोजननु क c सनेही क, सनेहि म सक्माल क d सनेहि क म चुशाल क चुसाल म आ पछी क म मा १ वधु:—

काम पापइ जे काठा पाणि, वाहन वण क्रमि कोमल जाणि ।
वाणी सरस वयण ऊचरइ तेह्वना भाग्य भुवनि वस्तरिइ ॥ २२॥ क

a काम पपिइ म b वाहण त्रिण क्रम कोमल जाणि म c वाणी म. d तेहना म विस्तरइ म

२० a पुरुप क कुंडी अ, कूडी म भरी क म b जोइ क, जोय म. बिइसारी क बिसारी म. c जु म उछ क, उछउ म d कहिवाइ म.

२१. a गुणता क जउ क, जु म पुहुचइ क, पुहचइ म. तणा क म. b अष्ठोत्तर म आपणा क म c तणु क. साचउ म d बोल्यु म प्रमाणउ म.

सामुद्रिकनां लक्षण सवां, अंगि दीसइ लक्षण अभिनवां ।
दाक्षिन्न दया मया नही पार, विमल कुमर ते गुणभंडार ॥ २२ ॥
सरल नाक सिग दीवा तणी, दंतपंत करि मुगतामणी ।
राती जीह अधूर-गुण घणु, जाणुं रंग प्रवाली तणउ ॥ २३ ॥
पूर्णचंद्र अधिक मुखवटउ कटि लंकित केसरी घटउ ।
लंब कर्ण नइ सोवनवर्ण, विहि युगतां पहिरां आभर्ण ॥ २४ ॥
बालक बाल सरीखु रमइ, पुहुतु वेगि वरस पांचमइ ।
केथु कीजइ मूरख पुत्र विद्या विण नवि रहइ घरसूत्र ॥ २५ ॥
विद्या रूप करूपइ कही विद्या धन छानुं छइ सही ।
चोर चखार न लेई सकइ नवि सीदाइ विद्या थकइ ॥ २६ ॥

---

२१. a सामुद्रकना अ क लक्षण वधा हवा क. b दीसि अगि अधिक अभिनवां क, छइ अधिक अगिनइ अभिनवा म. c कुअर क. गुणह क
२२ मी कडी पछी क म मा २ कडी वधु:—

आधा शसिहर सरपू भाल, पद्मप्रमाण लोचन सविशाल ।
कमलोदर सदर दृढ बध, सरल बाहू तणा वे बध ॥ २६ ॥ क

a शशिहर शरपू म b पाठा०थी एण 'प्रमाण' म सुविशाल म c सुदर म d बाहू म.

काला कुतल कोमल काय, जाडी जघ,पद्गुला पाय ।
कोट कथनइ आवी अडइ, वाकी भमहि धनुषसिउ भडइ ॥ २७ ॥ क

a कोमल कुतल म. b पटच्छा पाय म c कधनि आवी मिलइ म. धनुषसं मिलइ म

२३. a सग क, शग म. b दंतिपति क, दतपति म. c अधुर क, अधर म. गण क. घणिउ क, घणउ म d जाणे क, जाणे म.

२४. a पूरणचद क शरपु म मुषवटउ क, मुहुवटु म b कटितटि लकज दीसि कटउ क कटिनु रक किहि कवि विशु म c वण मिइ क, वर्ण नि म. सोवर्ण म d जिहि क यहि म पहिरया क, पहियां म

२५. a बाला म सरीखु क, सरिसु म. रमिइ क b पहुतु क, पुहतु म. पाचमइ क, पचमइ म. c केथउ म पूत्र म. d वण क, न क म रहि क

२६. a करूपना क, करूपा म b छानू क, छानं म छि म. d बधा थकइ क.

गाम नगर पामइ परदेश, विद्या मानइ नगरनरेस ।
विद्या थकी बाधइ जसवाय, विद्या सवि संयोग उपाय ॥ २७ ॥
नृपथी मोटउ विद्यावंत, ठाकुर-ठामि मान लहंत ।
विद्यावंत जिहां जिहां जाइ, तिहां तिहां मान घणेरुं थाइ ॥ २८ ॥
जेहनइ दूझइ विद्या गाइ तेहनइ नही अणूरुं माइ ।
जां जीवइ तां दूझइ खरी, मूआ पछी विसूकइ सही ॥ २९ ॥
पंच वरस बेटउ लालीइ दशमइ नेसालइ संभालीइ ।
वरस सोलमइ जईनइ रहिउ, बेटु मित्र समाणउ कहिउ ॥ ३० ॥
करइ सजाइ घरि आपणइ, जिम बेटउ नेसालइ भणइ ।
महूरत्त पूछइ पंडित पासि, चडिउ महोत्सव मन-उल्हासि ॥३१॥
तेडी महाजन दीधउं मान, आरोगावी आप्यां पान ।
भरिउ थूंप खूणालु खरु, वीरइ झाझु कीधउ वरु ॥ ३२ ॥

---

२७ a गाम म. पामइ म परदेस म. b वद्या अ. पामइ अ, मानइ म. नगरनरेश क. विद्याथी क. यशवाय क म. d सवे म. शयोग क.

२८. a वद्यावत क. b ठामि ज क. ठामि जि. म. मान म. लहति क. c जिहा जाय क d तिहा तिहा क. मान म. घणेरा क म. माहि क, माहि म.

२९. a जेहनि क, येहनइ म. दूझि क b तेहनिइ क. नवि म. अहीण क, अहीणउ म. कहिवाइ म. c जा क ता क म दूझि क दूसइ (पाठा० थी दूझइ) म. रही क म. d मूआ म. पूछि क. वसुकि क, विसूकइ म.

३०. a पाच क म. b दस क म नेशालि क, नेशाल म. c सोलमि क. पधि क, पधिइ म. d वटु अ, मोटा क, बेटउ म समाणु क.

३१ a वरु क म. b यिम क, यम म. नेशालि क, नेसाल म. c महूरत क म. पूछउ क पूछउ म पाशि म. d वडइ क, चडि म. महोछव क महोत्सवि म. मनि क. उल्हाशि म.

३२. a माहाजन क म. दीधा क, दीधू म मांन म. b आप्या क म. पान म. c पूणाल क, पूणालउ म d वीरिं क, वीरिइ म. झाझउ क म. कीधु म.

तुरीय पल्हाणी थयु असवार, भोजिग भाट भणइ जयकार ।
माथइ पाटी रूपा तणी, करि खडीउ सोविन-लेखिणी ॥ ३३ ॥

गाइ कामिणि करइ टकोल, वहस्यां कुंअर तणां कपोल ।
धरीयां छत्र चमर बिहु पासि, पुहुता पंडितनइ आवासि ॥ ३४ ॥

पहिलु शरशति करइ जुहार, कंठि ठवइ पकाउलि हार ।
पछइ लागइ पंडित-पाइ, मागइ विद्या विनय-पसाय ॥ ३५ ॥

मेल्हइ खीरोदक दशवीस, पंड्यानइ मनि हुई जगीस ।
पंडित प्रथम भणावइ भले, नेसालीउ ते जीव नसले ॥ ३६ ॥

फूली खडीया बोला भरया, नेसालीआ अवर परिवरया ।
विद्यानु कीधउ आरंभ, योग्य मह्रूरतना सवि खंभ ॥ ३७ ॥

पुष्य नक्षत्र दशमी गुरुवार, लगन चराचर थंश विचार ।
शशि दशमु दशमु रवियोग, नहि भद्रा भरणीनु भोग ॥ ३८ ॥

---

३३. a तुरी क, तुरि म पलाणी म. थियु क, थिउ म. b भोजग क. भोजिक म भट अ करि क, करइ म. d सोवन क. लेषाणी क म.

३४. a कामनि क, कांमिणि म. करि क. b वहिस्यां क विहिस्यां म कुंअरतणा क, कुअरतणां म c धरयां क, घरइ म. चामर क म. बहूं क, बिहु म पासि क, पाशि म. d पहूता क. पंडितनि म. आवाशि म.

३५. a पहिलु क, पहिलु म. सरसति क म. करिउ क म. b ठवी क, ठविउ म. c पच्छइ म. लागुं पंडितने पाय क. d पसाइ म.

३६. a मेल्हां क, मेहली म. पीरोदक क म. दसवीस क म. b पंड्यानि म. होई म. c भणावि क. d ['ते' क म मां नथी] नेशले क, नीसले म.

३७ a भर्यां म. b नेशालीआ क, नेशालीया म. परवर्यां म. c कीधुं म. d जोय्यो महूर्तना क, जोइ महूरतना म. थिर क. थंभ क म.

३८. a पुष्य म. निक्षत्र क. दशमी क म. गुरवार क. b लग्न म. बचारि क. c शिसि क. दसमु क म. d नही क म. भरणी भद्रानु म.

विद्या आरंभी घरि गयु, दिनि दिनि भणवा उछक थयु ।
सकल सूत्र सीख्या सवि अंक, वहिला लाधा लपिना लंक ॥३९॥

जाणइ प्राकृत संस्कृ[त] सुधी, जाणइ सूरसेन मागधी ।
पैशाची अपभ्रंशी वली, एतलइ ष छ भाषा मिली ॥ ४० ॥

नारि पुरुष हय गज वृष छत्र, कुर्कट कामिणि मणि सुपवित्र ।
दंड खडग सवि लक्षण सहि, विद्या वास्तु विचारी लहइ ॥ ४१ ॥

चक्र शकट नइ गुरुड व्यूह, जाणइ रमीश रमाडइ जूह ।
राजनीति जाणइ जिनधर्म्म, जाणइ कनकरूपसिद्धि-कर्म्म ॥ ४२ ॥

---

३९. a आरंभीनि क b दन दन क. उत्सक म. c सीष्या क म. d लिपिना म अंक अ

आ पछी क म मा १ वधु —

छद भुजगम प्रयाति । क । भुजग प्रयात छंद । म । *
तरे हस लपि भूतनइ, मत्त यक्ष राष्यसी ।
उडकीडी नडी नागरी, पारसी वाणका लाड लिपि ।
मूलदे सघवी यावनी, तोरकी द्राविडी मालवी ॥ ४५ ॥ क

a तरि हस लिपि भूता म b अनिमित्त यक्ष राक्षसी म c उड्डि म d वाणकी लाड म e मौलदे सिंधवी म. f नारकी म.

* ए पछी म मा ए मतलबनु पादटीपमा लख्युं छे के मूल प्रतमा आ छंद नथी, बीजी बे प्रतोमाथी आ उतार्युं छे

चुपई । क ।

४०. a जाणइ म. सस्कृत प्राकृति क, सस्कृत प्राकृत म. शुद्ध म. b जाणइ म. सोरसेन क, सौरसेनि म. मागद्ध म. c पिशाची क. अपभ्रंसी क, अपभ्रूशी म. d एतलि क मली क, वली अ.

४१ a गज म b कर्कट क सामणि क, कामिणि म. मण क. c दड क ल्हइ क म. d वस्तु वचारी क कहइ क म.

४२. a शगट निइ क, शकट नि म. गरूड क, गुरड म. व्यूह म. b जाणइ म. रमी क म रमाणइ अ, रमाडी क म जूअ क म c जाणइ निजधर्म क, जाणइ जिनधर्म म d जाणइ म सदि क मिलि म

मंत्र तंत्र ओखध ते जडी, जाणइ डाकिणि शाकिणि नडी ।
जाणइ नारि-संग भोगवी, जाणइ जे सेवक जोगवी ॥ ४३ ॥

जाणइ शयन विलेपन वास, जाणइ वैद्यक वचन-विलास ।
जाणइ नाच गीत नवरंग, जाणइ नादभेद सप्तंग ॥ ४४ ॥

पहिरी जाणइ भूषण वस्त्र, जाणइ सर्व अभ्यासी सिस्त्र ।
जाणइ अन्न उदक केलवी, पंखि-भाख प्रीछइ नवनवी ॥ ४५ ॥

जाणइ युद्ध सुद्ध साचवी, जाणइ काव्यकथा-रस करी ।
जाणइ नगर-मान खंधार, जाणइ विणक-कला-व्यापार ॥ ४६ ॥

साकपाक परि नव नव लहइ, भोजन सतर भक्ष ते लहइ ।
जाणइ जलथंभी जनवाद, जाणइ अवर ऊतारइ नाद ॥ ४७ ॥

जाणइ दानमान ओचित्य, जाणइ नर्क सकल साहित्य ।
जाणइ जे रोपी आराम, जाणइ नीर करावी ठाम ॥ ४८ ॥

---

४३. a ऊषध क औषध म जे क, ये म b जाणइ म, शाकिणि डाकिणि क. जाणइ म. d जाणइ म. सेविक क भोगवी क म

४४ a जाणइ म b जाणइ म. c जाणइ म. d सपतंग क म.

आ पछीनी कडीनो अंक अ मा ४६ छे ए भूल जणाय छे, कारण के क म मा वच्चे कोई कडी नथी।

४५. a जांणइ म b सवि क म. अभ्याशी म. शख क म c जांणइ म. उन क. d पय क पंषी म भापि क, भाषा प्रीछइ नवी म.

४६. a जाणइ म. शुधि युधि क, शुद्ध म. b जांणइ म कवी क म. c जाणइ म. पधार क d जाणइ म. वणिग क म

४७. a शाकपाक क म. b ते वहइ क, भोजन भाव विविधना घहइ म. c जाणइ म. d जाणइ म, ऊतारी क म.

४८. a जाणइ म दांन मांन म. ऊचत्य क, ऊचित्त म. b जांणइ म. साहत्य क, साहित्त म. जाणइ म. आराम क म. d जाणइ म. ठांम म.

जाणइ गज घोडा खेलवी, जाणइ रूपकला अभिनवी ।
जाणइ ग्रसई लीलावती, जाणइ गणितकला जे हती ॥ ४९ ॥

गुणाकार नइ भागाहार, जाणइ लोक तणा व्यवहार ।
जाणइ यंत्रकला जलतरी, एतलइ कला बहुत्तिरि खरी ॥ ५० ॥

परि परिनां प्रीछयां पकवान, छय लघुवइ पणि हीयडइ सान ।
पुरष तणी जे बहुतिरि फला, प्रीछया सकल शास्त्र-आमला ॥५१॥

दूहा

विमल कुअर क्रीडा करइ, रंजइ नव नव लोक ।
नगर मझि जिहि नीसरइ, तिहां तिहां नरनु थोक ॥ ५१-१ ॥

४९. a जाणइ म. घोडा म b जाणइ म अभिराम क म. c जाणइ म d जाणइ म कला आवती म.

क म मा आ ४९ मी मा वच्चे उमेरण साथे २ कडी छे

जाणइ गज घोडा षेलवी जाणइ परिपरिनी पलवी ।
जाणइ पुष्फ तणा विज्ञान, जाणइ सकल समारी पान ॥ ५५ ॥
जाणइ जे वरतइ चित्राम जाणइ रूपकला अभिराम ।
जाणइ ग्रसई लीलावती, जाणइ कला गणित जे हती ॥ ५६ ॥ क

a जाणइ म घोडा म b जाणइ जे परि परि पल्वी म. c जाणइ पुष्प तणा विज्ञान म. d जाणइ म. पान म. e जाणइ म. f जाणइ म. अभिराम म. g जाणइ गणितकला आवती म.

५०. a गुणाहार क जि क म जाणइ क, जाणइ म जाण्या म c जाणि क जलि-म d एतलि क. बहुतर क

क म मा आ पछी १ कडी वधुः—

जाण्या विनय ववेक वचार, जाण्या उतमना आचार ।
जाणइ नगर वसावी करी, जाणइ वरती वीधा भरी ॥ ५८ ॥

a जाण्या म विवेक विचार म b जाण्या उत्तमना म. c जाणइ म d जाणइ वरतावी घरि भरी म.

५१ a परिना अ प्रीछया अ, प्रीछा क. प्रीच्छा म पकवान क b छइ क, छि म लघ वय पण म हीयडि क. हीअडि म. सान म. c ये म बहुतरि क, बहुत्तिरि म. d जाणइ सकल क; शकल अ

५१-१ a कुअर म करइ म. c नगरि क. मद्धि म. जिहा क म d तिहां क, तिहां तिहा म. माणस क, नरवर म.

वीर वनिता प्रीछवी, सुतनइ सुंपिउ भार ।
आपणि दीक्षा आदरइ, सद्दिगुरु सरसु विहार ॥ ५२ ॥

वस्तु

वीर नरवर वीर नरवर विमल कुंआर ।
घरि थापी दि सीखडी, अवनि वत्स अन्याय टाले ।
पापकर्म्म सवि परहरे, करे पुण्य जिण-आण पाले ।
घर घरणी मोकलावि करि, वीरमंत्र लि दीक्ष ।
करइ विहार विदेसडइ, पालइ सद्दिगुरु-सीख ॥ ५३ ॥

दूहा

दिन दिन दीसइ दीपतु, जिम उदयाचल भाण ।
विमल पेखि वयरी तणां, पोढां पडइ पुराण ॥ ५४ ॥
वली वशेखि विहि-वसइ, विमल वहिलु प्रधान ।
रखे राउलि वापरइ, अह्म टलसि अभिमान ॥ ५५ ॥
एक वयरी विष-वेलडी, ए विहुं त्रीजी व्याधि ।
ज[उ] ऊगंती छेदीइ, तु सिरि हुइ समाधि ॥ ५६ ॥

---

५२. a वीरि क, वीरीद म b सुतनि म. सुपी क म. c आपणपइं क. लिइ क. d –गुर क. सथि म.

वस्तू क.

५३. b विमल घरि भार क विमल घरभार`म. c घरि थपी क, थिर यप्पी म. दइ क, दिइ म. शीषडी म. d वछ क, वच्छ म e कर्म क म परिहरे क. f जन–आण क. g घरि धरणी क. मोकलाकि म. h मत्रि म. दइ सीप क लइ दीप म. i सीप क, दीप म.

५४. a दिनि दिनि म. दीसि क. b यिम क. यम म. उदयाचलि मांण म. c वयरी तणा क, विरी तणा म. d पोढा क म. परांण म.

५५. a विशेषि क. विशेषिइ म. वहिवसइ क, वहिवशइ म. b वहइलु विमल क, वहिलु विमल म. प्रधान म. c रषे ते क म. व्यापरइ क. d अम्ह क, अम म टलशि म अभिमान म.

५६. a इक म. वइरी क, विरी म. b विहू क, विहु म वाधि क. c जु म. ऊगता म. सरि क, शरि म.

वीरमती विरूउं सुणी, बेटा-रक्षण काजि ।
पाटण परहुं मेल्हि करे, पुहुती पोहर मज्झि ॥ ५७ ॥

चउपई

वीरमती तव पीहरि गई, संपति सघली पुंठि रही ।
साथइ बेटउ विमल कुमार, जई कीधउ माउला जुहार ॥ ५८ ॥

आगइ भाई-घरे अणाथि आवी वहिनर बेटा साथि ।
मोटापणि-मांहिथा रलइ, अन्न पान तु पूरां मलइ ॥ ५९ ॥

जां पोतइ हुइ पुण्य-प्रकास, तां घरि लखिमी लील-विलास ।
पाप तणउ जव पासु पडिइ तव घरी कूरी कूकस अडइ ॥ ६० ॥

रहिउ विमल मा सिउं मुसालि बारह चंचल वत्सर वालि ।
इणइ अवसरि देवी अंबिका आव्यां छइ आरासणि थिकां ॥ ६१ ॥

नव यौवन नवलउ संयोग, देखी देवी वंछइ भोग ।
कुंअर कहइ परनारी नीम, अणपरणि कहिउं मानुं कीम ॥ ६२ ॥

---

५७ a विरुय क. विरुउ म. b रषण क, रख्खण म. काजि क, कज्जि म. c पट्टण क म. परहू क म. मेहलि क, मेहलीउ म. करि क, ['करे' म मां नथी.] d पहुती क, पुहती म. पीहरि क, पीहर म. मद्धि म.

चुपई क चुपै म.

५८. b पट्ठणि रही क; पूठिइ रही म. c साथि क. कुआर क. d जे म. जउहार क.

५९. a आगि क. -घरि क म. c मोटां म. -माहिथा क, माहिइथां म d अनपान नवि पूरां मलइ क; करइ म.

६० a जा क हुइ प्रकाश क. b -विलाश क. c पाप तणु क. पासिउ क. पडइ क म. कूसक क.

६१ a मा सउ मुंसालि क. माशू मुहसालि म. b वछर क, वच्छर म c इणि क, तेणि म. आवी अंबिका क, देवी अंचिका अ. d आव्या क छि म थका क. थिका अ

६२. a नवलु क म. शयोग क. b देयी क म. वछिइ क. c कूंअर म. d अणपरणिइ म. कहिउ अ, कहु क, इहु म. मानू म.

सील लइ तूठी अंबिका, त्रिण्य वर दीधा पोता थिका।
बाण प्राण ते गाऊ पंच, हय-लक्षणना लक्ष प्रपंच ॥ ६३ ॥

नवल रूप निरत निर्मलां, त्रीजी अदूभुत अक्षरफला।
घर वेईं देवी संचरी, विमल वधाविउ विद्या खरी ॥ ६४ ॥

कडूआं फल नवि लागइ अंबि, सोनइ किम्हइ न लागइ संधि।
माणिकि मल न बइसइ सार, सील न चूकइ विमल कुंआर ॥६५॥

सील तणउ महिमा मनि वसिउ, आविउ मंदिरि हीयडइ हसिउ।
जोउ जोउ पटणि पणइ प्रस्तावि, वात हुइ छइ सरल सभावि ॥६६॥

वासि व्यवहारीउ श्रीदत्त तेह तणइ ह्याखुं वित्त।
श्री बेटी यौवन-वय हऊइ जोसी वीवाह मेलु जई ॥ ६७ ॥

जोसी नगरि घणइ आफलु, मिलता वसेप निरतु नवि मिलिउ।
जोसी कहि महिता सुणि वात, लहिर वीर जे जगि विख्यात ॥६८॥

---

६३. a शील लगइ क म. b त्रणि क, त्रिणि म. पोतिइ म. थयां क, थका म. c बांण प्रमांण गाउ ते म. d लक्षणनां लप म.

६४. a नव नव म. रूपि क. निरति क, निरतिइं म. नर्मला क, निर्मला म b उद्भुत क d वधावी क. विद्याधरी म.

६५. a कडूआ अ क. b कमि न क; किमहि न लागइ सूनि संधि म. c माणिक क, मांणिकि म मयल क. न रहइ लगार क, नवि रहइ लगार म. d शील क म. चूकउ क. कुमार म.

६६. a शील क म तणु क. गण ते मनि क. वशिउ म. b आविउ मंदिर क. हीअडइ क, हिंअडि म. हशिउ म. जोयो पट्टणि क. जो जो पट्टणि म. इंणि क, एणि म. d होई म. सभाव क, स्वभावि म.

६७. a वासिइ म. वावहारी क, व्यवहारी म. b घरि लाख क, घरि लाखउ म वित क c यौवन थइ क, यौवनमय म. थई क, होई म d जासी क, जोशी म. वीहा म. मेलउ क म. जोई म

६८. a जोशी म. नगर क म. घणा क. आफलइ क म. b वगु क, वग म. नरतु क म. मलइ क, मिलइ म. d जे वगि विख्यात क; लहिर इयु ये जगविख्यात. म.

तेह तणउ जे बेटउ विमल, पद्‌म-सरोवरि जेहवुं कमल ।
तेह तणी जे जन्मोतरी, मझ टीपणइ लखी छइ खरी ॥ ६९ ॥

तेह सरसु वीहा आदरु, वर मोटउ प्रथवीपति करु ।
तेह सरिसु मिलता वस मिलइ मन-चींतव्या मनोरथ फलइ ॥७०॥

रहि गेहडी घरि माउला, जाउ जु तुह्मे ऊतावला ।
वहिला वहिलि वहिलीआ करु मउड देई सरसा जोतरु ॥७१॥

छडे पीयाणे रथ संचरइ, खेत्र पासि देवी स्वर करइ ।
सुणवई कहइ वर छइ इहां, पणि जईइ उतारु जिहां ॥ ७२ ॥

घरि माउला तणइ जव गया, वीरमती तव झाखां थयां ।
आगइ इहां रहियां छउं दुखे, रणीउ कोइ आविउ हुइ रखे ॥७३॥

मनि विण अभोखण दि घणां वीरमती मेल्हइ वइसणां ।
कुहु व्यवहारीया केहइ काजि तुह्मो पधारया ईणइ राजि ॥ ७४ ॥

६९. a बेटउ जे क, ये बेटउ म. b सरोवर क. येहवू म. c जे [ज]नमोतरि क ये जनमोतरी म. d टीपणि क, टीपणि म. लषी क, लिषी म छि म.

७०. a सरीसउ क, सरसु म. वीवाह क म. b प्रथ्वीपति म. c सरसउ क, सरसु म मलता वसु मलि क. d मनि म. चीतव्या क, चिंतव्या म.

७१. a रहइ गेहडा म. b जाउ जउ तम्हे क, जाउ तुह्मे म. c वहिला वहिलि सजाइ करु क, वहिला वहिला वहिलि करु म. d सणवही सरसा तुहुतरु क, सुणवई सरसा जोतरु म.

७२. पीआणे क. साचरइ क. b पास क, पाशि म थर क. c यहि वर क, ठाहवे वर म छि म ईहां अ क, इहा म. d जे नि उतरीइ म. जहां क, तिहा म.

७३. a जवि क. b झाया अ. थयां अ म. c. ईहां अ क, अहां म. रहियां क, रह्या म. छउ क, छ म. दुष्ये क, दुपे म. d को क म.

७४. a मन क म. अमोपण क, आभ्भोपण म. दइ क, दिइ म. b मेल्हि क. c वहु क. व्यवहारी क म. केहि क, केणइ म. d तुम्हे क, तुह्म म. अणेर क, आणइ म.

पुत्र तुह्मारु विमल कुमार, होसइ अह्म बेटी-भरतार ।
वेगि वोह्रा मेलउ आज, अह्मारइ तुम्ह सरिसुं काज ॥ ७५ ॥

दूहा

पानि अह्मारइ पधरइ, रंग तुम्हे न देवाइ ।
धीरमती मुखि ए असिउं, अवलुं कथन कहाइ ॥ ७६ ॥

सुणि गांठि सेठि सयल, बांधी बोलइ ताम ।
हिव महूत-वेला टलइ, निश्चइ कीजइ काम ॥ ७७ ॥

खेत्रि अछइ वर-माउला, पूछ्या विण किम होइ ।
वेगि वाहिणि जोतरी, तिहां पुहुचउ सहू कोइ ॥ ७८ ॥

वाहिणि देखी आवती, मामा मनि चिंतेइ ।
को लेवा आवइ किसिउं, कारणि कउय तणेहि ॥ ७९ ॥

भोजन करता माउला, दीठा खेत्र मझारि ।
पासइ आवी परहुणा, पूछइ विनय-विचार ॥ ८० ॥

---

७५. a तमाहरु क, तह्मारु म. कुयार क b अम्ह बेटी होशि भरथार क; होशि म; अम म; भर्त्तार म. c वेगिइ म. वीवाहवा क. मेलु म. d अमाहरइ क, अह्मारि म. तुम म. सरसु अ, सरसिउ क, सरसू म.

७६. a पान क, पानि म. अमाहरे क. पधरे क, पद्धरइ म. b तुमे क, तुह्मे म. देवाय क. c मुखिइ इस्यू म. d अवलू म. कहाय क

७७. a सुणि क, सउण म. शेठिइ म. b बधी क. ताम क. c हवि क, हव म. महूर्त क म. d नसि कीजइ काम क; काम म.

७८. a पेत्र क. b विणि क. होय क. c वेगिइ म. वाहणि क म. d पुहुचइ क, पुहचइ म. कोय क.

७९. a वाहणि अ क म b चतेय क, चिंतेअ म. c आवि क. किशुं म. d कारण म. तणेय क, तणेअ म.

८०. b षेत्र क. c माउला क. परहणा म. d पूछिइ क. वचारि क, विचारि म.

जे तुह्म घरि भाणेज छइ, ते सरसुं अह्म काम ।
ते तेडु ओतावलु, विमल विमल जस नाम ॥ ८१ ॥

चउपई

सात करइ मामा मनि हेज, कहब मेल्हि आवु भाणेज ।
पडखु मामा मइ सग भरी, आवुं कलस चडावी करी ॥ ८२ ॥
आविउ कुंअर विमल मलपतु, जाणे सीह गुफामाहि हतु ।
ऊछट-भरि आलिंगण मिल्या, वीवा मेली वेवाही मल्या ॥ ८३ ॥
घरि माउला गया तेणि वारि, भाई बहिन करइ विचार ।
वीवाह विमल तणउ किम होसि, घरि भाणेज किम परणसि ॥८४॥

आदि वयर मामा भाणेज, आगइ पहवा बोल्या हेज ।
भाणेजु भाणेजु घरे, मामा जु सुख वंछउ सरे ॥ ८५ ॥

बहिनर बंधव मन ओलखइ, भाईमांहि रहइ ते झखइ ।
पता दिन रलीयां ते फोक, भाई [पांहि] भला के लोक ॥ ८६ ॥

---

८१ तुम चु भाणेज क, तुम घरी भांणेज म. छि म. b तेढ क. सरिसउ क, सरपु म. अम्ह क, अम म. काम म. c तेडउ क. ऊतावलु म. d नाम म.

चुपई क. चुपै म.

८२. a मन म. हेजि क म. b मेली क, मेहली म. भांणेजि क, भांणेज म. c पडष्यु क, पडखु म. मई क, मिंई म. शग म. d आविउ क, आवू म. कलश चढावी क.

८३. a विमल कुआर मलपतु क, विमलकुमर मलपतु म. S जांणे शीह म. गफा क म. मांहि म. हूतु म. c उलट म. आलगन क, आल्यंगन म. मल्या क. d वीवाह क, वीहा म. मेलि वेहाई म वल्या क म.

८४. a तीणि क. ते म. b बहिनर क म. वचार क. c वीहा म. विमल मं. हुसइ क, हशि म. d भाणेजउ क, भाणेजु म. परणसइ क, परणशि म.

८५. b एकवां म. बोल्यां क म. c भाणेजु भाणेजु अ, भाणेजउ भाणेजो क, भांणेजु मांणेयो म. d मामा म. जउ क. शरे म.

८६. a उलपइ क म. b भाई म. माहि क. रहि म. c एतां क. रलीआ क, रल्या म. d भाइ पांहि म.

जां धन तां सहू आदर करइ, धन विण छेहा भाई धरइ ।
वरघो बहि[न] भणइ भाखडी, धन विण परणावा आखडी ॥ ८७ ॥

जहीइ धन सांपडसि मज्झ तहीइ पुत्र परणाविसु तुज्झ ।
इम बोली वीरमती मात, जिम नवि लाजइ ताहरु तात ॥ ८८ ॥

वस्तु

कृपण सरज्या कृपण सरज्या सवे धनवंत ।
रयणाअर-जल खारपण, कमल-नाल कंटके भरिआं ।
चिंतामणि पाखाणमइ, कल्पवृक्ष काठमइ करीआं ।
चंद्र कलंकी अवधरिउ, सूरिजनइ सिरि ताप ।
विमल दरिद्रइ दोखीओ, विह वलगाडइ पाप ॥ ८९ ॥

चउपई

धन विण योवन पावस पंथ, प्रथम सनेह वियोग वहंत ।
परवसि रहिवुं सामी.सुख, पेखु पोढां पांचइ दुख ॥ ९० ॥
विमल प्रभाति गयु निज कामि गो चारइ सूनइ ए गामि ।
दर देखी खोई लाकडी नवि पाधरी जाइ वांकडी ॥ ९१ ॥

---

८७. b भाई ,छेहा क. c वरवी अ, वरवी, क भणि क. आपाडी क, आपाडी म

८८. a जहीइ क, जहींइ म. सांपडशि म. b तहीइ क म. परणात्रिशि म. c ईम क बोलइ क म. d यिम क, यम म. लाजि म.

' ' क म मा 'वस्तु'नो उल्लेख नथी.

८९. a सरया क. c रयणावर क म. जळ म. d कमलनालि क. कटेहि क. भरिआ अ, भरीया क, भरिया म. e चतामणि क, चिंतामणि म. f 'काठमि क म. मुहुरा क. करिया अ g कलीकि क. h सुरितणइ क, सुरिजनि म. सरि क, शीर म. i दरिद्रि म. अल्करिउ क, देपीउ म. j वहि क. लगाडयां क, विलगाडया म.

चुपई क, चुपै म.

९०. a यौवन क म. पावसि क, पावशि म. b सनेहि म c प्रवसि क, परवशि म. रहिवा क, रहिवू क. स्वामी क. पामी (पाठा० भी 'सामी') म. सप क, सुख्य म. d पचइ पोढां क म. दुप क, दुख्य म.

९१. a गियु क. ठामि क. b गोरू चारइ क म. सूनि गामि क, सूनइ गामि म. देखी पोई क म. d वाकडी क.

घम घम ढलीयां पाछां किद्ध, प्रगटउ कनक-कलस ते लिद्ध ।
विमल वीरमती-करि दिद्ध, चिंतइ मन प मनोरथ सिद्ध ॥९२॥

खंडि खंडि छइ मति निर्मली, भणतां सुणतां संपति मळी ।
मुनि लावण्यसमयची वाणी, पतलइ चउथउ खंड वखाणि ॥९३॥

इतिश्री विमलप्रबंधे लेखक शालाकरण ६४ कला ६ भाषा-
भिधान पुरुष-सामुद्रिक ३२ लखण मातुलगृहगमन पाणिग्रहण
मलिन निधान लब्धाधिकारे चतुर्थ खंड समाप्तः ॥

---

९२. a धव धव क म. ढलीआं क. कद्ध क. किध म. b प्रगटिउ
क म. कन[क] कलश करि लीद्ध क. c विमलि क, विमलिइ म. दीद्ध क. d
सीद्ध क

९३. a छि म. नरमली म. b भणतां गुणतां संपदि वली क. मनि
क. लावण्यसमिइची क. वाणि क. c एतलि क. चुथु क, चुथउ म. वर्पाणि
म. अहीं सुधीमां क म मां १०१ कडी थाय छे.

पुष्पिकाओ:—

इतिश्री प० लाव्यण्यसमइगणिकृते विमलमंत्र मनोहर प्रगट प्रबंधे नवरंग
नवपडे चतुर्थ पड संपूर्ण ॥ ४ ॥ श्री ॥ छ ॥ श्री ॥ क,

इति श्री विमलप्रबधे नवपडे लेपशाला करण, १८ लिपि, ६४ कला, ६
भाषाभिधान, पुरुष सामुद्रिक लक्षण, मातुलगृह गमन, विवाह मेलन, विमल
निधानलब्धघनाधिकारे चतुर्थ पड समाप्त ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ म.

खंड ५

चउपई

धीरमती लागी हरखवा, मोकलीया कन्या नरखवा ।
जे डाहा लक्षणना जाण, सामुद्रकि बोल्यां अहिनाण ॥ १ ॥
चाल्या अति आडंबर करी, पुहुता पाट्टणि श्रीदत्त-घरी ।
निरखइ कन्यानुं वली रूप, जोइ लक्षण सकल सरूप ॥ २ ॥

दूहा

चंद्रवदनि चंपकवनी, निर्मल नयण विशाल ।
रामा राता अधर जस, संपति सुख रशाल ॥ ३ ॥
अंकुश कुंडल चक्र धज, मंदिर कुंजर कुंभ ।
छत्र कमल हय जास करि, राउ तणइ घरि रंभ ॥ ४ ॥
जस करि रेखा रूअडी, तोरणगढ-आकारि ।
घरि आवी कुलि दासनइ, राणी राज-दूआरि ॥ ५ ॥
पामइ पति नरपति भलु, पुत्र जिणइ ते सूर ।
जस नारी करि निरखीइ, रेखा छत्र मयूर ॥ ६ ॥

मूळमां 'पांचमां खंड'नुं मथाळु नथी. षंड पांचमउ म. मात्र म मां 'चुपै' छे; बीजी बेउ प्रतोमां नथी.

१. b मोकलीआ क. निरपवा म. c जांण म. d सामुद्रक क. सामुद्रिक म. बोल्या अ. अहिनांण म.

२. a आव्या ईति क. b पुहता म. पट्टणि क म. c कन्यानु वली अ. नवलुं क, नवलं म. d जोई क. स्वरूप म.

३. a चंद्रवदन क. b नर्मल क. हृदय म. c अधुर वस क. d सप संपति क; सुख्ख म. रसाल म.

४. a ध्वज म. b मंदर कुञ्ज क. c जस म.

५. a रेपा क म. b कुल क. दाशनइ म.

६. b जणइ क, यणइ म. शूर क म. नरपीइ क, निरपीइ म.

मृगनयणी मृग-कंधरी, मृग-पेटी सुकुमाल ।
हंस-गमणि सा सुंदरि, भूपतिनइ घरि भाल ॥ ७ ॥
जस सिरि केस मिलत हुइ, मुख-मंडलनइ मोट ।
दक्षणवली नाभि वली, पति पामइ विण-खोडि ॥ ८ ॥
जेह करि लंबी अंगुली, जेह सिरि लंबो वीणि ।
आय घणउं वल्लभ सहित, घरि धन सहिजि प्रवीण ॥ ९ ॥

कृष्ण सरीखी सामली, गोरी चंपकवानि ।
अंग वदन ससिनेहला, झीलइ रंग-निधान ॥ १० ॥
कनक-कमल पइ पिंगली, देह-कंति झलकंति ।
मणि माणिक सोवन तणां धन आभरण लहंति ॥ ११ ॥
हसतां नलवटि साथीउ जे नारी नइ थाइ ।
गजरथ घोडा प्रियघरि, सहस गाम बंधाइ ॥ १२ ॥
डावा पासा नइ गलइ, लंछण होइ थणेअ ।
कइ मसि तिल कजामणुं, पहिलु पुत्र जणेअ ॥ १३ ॥

---

७. a मृगन्धरा अ. b सुकुमालि क. d भूपतिनि म. भालि क म.

८. a सरि क, शरि म. मलित केश क; मिलित म. b मुष-मडलिनि क, मुषमडणनि म. मोडि क म. c नामी क म. वलइ म.

९. b सरि क, शरि म. वाणि क. c घणउ वल्म क. d सहिज क, सहजि म. प्रीण अ, प्रवीणि क.

१०. b वानि म. c सस नेहला क, कर कोमलां म. d निभान म.

११. a कमल ते क, कमल पहि म. पिंगली म. c माणिक म. तणा अ क d घणा क, घण म. आभर्ण क.

१२. a नलबट क, निलवटि म. b जेह क म. नारीनि म. c घोडां म. प्रीऊ क. घरे म. d सहिस क. गमे क, ठामे म.

१३. a डावइ पासइ क म. b हुइ क. थणेइ क, घणेइ म. c करि क. तल क. कजकामिनी क, ते कामिनी म. d पहिलउ म. जणेइ क, यणेइ म.

अंगइ अलप परसेद जस, अल्प रोम सर जास ।
निद्रा भोजिन थोडली, उत्तम लक्षण तास ॥ १४ ॥
विनयवती नइ कुलवती, सीलवती सुविचारि ।
परिथल पुण्यइ पामीइ, कलावती घर नारि ॥ १५ ॥
साथल कदली-थंभ सम, कर चरणे नही रोम ।
विपुल गुह्यमणि गूढ जस, निलवटि अघउ सोम ॥ १६ ॥
कटि लंकी उन्नत हृदय, पुष्टउ पश्चम भाग ।
नारि असी नर आदरु, जिम हुइ लखिमी लाग ॥ १७ ॥
सत्थल होठ पयोधर, रोम-राय घण हुंति ।
जस मुख पीलुं पांडरूं, पहिलु कंत हणंति ॥ १८ ॥
जाडी जंघा जेह तणी, कइ वधिया कइ दासि ।
कइ दारिद्रणी दुखणी, रामा हुय विमासि ॥ १९ ॥

चउपई

जेहनी पूठि हुइ आवर्त्त, ते मारइ भर्त्तार महंत ।
नाभि तणा आवर्त्त विचार, मानइ देव समु भर्त्तार ॥ २० ॥

---

१४. a अग क म. परसेव क, परशेव म. b अलप क म. सरि क, शरि म. c निर्दा क. भोजन क, भोजनि म. थोडलु क.

१५. a नी क नि म. b शीलवती क म. सविचार क. c परिथलि क, परथल म. पुण्यिइ क, पुण्यिइ म. d घरि क म.

१६. a सदली क, सत्थल म. जम म. b चलणे क नहीं म. c निलवट क d अघु म. लिद्धउ (पाठा० थी लद्दउ) म.

१७. a उनत क. b पुष्ठु क. c इशी म d यिम क, यम म. लहु क. लषिमी म.

१८. a पयोधरि क, पयोधरिइ म. b हति क. c जेह क. पीलउं क, पलीए म. पाडरू क. d वहिलउ क म.

१९. a येह क. b कि म. विधवा क म. कि म. दाशि म. c कि म. दारिद्रिणि म.' दपणी क, दुखिलणी म d हृदय क म. विमासि म. क मा 'चुउपइ' शब्द नथी; चुपै म.

२०. a जेहनि क, जेहनइ म. पूठिइ म. b भर्तार क; पोतानु भर्त म. c तणा म. आवर्त क वचार क. d मारइ म. समउ म. भर्तार क. (c d क मां २१ मी कडीनी बीजी लीटी छे.)

कटि आवर्त्त हुइ जेह तणइ तेह छंदि हींडइ आपणइ ।
बोली बाला त्रिहु प्रकारइ, परखीनइ परणु संसारि ॥ २१ ॥

लांब ललाटि उदर सग जास लंबोदर देउर-वणास ।
लंब भग्ग पति जाइ मरी, राखिस-रूप नारि अवतरी ॥ २२ ॥

लंब होठ जेह कालु छरु, पीली आंखि साद घोघरु ।
अति गोरी अति काली नारि, वर जे वणठउ माणे संसारि ॥२३॥

लंब ललाटि ससरा संहार, सासू देउर वर-नइ भार ।
सामुद्रकनी माने सीख, कइ छांडे कइ पइसइ भीख ॥ २४ ॥

हसतां गाले खाडा पडइ, रामा रंगि रमलि ते चडइ ।
चालंतां भूंइ कंप अपार, कामिणि वयर तणी करन्हारि ॥ २५ ॥

पाय तणी वचिली आंगुली, टुंकी भुइ साथि नवि मली ।
ते दोभागिणि जाते दीह, असतीमांहि काढइ लीह ॥ २६ ॥

---

२१. a आवर्त क. येह तणि म b ते क छदइ हींडि क, चालइ छदिइ म. आपणि क c त्रहू क प्रकारि क म d पुरषीनइ अ. परणउ म. [क मा २० मी कडीनी c d बीजी लीटी छे.]

२२. a लंब क म. ललाटउ क, ललाट म. भग जास क म. b ससरु देउर कथविणास क, ससरु देउर वरविणास म. c लबइ क. भग क, भगिइ म. d शब्दे क, राक्षस म. रूपि म [२३ c d क म.]

२३. a जीह क, जिह म. छरु क. b आंपि क. घोघरू क. c साभलि नारि म. d वरगेउ माणे ससारि क, वरये छु माणे संसारि म. [कडी २४ क म मा]

२४. a ल्लाट क म. ससरु म. सघार क. सिंहार म. b लबोदर नइ भार क, लबोदर देउरनि भार म. c सामुद्रिकनी क म. माने म शीष म. d कइ माने कइ क, कि छडे कि म. पडसि क, पडशि म. [c d कडी २२ क म. मा]

२५. b रमले क. c चालता क. भूइ क्प अ, भुंइ क्प क म. कामिनि क. करनारि क, करणारि म

२६. a विचिली म. आगुली अ, आगली म. b टुची क, टूकी म. भूमि क. साथिइ म. मिली म. c दीहि म d आसती अ. माहि क कढावि क म.

अनामिका पगनी आंगुली, टचांगुलीनइ पासइ मिली ।
जेहनइ ढुंकी उन्नत रहइ, भर्त्तार नारि अनेरु लहइ ॥ २७ ॥

अति ऊंची अति नीची घली, अति गोरी अति काली दूबली ।
अति झाडी नइ पदवी नारि, ते आंगणइ आपणइ निवारि ॥२८॥

अंग अघोर नाक वांकडुं, पग छापरा मुख मांकडुं ।
ऊभी रही जसी प्राजूई, घनिता वयर-काजि घर हुई ॥ २९ ॥

२७. a अनमका क. आगुली अ, अगली क, अंगुली म. b टचागुली अ, टचिअगुलीनि क, टिचांगुलीनि म. पासि म. मली क. c जे ढुंकी जउ उन्नत क; ढुंकी म. d भरता क, भर्ता म. अनेरु म. आ पछी क म-मां २ कडी वधु छे:—

अगूठानइ पासि अडी, एक ढुंकी नि ऊंची चडी ।
ते अंगुलनु कसिउ विचार, नारी नवि मानइ भरथार ॥ २८ ॥

a अंगूठानि म. b ढूकी म. उन्नत म. c अंगुलिनु करिउ म. d नांनइ भर्त्तार म

कही कनिष्टा टचि अगुली, उनत भूमि न फरसि वली ।
कुमरीपणि जारि जाणेय, यौवनवइ माणे संदेह ॥ २९ ॥

a आंगली म. b उन्नत भूइ न लागइ वली म. c कुमरीपणइ जार जांणेइ म. d यौवन मइ मांणिशि संदेह म.

२८. a ऊची अ. b अति जाडी नइ अति दुर्बली क, 'अति जाडी नि अति दूबली म. d आगणि क म. नवारि क. आ पछी क म मां १ कडी वधु :—

काकजघ नारी नवि राखि, घोघर साव नि पीली आखि ।
जउ पति गाढउ जूठ्उ थाइ, मारइ दस (मसवाडा) मसवाडा माहि ॥३१॥

a म न राखि म. b सरनि पीली आंखि म. c जु म जु ठउ म. मसवाडा (एक वखत छे) म.

२९. a वाकडु अ, वांकडउ क, वांकडु म. b पग छापरा नइ मुख माकडउं क, छापर पग मुहइ सांकडु म. c रहि जिसी म. d विनता क. घिर म. परि क म. होई म.

पीलउं वदन देह भूतडुं, जाणे रोमराइनुं थडुं ।
राइ तणइ घरि जाई होइ, दासपणउं पणि पामइ सोइ ॥ ३० ॥

अति लांबु नइ अति कूबडु, अति जाडु नइ अति दूबलु ।
अति गोरु नइ कालइ वानि, ए छ दोभागी-भग मानि ॥ ३१ ॥

काछियपूंठि जसिउ गज-खंध, अति संकोचन पदमनु गंध ।
अति उन्नत नइ वृत्ताकारि, छ भग बोल्यां शुभ संसारि ॥ ३२ ॥

---

३०. a पीलउ अ, पीलं क, पीदुं म. b जांणे म. रायनु क, रायनुं म. थइं म. c राय क म. होय क. d दासपणु अ, दासिपणु क. सोय क. आ पछी क म मां २ कडी वधुः—

वदनमान जाणेयो गुह्य, गुह्य सरीपां नयणां बुज्झि ।
जिस्या कृत ईसु आचार, हस्त बाहू क्रम जंघ वचारि ॥ ३४ ॥ क

a वदनमांनि जांणेयो गुह्य म. b गुह्य म. c यस्यां नयण तिशु आचार म d वाहु म.

करनइ मानि पायनु रंग, बाहू मानि जाणेज्यो जंघ ।
हृदयस्थल सरसु शणिगार, सत्त्व मानि पामइ परिवारि ॥ ३५ ॥ क

a मांनिइ पगनु म. b बाहु मांन जांणेज्यो म. b शरसु शणगार म. d सत्त्व मांनि म. परिवार म.

३१. a लघु क. नि क म. b जाडउ क. नि क म. राकडु क. c गोरु अति कालइ क, गोरु नि कालि म. वांनि म. d छि म. भग दोभागी क म. मांनि म.

३२. a काछव पूठि क म. यशु म. कंध क, पध म. b संकोच पद्मनुं क. d उनत क. नि म. वृताकारि क. d शुभ बोल्य क, शुभ बोल्या म; योल्या अ.

आ पछी क म मां १ कडी वधुः—

लांबे दाते लाहडि मली, काकसरा नइ रुछांछली ।
हाथ पाय टंटुटी आंगली, परण्या वण अणपरणी भली ॥ ३८ ॥ क

a दांते लहिडि मिली म. b काकस्वरा नि रुछांछली म. टूटी पांगली म. d विण म.

. . . .

चोख-भंडि चंचल चीपडी, सापिणि सुंखिणि सुंछिणि सिडी ।
भाई विण घरि भुंडा तणी, नारि म आणेसि ते निर्गुणी ॥ ३३ ॥

हड हड हसइ भुंड परि भसइ, डोले डारे धुबडि घसइ ।
लंपट लोक न आणइ लाज, ते परण्यानुं केहुं काज ॥ ३४ ॥

कदलीथंभ जंघ जूअली, दंत दीपइ दाडिमनी कुली ।
पुष्ठा गाल लाल आंखडी, राता अधुर मधुर भाखडी ॥ ३५ ॥

हरि-लंकी हीडइ मलपती, गजवज्ञ हंस हरावइ गती ।
रूपइ रंभा कइ रोहिणी, कइ इंद्राणी कइ मोहिणी ॥ ३६ ॥

अमरी कुमरी जे उरवसी, नागलोकनी (ही) नारी इसी ।
जोतां रूप न आवइ पार, उरि पहिरिउ पकाउलि हार ॥ ३७ ॥

---

३३. a भड क भडि म. चचलि म. b सापणि सुछणि संघ्यणि सरी क; सूचिणि शडी म. c भाइ म. परभुडा क. भडि भूडा म. d. आणिशि म. आ पछी क म मा १ कडी वधु.—

थोहर पाए नि धुबडी, चोगडवोलि नि चोपडी ।
चाडी वरडी चूटी वली, चयठइ नाकि न आणे मली ॥ ४० ॥

a थोवडी म. c वरडी नि वलवली म. d चिठइ म. म आणे वली ॥ ३९ ॥ म.

३४. a भूड म. b डारइ म धुवड क, धूवडि म. c लपटि म. आणि क, आणइ म. d परण्यानूं म. केहू क म. आ पछी क म मा १ कडी वधुः—

हीण पीण दीना दासना, ते अपलक्षण नहि आसनां ।
जे जे लक्षण नारी तणा, श्रीनी अगि वसि ते घणा ॥ ४२ ॥ क

a दीणा म b नही आसना म. c तणां म. d अंगि वसइ ॥४२॥ म

३५. a कडलीथम क. b दत दीपि क, दतपंति ते म. दाडिम म. c पुष्ठा अ. आपडी म. d अधर म.

३६. a हीआडि क, हीडि म. b गजगति क. गजवज म. हराव्या क. हरावि म. सती क. c रूपि क, रूपिइ म. रंभ कइ क. रंभा कि म. रोहणी क. d कि म कि म. रोहिणी अ, मोहनी क, मोहिनी म.

३७. a उर्व्वसी क, उर्वशी म. b 'ही' क म मां नथी. इसी क, यसी म. c जोता अ. d घठि क. पहिरा क. पहिरिउ म.

वेणीदड लंब लहिलहि, रूपि राणी पासइ रहि ।
कानि जटित खरी खीटली, झबकइ झालि हाथि वीटली ॥ ३८ ॥

नामि पनुती श्री सुंदरी, सामुद्रकने लक्षणि करी ।
पूछइ बोल जके आकरा, ते ते उत्तर आपइ खरा ॥ ३९ ॥

गीत नाद नाट[क]नी कला, जाणइ धर्म्म नीति निर्मला ।
मंत्र तंत्र जाणइ विज्ञान, जाणइ ताल तणां ते मान ॥ ४० ॥

मेघवृष्टिना जाणइ मर्म, जाणइ जल-आकर्षण कर्म्म ।
वन-रोपन जाणइ आकार, जाणइ जे जे धर्म्माचार ॥ ४१ ॥

---

३८. a वीणि म. लहिलहइ क, लहलहइ म. b रूप न राणी क, रूपि न रांणी म. पासि क. पासिइ म रहइ क म. c काने क, काने म. जडित क म. d झबकि म.

३९. a नांमि म. b सामुद्रकिने क, सामुद्रिकने म. भरी क c जे आकरा क, जिके आकरा म. d उत्तर म.

४०. गीत गांन नि नाटक कला म; नाद नइ नाटिक क. b धर्म, क; नर्म्मल क; धर्म नीम ते जाणइ भला म. c जांणइ म. विज्ञांन म. d जांणइ म. तणा क. ते मान क, सवि मान म आ पछी क म मां १ कडी वधुः—

जाणइ उचत कला जे चित्र, जाणइ वचन भेद वाचित्र ।
जाणइ ज्ञानक्रिया जे दंम, जाणइ जे वरतइ जल थंभ ॥ ४८ ॥ क ॥

a जांणइ उचित म. जि म. b जांणइ म. वाजित्र म. ज्ञांन म. ये म. d जांणइ ये म. ॥ ४९ ॥ म.

४१. a जाणइ म. b जांणइ म. क्रम क, कर्म म. c वनगोपन क. रोपण अकार क, गोपन आकार म. d जाणइ म. धर्म क म. वचार क, विचार म.

शकुन-शास्त्र जाणइ गुरु थकी, जाणइ वाणी जे देवकी ।
जाणइ वस्तु वधारी वान, जाणइ मधुरां रांधी धान ॥ ४२ ॥
गुंथइ वेणि फूल फूटडां, जाणइ कथन कहो वांकडां ।
जाणइ ओगति अनेरामांहि ऊतर देतां वार न लाहि ॥ ४३ ॥

४२ a शकुन-क म-शास्त्र क. जांणइ म. b जोणइ म वाणि ये म. c जाणइ म. वस्तू म. मान क. d जाणइ म. आ पछी क म मां ४ कडी वधु —

जाणइ सोवन रूपा सद्धि, आपइ ऊत्तर हीअडा शुद्धि ।
जाणइ मडावी प्रासाद, जाणइ करी वितडावाद ॥ ५२ ॥ क

a जाणइ म. सोना म सिद्धि म b हीअडि ऊत्तर म. c जांणइ म. d जांणइ म ॥ ५२ ॥ म

लही लक्षण सामुद्रक भणी, जाणइ गति जे लीला तणी ।
जाणइ तेल सगधा करी, जाणइ परीष्या जे गज तुरी ॥ ५३ ॥ क

a हयलक्षण म. सामुद्रिक म. b जाणइ म. c जाणइ म सुगधां म. d करइ परीक्षा म. ॥ ५३ ॥ म ॥

सार पास रमता रंग वडउ, जे धूंदी जाणइ गरवडउ ।
करलाघर बोलन पडवडी, भोजन-विधि जाणइ चडवडी ॥ ५४ ॥ क

a सारि पाशि म वडु म b जाणइ जे खूंदी गरवड म c बोलइ म. d भोजन परि जाणइ म ॥ ५४ ॥ म

जाणइ विण कलाना देप, जाणइ पहिरी नव नव वेष ।
नयण-सन्या सघली करइ, सुपमडन घरमडण लहइ ॥ ५५ ॥ क

a जाणइ वणिज म b जाणइ म c नयणे म लहइ म. d मडन म. ॥ ५५ ॥ म.

४३. a गूथइ क म वीणि क म फूटडा अ क फूटरा म. b जाणे म. वाकडा अ क, कहीशि घणा (पाठा०थी 'कहि वाकडां') म c आणइ म उगति क, उगति म. पाहि क d उत्तर क ऊत्तर म. देता क वारि न लाय क; लाइ म आ पछी क म मां १ कडी वधु —

देस देसनी भाषा लहइ, वैद्यकला कइ डाहिमपणइ ।
जाणइ लोक तणा व्यवहार, जाणइ पहिरी सवि शिणगार ॥ ५७ ॥

a देश देशनी म. भणइ म. b लहि म c जांणइ म d जाणइ म. शणगार म ॥ ५७ ॥ म

लहि हरीआली अरथ अनेक, जाणइ वीणानाद-विवेक ।
पति रंजन अंजनना योग, चउरासी आसनना भोग ॥ ४४ ॥

जाणइ चालचाल हेलवी, जाणइ करि कुंकम केलवी ।
जाणइ सोवन वर्ण विशेख, लपि अष्टादश लहि विवेक ॥ ४५ ॥

लाडी चोडी नइ सोरठी, हाडी महायोधी मरहठी ।
कर्णाटी कान्हड डाहली लपि मागधी ससी संहली ॥ ४६ ॥

खुरासाणी गूजर कुंकणी, हम्मीरी परतीरी भणी ।
मालवनी लपि लहि विचार, बोली लपि पसलइ अढार ॥ ४७ ॥

चउसठि कला नारीनी भणी, जाणइ अधिक घली ते घणी ।
सवि पारखां लहि बोलतां, पहिरइ वस्त्र अंगि सोभतां ॥ ४८ ॥

करि वात डाहिम आपणी, जाणइ पंच काव्य ते भणी ।
जाणइ चूरण सकल अभिधान, जाणइ पर ऊतारी मान ॥ ४९ ॥

---

४४ a लहइ क. हीयाली म. अंक क. b जांणइ म. c पर रंजन म. d चुराशी म. आसन सभोग क.

४५. a जांणइ म चाले क. b जांणइ म. कुकुम क. c जांणइ म. सोविन म रूपा सधि क वर्ण विवेक म. d लिपि म, अष्टा लहि असद्धि क; लहि असेप म.

४६ a नि म. b हाडीयो क. मदधी क, महयोधी म. c करणा टीक क हृदय टाहली क; काहडी म. d लिपि म. शसी क. सिहली क, सिंगली म.

४७. a खुरासाहाणी म गुजरि क, गुर्जरि म. कूकणी म. b हमीरी क परतारी म c माल्वणी क. लिपि म. लहइ क म. d लिपि म. एतलि क.

४८. a चउसठी म. नारिनी क म b जांणइ म. तेह म. c लहइ क लइ म d पहिरि क. अगवस्त्र क. शोभता क, सोहता अ.

४९. a करइ क म b जांणइ म. जे क. c जाणइ वर्ण क, जांणइ सकल चूर्ण म. अभिधांन म. d जांणइ म मांन म.

जाणइ देव डाकिणि-नइ ग्रही, भूत प्रेत जाणइ निग्रही ।
जाणइ दोही दलूया दधी, जाणइ गोली-गोरस मथी ॥ ५० ॥

सचि व्यवहार सकल व्याकरण, सजन वर्ग सेवकनां भरण ।
नारि तणा जे वरतइ धर्म्म, ते ते जाणइ सघला मर्म्म ॥ ५१ ॥

भैरव पंचम नाट वसंत, मेघराग श्रीराग हसंत ।
एकेकानी छ छ नारि, ते छत्रीस भाख विचार ॥ ५२ ॥

त्रिणि ग्राम सर सत्त सरंग, लहि गणीस मूर्च्छाना चंग ।
तान मान ओगणपंचास, श्रुति बावीस तणउ अभ्यास ॥ ५३ ॥

जाणइ ताल कोडि छप्पन्न, पंच वाद्य वसुहा वितपन्न ।
करइ परीक्षा जिम जिम कसी, जिहां जिहां जोइ तिहां तिहां तसी॥५४॥

कइ बाला त्रिपुरा मुखि वसी मूरतियंती सरसति हसी ।
जे वलतुं पूछइ बालिका, नु हुइ ऊतर सहू दि तालिका ॥ ५५ ॥

---

५०. a जाणइ जे क, जांणइ ये म. डाकिणि ग्रही क म b [क मां b लखवी रही गई छे] जांणइ म. d जाणइ गोरस गोली म.

५१. a सिचि क. व्याकर्ण क म. b श्वजन क, स्वजन म वर्ग क म. शेवकना म. भर्ण क म. c तणां क. ये म. धर्म क म. d जांणइ म. सघलां क. मर्म क म.

५२ a नाट क; नाटक (पाठा०थी 'नाटह') संत म d श्रीगार अ. वसंत म. c इकेकानी क, अकेकानी म. d ए म. छत्रीसि क, छत्रीसं म. वचारि क, विचारि म.

५३. a त्रणि क. नाम अ, गान क, ग्राम म. सर सत क. सुरंग म. b लहइ क एकवीस क, उगणीस म. मूर्छना म c तान मान क. उगणपचास क d श्रुत क. ब्यासी अ. तणु क, तणा म.

५४. a जांणइ म. छपन क b वसुहां क म. व्यतपन क, व्युतपन्न म c यिम यिम क, यम यम म. कसी म d तिहा तिहा क. तिशी म.

५५. a कि म. वशी म. b हशी म. c ये म. पूछइ वलतु क; वलतू म. d तुहइ क. तुहि म. ऊदर क ऊत्तर म. दिइ सहू म.

करी निरीक्षण हरख्या हीइ, करी सूखडी सवल करि दीइ ।
अति परगण्या सजन सिउ मिल्या, लेई लगन घरि पाछा वल्या॥५६॥
आवी वीरमतीनइ कहिउं त्रिभुवन-रूप पकठउं थयुं ।
जे लक्षण सामुद्रक तणां, ते ते अंगि अनोपम घणां ॥ ५७ ॥
अवगुण पक नहीं आसनु महिमा घणउ वली वासनु ।
रत्नयोनि पाटणनुं नाम, विनय विवेक तणउं प ठाम ॥ ५८ ॥
जे जे अह्म साचवणी करी, ते जाणइ परमेश्वर पुरी ।
फोफल पान फूल पकवान, वाल्या देह तणा अह्म वान ॥ ५९ ॥
करु सजाई वीवाह तणी, गुंहुं पल्हालु सोहासणी ।
पापड वडी कर्यां पकवान, सालि दालि सवि सोध्यां धान ॥६०॥
घाल्या मंडप् वेगि विशाल, आण्या सवि सोनाना थाल ।
मेल्हां आसण नइ आडणी, रूपानी मांडी मांडणी ॥ ६१ ॥
ठामि ठामि गई कंकोतरी, आव्या सजन सवे नहुतरी ।
वइठी पंति खंति येवडी, हाथ पाय धोइ धुसटी ॥ ६२ ॥

---

५६. a निरपण क. हैइ क. b ते दीइ म. c परगण्यां म स्वजन-सउ क, सुजन शु म. मल्या क

५७. a नि क म. b त्रिभोवन क, त्रिभोवनि म. एकठुं क, एकटुं म. थयु क, थयूं म. c ये म. सामुद्रिक म. d अंगि म. घणा म.

५८. a अवगण म. नहीं म b महिमा वली घणु तासनु क, महिमा एक वहु वासनु म. c पाटणनू म ठाण म. d तणु क. ए ठांण म.

५९ a अम्ह क अम म. b जाणे म. परी क, परी म c फूल पान क, पकवांन म. d शालि दालि सवि शोधा धान क, देह तणा अन्न वाल्या वांन म.

६०. आ कडी क मां नथी. a विहा म. b गहूं म. पल्हालि म. सोहाशिणी म c करिआं म. पकवान म. d सोध्यां सवि धान म.

६१. a घाला क. b आण्या सवि सोनानां क. c मेहल्या क. आसन नइ क, आसण नि म d माडी क. माडणी क, आंडणी म.

६२ a ठांमि ठांमि म. गइ क. गे म. b आव्या क. सवे म. नहूतरी क, नुहतरी म. c विठी म. पांति क म पाति क, खंति म. बेवडी म. d धोया क म. चडवडी क, धुसटी म.

पहिलउं मेल्ही फलहलपूर, खाजा लाडू पछइ कूर ।
दालि सुहाली घृतनी नालि, सोल सालणा बांधी पालि ॥ ६३ ॥

आव्यां घोल तणां माटलां, भरी भरी मेल्हां वाटलां ।
करथा कूंर करंबा करी, कर धोइ जल-झारी भरी ॥ ६४ ॥

पान फूल केयडीउ काथ, सज्जन कीजइ टाढा हाथ ।
चंदन चूआ नइ चांपेल, मंडपि रंगि रहावी रेलि ॥ ६५ ॥

धुंप भरिउ खुणालु धति भुंगल भेर ढोल ढमकंति ।
मुगट अस्या बे मोती भरी, जई कुंअर परणेसइ सरी ॥ ६६ ॥

मामा तिहां माम[हि]रुं करइ चाहु न चूकइ वीवा वरइ ।
साथि रथ घोडानी घाट, मोटां धायण गाइ भाट ॥ ६७ ॥

धोलइ मंगल जे जाद्रणी, चंद जिमणि जेहवी चांद्रणी ।
विमल कुंअर वर चंचलि चडइ, ऊंचउ अंबर समाणउ अडइ ॥६८॥

---

६३. a पहिलु क, पहिलू म. मेहली क, मेहलि म. फलहुलि क म. b वीजा क, पाजा म. पच्छइ म. c सूहाली म. घृतिनी क कालि अ, क. d सालणे क. सालने म. माधी क.

६४. a आव्या म. भरया क, भर्यां म. माटला अ, माटलां म. b मेल्हा अ, मेहल्या क म. वाटला अ. ' करया 'ने बदले 'ठारया' क, ठार्या म.

६५. b सजन क कीजि म c चूआ चदन नि म. चापेल क. d मडप क रग क म वहावी क म. रेल म.

६६. a धूप क, खूप म. घूणालु क, खणालउ म. पति क म. c मुगटि क असा क म वइ क, वि म सरी क, .सिरी म. d जं म. कूअर म. परणेवा क, परणेशि म. घरी क, सिरी म.

६७. a त्यहिं म. मामहिरू क म. करि क. b चांवाउं क, चाल म. चूकि क वीवाह क, वीहा म वरि म. c साथिइ म. घोडाना म. d गायण वायण भाट क म.

६८. a सत्रि क, ये म. जांद्रिणि म. b चंद्र क म. यमलि क, जमलि म. येहवी चाद्रिणी म. c कूअर म. चचल क. d ऊचु क. अंव क म. अडि म.

जोतां तेह तणइ मुखि घटइ, लाखीणां लूंछणडां घटइ ।
माहजन-नइ मेलावइ घणइ, पुहुता परसरि पाटण तणइ ॥ ६९ ॥

साम्हाना साचव्या ववेक, ऊतारा आपीआ अनेक ।
घरि चउरी बांधी चडवडी, सोना रूपानी ते घडी ॥ ७० ॥

कुंअर-अंगि करी मांजणुं, सिणगारी सोहावी घणुं ।
पहिलुं आंज्री आछां नेत्र, पटुलउं पहिरिउं पानेत्र ॥ ७१ ॥

लंब वेणि लहिकइ गोफणउ, रूअडु रंग राखडी तणउ ।
मनरंगि माता पूरीउ, सिरि सइंथु ते सिंदूरीउ ॥ ७२ ॥

नलवटि टीली वितिपत्ति घणी, झालि झबूकइ सोना तणी ।
मादलीआं वलीआं वाकलां, कंचूकसण कस्या ते भला ॥ ७३ ॥

करि चूडी कंकण खलकती, सिरि बावन चंदन बहिकती ।
रमझिम पय झमकइ झांझरां, जाणे मयण तणां पांजरां ॥ ७४ ॥

---

६९. a जोतां म. जेह क. मुप क. b लापीणु क, लापीणा अ. ते लूछनि क. c जय जय वरभट्ट चिहू भणइ क; माहाजन म नि म मेलाविक d पुहता म. परिसरि क, पर सर म. पट्टणि क, पाटण म.

७०. a साहमीना क, साहामाना म. विवेक म. b आप्या म. c चुरी क म. चुवडी म.

७१. a कुअरि क, कूअरि म अंग म. करइ म. माजणु क, मांजणउ म. b सिंगारी म. घणू म. c पहिलु म आजी अ क. आंज्यां म. आछा अ. d पट्टुलु क, पटउलू म, पहिरिउ अ, पहिरु क, पहिरइ म. पानेत्र म.

७२. a लंबी क. वीणि क म. लाडु क, लहकि म. गोफणु क, गोफिणउ म. b रूडु क, रूअडू म तणु क. c मन रंगिइ म माइ क. d सरि क, शरि म. सिथु क, सहिथउ म. सदूरीउ क.

७३. a निलवटि म. व्यतपति क, व्युतपति म. b झबकइ क, झबूकि म. सोनानी क. c मादलीआ अ, मादलीयां म. वलीयां म. वाटला क, वेढलां. म. d कस्या क कसि म. भलां क म.

७४. a ते अति ('चकण'ने स्थाने) क पलकती क म b सरि क. शरि म. c रमझम क, रिमिझिमि म. झाझरा अ; पयल करि झांझरां म. d जांणे म. तणां क म. पाजरा अ. आ पछी क म मां १ कडी वधु:—

उढी घूघरीआली घाट, वेगि जोइ वरत्ती वाट ।
अवर जोइ जननी कोडि, सूंपमाहि नवि काढइ खोडि ॥ ७५ ॥
सींफरि छत्र चमर चंबाल, तालीआ तोरण शाकझमाल ।
पूंठि चंचल ओपरी चडी, लूण ऊतारइ वर-बहिनडी ॥ ७६ ॥
धउल देई जाणइ धुलही, ते गाइ माहि अणकही ।
नाचइ पात्र कथारस कहइ, दान मान ते वंछित लहइ ॥ ७७ ॥
मल्लयुद्ध समंइ तरूआरि, चालइ साहवाला परिवार ।
नफेरी भेरी वाजती, गण गाइ अंबर गाजती ॥ ७८ ॥
पुहुता तोरण जोइ लोक, साह्रा साला कहि सलोक ।
विमल-वाणि श्रवणे शांभली, गया साला ते दह दशि टली ॥७९॥
पुंखइ सासू प्रेमि भरी, वर माहरि गयु संचरी ।
जोसी जय वरतावइ समइ, विम[लि] श्रीकर ग्रहीउ तिमइ ॥८०॥

मुष जोइ आरीसामाहि, वाजणडे वीजावि वाय ।
सहीअर सहीअर सरसी मली, कोटइ टोडर घातइ वली ॥ ८१ ॥ फ
a आरिसा माहि म b वीजणडे म. c सहीयर सहीयर म. मिल्इ म. d टोलइ टोडर घालि गलइ म. ॥ ८१ ॥ म.

७५ b वेगिइ म c अठइ तर योइ फ, आवइ वर जोइ म. जन फ म. d खूपमांहि म. नव फ. दीसि म.

७६. a शरि म. b तलीआ फ, तलीया म. c पूठि फ, पूठिइ म. चचलि फ पइरि फ, ऊपरि म d लुण फ, लूण म. ऊतारि फ म.

७७. a धुल फ, धूल म. देइ जांणइ म. b गाईं फ. माहि फ, माहिइ म c पच फ. कहि म. d दांन मान म

७८. a मल्युद्ध फ शरमइ फ, शरमि म. तरुआरि फ. b चालि म. साधाला परिवारि फ. c फेरी ('भेरी'ने स्याने) फ वाजते फ म. d गुण फ म. गाते फ अवर फ. गाजते फ म.

७९. a पुहुता म. तोरणि फ म b सीख्या साला फ म. कहइ फ. सलोक म c वाणि म. साभली फ, गामली म. d ग्या फ म. दस फ, दिशि म.

८०. a पुहुपइ फ, पुंहफइ म. प्रमिइ म. b माहि फ, मारगि म. संचरि म. c जोसी गमय वरतावइ यशइ म. d त्रिमलि फ, विमलि म ग्रहीउ फ, ग्रह हीउ म तिशइ म.

कर-मेल्हावणि धन आपीआं, मंगल च्यारइ वरतावीआं ।
घर परणी ऊतारइ रहइ, मुहि ऊगमतइ गुरुव लहि ॥ ८१ ॥

वली वरुठी तणइ विचार कीधा वीवाह तणा व्यवहार ।
मेल्हां मोदक-भरीआं माट, आगलि मेल्हा सोवन पाट ॥ ८२ ॥

पगपडणइ जे धन परखीइ, तेणइ सासू मन हरखीइ ।
तूठी सासू दि आसीस, जीवउ अगणित कोडि वरीस ॥ ८३ ॥

सासन देवति तणइ पसाइ, चडती कला हज्यो जगमाहि ।
कंत सरीसां करज्यो राज, मायवह्न तुह्म भेट्यां आज ॥ ८४ ॥

नणदर फईअर सासू वहू, रूडउं सगुं मनाविउं सहू ।
जिणवर गुरु गुरुणी प्रीय तणो, भगति करइ श्रीअ सुंदरि घणी ॥८५॥

पट्टणि तेय तणउं अहिठाण वीवाह तणुं मांडिउं मंडाण ।
पिता तणइ नामि लागता सजन कोटि मलीया मागता ॥ ८६ ॥

---

८१ a -मेल्हावण क, -मेलापकि म. आपीआ अ, आपीयां म. b च्यारिइ म. वरतावीयां म. c रहिउ म. d ऊगमति म. लहइ क, लहिउ म.

८२. a तणा क म b वीवाहना क, वीह्नाना म. आचार म. c मेहल्यां क म. भरीआ अ, भरीया म. d माड्या क, मेहल्या म.

८३. a पगपडणे क, पगपडणिये म ['जे' म मां नथी.] परख्यीइ क. b तेणि म. सासूनु क, सासून्‌ म. परख्यीइ क c वलती क. तुठी म. d जीवु क म.

८४. a शासिन क, सासण म. देवि क म. सपसाय क. b हयो अ, हुय्यो क, हजो म. थिग क. माहि म. c सरीसां म. करयो अ क म. d विहू क, वहू म. भलि क. तु 'तुह्म'ने स्थाने म.

८५. a फैअर म. b रूडुं क, रूडूं म. सगु अ, सगू म. सगीजू सहू म. c जिनवर क म. गुरणी म. प्रीअ तणी क. d करि क. श्री क म. सुंद्रिर क.

८६. a पिता 'तेय'ने स्थाने क. म. तेणइ क. अहिठाणि क, अहिठांण म. b वीहवा क, वीह्ना म. तणु अ, णुं क, तणउं म. भाडिउ क, माडिउ अ. c नामि क म. d सुजन म. कोडि क म. मलीयां अ, मिलीआ क, मिल्या म.

बाप थकी जे पडतु पुत्र, ते किम राखइ घरनूं सत्र ।
महियलि न रहि तेहनी माम, बाप तणउं लोपाइ नाम ॥ ८७ ॥

बाप थकी जे चडतु होइ, कुंअर करमी कहीइ सोइ ।
जिम जिम मोटा करणी करइ, तात-नाम त्रिभुवन विस्तरइ ॥८८॥

विमल मंत्र तव कर वावरइ, मागत-जन मोकलामण करइ ।
मनगमता तेजी तोखार, आपइ कनक कोडि सिणगार ॥ ८९ ॥

गडगडतां दीजइ गुडीयां, भारे भयरवनां जोडीयां ।
मेघाडंबर नइ सुहवटा, कठपीठ पठाणी पटा ॥ ९० ॥

दि सरवास खेस खाडिका, गज[या]ढि निर्मल गंगा थिका ।
दिइ झूना नइ झ[र]मर तली, नीलनेत्र मुगवन्नावली ॥ ९१ ॥

---

८७. a ये म. b घरनू अ क. c रहइ क. तेहनू म. d तणु क.

८८. a थिकी म. ये म. चढतु क. b कुंअर म. कहाइ म. सोय क. c यिम यिम क, यम यम म. बेटउ 'मोटा'ने स्थाने क, मोटां म. d नाम क. म त्रिभोवन क. त्रिभुनि म. वस्तरिइ क, विस्तरि म.

८९. a मंत्रि म. b जिन क. d आपि क. शणिगार क, शणगार म. आ पछी क म मां १ कडी वधुः—

छ दरशन पूरा पेपीइ, सजन वर्ग सवि सतोषीइ ।
देवदूष्य दीजि दोकदा, चगी चीत करइ सुपदा ॥ १०५ ॥ क

a दरिशण पूरां पोषियां म. b स्वजन म संतोषियां म. c देव दीष्य दीजइ दोकडा म. d चांगा चित म.

९०. a गजगडता अ, गडगडतां क म. दीजि क. गुडीआ क, गुडीया अ. b भिरवनां क म. जोडीआं क, जोडीया अ. c ए 'नइ'ने स्थाने क, नि म. सुहुवटा क. d कटपाट पठाणी पटा क, कट्ठ पीढ्ठ पिठाणी पटा म.

९१. a दिइ क म. पर्वास अ. पाडकी क, पांडिकी म. b गजवढ क, गजवढि म. निर्म्मल क. थकी क म. c झुना दि क, झुना नि म. नर्मल क, झरमर म. d मुगवनांवली क, मुदवन्नावली म.

बालत्था सोहइ श्री वाफ, पटकूल प्रकट्या प्रताप ।
पोता परदेसी साउला, मध्रू मन-वंछित जेतला ॥ ९२ ॥

दि घण वेलि घणावी पटी, धूली धूमराई घटी ।
चोखा चीर चंग चारसा, लख्या हंस सूडा सारसा ॥ ९३ ॥

आछां छायल दिइ दामणी, संतोखी सवि सुहासणी ।
नारंगी नखरंगी जाति, ताजी तारा-मंडल भाति ॥ ९४ ॥

वहुमूलां मोटां मीणीयां, देतां पहिलां मन-प्रीणीयां ।
धज सनाथ जिनमंदिरि बहू, संतोखि गुरु गु[रु]णी सहू ॥ ९५ ॥

लेई जान वलीआ घर भणी ससरइ कीधी पहिरामणी ।
आचिउ कइ ऊगिउ सूर, जई गेहडी वजाव्यां तूर ॥ ९६ ॥

---

९२. a सोहि क म शरि म. वाप क, व्याप म b पट्टकूल क म प्रगटीआ क, प्रगटीया म. c परदेशी क म. साउला अ क d मिभ्रू क, मिभ्रु म. मनिवंछित क दइ भला क, यज भला म.

९३. a दिइ घण वेल कणी ऊपटी क; दिइ म; कणा उपटी म. b धुली क धुमराय क नइ टटी क नि घटी म. c चोपा म. चग क. d लाल गुलाल रूग सारिसा क, लिख्या म. आ पछी क म मा अडधी कडी वधु —

निरम परम साजा सालूर. वास्या वस्त्र वहाव्या पूर ।

a नर्म धर्म म. b वास्या म.

९४. a छाइल म. दि क. b सतोषइ क, सतोषि म सोहासणि क, सोहाशणि म. आ पछी क म मा अडधी कडी वधु —

कमळवना(-वना म) कमपा घाटडी केकाली फाली फूटडी ।

a याति क. b मंडलि क.

९५. a वहू म. मूला क म मीणीआ क, मीणीया अ. b देता अ पहिला अ. प्रीणीआ क, प्रीणीया अ. c मदिर क. d सतोषिउ क म. गुरु गुरुणी क, गुर गुरणी म.

९६. a जांन म. वल्या क, वलीया म. b ससरि क, ससरि म. c आविउ विमल क, आविउ विमल कि म. शूर क. d जै म.

साहमु आविउ नगर-नरेस, घण ऊछवि वर कीध प्रवेश ।
प्रीय सिउं प्रेम पूरि मांडती, इक आछण पाणी छांडती ॥ ९७ ॥

देवालइ पुहुतां घर यहू, रामति रमतां जोइ सहू ।
गुरु गोत्रजनइ करी प्रणाम, पुहुचइ धासु तणउ जिहां ठाम ॥ ९८ ॥

परणिउ वर पयसारु हूउ, मागत जन ते मागइ दूउ ।
दानि मानि रलीआयुत थयुं, संतोखिउं सहू घरि गयुं ॥ ९९ ॥

नवयौविन बे नवला वेश, बिहु मानइ नगर-नरेस ।
बिहु सिरि अगर वहुकइ वास, वि लहूआ बे लीलविलास ॥१००॥

बिहु वचखण बि गुणवंत, बिहुनइ पोतइ पुण्य अनंत ।
हसतां हरखि पाडइ होड, बिहू सखीसरखी जोड ॥ १०१ ॥

---

९७. a साहामु म. नरेश क. b वडइ वडइ वर किद्ध प्रवेश क, वडि वरि वर किद्ध प्रवेश म. c प्रीऊ सिउ क, प्रीयइं म. 'प्रेम' क मां नथी पूर क म. d एक क. पांणी म. छाटती क.

९८. a पुहुता क, पुहतां म. b रमता अ. c गोत्रजनि क म. प्रणांम म. d पहुचइ क, पुहचइ म जिहां वासनूं ठाम क, वास तणउ यहां ठांम म.

९९. a पिसारु म. b जे क. मागिउ म. c दांनि मांनि म. रूलीआयति क, रलीआअति म. थयु अ, थयूं म. d संतोष्युं क. सहूइ म. धानकि क. गयु अ, गयू म.

१००. a यौविन क ते क वेस म. b बिहूनइ क, बिहुं म. मांनइ म. नगरनरेश क c बिहू क, बिहु(नइ) म. शरि म. वहिकइ क, वहूकइ म. d बे क म. लहूआं क म

१०१. a बे क वचष्यण क. विचक्षण म. बे क म. b बेनइ क, बिहुनि म. पोति म. c हरषि क, हरषिइ म. d बेऊ क, बेहू म. सरंगा क, सुरंगां म. सरसी क, शरषी म. आ पछी क म मां १ कडी वधुः—

वाडी वन छइ रूलीआमणां, वहिकिइ फूल अमूलक घणां ।
चंपक कुसुम मुगट सरि धरि, पाडापली जलक्रीडा करि ॥ ११९ ॥

a छि रूलीयांमणा म. b यहकइ म. अमूलिक म. c शरि म. धरइ म. d पडोपली म. करइ म. ॥ ११९ ॥ म.

चिमल श्री बे नवला वेह, बि सिणगारा दीपइ देह ।
विहुनइ मनि वसिउ जिनधर्म्म, उदयवंत छइ विहुनां कर्म्म ॥१०२॥

विइ यौवन रूडइ जोगवइ, विइ मन-वंछत सुख भोगवइ ।
घणा दिवस हिव सुल्या जसिइ, सुकटंव पाटणि गयां तसि ॥१०३॥

खंडि खंडि छइ मति निर्मली, भणतां सुणतां संपति मली ।
मुनि लावण्यसमयची वाणि, पतलइ पंचम खंड वखाणि ॥१०४॥

इति विमलप्रबंधे नवरंग नवखंडे सामुद्रस्त्रीलक्षण चतुषष्टि कला अष्टादश लिपि नाम ताल संख्या श्रीवर्णित कन्यानिरीक्षण पाणिग्रहण पत्तनगमने पंचम खंड समाप्तः ॥ ५ ॥

---

१०२. a बहू श्री क. वेस क शरपा नेह म. b वे क, वेहू म शणिगारया क शरपा म दीपि क. c विहूनइ क विहुनि म वसीउ क, वशु म धर्म क म d छि म वेहूना क, बिहुना म कर्म क म.

१०३ a वे क म रूडि क म योगवइ अ क म b वे क म. मनवछित क म. सुप क म. भोगवि क म c दविस क हवि क, हव म. घुला क. जसिइ क, यशइ म b सकटबा क म. पट्टणि क म ग्या क म तसिइ क, तिशइ म.

१०४. a नरमली क. b गुणता संपद वली क c मनि लाव्यणि-समइची वाणि क d एतलि क. खंडि क, पड वखाणि म अहीं सुधीमा क म मा १२३ कडी थाय छे

पुष्पिकाओः—

इति श्री पडित लाण्यणसमयगणिकृते विमलमत्र मनोहर प्रगट प्रबंधे नवरंग नवषडे पंचम षड संपूर्ण ॥ क

इति विमलप्रबंधे नव षडे सामुद्रिक कथित स्त्रीलक्षण । चउसठि स्त्रीकला, अष्टादश लिपिनामकथन । छ राग, ताल, मान श्री वर्णन । कन्यानिरीक्षण, पाणिग्रहण, पत्तनगमने पंचम षड ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ म

खंड ६

[दूहड]

पुहुत्तां पट्टणि पुरभणी, प्रेमि पूरिउ वास ।
रहितां मंदिर रंग-भरि, छाना हूआ छ मास ॥ १ ॥

ढाल

इणि अवसरि गणधर वडा, श्रीधर्मघोषसूरिंदू हे ।
आवीआ अर्बद-तलहटी, ऊपनु अति आणंदू हे ॥ २ ॥

जोउ जोउ अर्बद अभिनवु, नही नही जिन-प्रासादू हे ।
देखी डुंगर दीपतु, ऊपनु मनि विखवादू हे ॥ जोउ जोउ ॥ ३ ॥

गुरु गछपति ध्यानि रह्या, समरी देवि अंबावि रे ।
अर्बद तीर्थ जिम हुइ, बोलइ सरल सभावु ए ॥ जोउ [जोउ] ॥४॥

वीरसुतन पुरपाटणि, वासइ विमल प्रधान रे ।
पुहुंचउ प्रभु वेदाविवा, जु तुह्म तीरथ ध्यान रे ॥ जोउ जोउ ॥[५]॥

म मा ज 'पड छठ्ठउ' छे,

दूहा क म

१. a पहुता क, पुहता म. पुण्यवसि क, वेगिसू म b प्रेमिइ म. पूरु क, पूर्या म c रहिता क म. मदिरि क म

'ढाल' शब्द क मां नथी.

२. a एणि क. b धर्म्मघोष सूरिद क. c आवी क, आव्या म. अर्बुद क म. d ऊपनि म. आणद क

३. a अर्बुद क म. b नही जैन प्रासाद क. ए 'हे'ने स्थाने म. c डुगर क. अभिनवु क. d ऊपनु विषवाद क. ए म.

४. a गुर गच्छपति ध्यानिइ म. b 'रे' क मां नथी. अंबावी ए म. c अर्बुद क, अर्बुदि म. तीरथ म. यिम क, यम म. हूइ क. d बोल्इ क, बोलु म. समावि क. ए म.

५. a वीर पाट्टणि क; पाटणिइ म. b वासि क, वासिइ म. 'रे' क मां नथी. प्रधांन म. c पुहुचु क म. प्रभू क. वदेवसा म. d तम म. 'रे' क मां नथी. काज रे म.

वचन कही देवति वली, गणधर पाटणमाहि रे ।
संघ सुजन उच्छव करइ, विमल ते वांदवा जाइ रे ॥ जोउ जोउ ॥६॥

गुरु उपदेश दीइ घणा, सांभलि विमल प्रधान रे ।
अर्बुद तीरथ थापना, तुह्म जस मेरु समान रे ॥ जोउ जोउ ॥७॥

विमल भणइ सहिगुरु सुणु, नहि धन पतलुं आज रे ।
कहु जिनमंदिर किम करुं, मोटां तीरथ काज रे ॥ जोउ जोउ ॥८॥

आराधन अंबाविनुं, आपइ सहिगुरुराय रे ।
चतुर्विध संघ मिली करी, जात्र आरासण जाइ रे ॥ जोउ [जोउ] ॥९॥

मंत्र जपइ मंत्रीसरु, वइठउ अन परताजि रे ।
चक्केसरि पद्मावती, श्रीजी देवि अंबाबि रे ॥ जोउ जोउ ॥ [१०॥]

त्रिहु उपवासे देवता, आवी झाकझमाल रे ।
मागु वर मंत्रीसरू, तूठी ततकालि रे ॥ जोउ जोउ ॥ ११ ॥

---

६. b पाट्टणमाहि क 'रे' क मा नथी. हे म. c समुछ क. सङ्घ म. उछव क, उत्सव म. करी क. d विमल वदाविणि जाइ क. 'रे' क मां नथी. वदिवा म. हे म.

७. a उपदेस म. देई म. b सामलि अ क. रे' क मां नथी. c अर्बुदि म. थापिवा म. d तुम्ह क, तम म. यश क मेर म. 'रे' क मां नथी. समांनूं ए म.

८. a भणि म. सुणु क, सुणउ म. b एतु क एतलु म. 'रे' क मां नथी. आजू ए म. c थिम हूं क कुहु म. मदरि करूं क; करू म. d 'रे' क मां नथी. काजू ए म.

९. a अंबाविनू म. b आपु क, आपि म. 'रे' क मां नथी. c चतुर्वेधि क. सहित मली क म. d यात्र क, पाठा० थी 'जात्रि' म. आरासिणि क, आरासणि म. 'रे' क मा नथी. जाय म.

१०. a जपि म. सरू क म. b बयठु क बिठउ म. अन्न म. परठावि क, परतावि म. 'रे' क मां नथी. c पद्मावती क म. d 'रे' क मां नथी.

११. a त्रिहुं क. b 'रे' क मां नथी. c मागिन क. मंत्रीसरू म. d त्रूठी म. द्राप ततकाल क. 'रे' क मां नथी. त्रिणि ततकाल रे म.

चउपई

सिंहनाद अंबाई दिद्ध, अति अजेय पदमावइ किद्ध ।
चक्केसिरि दि लखमी धणी, वर पाम्या गयु पाटण भणी ॥ १२ ॥

पुहुतु मंदिरि चिंतइ धीर लहिर पुरुष प्रसिद्धउ वीर ।
ते आगइ दडनायक हुउ हुं तां ते कुलथी नही जूउ ॥ १३ ॥

प्रह्नि ऊठी सिरि उद्यम थयु, परगट पाटण बाहरि गयु ।
जोई थानक मांडइ साथरी, बइठउ मणिमाणिक पाथरी ॥ १४ ॥

राउ तणा राउत झूझार आवी शर्म्म करइ हथीयार ।
मांडइ वेझां मेल्हइ बाण वारइ केकइ चूकइ जाण ॥ १५ ॥

विमल पंडि बोलइ पडवडउ, मइ प्रीछउ राउतनु धडु ।
भीम-कटिकनुं भलुं पराण, जिहां आहावा राउत छंइ जाण ॥१६॥

उपायु अतिघणउ अमर्ष, भीम भूपनइ करसइ हर्ष ।
परदल आगलि रहिसइ सज्ज, भीम भूपनां सरसइ कज्ज ॥ १७ ॥

क मा 'चउपई' नथी; चुपै म.

१२. a दिद्ध क म. b 'अति' क मा नथी अजयपणु क. पउमावइ म. c चक्केसर क दिइ म. लष्यमी क, लपिमी म. d म्या क. ते पामी गिउ म.

१३. a विमल पुहुचइ मदिर धीर क, वीर म. b पुरप म पर सिद्धउ क. c आगि म. डडनायक क हूतु अ d हू क, हू म. ता क.

१४ a ऊठउ क, ऊठिउ म. सर क, शरि म. थिउ क, गयु म. b बाहिरि क माहिइ म. थयु म c थानिक क, थांनक म. माडी क, माडी म. d बयठउ क मणिमाणिक म.

१५ b शर्म करि क म हथीयार क. c माडइ म वेझा अ, वेज्झा क. मेहलइ क. बाण म. d इकेकी क, अकेकी म. चूकि म. जांण म

१६. पडि अ मत्र क पडनेडु क म. b मिइ म प्रीछिउ क म. रायतनउ क c भिम क. कटकनु क, कटकनू म. भलं म परांण म. d जिहा क. झूझार अ, छि जांण म.

१७. a अति घणु क. b भिम क. भूपनि क म. करसउ क, करशि म. c रहिसि क, रहशि म. राज्ञ क, साज म. d भिम क. भूपना क म काज क म.

तव राजा आविउ संचरी, सवि परिवारि रहउ परवरी ।
भीम बाण जब मेल्हइ धसी, चूकु विमल मंत्र रहिउ हसी ॥१८॥

हतु भरोसउ भागउ आज, मूरख-हाथ चडिउं छइ राज ।
मुह मचकोडि मरडइ मुंछ, भीम सहित छइ सघला मूंछ ॥ १९ ॥

रहिउ हाटि हसतु जाणीउ, भीमइ परखि[उ] तव वाणीउ ।
बाण तणी कांई जाणउ कला, उठउ वणिग आवु आवला ॥ २० ॥

बोलइ विणग अह्मे वाणीआ घयसि छासि वांध्या प्राणीआ ।
तेल-दीप तिल वेचुं हीग, वाणी हुइ तुह्मासित धीग ॥ २१ ॥

जाणउं मीठउं पाली भरी, राजा जमला जईइ डरी ।
तुला धरंता धूजइ हाथ, वाणी हुइ तुह्मारा साथ ॥ २२ ॥

इम करता जु तुह्मनइ कोड, बाण तणा देखाडुं मोड ।
थाल सूआरु करी साथरु, पेटि पान अठोत्तर धरु ॥ २३ ॥

---

१८. a आवउ क. b परिवार क, परवार म रहिउ क म. परिवरी क. c भिम क. मेहलइ क म. d मत्र क; चूकि मत्रि विमल मनि हशी म.

१९. a भरुसु भांगु क म. b चढिउ क. छि म. c मुहु म. मरडि क, मोडि म. मूछ क, मूछ म. d भिम क. छि म. 'सघला' पछी अं मां फरी 'छइ' छे, जे नकामो छे. भूछ क.

२०. a जाणीउ क, वांणीउ म. b भिमि क, भीमिइ म. तव परपिउ क; परपिउ म. आंणीउ म. c बाण क. तणां म. कांइ म. जाणु क. जाणउ म. थाउ क. आगला क, आवलां (पाठा० शी 'आगला') म

२१. a बोलि म. विमल क म. आम्ह क. वांणीया म. b घिसि क, घिइसि म. वाध्या क. प्राणीया म. c दिप क. वेचु क. तिलावकूं हींग म. d वांणी जुइ म. तमासित क. तह्मासत म.

२२. a जाणु क. मीठुंड क. पली क. b जिम लिइ क. जाई म. धरता क, धरंतां म. धूजि म. d वांणी म. जुइ म. तमासित क.

२३. a करतां म. तुमनि क म. b बांण म. तणुं क. देषाडूं म c सुआरि क, सुआरी म. d पेट क. पांन म. अठोतर क, अष्ठोतर म. धरउ म.

कहि ते तां धीधु मनरंगि, घाण न लागइ घालक-अगि ।
जु अधिकुं ऊछउं धीधाइ तु सिर सही अम्हारुं जाइ ॥ २४ ॥
कला देखाडुं अवर प्रकारि, विलोणउं विलोइ नारि ।
झघकइ वीधी जाइ झालि, चंपण ससर न लागइ गालि ॥ २५ ॥
त्रीजी कला कहुं तुम्ह जाणि जउ कीजइ पुहुचतु पराण ।
जाउ न[इ] जो[इ] आवु बाण, पुहुचइ गाऊ पंच प्रमाण ॥ २६ ॥
वाणी विमल इसी उचरी, भीम तणी सीगिणि करि धरी ।
बाण तणी कला ते इसी, भीम तणइ मनि भारे वसी ॥ २७ ॥
तूठउ तुरीय पंचसइ किद्ध, दंडनायकनी पदवी दिद्ध ।
रंगि राणिम लद्धी घणी गाजंतु आवइ घर भणी ॥ २८ ॥

दूहा

इक राजन रयणां तुरी, सही सेलडी समुद्र ।
कहि कविजन दिन पाधरा तिहि घरि दूरि दरिद्र ॥ २९ ॥

---

२४. a कहु क, कूहु म केतां अ वीधु क वींधू म. मनिरंगि क c घांण म. लागि म. वालिक क. d अधिकू म. उछ क उछउं म. वींधाइ क म सरसही क. माथू म अमाहरु क अह्मारू म.

२५ क मां कडी २५–२६ नो क्रम २६–२५ छे a दिपाडूं म b वलोणु क वलोइ क, विलोवइ म c वेधी क म d लागि म

२६. a बीजी क कहू क, कहूं म. तुम क म जाण क आण म b जु क म. कीजि म पहुचतु क, पुहचनू म. परांण म c जोउ न नि क म. जोउ आवि म बाण म d पहुचइ क. पुहचइ म परमाण क, प्रमांण म.

२७. आ कडी क मां नथी a वांणी म. विमलि म इशी म b सीगिणि म. c बांणकला देपाडी इशी म d वशी म.

२८ a तुठ्ठउ म. तुरी क म. पचसि क दीद्ध क, दिद्ध म. b डंडनायकनी क. किद्ध क म. c रंगिइ म. रांणिम म. कीद्धी क लीधी म. आविउ क, आवीउ म

२९. a एक क म रयण क b पाठा० यी 'मही' म. शेलडी म. c एता जेह घरि पधरा क; पद्धरा म. d तेह क म. दलिद्द क.

चउपई

पहिलउ जिणवर किद्ध प्रणाम, पुहुवइ जिहां जिनमंदिर ठाम ।
दिन दिन घणा वाधइ व्यापार, मंडथा सकल देश-व्यवहार ॥३०॥
करइ पुण्य नइ कर वावरइ, सद्दिगुरु-वचन सदा मनि धरइ ।
जिम जिम वाधइ घरि आपणइ, विमल न कहिनइ मानइ गणइ॥३१॥
गज घोडा देसाउर तणा, गरथि विमल अण[ा]व्या घणा ।
जिम जिम वाधइ विमलनु चाल, वयरीनइ सिरि वाधइ साल ॥३२॥
घरि मोटा भूपतिना पाहि, चालइ गज घोडा बंधाइ ।
करि मुद्रडी रूप जिन तणउं, अवर न सिर नामइ आपणउं ॥३३॥
देहरासर घरि करइ विचित्र, खीरोदक धोतीआं पवित्र ।
चामर छत्र अनोपम करी, सोइ वात बाहरि विस्तरी ॥ ३४ ॥
वयरी मली वधारीइ वात, भूपति आगलि बोलइ घात ।
थापिउ स्वामी विमल प्रधान, पणि तुम्हथी तिहि अधिकां मान ॥३५॥

चुपई क, चुपै म

१० a पहिलु क, पहिल्ट म जिनवर क म प्रणाम म b पुहचइ म जिहा क यहा म नजमदिर क ठाम म c दिनि दिनि म. घण क; वाधइ घण म व्येपार म d माडया क म देस म

.१ a नि म वावरि क. b धरि क. c जिम घन वाधइ क, यम धनि घरि वाधइ म d विमल क मानइ म.

३२ a तणा म b गरथिइ म अणाव्इ क, अणावि म. घणा म c निमलनु अ, थाइ निमलनु क, यम यम चालइ विमलनु म d वयरीनि क, त्रिरीनी म सरि क शरि म शाल क

३३. a घर क म मोग क म पाहि क म b चालि क चाल्इि म गजघोडा म वधाइ क c मूद्रडी क म. तणु क, तणउ अ. d धार म नामि क म आपणु क

३४. a करिउ क पविन्न क म b घोतिआ अ, घोतीया म विचत्र क. d सोय क. बाहिरि अ, याहिरि क, बाहरि म वस्तरी क.

३५. a विरी म मिली म. वधारइ क, विधारी म b बोलि म. c स्वांमी म प्रधान म d तुम्हथी क; तिहि अधिउ क, तम पाहिं तिहा अधिकूं मांन म.

रहइ रानि मृगला तृण चरइ, माछी नीर विणास नवि करइ ।
सज्जन सुखि रहि घरमाहि, त्रिहुं निकारण वयरी थाइ ॥ ३६ ॥

जिनवर टलत न नामइ कोट, उद्धत अभिमानी आरोट ।
करि जिनमुद्रा मूर्त्ति धरइ, तुह्म प्रणाम ते आगलि करइ ॥३७॥

घरि बांध्या गज मोटी आस, वालिइ वली तुरगम लास ।
चामर छत्र सजाई करी, लेस[इ] भीमराज अवगणी ॥ ३८ ॥

राउ-चित्ति लागी चटपटी, थई वरसा सुजीवी घटी ।
क्षित्री खेस धरइ मनमाहि, जोइ वाट विमलनी राय ॥ ३९ ॥

सहू यइठउं छइ थई इकमती, आविउ विमल विमल-जयमती ।
करी प्रणाम आगलि कर करी, बइठउ राउ सभा सम घरी ॥४०॥

तां डमरू नइ तां डाकलां, तां भुंगल कंसालां भलां ।
तां लगइ ताल टचका पूर, जां नवि वज्जइ सवलां तूर ॥ ४१ ॥

३६. a रहि क म. मृगला क. b माछां क. वणास न फ, विणासि करि (पाठा०थी 'निवास करि') म. c सुखिइ म जिगमाहि क, घरमाहि म. d त्रिहू क, त्रिहु म. निष्कारण फ, निकारणि म. विरी म.

३७. a नामइ क. b अभिमांनी म. c मूरति मुद्रा क म. d तुम्ह क, तुम म. प्रणाम म. धरइ अ.

३८. a बाध्या फ, बध्या म. b वालि क, वालिइं म. c गणी क, घणी म. d लेसि क, लेशि म. अवगुणी फ.

३९. a अगि म. b थं म. वीसा क. वरमासु फीटी म. मु फीटी क, c पित्री क क्षत्री म. पेमि क घ[र]इ फ. मन माइ म.

४०. a बिठु फ. बिठउ म छइ फ, छि म. 'थई' क मां नथी, थै म. b जसमती क, जग मति म. c करिउ म. प्रणांम म. कर आगलि क. d बिठु क. बिठउ म. राय फ. सभामाहि धरी क, सभामांहि धुरी म.

४१. a ता क. नि म. ता क. डाकला अ b ता क. भुगर म. कसाला अ. c ता क. तांन म. टचका क; विचालइ चका म. d जा क। वाजइ क; जां नीशाहण वाजइ तूर म.

तां चंदा नइ चांद्रणी, दीपइ दीप-झलामल घणी ।
तारे तेज तणां तां पूर, जां नवि निर्मल उग्ग[इ] सूर ॥ ४२ ॥
सोहइ सभा मज्झि सिरि घणी, वसिहर विकट शेष जिम फणी ।
तरूअर कल्पवृक्ष जिम सीम, मणिमाहि चींतामणी जीम ॥ ४३ ॥
भूपतिमाहि रहिया जिम रा[म], रूपवंत सिरि सोहइ काम ।
दातारि अवत्तरीउ कर्ण, ओपइ सकल सभा-आभर्ण ॥ ४४ ॥
साहसि सूरु विक्रम भीम, मेरु सरीखु महीअलि जिम ।
न खमइ तेज भीम भयु, मझ मत्था ऊपरि थयु ॥ ४५ ॥
सभा सरोवरि सोहइ कमल, भीम हसी बोलावइ विमल ।
सुणि महिता अम्ह हर्ष अपार, तह्म नवि दीठउं घर पक चार ॥४६॥
विमल मंत्र मनि कूड न किस्युं, जाणइ राजन रंजइ हसिउं ।
स्वामी घर तुह्मारां अछइ, पुहुवउ भोजन करस्युं पछइ ॥ ४७ ॥

---

४२. a चादा नइ क, चदा नि म. ता चाद्रणी क, तां चांद्रिणी म. b झमालह क. c तारा क म. तणा ते क. d जा क. नर्म्मल ऊगइ क; ऊगइ अंबरि सूर म.

४३. a सोहि क म. मद्धि म. सर क, सुरि म. b विसहर क म. c तरुअरि म. यम म. d मणिमाणिक क, मणिमांहिइ म. चिंतामणि म. जिम क.

४४. a मांहि म. हूयु क. राम क; रह्या यम राम म. b सर क, शरि म. सोहि क म. कांम म. c दातारिइं म. अवतरीउ क म. d उपइ क म.

४५. a साहस क. विक्रम वीर क म. b सरिखु क. धीर क म. c पमि म. भिम राय भयु क, भीम ते भयु म. d मज्झ क. मत्था म. ऊपहिर क, ऊपहर म.

४६. a सभां क. सरोवर क म. सोहि क. b मिम क. सही क. हसी म. बोलावि म. c मिहिता क. अम्ह क, अम म. d तुम्ह क, तुह्म म. घर नवि क म. दीठु क, दिठुउं म.

४७. a मंत्रि म. कसिउ क, किश्युं म. b जांणइ म. राजनि म रंगणि म. हस्युं म. c स्वामी म. तुम्हारा क. d पुहुतु क म. करसिउ क, करश्युं म.

साथइ तेडइ सवि परिवार, के पाला घोडइ असवार ।
जव दिठ्ठउं मंदिर मंडाण, राजा हीइडइ थयु हराण ॥ ४८ ॥

प्रथम पोलि पहिलि प्राकारि, जाणिउं ए घरनउं छइ द्वार ।
अनुक्रमि पइसइ सातइ पोलि, पाय रखे पडीइ दंदोलि ॥ ४९ ॥

जंव दीठउं घरणउं बारणउं, स्वर्गविमान करि पारणउं ।
मांडी आरीसानी ओलि, तलीआ तोरण पेखइ पोलि ॥ ५० ॥

दोरे संचारे पूतली, दिइ अभोखण नीची ढली ।
कइ लीलां करि लेखइ चाय, नारी-निरति न जाणइ राय ॥ ५१ ॥
काच तणा जे ढाला घोल, पेखइ पाणी तणा कलोल ।
जे मूरख नवि जाणइ भेउ, उतारइ पग-मोजा तेउ ॥ ५२ ॥

---

४८. a साथि क, साथिइं म. तेडिउ क म. b केता 'घोडइ'ने स्थाने म. c दिठु क, दिठउ म. मडांण म. d हीअडि क, हैअडि म हरांण म.

४९. a पहिलु क म. प्राकार क म. b जाणुं क, जांणउं म. छइ ए घरतुं क, ए छइ घरनूं म. बार क. c अनक्रमि क. [प]इसी क, पिसइ म. सात म. d राम अ, राजा म रष्वे क. पडि म.

५०. a दीठु क, दिठ्ठउं म घरनूं क म बारणुं क b विमांन म करिउ क, करिउं म पारणु क c माडी अ उलि क म. d तलीमा म. तोरणि क. पेपु क.

५१ a संचारी क म. b दि क म. उभ्भोपण म वली म c के क म लीला म. के नपइ म d नरति क. जांणइ म.

५२ a तणां म. ये म ढाल्या क म ढोलं म. b जांणि पांणीनां म. कलोल क म c नव क. जांणइ म. भेऊ अ d उतारि म. मोजां म. तेअ क. आ पछी क म मां नीचेनी अ नी ५८ मी अहीं छे:—

चित्रसाली छइ चगु ठाम, ऊपरि बंधूआ चित्राम ।
राजकुली छत्रीसउ लिपी, राउ मंदिर जोइ चिहुं पछी ॥ ५२ ॥

a छि चगु ठांम म. b चंद्रावि चित्रांम म. c छत्रीसिइ म. d रा म. चिहुं पषी ॥ ५२ ॥ म

दीठा मयगल जे माचता, दीठा तुरी तेखि नाचता ।
ठामि ठामि वइठा छइ थोकें, घडइ घाट व्यवसाईया लोक ॥५३॥

गज घोडानी पाखर खरी, खांडां खेडां छापर छरी ।
आंगा टोप रंगाउलइ रूप, ते देखीनइ भडकउ भूप ॥ ५४ ॥

दीठां मेघाडंबर छत्र, दीठां चामर पुहुवि पवित्र ।
भोजिन भली सजाई संभालि, जिमवा वइठउ सोवन-थालि ॥५५॥

मोटा मोदिक जव महिमहिया, प्रीस्यां स्याकपाक विप थयां ।
सवे दूध अणघोल्या घोल, लीधा चलू दिद्ध तंबोल ॥ ५६ ॥

सपरवारि पहिराविउ भीम, करी मेटि जगि जाणइ जीम ।
गउ जमी जव पाछउ वलइ, भूलु भवनमांहि आफलइ ॥ ५७ ॥

चित्रसाली छइ चंगा ठाम, ऊपरि चंद्रूआ चित्राम ।
राजकुली छत्रीसइ लखी, रा मंदिर जोइ चिहुपखी ॥ ५८ ॥

---

५३ a ये म मलपता क. c ठांमि ठांमि म चयठां क, विठा म. छि म. d घडइ म. व्यवसाया क व्यवसाइ म.

५४. a पदी (पाठा०थी 'खरी') म b पांडा अ, पाडा क, पांडां म. पेडा क. छडी (पाठा०थी 'छुरी') म c रगाउलइ अ, रगाउलि क, रंगाउलि म d देखीनि म. भडकिउ क, भटकिउ (पाठा०थी 'भडकिउ') म.

५५ a दीठा अ. b दीठां क. पुहवि म. c भोजन क म. भलि म. सजाई भालि क म. d यमवा म बयठु क विठउ म. सोविन म.

५६. मोदक म. महिमह्या क, महमह्या म. b प्रीस्या क, प्रीशां म. शाकपाक म. यया क. c साव म. अणघोल्या म. d लीधां क लिद्धां म चिद्ध क.

५७. a सपरवार क म. भिंम क. b मेट म. जिग क, जग म. जांणइ म. जिम क, भीम अ. c जिमि क, यमी म. वलिउ क. d भवन-माहि क. आफलिउ क.

५८. क अने म मां आ कडी उपरनी ५२ मी पछी छे; पाठांतरो माटे जुओ ए ५२ मी कडी.

आविउ मंत्री राउ तव घरी, राउ चलाविउ निज मंदिरी ।
राउ जाणइ जे महारुं राज, विमल-[ल]छिइ ते आगलि व्याज ॥५९॥

मनिसिउ अम्हे विमासिउं आज, ए जीवइ तु जाइ राज।
कीजइ कांइ तिसिउ उपाय, वयरी विणि[ग] विलय जिम जाय॥६०॥

गुण नवि जाणइ जे जेहना, आदर न करइ ते तेहना ।
देखी काग कविजन इम भणइ, मेल्ही द्राख लींबोली चिणइ ॥६१॥

द्राख सरीखु विमल प्रधान, दुर्जन जन ते लिंब समान ।
काग सरीखु राजा कहिउ, दोष-विहूणउ दोषी थयु ॥ ६२ ॥

दूहा

मन्त्रि भणइ भूपति सणु, जव प्रहि विमल प्रधान ।
आवइ तुह्म मेटण भणी, तुह्म देयो बहू मान ॥ ६३ ॥

---

५९. a मंत्र क, मन्त्रि म वाहि तत्र क म b रा म. बुलाविउ क म. c राय क, रा म. जाणइ म ये म माहरु क, माहारू म d मल क लछि क, लच्छि म आगलि ते क म. त्याज म

आ पछी क म मा १ कडी वधु—

निमल मत्र बुलावी वल्डि, राउनू धान अनेरु भिलिउ ।
राउ भणइ तम्हे कहीउ वहू, ते मि द्रष्टि दीठु सहू ॥ ५९ ॥

a मन्त्रि म. b राउनू मन्त्र बीजाइ म. c राइ भणि तुह्मे कहउ सहू म. ते मिइ दृष्टिइ दीठउ वहू ॥ ५९ ॥ म

६०. a मनसिउ क, मनश्च म अह्मे म. विमाश्च म. c कीजि म काइ अ, काइ क, काइ म तसिउ क, किशु म. उपाइ म. d विरी म. वलय अ, विल्इ म. यम म. जाइ क म.

६१. a जाणइ म. b करि क म. c देपइ क. d मेहली क म. लीबोली अ. चणइ क म.

६२. a सरीखु म. प्रधान म b दुर्जन ते जे लिंब क, दुर्जननि मनि लींब समान म. c सरीखु म. थयु क. d विहूणु राजा भयु क, दुर्जननि मनि दोषी लीउ म

६३. a भणि म. सुणु क, सुणउ म. b प्रधान म. c तव क, तुम म. भोजन क म d देयो बिहू बिहू मान क, तुम्हे देयो बहु मांन म.

घाघ मेल्हावे मोकलु, त्रास हुइ ततकाल ।
विमल वकारे वीरसुत, सभा-मज्झि भूपाल ॥ ६४ ॥

विमल विकारिउं नही खमइ, तेज तणउं ते पूर ।
सिगइ सांकल ऊतरइ, दुख टलइ जिम दूरि ॥ ६५ ॥

गुलइ मरइ जे मानवी, तेह विस दीजइ कीम ।
काज सरइ कलकल टलइ, संभलि राजा भीम ॥ ६६ ॥

रायराणा मंडलीक नर, सभा-मज्झि सविस्याल ।
आविउ विमल विकटकड, मान दीइ भूपाल ॥ ६७ ॥

बइठउ चाउरि चंप करि, जूठउं जिमनुं रूप ।
सलइ न सक्कइ को नर, मनि आकंपिउ भूप ॥ ६८ ॥

वाघ वछूटुउ भय मयु, राय करइ कइवार ।
विमल विछेदि ऊठीउ तेजग्गलि तिणि वारि ॥ ६९ ॥

ढाल पवाडानु

विमल राउल जव आवीउ, छोडावीउ रे तव वाघ विकराल तु ।
काल जस्या नख पयशाखा, प तु मूंछी विलग्गा विसहर जिशा वाल तु ॥७०

---

६४. b हुसि क. c [वीर]सुत क. d सुभा अ. मद्धि म.

६५. a वकारिउ म, b तणु क, तणउ म. c सिगइ अ, सिंगि क, सींगिइ म. d दुष क; दूषण हुइ दूरि म

६६. a गुलि क. मरि क. ये म. मांनवी म. b ते क म. विसि क. d साभलि क, सांभलि म.

६७. b 'मज्झिने' स्थाने 'जडी' क, मिली म. सविशाल क म. c विकटकटकि म. d मांन म.

६८. a वयठु क, बिठउ म. चाउर क. चपि म. b जिमनू क, यमनू म. c ससली म सक्इ क म. कोइ क म. d आकम्पउ क.

६९. a विछूटु क, विछूटउ म ययु म. b राउ क. कयवार म, c विछेदइ क, विछेदिइ म. d तेजि जलि क, तेजगल म. तेणइ क, तेणी म. वार म.

ढाल लोकीक पवाडानु क, ढाल लोकीक पवाडानी म.

७०. a राउलि क म. b यशा म. पय वस्या क, पय नप यशा म. d मुछि विलगा वि[स]हर जिस्या क, मुछि विलग्गा विसहर यशा म.

वेढ वेढालगु वाणीउ, प तु जाणी राउलि रोसतु रेड तु ।
केडि वलायु वाघनी, प तु डाघडाकी वर थाइ नीमेडि तु ।
वेढि वेढालगु वाणीउ ॥ ७१ ॥ आंकणी ॥
घोघर शादि घरघरइ, अरे घरहरइ भूमि आकंप अपार तु ।
खड खड खांडां खडखडइ, अरे लडथडइ लाख गमे असवार तु॥७२॥वेढ०
हीर हीरा लग हाटडां, प तु फाटडां फूट्टडां चिहु पखे चीर तु ।
वीर धाई गया धुसटी, अनइ तेहनइ ताकइ प तीर तु ॥७३॥ वेढ०
पुंछ वाली पुंठइ ठवइ, अनइ नव नव रंगि वाघलु वीर तु ।
पाटणि परगट डमडमइ, प तु के किमइ तेह्नइ ताकइ तीर तु ॥७४॥ वेढ०
भड भडवाय हता घणा, ते तु आपणा अलग लेई जीव तु ।
माल तणइ माथइ चडया, प तु राउत करता रीव तउ ॥७५॥ वेढ०
दोसी देई गया हाटडां, प तु माटडां फूटडां वहइ रंगरेलि तु ।
पीडीय ते वाडि पडया, अरे फूलडालां मेल्ही गया मेलि तु॥७६॥ वेढ०

---

७१. a वेढि म. वेढालग क, वेढालउ म. वाणीउ म. b जाणीउ क, जाणी म. रोसतु म. रोस तु क. रडइ तु क [आ शब्द कमां उत्तरार्धनी शरूआ छे.] c विलायु क निलाउ म. डक डाकी नर क, झागडीनि परि म नीमेड तु म. ॥ ['आकणी' क म मा नथी.]

७२. a सादि क, सादिइ म. b थरहरि म आपार अ क. c पाडा अ क, पांडा म. पडपडि क. d लडधडि क, लडथडि म.

७३. a हीरा गल म हाटडा अ क b कापडां फूटरां म; फूट्टडा अ क. पपि म. c धूसटी म. d अरे घीहटी धाहटी (पाठा०थी 'गई घटी') वहि धूत नीर तु म. [आ कडी क मा नथी.]

७४. a पूछ क म. धाली क. पूठिइ म. b अरे 'अनइ' ने स्थळे क म नव नवइ क, नव नवि म. रंगितु क, रंगि ते म. c पाटण क म. d के कीम (पाठा०थी कमइ') तेह्नि ताकिइ म. [क म मा आ ७५ मी]

७५ b आपणा जीव लेई मर सोहे तु अ, आपणा अलग लेइ जीव तु क, आपणा लेई गया जीव तु म. c चडा म. d ए तु के पडया राउत करतला रीव तु क, ए तु के पडि राउत करतला रीव तु म. [आ कडीना ममा क म मा फेर छे. क=७३, म=७३]

७६. a दोशी म. हाटडा अ b वहि म. c पडीआ क, पडीया म. 'ते' म मां नथी. फरडी गया क, पडी गया म. d फूलना क, फूल्ना म. डाल क म. माली क म. मेल्हि क, मेहिलि म.

पान ते पान-कुंडइ रह्यिां, अरे घांचीने घरि ढल्यां तेल[ना कुंड] तु ।
हड हूआ ते हाथीआ, प तु साथीया सवि वलवंत हूआ छंड तु ॥७७॥वेढ०
पारखि पगि पीडी चडइ, घाट-घडा सोनार दि पूठि तु ।
मुंठि बांधी मणीआरडा, भारडा मेल्ही हूआ नर ऊठि तु ॥७८॥ वेढ०
प तु लोट करइ गढ-कोटडी, प तु छोटडी झाविकि माटडी खाइ तु ।
चाउचीयाविउ वाघलु, प तु आघलउ कोइ न थाइ तु ॥७९॥ वेढ०
दाढ ते गाढ कुहाडी प, अरे पाडीइ मंदिर हाटना आघाट तु ।
वाट न को सलकी सकइ अरे भणतला भाट नासी गया नाट तु॥८०॥वेढ०
वीर जणणि को जाईउ, प तु आईउ पतलइ विमल प्रधान तु ।
भानु परि भड दीपतु, प तु पतलइ घरिइ वाघनु वान तु ॥८१॥ वेढ०

---

७७. a पांन म. -कुडइ अ क, पांनकुंडिई म. रहिया अ क, रह्यां म. b ए तु घांचीनि म. तेलना कूड तु म. c हूड म. हाथीया म d वलवतह वूड तु म. [आ कडी कमां नथी]

७८. a पिंढी क. b ए तु क म. घड्या म. c मूंठि क, मूठि म. वाधी क मणिआरिडा क, मणीयारडा म. d ए तु क. मेहलिअऊ क, मेल्हि हूआ (पाठा० थी 'गया') म.

७९. a 'ए तु' म मां नथी. b अरे 'ए तु'ने स्थाने म. मोटडी म. पाठा०थी 'झाविकि' म. c वाउ वींधाविउ म. d आपतु म. न थालइ घाउ तु म. [आ कडी कमां नथी]

८०. a डाढ क. कुहाड क, कोहाडि म. b अरे पाडए क, पाडि मंदिर म. हाटनइ क, हाटनि म. घाट क म. c वाटइ क, वाट म. d जरे क, जोरे म. भणताला क, भणतेला म. नीठी क, नाठी म. क म मां १ कडी वधुः—

वाला नइ वालिक टलवलइ, ज रे पलमलि नगर नहीं रपवाल तु ।
सारसंभाल न को करइ, नर को धरइ वाघलु देवदयाल तु ॥ ७८ ॥ क

a वाला नि बालक म. b जोरे म. नगरि म. c सालसंभाल म. d धरि म. ॥ ८१ ॥ म.

८१. a जाईउ म. b एतलि म. प्रधांन म. c भांन म. तणी परि दीपतु क; परिइं भड म. d अरे जीपतु ए घटइ वाघलु वान तु क, ए तु जीपतु ए घटि वाघनु वांन तु म.

अरे गोल गविंइ किसिउ गडगडइ, तडफडइ तुं किसिउं पाटणपोलि तु।
खलि खंधावलि थावीउ, ए तु विमल थोलावइ वांगडइ योलि तु॥
॥ ८२ ॥ वेढ०

तडइ तडइ लोचन तरडीआं, ए तु कडकडयां अपार कूंच न[इ] मुंछ तु।
मुंछ जिसिउ मुंखर भयु, घण गह्गिहिउ रे भुइ आहणी पुंछ तु॥
॥ ८३ ॥ वेढ०

थाप घरी अथ धाईउ, तव साह्यीउ रे असिउ कायर कानि तु।
विमल करि करिउ मांकडउ, लीउ सांकडइ रे देवी अंयिका ध्यान तु॥
॥ ८४ ॥ वेढ०

जयजयकार शवद हुउआ, वली घरि घरि रे हुआ मंगलच्यारि तु।
वाघलु राय आगलि घरिउ, अरे विमल करिउ जोउ उपगार तु॥
॥ ८५ ॥ वेढ०

---

८२. a 'अरे' म मा नथी. गर्रिवि क, गरवि म. किसु क, किश म. गडगडइ क, गडगडि म. b ए तु तडफडि कसिउं क, ए तु तडफडितु किशं म तु क. c थलिउ क, थोलि म. थभां वलि म. d विमलि क. वोला-वीउ क म. वांगड योल क म.

८३. a तड तड क म. तरडीआ अ, तरडीया म. b कुच न मुछ अपार तु अ; ए तु कड कड करडीआं कुछ नि मूछ तु क, ए तु कडकड करडीयां कूच नि मूंछ तु म. c पूछ क, मूछ म. जसिउ क, जिशु म. मूंखर म. d घणु क, घणउ म. गहगहिउ म. भुइ क. आहाणीउ क. भुइ थापडि पूछ म. क म मा १ कडी वधुः—

दंत दातरडी दापतु, ए तु नापतु रे धरा फूकनि फाल तु।
कालं जसिउ कालुतरु, ए तु आकरु रे करइ वलि वेल तु॥ ८२ ॥ क
b ए नांपतु म. c यशु म d अति आकरु ए करि वलगवा ताल तु ॥ ८५ ॥ म.

८४. a कोप क. b यशु म. कायरु क म. कांनि म. c करू कर क. करिउ करि म. माकडउ अ, मांकडु क. माकडू म. d करि लेइ साकडु देवी क; सांकडु म. ध्यानि क. ध्यांनि म.

८५. a शब्द क हूआ क म b 'रे' क मां नथी. हुइ घरि घरि वरति मगल म; मगल वाल तु क. c राउ क, रा म d विमलि क, विमलि म. जूउ करिउ परोपगार क; जो म.

विमल गयु घरि आपणइ, अरे राइ भणइ मंत्रि न सीधउं काज तु।
राज रखे लिइ वाणीउ, ए तु प्राणीउ दुष्ट मइ जाणीउ आज तु॥
॥ ८६ ॥ वेढ०

ए तु मंत्रइ भणइ आं छउं अह्मे, तुह्मे चित्त म आणिसु ऊचाट तु।
माल करउ बल-पारखुं, ए तु सारिखइ सारिखुं टलसि साल तु॥
॥ ८७ ॥ वेढ०

माल सिउ मंत्रि विचारीउं, भलउ मारिउ भांगडा कांइ भीम तु।
विमल हणी करि ताहरइ, ए तु मागजे सबल हुइ सीम तु॥८८॥ वेढ०

दूहा

प्रह्रि ऊगमि चली प्रगटीउ, वहिलउ विमल प्रधान।
राउलि राउसभा लहइ, चली विशेषि मान॥ ८९॥

माल अछइ घरि आपणइ, आणइ गर्व अपार।
महिता तिहि बल पारखुं, करइ न केती वार॥ ९०॥

---

८६. a विमल क. आपणि म. b राउ क म. भणि म. सीधु क, शीघल म. c लिइ म. वांणीउ म. d ए प्राणीउ म. मइ क. जाणीउ म.

८७. a 'ए तु' म मा नथी. मत्रि क म. आ छु क, जाणउ छउ म. अम्हे क b तुम्हे क, तह्मे म. चितऊ क, चित म. लाइ म क. आणसु क, आणशु म. वाल तु क; ऊचाट ऊगार तु म. c कष क म. पारपु क, पारखू म. d सारिया सारिषु क, ए सारयि सारपु म. टालसि क, टालशि म.

८८. a मत्रि सिउ मित्र क, मालश म. b भलु क म. भागडा क म. काइ अ; थापनइ भीम तु क, थाए तू भीम म. c हणे म. ताहरि म. [आ चरण क मां नथी] d ए तु माहरइ मागजे क. सिम तु क, सींम तु म.

८९. a ऊगमति म. 'चली' म मा नथी. b वहिलु क म. प्रधांन म. c राउल क. राजसभा म. लहि क म d विशेषिइ म. मान म १० अ.

९०. a छइ क म. परि म. आपणि क c महिता क म. ते क, तेह म. पारपा क, पारखू म. d करु क म. निइ क ११ अ.

वाघ तुह्मे वसि आणीउ, जे अति विसमु वंक ।
मान करइ छइ मालडा, ते तुह्म आगलि रंक ॥ ९१ ॥
इणइ अवसरि तेडावीआ, माले मांडी ताल ।
सुभट-सिरोमणि जे हुइ, ते मोकलि भूपाल ॥ ९२ ॥
माले वाई थाकरी, वरवी वोलइ वाणि ।
आघु अलजइ आपणइ, जे पुहुचइ भुज-प्राणइ ॥ ९३ ॥
वीर जणणि वीरा सुतन, जे हुइ वहु वलवंत ।
उद्दवणी ऊठी करु, जे वीर कहावइ कंत ॥ ९४ ॥

छंद भाषा

तेणि वयणि रोसिइ चडिउ, भड ऊठि भडवाइ ।
घाइत पहिलु जालिवी, पछइ परठिउ पाय ॥ ९५ ॥

छंद चालि

तोरे पयठीअ पाय रे हिउ रड मंडीय, भीम भडाडीय माल भडं ।
घण घाय घडकीय. सूर घडकीय. सेष भटकीय भार भडं ।

---

९१. a तम्हे क. आणीउ म. b वसमु म. c मांन म. d तम्ह क. ९२ अ.

९२. a एणि म. ते आवीआ क. तेडावीया म. b माडी क. c सभट्ट क. -सरोमणि क, -शरोमणि म. ये म. d मोकलु क, मोकलि म. ९३ अ.

९३. b वरवी अ; गरवी वोलि गाति म. c अणजइ क. d ये म. पुहचइ म. भज क. प्राणि क, प्राणि म. ९४ अ.

९४. a -जणया म. b ये म. विहू क. c उद्दवणी उठ्ठी करि म. d ये म. कहावि कंति क. ९५ अ.

छद म.

९५. a तेणइ क. वचनि क. रोसि क, रोसिइ म. b ऊठिउ क, उद्विउ म. भडवाय क म. c घाय क. ते क, ति म. पहिलुं म. जालवी क म. d पच्छइ म. ९६ अ.

क मां नथी; छंद म.

९६. a तरे क म. परठिउ क, परठ्ठीय म. रहिउ क, रहियु म. रढि क, रढ म. 'मडिय' म मा नथी, मांडी म. b भीमि म. भडाडीअ क. भड म. c घडकीय क, घडक्किय म. सूरि क. घडकीय क, धरकीय म.

चलचंद चमकीय, मेरु फरकीय, ताम ध्रसूकीय धीरधरा ।
जय विमल जमलि माल भडंतइ, पेखवि सुरनर कोडिचरा ॥ ९६ ॥

घण मेल्हइ मुट्ठ कि भजइ पुंठि कि, उट्ठविउट्ठ चडंति पडइ ।
घण हत्थोहत्थ कि वत्थोवत्थ कि, सत्थोसत्थि सीस भडइ ॥जय०॥९७॥

करि सिउं कर मोड कि कंद विछोड कि लाधीय मोडि कि, हारि करइ।
उप्पाडीय लंखइ दीण न भखइ, आवीइ पेखइ सुरवर कोडि वर[इ] ॥
॥ जय० ॥ ९८ ॥

---

dशेप क म घडक्कीय क, सलकीय म. वड क म. e चमुकीय क, चमकिय म. ताम ध्रसुकीय क; फरकीय म. f मेरू फुडकीय ताम घरा क; तांम ध्रुसकीय म. j जिमल क. महि माल क म i पिष्यइ म सूरनर क, सुरवर म. कोडि नरा क म. ९७ अ.

९७ a मेहलि क, मिल्हइं म. सुठि क, सुट्ठि म. के क. भजइ क. पुठ क, पुट्ठि म. b उठवउठ क, उट्ठविउट्ठ म. चडति क, चडत म. पाठा० थी 'पडइ' म. c हत्थोहत्थि क, हत्थोहत्थिइ म. 'कि' क अने म मा नथी. वत्थोवत्थि क, वत्थोवत्थिइं म. d 'कि' क अने म मां नथी. सत्थोसत्थिइ म. सीस म. भडा अ, वडइ (पाठा०थी भिडइ) म. '॥ जय०' क मां नथी. क म मां वधुः—'करि करइ कडक कि, भजइ हड कि, धुजइ धुड़ कि, भारभरा '॥

कडक्किय (पाठा०थी कडक कि, भज्जइ हड्ड कि, धुज्जइ म. ९८ अ

९८. a करि सिउ क, करथू म. कर जोड क, कर मोडइ म. 'कि' म मां नथी, कंड क म. विछोडिइ म. b कि कोइ न होड कि हार करइ क, कोइ न होडकि हारि करइ म. c उपाडीअ क, उप्पाडीय म. नवइ क, लंपिइ म. भख्इ म. d आवीय क म. पषइ क. पष्पइ (पाठा०थी 'पिप्पइ') म. वेगि रहइ क, वेगि हरइ म. ९९ अ.

ए पछी क म मां वधारोः—

घण धूबड धाय कि मांहोमाहि कि लदइ वाद कि घाय घरा ॥९७॥ क
घड धूंबड धाइ, कि माहोमाहि, कि लडइ वाहि, कि घाय करइ ॥१००॥ म.

घण पूरीअ माण कि, जाणइ ठाण कि, सवि संधाण कि दूरि करइ।
जडजोड न भजइ, अंबर गजइ, आवीय निजय दंड धरइ ॥ज०॥९९॥

[कलश]

विमल जमलि जव आणिउ, माल रखिउ महिमंडलि।
रायंगणि झूझंता, नाम रखिउं आखंडलि।
झडपड करि खिण एक, छेक जि तु जगि जाणिउ।
जेणइ वघ वसि करिउ, ताह मल्ल कुणइ सत्ताणउ।
लावण्यसमइ कहि ते विमलइ दह दशि लंखिउ फेरवी।
आवी विमल पाए पडइ, जो जे जति दीठउ फेरवी ॥ १०० ॥

---

९९. a घणपूरीय क म. माणि म. जाणइ म. ठाणि क, ठांण म. b सवे म. संघांण म. c भजइ म. वधारो.– 'हक ति वजइ' क, हक ति वजइ' म d दड धर अ; अंवर गजइ इद धरा क, अंवर गजइ, 'इद धरा म. । 'जय०' क मां नथी. १०० अ.

वधारोः—

विमलि चल रूर कि कीय चकचूरि कि मलह पूरा कि आसपरा।
जय वि० ॥ ९८ ॥ क.

विमलिइ म तव चूर (पाठा०थी 'चकचूर') म. पूरि म.
आयपरा ॥ जय० ॥ १०१ ॥ म

॥ अथ कलश ॥ म; क मा नथी.

१००. a जमल क. आणि क, आण (पाठा०थी 'आणि') म. b मल्ल क म. रक्खिउ म. मही– क म. c रायगण क, झूझत क म. d नाम अखिउ आपडलि क, नांम रक्खिउ आपडलि म. e क्षण क, पण म. f जित्तउ म. जगि क. जाणु क, जांणउ म g जणि क, जेणि म. वघे क, वग्घ म. वशि म. करु क. h ताह 'कुण मल्ल समाणु क, तेह कुण मल्ल सपराणउ म. i लावण्यसमय क. विमल ते क म. j दसि क, दिशि म. नेविउ क. k आवे विमल क, आवी विमल (पाठा०थी 'आवेवि मल') म. l जति अ. जोअन दीठु ठेरवी क, जे जनि झूड छे रवी म.

अहीं अ मां १०१ नो आंक छे. उपर ८९ नो आंक अ मां भुलाई गयेलो होई ९० होवाने कारणे १ नी आ भूल छे. अहीं सुधीमां क मां ९९ अने म मां १०२ छे, केमके क मां बधे अहींतहीं २ कडी नथी. जुओ ७३, ७७, ७९ नी नोंध.

चउपई

खंडि खंडि छइ मति निर्म्मली भणतां सुणतां संपति मली।
मुनि लावण्यसमयची वाणि, पतलइ छठउं खंड वखाणि ॥[१०२॥]

इति लावण्यसमयकृते श्रीविमलमत्र मनोहर प्रगट प्रबंधे श्री-चक्रेश्वरी अंबिका-आराधने श्रीअर्बुदाचलप्रासाद-प्रतिबोधन वाणि प्रतीयकलाप्रगटीकरण व्याघ्रमल्लयुद्धजयाधिकार। षट खंड संपूर्ण॥

'चउपई' क म मा नथी.

१०२. a नर्म्मली ० क ॥ १०० ॥ [टूकमां पताव्यु छे.] म मां चोथी पंक्ति छे— एतलइ छठ्ठउ षड वषांणि ॥१०३॥ म. वधारो हासियामां:— छट्ठ षड ६ ॥ क

पुष्पिकाओ:—

इति श्रीपंडित लावण्यसमयगणिकृते विमलमंत्रमनोहर प्रगटप्रबंधे नवरंग नव षडे षष्टम षड संपूर्ण ॥ श्री ॥ ६ ॥ क

,इति विमलप्रबंधे नवरंगनवषडे श्री चक्रेश्वरी-अंबिकाराधना श्री अर्बुदाचल प्रासाद प्रतिबोधन, वाण विनय प्रगटी करणे, व्याघ्र मल्ल युद्ध जयाधिकारे षष्ट खंड संपूर्ण ॥ ६ ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ म

खंड ७

चुपई

मंत्री गइ विमासण करइ, दैव-सकति प किणइ नवि मरइ ।
आपणि जे जे करिया उपाय, ते विसराल थया कहि राय ॥ १ ॥
भणइ मंत्रि राजन सुणि वात, आगइ विमल-पितानु तात ।
लहरि आदि लेखूं मागीइ, छप्पन्न कोडि टंका ज्याचीइ ॥ २ ॥
पणइ मम्मि धन लीजइ कसी, धन-हीण शुं करसि घसी ।
धन विण माणसनइ मद टलइ, धन विण नर मोटा खलभलइ ॥३॥
धन विण कोइ न मानइ बोल धन विण थासइ रंक निटोल ।
धन लीधइ तु लीधा प्राण, नीर-विहूणउं जिसिउं निवाण ॥ ४ ॥
मंत्रि सभा प्रहि उगमि गयु, रूठइ राउ पराङ्मुख थयु ।
नरसमुद्र पाटणनु धणी, राउ रीसाविउ कुहु स्या भणी ॥ ५ ॥

मूळमा शरूआत-सूचक कंई नथी; क्रमा पण कंई नथी.

पद सातमउ म.

ममां नथी.

१ a मन्री क. राउ क म. करि क. b देवशक्ति क म. 'ए' क मां नथी. केणि क किणिहि म. न म. c ये ये म. किद्ध क, कर्या म.

२. a भणि क म. मन्त्रि क. राजा क. c लेपू क. लेप म. लागीइ म d छपन क. प्याचीइ अ, मागीइ क म

३. a इणि म मर्मि क म. लीजि म. b हीणु क, हीणउ म. सिउ क, शु म. करशि घसी म. c माणसनुं म d घलभलइ क; धन विण मोटाइ सवि गलइ म

४. a मानि म. b थासि क, थाशि म. b निरोल (पाठा०थी 'निटोल') म. c लीधु क, लीधूं म. ता क d विहूणु क जिसिअ अ, जसिउ क, यउ म. निवाण क

५. a मत्र क. प्रहि ऊगमि म. b रा रूठउ ऊपराटउ थयु क, रा रूठउ उपराटउ थयु म. d रीसाणु क बहु क. सा म.

भणइ मंत्र सुणि विमल मंत्रीस, राउनइ छइ लेखानी रीस ।
छप्पन्न कोडि टका घर भरु, कइ आवीनइ लेखु करु ॥ [६] ॥

जउ तम्हे रानी थंकउ मया, करु बोल जे तुह्मनइ कह्या ।
वलीउ मंत्र जउ मदिरि जाइ, आपइ लेख कोइ करमाहि ॥ ६-१ ॥

वाचिउ लेख वछेदि करी, वाणुत्रे बुहरिया तुह्म तुरी ।
दिधउ दाणचोरीनउं आल, राइ पंडीइ लीआ समकालि ॥ ७ ॥

जउ थाइ तु ऊपर करु, नहीतु लेख लखी दिउ खरु ।
राइ सरीखु नहि संतोष, वली अधिकु ऊपायु रोस ॥ ८ ॥

वलता लेख लख्या पडवडा, छडे पीआणे आव्या छडा ।
दृष्टिलेख चंता परहरी, वात तुरीनी छइ पाधरी ॥ ९ ॥

लेखा मिसि फांडइ पाडसि, लेसइ धन वइ[री] ताडसि ।
किसिउं करइ सु अति आकलिउ, गाढउ सीह सबल साकलिउ ॥१०॥

---

[६] a मत्रि क म b रानि लेखानि छि रीस म c छपन क म. भरू क d कि म आवीनि म लेखू क, लेख् म करू क

६-१ a जु क म तुह्म म b यें म तुम्हनि क तुह्मनि म c विमल मत्रि म मदिरि जव क, मदिर म d लेखा को करमाहि म.

७ a वाचिउ क विछेदिं क विछेदिइ म b वाणुत्रि क वाणुत्रे म बहुराता क बुहर्याता म 'तुह्म' क अने म मा नथी c दिद्धउ क, दिद्ध म दाणचोरीनु क दाणचोरीनू म. d राउ क म पडीइ क, पडिइ (पाठा०थी 'पडीइ') म लीउ क, लीया म समकाल क म

८ a जु क म करू क b नहीतरि क म. लिपी म परू क. c राउ क, राय म नहीं म सतोस क म d अधिक म ऊपाउ क, उपायु म

९ a लिख्या म. b पीयाणे म c चिता क, चिंता म परिहरी क d छि म.

१० a लेप क म मसि क, मिशि म फाडइ क, फाडि म. पाडशि म b लेसि धन वयरी ताडसि क. धन लेइं गिरी ताडशि म c किसिउ अ, घसिउ क, किश् म करि म आकलु क म d साकलु क, साकलिउ म ।

कूड रचाव्यां आगइ ढेढि, घाघ माल मंडावि वेढि ।
पहिलउ धुरि जे खाधी खता, पछइ जे कीजइ ऊरता ॥ ११ ॥

दुर्जन हांसां करसि घणा, जासि मुहत पितामा तणा ।
दुर्बल-कना राजा भीम, विणठइ राजि न रहीइ नीम ॥ १२ ॥

जइ मंदिरि सामहणी करी, साढि सोलसइ सोविनि भरी ।
पखरि पंचसया असवार, बीजा पंच सहिस्स तोखार ॥ १३ ॥

पायक सहिस्स मिल्या दशवार, अवर अनेरा वर्ण अढार ।
पोताना गज साथि लीध, बीजा तुरीअ अडाणा कीध ॥ १४ ॥

रथ वाहण उटे नीसाण, रखत भरया साजा सावाण ।
अंतेउर देहरासर साथि, घर टलती लिइ सघली आथि ॥ १५ ॥

मेली कटक थयु असवार, भीम मेटि कीधी तिणि वार ।
राय पूठि जव देई रहिउ, वलतु बोल विमलि इम कहिउ ॥१६॥

---

११. a रच्याव्या अ. b मालि म. मडावि क, मडावी म. c पहिउ क, पहिलु म धरि क जु म. षाता क. d पछि म. जेह म कीजि म उरता क म.

१२. a करशि म. घणां क म. b जाशि म. महत म. पितामुह क, पितामह म. तणा म. c दुबल क, दुब्बल म.-कनउ म. d विण वइरी जिन वहीइ कीम क.

१३. a जइ क, जै म. सामहिणी क. b साठि म सोलसइ १६०० अ, सोलसि क, सोलसिइ म सोवन क, सोविन म. c पक्खरि क म. पंचसया म. d सहस क म.

१४. a सहस क म. मल्या क. दश क. दस म. सार म. c सथिइ म. d तुरी क. अडाणी किद्ध म.

१५. a वाहणि क, वाहिणि म. ऊटे क. ऊटे म. नीसाण म b भर्यां म. साथिइ सार्वान म. c अतेउरि दहेरासर म. d लइ क. घरिथी लीधी म.

१६. a मेहली क. थयु म. b भीम क. मेट क म. तीणइं क तेणी म. वारि क, वार म. c राउ क म पूठि क, पुठि म d वलतु विमल बोल क.

दूहा

मझ दिठि ते वयरीआ, वली म देजे भीम ।
इम भणी पाटण तणी, विमलि बुली सीम ॥ १७ ॥

चउपई

चालिउ मंत्र माल्यवनि रहउ, तिहाथु टयक नीसाणे भयु ।
पणइ अवसरि चंद्रावइ-धणी, आविउ खेत्र खडाली भणी ॥ १८ ॥
सुण्या विमल नीसाणे घायु, धरणि दलु चंद्रावइ-राइ ।
नाग बेटा सवि मन मढइ, रा पंडी ग्या पासइ ठठइ ॥ १९ ॥
आविउ विमल अखंड अगाज, जई बइठउ चंद्राव[इ]-राज ।
सीमाडा जे सवि सामटा, आवी मल्या विमल एकठा ॥ २० ॥
जेहनइ कहिनां न नाम्यां डील, उलग करइ भला ते भील ।
गाम ठाम लीधा परदेश सवि मनाव्या नगरनरेश ॥ २१ ॥
बइठउ विमल सभा सम धरी, आविउ चर को देसाउरी ।
चंचल स्वामी देस वंगाल, रोमनगर छइ अति सुविदयाल ॥२२॥

---

१७. a दिद्धी क म. वयरीया क, विरीया म. b देयो म. d वुलि म. चुपई क. चुपै म.

१८. a मन विमलनि रहिउ क, मत्रि मालवणि रहिउ म. b तिहाथी क. तिहाथु म. विमल नीसाणा क; नीसाहणे म. c इणि क, एणि म चद्रावइ- म. d येत्रि म. पडाली क म

१९ a नीसाहाणे म घाउ क, घाय म. b दलिउ क म. राउ क, राय म. c नाठा क, नाहाठा म मनि क. d राउ क पढीआ पासि ग्या क पढी पासिइ ग्या म.

२०. a अगाजि क, अगाजि म. b जं म. वयठु क बिठउ म -राजि क, -राय म. d सवे एकठा क; विमल मिल्या एकठा म.

२१ a कहिना अ. जेहनां म नाम्या अ, नम्या क; न नम्यां कहिनइ म. b उलग म. c गांम ठाम म परदेश क d सेव क म

२२. a वयठउ क, बिठउ म. सभा क b नर क म. देशाउरी म c सामली स्वामी देश विंगाल क; सामलि म. d छि म. सुविशाल क म.

एकइ नगरि बार सुलतान, वार वार जोअण मंडाण ।
वावि सरोवर वाडी कूआ, दीसइ छइ सविकहिं जूजूआ ॥ २३ ॥
जिहां जिहां जाणइ हींदू नाम, तिहां तिहां देस उजाडइ गाम ।
हींदुनउ अवतरीउ काल, जउ चालइ तु करिइ संभाल ॥ २४ ॥
ते वारइ रवि परि दीपता, दोहिला देव अछइ जीपता ।
सांभलि हो चंद्रावइ-धणी, रोमनगर ते पूर्वे भणी ॥ २५ ॥
भणइ मंत्री सी मंडी जात्र, ते सुलतान मनि केहा कुणमात्र ।
एक एकनी छाया रहइ, ते सुलतान नाम किम लहइ ॥ २६ ॥
मालव देस मंध नमीआड, जीता कछ मछ मेवाड ।
कलि कर्णाट लाट नइ भोट, जीता मारूआडि नव-कोट ॥ २७ ॥
दहदशि वरतइ आण अखंड, मेल्हइ गूजरातनउ दंड ।
भीम न भाजइ ठाकुर भणी, किम लोपु कुलवट्ट आपणी ॥ २८ ॥
गौड देशनउ रा गांजीउ, भोट देस तणउ भाजीउ ।
पंचालउ ते पालउ पलइ, कानडीउ ते कोट्टारे रलइ ॥ २९ ॥

---

२३. a एकि क, एक म. सलतान क सुलतांन म. d देश क, देस म. अछइ क. अछि म.

२४. a जिहा जिहा अ नाम म. b देश ऊजाडइ क गांम म. c हींद्दुनु क हींदूनु म. d जु म चालि म. करि न क

२५. a वारं म. रवि तलि क. b दोहेला क. षीपता म. c सामालि क. d पूरव क म.

२६. a मंत्रि क म माडी क यात्र क म b सुलतांन म कथा कुण मात्र क म. c छाया म. d सुलतांन नांम म.

२७. a मालव मगध देश नमीआड क, मालव मगध देस नमीयाड म. b कच्छ मच्छ म. c नि म d मारुआड क. कोटि म.

२८. a दसि क, दिशि म. वरति आण म. अपइ क. b मेहलिउ क म. गुजरातनु क, गूजरातनु म. c भीम क भागु क, भांजिउ म. d लोपूं म. कुलवट क म.

२९. a देशनु क, देसनु म. गाजीउ क. b भोट तणु भइ ते भाजीउ क. भोट तणउ भडवा (पाठा०थी 'भइ ते') भाजीउ म c पंचालु क म. पालु क, पालिउ म. d कान्हडीउ क, कान्हडीउ म. 'ते' क म मां नथी. कोठारे (पाठा०थी 'कोठारे') म.

कासमीर कंपिउ भडवाय, चौड देसनु चंपइ पाय ।
थावरीउ बइठउ बारणइ, कनूजउ ते कीरति भणइ ॥ ३० ॥
अंग देशनउ उलग करइ, जीवी मागइ जालंधरइ ।
वागडीउ ते नाखइ वाय, सोरठीउ ते सेवइ पाय ॥ ३१ ॥
अवतरीउ वेपु केरु काल, प्रगटिउ पुण्यवंत प्रतिपाल ।
मथुरा तणउ माल पाठवइ, अरथ अयोध्यानु आठवइ ॥ ३२ ॥
ढीलीनु ते मानइ ढाक, रोमनगरनी थई तकताक ।
मझ आगलि ए बल सिउं कहिया कण ओखणता बूराप रहिया ॥३३॥
जिमणवारि नवि जिमीआ बहू, करता पाक रहिया कोरहू ।
घर करता के घर वीसरिया, ते दीसइ अलगा नीसर्या ॥ ३४ ॥
ते सुलतान तणउं सिउं गजउं, जउ जाण्यानु किम थोभजउं ।
करु सजाई महिता जाण, जई जीतुं वारइ सुलतान ॥ ३५ ॥

---

३० a किपउ क. b देशनु क चंपिउ राय म. c बयठउ क, बिठउ म. बारणि म. d कानूजु क, कन्नूजु म करइ क म.

३१. a देशनु क, देसनु म. करु क, पउ म. b जालधरू क, जालधरु म. c नषइ क, लषइ म. d शेवि म.

३२. a रिपु क म. c मथुरा क तणु म. d अर्थ म अयोद्यानु म.

३३. a मानइ म. b नयरनी म. थै म c ए बल स्या क, ए स्या बल म. कहिया क, कह्या म. d कण क. उषणता क, उपणता म. बूरा क, बूरां म. रहिया म.

३४. a जमणिवारि क, यमणवारि म जमीआ क, यमया म बहू म b करता क म रह्या म. c करता म. वीसर्या क, वीसर्यां म. d डु क, के म. दीशिइ म.

३५. a सुलताण क, सुल्ताण म. तणु क, तणउ म सिउ अ, श्यु म. गजउ अ, गर्जू क म. b जु म जाण्या तु म. ओभजउ अ, ऊभज क, ऊभजूं म c जाण क. d जै म. जीपु क, जीपूं म. धारे म. सल्ताण क, सुरतांण म.

सूरु सूरातनइ घडहडइ, हय पाखरीआ ऊपरि चडइ ।
चंद्रावइ वाहरि मेल्हाण कीधउं ताम हुउं जगि जाण ॥ ३६ ॥

हल हल कटक सजाई करइ, भड भाथी भालोडे भरइ ।
सगणी सीगिणि पाली पटा, कटारी कुंतरि करिकटा ॥ ३७ ॥

गदा गुज गोला गोफणी, भल झलकइ भालानी अणी ।
हल मूसल मोगर खरचक्र, गेडी गंठाली लि वक्र ॥ ३८ ॥

सिल सिक्ति तोमर तरूआर, नीमंचा तीखा तेज विचार ।
खाडा खेडा घण घूघरा, वली वंश नइ छापर छरा ॥ ३९ ॥

सरसी फरसी नइ हुडवडी, अणीआली धली धांकडी ।
तीखा तेजि तपइ त्रसूल, घइरी[नइ] शिरि माथासूल ॥ ४० ॥

जरद जोड जमली जीणसाल, लोहवडी डगली डोढाल ।
हस्ताभरण अंगूठी खरी, दोरी जरद कवच कर्करी ॥ ४१ ॥

---

३६. a शूरा म. सूरातनि क म. धडहडिउ क, धडहडु म. b राउ क. पक्खरीआ म चडिउ क चडउ म. c चद्रावय म. मेहलांण म. d कीधु क, कीधू म. ताम हवू म. जाण म

३७. a करी क म. b भाथा क म. c सगुणी क. सिगणि क, शींगणि म. d कांटारी क कातर क, कातरि म. करकटा म.

३८. a रंज क, गुरज म गोफिणी म. b भालानां म. c हल क. मुसल म. वरचक्र क, वर मोगर चक्र म. d गठाली क, गढाली (पाठा० श्री 'गठाली') म. लिइ क. मि म वक्र म.

३९. a शप शक्ति क म. तरूआरि क म. b नमीचा क नम्मीचा म. नारेच विचारि क नाराच विचारि म; तेच थ c धाडा क, धांडा म. घेडा म. d वंस नि म.

४०. a सरसी भरसी क. नि म. हुडबडी क म b अणीयाली म. वाली क म वाकडी थ. c तीषा म. तेज क. तपति क, तपं म त्रशूल क, त्रिशूल म. d वयरी विसरि मिरथाशूल क, विरीनि शरि माथाशूल म.

४१. a जीणिशाल क. b डोढाल क; डगली गहींढा ढाल म. c हस्ताभरण क, हस्ताभर्ण म. अगूठी क. d जद क, जुरद म. कव[च] क, डाभ म. कर्करी क.

पहिरा अंगा चंगा टोप, रंगे रंगाउलिना [आ]टोप ।
पहिरइ जीवरखी सनाह, वइरी[नइ] शिरि देवा दाह ॥ ४२ ॥
मोटा मयगल पर्वतप्राय, बलवंता के काला-काय ।
पक्खर पडइ घूघर घमघमइ, रणि रलीआत रोशइ रमइ ॥ ४३ ॥
दंतूसल जिम-दाढा जिसी, सरली सुंढि घाइ धसी ।
रीसइ चीस् छंडइ सारसी, परि परि सवि जाणइ पारसी ॥४४॥
पग पोढा करि थंभाथंभ, सिंदूरि लोझाल्या कुंभ ।
सवामणनी सांकल खरी, रणकइ जिसी चलणि नेउरी ॥ ४५ ॥
अंबाडी पूठि पाठवी, ते ऊपरि धज ढलकइ नवी ।
बइठा नवि माठा पुंतार, रणि रूठा जूठा झूझार ॥ ४६ ॥
अंगि रंगि रूडां चीत्राम, के मयगल जयमंगल नाम ।
फुंकफोड के संकलत्रोड, के विपछोड महामदमोड ॥ ४७ ॥
पर्वत-ढोल धरणि-धंधोल, परदल-मोड के रणरोल ।
पकताल के वइरीकाल, के विझखाल चमर-चंबाल ॥ ४८ ॥

---

४२. a पहिरया क, पहिर्या म. b रंगि म. आटोप क म c पहिरी म सन्नाह म d विइरीनइ क, विरीनि म सरि क, शरि म.

४३. c पडि घुघर क. d रलीआइति क, रलिआता म. रोसि क, रोसिइ म. ममइ क

४४. a दम क म दाढा क म. जसी क, यशी म b सुढि क सूढि म. c रीसि क म. छीस क, चीसि म छडइ क, छडइ म. d पगि क म. प्रोछइ क, प्रीछि म. पारपी क.

४५. a पोटा क; थभ्या क; पग करि थंभ्या मोटा थंभ म. b सीदूरि क, सिदूरिइ म. कंभ क. c साकल म. d चलणि जसी क, चरणि यशी म

४६. a पूठि क, पुठिइ म. आठवी क म. b लहिकइ क, लहकि म. वली म. c बिठा म. पूतार क पुंतार म d जूठा रूठा म

४७. a रूडा म विश्राम क. b के मगल क. c फूंकफोड क म. कि क. सांकल म. d –मदमोद म.

४८. b परदल योलण के क; परदल बोल कि विरी रोल म. c दुर्जनसाल म. d के विप चरम चरम चवाल क; विपकाल म.

गढगंजण मंजण वली ठाम, सींघलीआनां साचां नाम ।
चालइ मयगल मदकलोल, बिहु पासे चालइ चकडोल ॥ ४९ ॥

तेजी तेखाला परिवरिया, रणि सूरा नइ रोसइ भरिया ।
हेमज मोती नइ हरीअडा, भारे जन होडा नीलडा ॥ ५० ॥

होला हीरू पिरूअडा, सरला सेराहा सुंनडा ।
केहाडा कलहत्थ कालूआ, जलवट्टा गंगाजल जूआ ॥ ५१ ॥

सिक्खिरि सजोडा भमर मोरंग, सारिंगा नवहत्थ नारिंग ।
जुगी उंयाणां उदरा, वाणाही खुरसाणी खरा ॥ ५२ ॥

कोहाणा मोटा महूअडा, मल्हावीआ मुंगल माकडा ।
ओघसीआ नइ घसीआ घोर, झाटकीआ झोटकीआ मोर ॥ ५३ ॥

---

४९ a वल क, वड' म. ठाम म. b सींघलीआना अ सिंघलीआनुं क. सिंघलीयाला म साचु क साचा अ. नाम म c कल्लोल क; चार्ट मयगल मदकल्लोल म. d चहु क पासे चालि म

५०. a तिषाला क तरवरया क, तरवरिया म. b रणि क म. शूरा नइ क, सूरा नि म रोसि क, रोसिइ म. मरधा क. भर्या म. c हीजर क, हाजर म. मोती नि म हरीयडा म d भारि ज भल होडा क, भारि जल होडा म.

५१. a हारूडा क म. रूपडा क म. b शेहलारा म. सुनडा क, सुनडा म. c केहा कलयानि के कालूआ क, केहाडा कवची कालूआ म. म मां ५१–५२ ऊ० पा० ।

५२. a सिखिर क. मोरिंग क. b भारिगा क. हया क. नारिंग क. c जुगी क. उबिरा क. d वाणाही क.

म मां पाठ—
सखि सजोडा भमर मोरींग, सारंगा नवहथ नारिग ।
जूगा ऊनाणा उदिरा, वीणाही परसाहाणी परा ॥ ५२ ॥

५३. b मल्हावीया म मूंगल म मांकडा म. c ऊघसीआ क म. नीघसीआ क, नीघसीया म. d झोटकीआ झाटकीआ क, झाकटीआ झोकटीया म.

पाणी-पंथा पंचकल्याण, पवनवेग पोढा केकाण ।
पाखरीआ पछेरा जेअ, जातिशुद्ध नवि थाकइ तेउ ॥ ५४ ॥

कपिल कमोरा घोटक जाति, अछइ अनेरी भलेरी भाति ।
जगि जोडि जगता आणीआ, जाणे रवि-रथना आणीआ ॥ ५५ ॥

हंस धवल हीसइ हांसला, नाचइ माचइ महीअलि भला ।
पुलइ पंथि सवि पहुलीआ, वेगि वडा वारू आणीआ ॥ ५६ ॥

पूठि पुहला पग-नीसला, धंकमुहा नइ खंधागला ।
एकवर्णा जिइ टूंका कर्ण, ऊपरि आरोप्यां आभरण ॥ ५७ ॥

पडी आखर नइ झलकइ पल्हाण, चडीआ रणसागर ऊधाण ।
ऊभर बंध गादी पटार, बांधी जरद-बंधनी सार ॥ ५८ ॥

मुडी चंग चमर चुकडा, मखीआरणा अनइ मुहरडा ।
रूप खाप सरिखां झलकतां, बिहु पाख पागड ढलकतां ॥ ५९ ॥

---

५४. a पांणीपंथा म. पचकल्याण क, पचकल्यांण म. b पवनवेगि क म. c पाक्खरा क, पारकूरा म. वछरा अ, वच्छेरा म. येह म. d यातिशुद्ध क. तेअ क, तेह म.

५५. a किसोरा म. याति क. b अछि म अनेरी कइ भली क, अनेक भलेरी म. c जोड म. जडता क. जडती म. जाणीया म d वेगि वडा वारु वटिलीआ क; आंणीया म.

५६. a हस क. धीसइ क, हीसइ म. हासला क b मांनइ क. महीयलि म. c पलइ क. पुहलइ (पाठा०थी 'पुलइ') म. पथि क. सविहू क, सविह (पाठा०थी 'सविहूं') म. पहिलीआ क, पहिलीया म d वेगि चालइ सवि पहूलीआ क; वहिलीया म.

५७. a पूठिइ म. पुहुला क. पगि म. b नि म खधागला क, पंधगला म. c वर्णनइ क, वर्णनि म. d ढुका म. आरोप्या अ. आभर्ण क म.

५८. a पडीयां पाघर नइ पल्हाण क; पाधर नि पलाण म. b चडीयां क म. ऊधाण म. c ऊपरि क, ऊर म. बंधी क गादी क, गाढा म पटाटि क, पट्टार म. d बधी क, बांध्या म. जेर क, येर म. -बंधना म. साटि क.

५९. a कुडी म. चुकडां म. b मपीआरडा क, मपीयारडां म. आनइ क, अनि म. मुहुरडां क, मुहरडां म. c सरिखा अ, सरपां म. झलकता अ. d पखि क म. पाघडां म. ढलकता अं.

पाछलि पट्टकूल थांघीआं, वागदोर वारू सांघीआं ।
गली गली जलवाद्ल भरिआ, झलकइ तोयर खाणे भर्या ॥६०॥
घतपतीआला दि घीजणा, जेह्रा जेह्रवा तेह्रवा ताजणा ।
कसीआ कसण थांघी घासणी, धुरि चारी दीधी चासणी ॥ ६१ ॥
के गढ-पडणा गिर-ऊडणा, माता मयगल मदमोडणा ।
खाड नाड उडइ नय पूर रणिझडि झटकइ झडपइ सूर ॥ ६२ ॥
हरणि-मुहा हींसइ हणहणइ तेजी तां नवि जी[ता] कुणइ ।
घडइ घेगि नवि लाइ घार, चंचलीइ चडीआ असवार ॥ ६३ ॥
हाक्या रथ धरणी धडहडी, रणवाजित्र रह्वियां गडअडी ।
चालइ विमल चंद्रावइ-धणी, कटक रोमनगरि दशि भणी ॥ ६४ ॥
च्यारि सहस्स सिरि सीकरि धरी, साढी सोलसइ कूलिरि भरी ।
साथि चालइ पाणी-पाट, कुद्दाडे चोखालइ वाट ॥ ६५ ॥

---

६०. a पाछिम क म. वाधीआ अ, बांधीया क, थांधीया म b वगघदोर म. वारु क. साधीआ अ, साधीया म c गली जल क भर्या म. d पाणइ तोमर भरिया क; पाणिइ म, भर्या म.

६१ a वितपतीआलि क, व्युतपतियाला म लाल विजणा क, ले वींजणा म. 'जेह' क म मां नथी. b तेजी ताजेवा ताजणा क, तेजी ते येवा ताजिणा म. c क्सी क म. वाधो क. d दिद्धी क

६२ a फडणा क. के ऊडणा क, गिरिऊडणा म c उडइ नइ पूरि क, पाडोणा ऊडण नि (पाठ०थी 'खाड ताड उडइ नइ') पूरि म d रण क. झडझडपइ क, झडि झडकइ म. झडपइ म

६३. a हरण क म हरणला क. b तेजी तेजि थाकि नवि किणइ क; ता अ, ते म, कणइ म. c वडि म. नव क. लागि म. d चल्चलि क, चचलीए म चडया क, चडीया म. घणा असवार क

६४. a घडक्या क म. घडघडी म b रणि क म. रहिया अ क, रह्या म. रणढाणी (पाठा०थी 'गडगडी') म. c चलइ क. चलइ. म चद्राउलि म d कटकै क, कटके म. रोमनगर क म. दिसि क, दिशि म.

६५. a चारि क. सहिसि क, सहस म. सरि क, (पाठा०थी 'सिरि') म. शीकिरि ('पाठा० थी 'साकरि') म. भरी (पाठा०थी 'धुरी') म. b साढि म. सोलसि क c साथिइ चालि पाणी म. d चोयालि म.

उंट बलद् साबाणे भरया, चालइ काठ तणा गढ फरिया ।
मारगि मंडाइ बाजार, वर्ण अढार करइ व्यापार ॥ ६६ ॥
साथि सांढि पल्हाणी तेह, घडीआ जोयण जाइ जेह ।
गाजइ गज हणहणइ तोखार, पाला लाख कोडि नवि पार ॥ ६७ ॥
सुखासुण आसणि पालखी, कै बइठा सेजवाले सुखी ।
श्रीगरणा बइगरणा कहिया, आप-आपणे थानकि रहिया ॥ ६८ ॥
सेनानी सवि चिंता करइ, भंडारी ते मेहलिउ चरइ ।
राति चुकी पहरा पडइ, सात सहिस्स दीवटी आकडिइ ॥ ६९ ॥
विमल-अंगि वाधइ बलपूर, चालइ विकट कटकनु ऊर ।
दलखेहि छाहु शशिसूर, रोमनगरि जई दि रणतूर ॥ ७० ॥

दूहा

राग असाउरी – ढाल वेलिनु

रोमनगर तव खलभलइ, दीधी पोलि [पोलि] ।
ते बार सुलताने तव, बरवइ बइठा बोल बोल ॥ ७१ ॥

---

६६. a ऊट क, ऊट म. सव क, सबल म. साबाने म. भरिया क, भरियां म. c मडावइ क

६७. a साथिइ म. साढि अ. पलाणी म येय म. b घडीइ क, घडीया म. जेय क, येय म. c घण ('गज'ने स्थाने) क. तुषार म. d पार अ, लाप क म. नव क.

६८. a सुपासन क, सुखासण म आसन क, आसण म. b के क म. बयठा क, बिठा म. शेजवाले म. सपी क c सीगरणा त्रिगरणा म रह्या क, वहिआ म. d श्रावक कव [शब्द अधूरो छे] क. थांनिक रह्या म

६९. a चता क. b भडारी क. c रातइ क, रातिइ म. पुहुरा क, पुहरा म. d सहस क म. दीवी म. करइ क परजलइ म

७०. a वाधिउ क, बाधिउ म उर क. b चालइ कटक त्रिकट घण पूर क, चालि कटक तणउं ते पूर म. c दलपेहिइ म, दलछेहि क. छाहिउ क, छाहिया म शसि क. d जै क म. दिइ तूर क, वाया तूर म
क मा 'दूहा..... ढालनु' नथी; म मा बराबर छे.

७१. a दीधी पोलि पोलि क, दिद्धी पोलिइ पोलि म. c बारइ क, बारं म. सलतान क, सुलतान क म. 'तव' म मा नथी. d बरवइ बिठा उलि क, बिठा बरवि उलि म.

जव नीसाण द्रसुकीआं, धागा ते जांगी ढोल ।
मुखि तंबोल खसी पडया, नवि बोलाइ बोल ॥ ७२ ॥

बीबी सवि हसी हसी पडइ, कहि किम झुझसि मीर ।
सबद सुणी भंगाण भया, अंगिअ लग्गा तीर ॥ ७३ ॥

उंचे गुखी चडी चडी, जव जोइ सुरताण ।
क्या फीजइ हवइ आया, खुदा तणा फुरमाण ॥ ७४ ॥

कसका दल हादरि हूआ जव पूछइ सुरताण ।
आया विमल बकाल ए, मुरडि मनावइ आण ॥ ७५ ॥

इणि जीता सवि देसडा, इणि जीता सवि राय ।
कइ ए पयलग्गी माल दि, कइ लडइ चुपट धाय ॥ ७६ ॥

आया हींदू गोबरे, सुणीआ बोल बकाल ।
सामा सवि छीनी लीइ, ते किम आपइ माल ॥ ७७ ॥

---

७२. a नीसाण क, नीसांहण म. द्रसुकीआ अ, ध्रसुकीआ क ध्रसुकीया म. b ते' क म मा नथी. जगी क.

७३. a बीजी क. हस हस क, हशी हशी म. पडि म. b झुझशि म. c शबद क म. सणी क. भय क म. d अगिअ क. लगा क. मीर अ.

७४. a ऊचे क. गुषि क म. b दिठ्ठइ म. सुलताण क, सुलतांण म, c आया हुवइ क, आया हवे म. d तणां क. फरमाण क, फुरमाण म.

७५ a किसका म. दलि म. हाजरि क. हूया म. b पुछइ क, पुच्छइ म. सुलतान क, सुरतांण म c मुरड क, मरडि म. मानव क, मनावि म. मान क.

७६. a एणइ क, इणि म जीते क, जित्ते म. सव क. देसडे क म. b एणइ क. इणि म. जीते क, जित्त म. सब क. c कइ पाय लागी क, कि पय लागी म. मान क. दिइ क, दिइ म. d कि म. लडि क म. चुपड म.

७७. a हींदू अ क. गोबरा क. म. b सुणीया क म. c साहमा क; सामा ते सविहू लेवइ म. d हमे कीउ आपु क; ते किउ म.

हींदू अह्म हक्कि गया, लद्धि विण लित्ता कोट ।
ते कुण आन बकाल बे, हमकुं देवइ दोट्ट ॥ ७८ ॥

चालि

हमकुं देवइ दोट बकाला, मागइ माल कोडि बिचवारा ।
हमके हाजरि नही असवारा, नही कोई वली झूझारा ॥ ७९ ॥
हमे सुरतान समान समाने, हमकुं नामुं कोटि ।
देखे बीबी लोक लूटाउं, मारि कराउं लोट ॥ ८० ॥
प तेरे पाय पडाउं, तु हूं साहिब तेरा ।
हिंदू कटक कराउं हेरा, कसूं कहुं बुहुतेरा ॥ ८१ ॥
दल दल कटक सजाई मांडी, हय पाखरीआ कोडि ।
मद मीमल मयगल मलपंता, मेल्हा बंधन छोडि ॥ ८२ ॥
अंबाडी मांडी दंतूसलि, आडी अरलठि बांधी ।
तिहि तरूआरी अटारी सारि, कटारी सोइ सांधी ॥ ८३ ॥

---

७८ a हीदू अ. हम क म हक्कइ क हक्कइ म. b दिणि दित्ता क. c कूण म. काल क. ये म d हमसिउ क, हमकू में देवि म. डोट क, दोट (पाठां०थी 'नोट') म.

म मा 'चालि' नथी

७९. a हमकू क. डोट क, दोड म. b 'कोडि' क म मा नथी d नही नही कोइ झुझारा क म

८०. a हमि क सुलताण क,, सुल्तान म शुमान बे क [समाने' क मा नथी], समाने म. b हमे क किउ क, किउ म. नामु अ, नामू, क, नामू म. कोट क म. c देषी म. लूटाउ म. d करावु अ, करावू म

८१. a पकडी तेरे क, पकडी तोर (पाठा०थी 'तारं') म पडाउ अ, पडाऊ क, पडावू म. b तु क. ह क. शाहिब म c हींदू क म. करावु अ, कराऊ क, करावू म. हेजब म. d कस्या क, किस्या म. करिउ क. कहू म. बहूतेरा क, म.

८२. a मदी क, मादी अ. b पषरीया क. पक्खरीया म. c -भिमल क. -ममल म. d मेल्ह्या मं.

८३. a अबाडी क. अबारी मं. मादी अ, मडी क, बाधी म. b अरल्ते क, अरलति' म. बाधी अ. c तिलाइ ('अटारी'ने स्थाने) म. d बांधी अ क

सिंदूरि सोइ कुंभ सोहाल्या, पोढी पाखर ढाली ।
काठ तणा गढ विसमा श्रीघा, विसरा ग्रसरा घाली ॥ ८४ ॥

जडकइ जोड जडी जड जाडी, ताडी ते नवि त्रूटइ ।
पहिरिया आंग टोप रंगाउलि, भाला भंगि न फूटइ ॥ ८५ ॥

पाट तणा ते तुरीय पल्हाण्या, जे जाणइ रणमोड ।
वालि वांध्या विसहर सिरखा, छेरवीआ विपछोड ॥ ८६ ॥

के तरकस करकस करि मीडइ, सींगणि धींगिणि हाथि ।
जीयरखी सरखो सोहावइ, मोटी मोगर साथि ॥ ८७ ॥

ढोल ढाक दुदामा देवइ, नफेरीना नाद ।
चारइ छे सुलतान सजोडा, विमल सरीसु वाद ॥ ८८ ॥

पोलि थकी जव पगलां मांडइ, तव धुरि ढलीआ टोप ।
बीबी बोलइ विमल सिरीसु, मीरा म करीसि कोप ॥ ८९ ॥

---

८४ a सिंदूरिइ म. सोय क, दोए म. b घाली म. d त्रिसरा म.

८५. a जडकि म जडि जाबी क म. c पहिरया क, पहिर्या म. आग अ, अंगा क म. रगाउलि अ.

८६. a तुरी म. पल्हाणइ क, पलाण्या म. b ते म. जांणइ म. c व्याधा अ, बाध्या क. सरिषा क, शरपा म. d छेरवीया म.

८७. a तरिकस करिकस कइ क. b सिगिणि क, शीगिणि म. घीगणि क. d मोटी मोटी क, मोटा म.

[1] क म मां १ कडी वधुः—

पाडां छेडा नवल नमीचा, बीजा जे हथीआर ।
छत्रीसइ डडायुध आगइ अंगि न लागइ भार ॥ ८९ ॥ क

a पांडां षेडां म. नंमीचा म. b बीजां ते म. c छत्रीसं म. आगि म d अंगि म लागि म. ॥ ८९ ॥ म ॥

८८. a डांक क, ढमक म दमामा अ, ददामां म. b नांद क. c चारं म ते क म. सुलतण क, सुलतांन म.

८९. a मडइ क, माडइ अ. b धुरि क म. ढलीया म. c बोलि म. सरीसु क म. d मीरां म. करसि क, करि म.

बीजउं डगलुं जाम उपाडइ, तुरीया आवी ठेस ।
बोलिइ वांदी सुणि हो बीबी, साहिब जाण म देसि ॥ ९० ॥

त्रीजइ डगलइ काल ऊतरीउ, चुथइ दक्षण देवि ।
बोलइ बीबी मान ज मागी, विमल तणा पय सेवइ ॥ ९१ ॥

प हींदू छइ देव सरूपी, जे जे इणि दलि आया ।
जिम देखु तिम वीट वीटाई, क्या हींदूकी माया ॥ ९२ ॥

रे रे मीरा रहि एक तीरा, म करे मान पराण ।
जिसका खोल्या बाण भी जावइ, गाउ पंच प्रमाण ॥ ९३ ॥

देखु विमल कटक घण कोटे, सिंहनाद सिरि त्राटा ।
जे घोडा मयगल मतवाला, पायक पाला नाठा ॥ ९४ ॥

पूछइ मोटा मी[र म]तालिक, जं पइगंगर पाका ।
राज रहि तिम रहिणी राखु, झूझ करी सवि थाका ॥ ९५ ॥

---

९०. a बीजउ अ, बीजू क, बीजू म. पगलुं क, डगलं जांम म ऊपाडइ क, उपाडि म. b तुरीया क. तुरीयां म. आवी क, आवइ म. ठेसि क, ठेशि म. c बोलि म. वादी अ; बीबी सुणि हो वांदी म. d साहब म. जांण म. देशि म.

९१. a त्रीज क, त्रीजि म. डगलि म. b चुथि म. दक्षणि क. c बोलि क. मांनज म. d पाय क. सेवि क, शेवि म.

९२. a हींदू क. नही देव क म. सरूपी क, समांनी म. b दलीआ अ; जे एणइ दलि आया क, जेणि दलि चडी आया (पाठा०थी 'जे इंणइ दलि चडी आव्या') म. c यम म. देपू क, देखू म. वीटि वीटाई म. d हींदूकी अ.

९३ a मीरां क म. इक म. तीरां म. b मांन म. पुराण क, परांण म. c जसका क म. बाण क, तीर म. मी यावि म. d गाउं अ, गाऊ क म. परमाण क, प्रमांण म.

९४. a देवी क म. कोटि म. b शरि म. c जेह क, ये म. मलपंता क, मदिमाता म. d सयला क.

९५. a पूछउ क म. मीरां मोटा मतालिम क, मीर मतालिम जे जे म. b जे क. पइगंबर क, पयगंबर म. c रहइ क. रहिणं राखु म. झूझ करी रहइ थाका क, लडी लडी एवं थाका म.

जे दुर्वेस वेस अनेसा, पूछउ मूलि मुलाणा ।
जोगी भोगी जंगम जडीआ, सेख सदा सपराणा ॥ ९६ ॥

पूछ्या जाण कहि तुम्हे मानउ आण विमलनी आज ।
जु तुहे राज करेवा हींड, रोमनगरि जु काज ॥ ९७ ॥

मोकलीआ परधान आपणा, विमल मनावा रेस ।
रोमनगरिनइ मया अवधारु, जे मागइ ते वेसि ॥ ९८ ॥

विमल भणइ जु बारइ बीबी, हींदु वेख कमाल ।
जु मणिमाणिक वेगि वधावइ, सोविन भरीए थाल ॥ ९९ ॥

आपइ दंड जि घोडा हाथीआ टंका कोडि ज च्यार ।
मानी वात प्रधान जि चलीआ, पुहुता नगर मझारि ॥ १०० ॥

वात सुणावी सवि सुलताणी, बीबी बोल कहाया ।
हारदोर सिणगार भलेरा, हींदूआणी-वेस कराया ॥ १०१ ॥

मणिमाणिक परवाल घलाया, सोवनथाल भराया ।
विमल-वधावणि बीबी आवइ, रोमनगरका राया ॥ १०२ ॥

---

९६. a दुर्वेसा क म. b मलाणा म. c योगी क. d शेष म सपराणा क, सपराणा म.

९७. a जाण म. विमल नही मानु क; मानु म. b एहनी ('विमलनी'ने स्थाने) म. c तम्हे क, तुझे म हींड क म. d तुझ काज म.

९८. a प्रधान क परधान म. b रेसि क, रेशि म. c रोमनगरनइ क, रोमनगरनि म. उधारु म. d जं क. मागसि क, मागशि म. त क. देशि म.

९९ a भणी म. बारे म. b हींदू क, हींदू म. वेस क, वेषि म. झमाल क, कबाटे म. c 'जु' क मा नथी, जउ म. मणिमाणिक म. वधावि म. d सोवन क. थाल म.

१००. a आपि म. डड क म. ज क म. घोडां म हाथी क म. b 'ज' क म मा नथी. विच्यारि क, विच्यारइ म. c मानि म. प्रधान ज क वलिया म. d पुहता म.

१०१. a सुलताणी म. c सणगार क, शणगार म. भला म. d हीदूआणी क, हीदूआणी अ.

१०२. a मणिमाणिक म. b सोविन क म. c आवि म. d केक.

गाइ गोरी कीरति तोरी, भली भेटि मुकाई ।
विमल वधाया पूरव आया, आपि आण मनाया ॥ १०३ ॥

दूहा

बीधी दीधे कप्पडे, उरि चंगे दीधे हार ।
पहिराव्या सुलताण सवि, विमल वधाइ वारवार ॥ १०४ ॥
मीरा सवि मीनति करइ, धीयी दि आसीस ।
रजमति करसु ताहरी, मंत्र म आणे रीस ॥ १०५ ॥
प्रतिपु कोडि दीवालडी, अमर करइ कयवार ।
खुदा खुसी छइ तूहनइ, विमल जयजयकार ॥ १०६ ॥
खंडि खंडि छइ मति निर्म्मली, भणतां सुणतां संपति मली ।
मुनि लावण्यसमयची वाणि, पतलइ सतम खंड वखाणि ॥ १०७ ॥

इति पंडित श्रीलावण्यसमयगणिकृते श्रीविमलमंत्रिमनोहर प्रगट प्रबंधि ४५६ कोटि धनमार्गण भीमभूपति–विरोध चंद्रावती नगरी–राज्यस्थापना विदेससाधना सकलसैन्यायुधकरण । गज-तुरंगादिवर्णन विरोध नगरायुध द्वादश सुरत्राण [जैत्याधिकारे] सप्तमो खंड समाप्तः ।

---

१०३. b भारे क, भारी म. भेट म. मूकाइ क, मूकाइ म c धावा क, वधाया म. पूरवि क म. d आपइ क म आण म. म[ना]या क, मनाआ म.

१०४. a दिद्ध क. b उरि दिद्धे चगे चीर क, उर म; दीधो म. c सुलतान क, सलताण म. d वधाविउ वीर क, वधाव्या वीर म.

१०५ a मीरा क म. पाठा० थी 'मानती' म. करि क. b दिइ क. c पिजमति क. करसइ क, करसि म. d मंनि म आणे म.

१०६. a पतीप क, प्रतपे म. b असुर क. कइवार क, जयकार म. c खुदा म. छि म. तूहनि म. d विमल विमल जयकार ॥ क म

१०७. a नर्मली क. एक ज चरण क म मा छे. १०९ क, १०८ म.

पुष्पिकाओ:—

इति श्रीविमलमंत्ररासे सप्तम षड संपूर्ण ॥ ७ ॥ क

इति विमल प्रबंधे नवरस नवषडे ५६ कोडि धनमार्गण भीमविरोध चंद्रावती राज्यस्थापना, देससाधन गजतुरी वर्णन, रोमनगरीये द्वादश सुरत्राणे जैत्याधिकारे सप्तम षड ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ म

खंड ८

[चउपई]

आविउ नर एक उद्भुत-वेख, आगलि मेहिलउ मोटउ लेख ।
पूछिउ कुण किहांथी पहूत, बोलइ राउ यंभणीआ दूत ॥ १ ॥

मुझ स्वामीनु आयस लही, आविउ पंथ घणे दिनि वही ।
करी मुद्रा पाछी करि धरी, वांचिउ लेख वछेदि करी ॥ २ ॥

अति प्रतापि पोढउ प्रचंड, परतइ जेहनी आण अखंड ।
राय पहीउ पस्यमुनु धणी, लिखइ लेख विमलेश्वर भणी ॥ ३ ॥

राउ-विरोध पट्टणपुरि हूरी, जई यइठउ चंद्रावइ पुरी ।
धरे पुत्र अह्म उलगि आज, रूडइ पाछउ आपु राज ॥ ४ ॥

विसमी छइ अह्मारी रीस, नहीतरि आवी नामुं सीस ।
वयरी-लेख वचनि विस्तरिउ, विमलि कान हेठि नवि धरिउ ॥५॥

षड आठमउ म. । अ क मां कई नथी, चुपै म.

१. a को ('एक'ने स्थाने) क. वेश अ, वेष क म. b मेहलइ क, मेहलिउ म. c तू कण किहा थकु क, पूछइ कुहु क्याहथु म. d ते बोलि बंभणीउ म.

२. a मझ स्वामीनू म. b पथि म. घणा अति वही क; घणा दिन म. c मुद्र क, मूद्रा म. कर क. d वछेदि क, विछेदि म

३. a परचड क म. b येहनी म. आंण म. c राउ क म. पडिउ क म. पश्चमनु क म. d लेप लपइ क, लिपिउ म.

४. a वरोध क, विरोध म. परहरी क म. b जै म. बयठउ क. विठउ म. चद्रावइ क म. भणी म. c धरु म. अह्म क, अम म. उलग क म. d रूडि क पाछुं क, एणी परि सरसि ताहारां काज म.

५. a अछइ क, अछि म. अम्हारी क. b नासु अ, नामू म. c वइरी वचन लेपे विस्तरिउ क, विरी म. d विमल्हि म. कांन म.

तिहांथी प्रगट पीआणुं करइ, सकल कटक साथि संचरइ ।
सिंधु सिरीसु आणइ सेस, राउ यंमणीआनु देस ॥ ६ ॥

वालिउ विमल रोसि पहूत, भणइ मित्र मोकलीइ दूत ।
नवि मानइ तु कट्टकी करइ, राजन राजनीति अणुसरइ ॥ ७ ॥

मंत्री राइ विमासइ दूत, मोकलीइ मोटउ अवधूत ।
मोकलीइ जे मुहउ वर्बर, अलवि ऊतर आपइ खर ॥ ८ ॥

घाटघाट उलंघी करी, पुहुतु जिहां छइ ठठापुरी ।
सूरु सूर जिसिउ मंडीउ, दूति दीठउ राउ पंडीउ ॥ ९ ॥

भणइ दूत भय नाणइ किमइ, राइ पंडीआथि कुहीइ नवि थीहइ ।
विमलमंत्र न आपइ तुरी, मावी ओलग सारु खरी ॥ १० ॥

दूतवचनि लागु साटिकु, रा-मस्तकि उठिउ चाटिकु ।
आ रे आ कुण ताहरु धणी, दूत भणी किम लाखुं हणी ॥ ११ ॥

६. a तिहांथु क तिहांथू म पीयाणउ म. b साथि क, साथिइं म. c सरीसु क म. d यंमणीयानु म ते देस क म

७. a वाची लेख अति रोसे पहूता क, वलिउ विमल अति रोशि पहूत म. b भणि म. मत्र (पाठा० थी 'मंत्री') म. c मानि म. कटक क, कटक म करु क म d अणसरु क, अणुसरु म.

८. a राय क. विमासी क विमांशी म b मोकलीउ क म. मोटु क. c बोलतु जे मुखि वर्बरु क, बोलतु ये मुहि वर्बर म. d अलविआलइ ऊतर घरु क; अलविइ उत्तर म.

९. उल्लघी म. b जिहा थ, यहां म. छि म. ठट्ठापुरी म. c सूरेऊ क, सूरजिशु म. पडीउ क. d दूतइ क दूतिइ म. रा म.

१०. a भणि म. नांणइ म. हीइ क, हीइ म. b राउ क. रा म. पंडीआ थकु नवि क, बमणीयाथु नवि म. c मत्रना क, मंत्रिना म. आपु क म. d उलग क म.

११. b राउ क, राजा म. मुस्तकि क, मनि म. ऊठिउ क म. d लाधु अ, नापू क, लांखू म.

ताहरु स्वामी विमलडउ राज, ते नीलजनइ नथी लाज ।
सुनु सनेपातक थयु, कइ वासु अगासइ रहिउ ॥ १२ ॥

अउठलाख थांभणीउ राज, पकलपगा माल दि आज ।
सात सहस्स जे लुंडीमुहा, ते ओलगू माहरइ हूआ ॥ १३ ॥

जलवट्ट थलवट्टना जे राज, आणइ अह्मारी मान[इ] आज ।
अऊठ कोडि साहण पल्हणाय, महारइ मन्त्रि विमल ते पाय ॥१४॥

सूतु किम्ह जगाडिउ सीह, तुह्म सामीनइ पाडूं दीह ।
जा रे जा पीनवे अवूझ, ठठनगरपति मागइ झूझ ॥ १५ ॥

अपमानिउ अवगणिउ बहुत, वेगि वलीउ भैरव भूत ।
विमल मंत्रनी सभा पहुत, अति दूहवाणउ बोलइ दूत ॥ १६ ॥

ते ताहरु वयरी वांकडउ, अति विसमु विसनु आंकडु ।
जे तुह्म बोल्या बोल अमंड, कहितां जीभ हुइ शतखंड ॥ १७ ॥

---

१२. a ताहारु स्वामी म. विमलड क म. b नीलजनि म. नथी क. c सतु म. शनपातक क, सन्यपात म. करि थयु म. d किइ म. अगासइ वासु क, वाशिइ अग्गासि म.

१३. a ऊठ क. बाभणीउ अ, बभणीउ क, वभणीउ म. b माल क. दिइ क; एकलगामा लेइ आज म. c सहस क म. लुडीमुहा अ. d उलगू क म. अम्हारइ क, अह्मारि म होआ क.

१४. a जलवट थलवटना क म ये म b आण क, आण म. अम्हारी म. मानइ क, मानि म. c ऊठि क. साहाण म. पल्हाणइ क, पलणाय म d माहरइ क, माहारि म. मनि क म विमले अ

१५ a किमइ क, किम्हि म. जगावइ क, जगाविउ म सिंह क. b स्वामीना क, सामीना म. पाइ अ, पाइआ क. नमीया म. ठट्ठ म नगरिपति क. मागि म.

१६. a उपमानिउ क, अपमानि म. b वेगिइ म. c मन्त्रिनी क म. सभा क. पहुत म. d दूहवाणु क. बोलि म.

१७. a ताहारु म वइरी क, विरी म. वाकडु क. वाकडु म. b वसनु क, तेहनु म. आकडु क. c तुज्झ क. d कहिता अ वीभ म.

दूत कहइ जय मीछिउं थरुं, चालिउं कटक सिंधु पाधरुं ।
मारगि छडे पीआणे थयु, दिवस केतले ठइ[इ] गयु ॥ १८ ॥
दमक्या ढोल डाक डहडही, राइ पंडीया-श्रवणि श्रुति पडी ।
आव्या को परदल दहवडी, जाइ रखे प न[ग]रनइ नडी ॥ १९ ॥
विमल घसेषि कराविउं जाण, सिंधु-महीपति मानु आण ।
नहीतरि नीसरि थई सजोड, तुम्ह मुष जोवानु छइ कोड ॥ २० ॥
उठिउ भड मोडी माथडी, किम जासि मम्र सिउं आथडी ।
मुछि मरोडो मछरि चडो, करि कीधी सींगणि रातडी ॥ २१ ॥
पाला झूझाला झूंथडा, पासइ पायक लीधा घणा ।
गज रथ तुरी पल्हाण्या तेउ, सामउ आविउ सेना लेउ ॥ २२ ॥
खडाव्यां रणक्षेत्र विशाल, रणकाहल वाजइ विकराल ।
बेउ सजोडा बे झूझार बे सूरा बे रण-सिणगार ॥ २३ ॥
विहु दले गज रथ घोडा थाट, विहु दले चडीआ बोलइ भाट ।
बे दलि तेजि तपंता जोइ, विहूनां बल नवि चूकइ कोइ ॥ २४ ॥

---

१८. a कहण क म. पठ म. b चालिउ अ. पाधरू अ. c मारिगि क. पीयाणे म. ययुं म. d ठठइ क, ठहिइ म. गयू क.

१९. a ढाक (पाठा०थी 'डाक') म. डडदही क, पाठा०थी 'दडदडी' म. b राउ पंडीआ थवणे क, वमण रा श्रवणे म. श्रति क. c आव्यां क. d 'ए' क म मां नथी. नगरनइ क, नगरनि म.

२०. a त्रिशेषि क, विशेष म. जांण म. b सिंधु अ. मांनु आंण म. c नहीतरि क नीसरि क म. d ताहरू म. मुष क म. जोवानु क, जोवान् म. 'मझ' ('छइ'ने बदले) क, 'छइ' म मां नथी.

२१. a ऊठिउ क म. जासि म. b मझ सिउ अ, मझसू म. c मछइ मोदी मच्छरी म. d सीगणि अ. सिंगिणि क, शींगणि म.

२२. a झूझारा क, झूजणा क, झूवणा म. b पासि क. c तुरीय क. पलाण्या तेय म. d साहासु क म. लेय म.

२३. a सूडाव्या अ. रणक्षेत्र क. b रणकाहूल क. वाजि म. c बेहू म. d शूरा म. रणि सिणगार क, रणिसिगार म.

२४. a विहू क. दल रथ गज घोडां घाट म. d विहू॰क. दलि म. वडिया (पाठा०थी 'चडिया') म. बोलि म c दल क म. बेय म. d बेहूनां क, बिहुना अ. चूकइ क म.

राग रामगिरी

आ तुं आ हुं आ प्रभ तोरु, आ ते मयगल आ ते दंत ।
बोल्या बोल जि तिइ बलवंता, ते तु सारा सुं भाखुं कंत ॥ २५ ॥
प्रीय तुं प्रेम म आणे मोह मंदिरि सिउं मन आणेसि मोह ।
जीवत मरण सदा हूं साथि, जई सुरलोकि चडावे सोह ॥ २६ ॥
नारि भणइ मझ नयणे नडीउ, तेह जि तुं थातु भयभीत ।
भारे भल्ल द्रसूका पडसि, कंता किम राखसि रण चिंति ॥२७॥ आ तुं०॥
माय भणइ भड तिइ तिम भडिवुं, जिम नवि लाजइ ताहरु तात ।
वीर-जिणण मझ बिरद भणावे, जिम वसुहा थाउं विख्यात ॥
॥ २८ ॥ आ तुं० ॥
कंत भणइ मझ हीअडिइ डरीउ, पाप पडंतु वारोवारि ।
रूठइ झूटइ रणि किम झूझशि, स्वामी ति दीहा संभारि ॥
॥ २९ ॥ आ तुं० ॥

राग रासगरी—म.

२५. क मां २६ - २५ क्रम छे. a तू क, तुं म. प्रभु क. मोरु म. . b अति— अ. c ज के क, जि तिइ म. d सु भाखु कंत अ; ते सारा संभारइ क ने सारा सभारे म.

२६. a तूं क म. आणसि क, आणिशि म. b मंदिर क म. सिउ अ, शू म. माणेसि अ, माडिसि क, आणिशि म. c मरत क म. हुइ म. साथिइं म. d जीई क, जै म परलोकि क. चडावसि क, चडाविशि म

२७. a भणि म. मुझ क. b तेह ज क म. तू म. भयभंत म. c भ्रसुका क, भ्रसूक्या म. पडशि म. d कंथा क. राखिसि क, राखि म. रणि म. चित क, चींत म. क म मा कडीओने अंते 'आ तु०' नथी.

२८. a भणइ व ति तिम भडवु क; भणि म; तइ म; भडिवु अ, भड्वू म. b माहरु कत (पाठा०थी 'ताहरु तात') म. c यम क म. लाजि म. d —जणणि क म. मुझ बरद क. धरावे म. d यम क, वसुधां म. थाउ क. विख्यात म.

२९. a केरि क म. 'हीअडिइ'ने स्थाने 'हाकिं' क, हाकं म. b पाए पडतु वेगि वीर अ, पाय पडतु धीरि क, पाए पडतु वारोवारि म. c जूठइ रणि क. झूझसि क म. d स्वामी म.

नयणबाण नवि खमतु निरता, कायर रणि छोडिला करवाल ।
नाठउ नाह नीसत घरि आवसि, कायर नाह हुसि मुझ आल ॥
॥ ३० ॥ आ तुं० ॥

सहीअ समाणी हासा हससि, होसि कायर नारि कलंक ।
सुहडां सरिसु तु रणि झूझतां, प्रीय पाछउ परठिसि पगलंक ॥
॥ ३१ ॥ आ तुं० ॥

के सुंदरि कहि सेजि सूभतां, कुसम-कुली दूहवातु देव ।
सहिज सुकमाल सबल सांभलीइ, समरंगणि किम सहिसिउ हेव ॥
॥ ३२ ॥ आ तुं० ॥

के कायर करसि कुंचकुंचाई, सुंदरि वेपि सुआवडि माहि ।
पुढी पासइ प्रीअछि धंधाविइ, नरवर नारि न जोइ जाई ॥
॥ ३३ ॥ आ तुं० ॥

के बाला बोलइ बलवंती, नयणे कंता नीद निवारि ।
हय हेपारव भला न होइ, वा[हा]ला के वइरी घरबारि ॥
॥ ३४ ॥ आ तुं० ॥

---

३०. a नयणवांण म निवि क. नरता क, निरतां म. b रण क. c नाहाठउ (पाठा०यी 'नाहठउ') म. नीसवि क नीसत म. घर क आविशि म. d नारि क म. होसि क, हशि म. मझ क म.

३१. a सही समांणी म. हससइ क. b होशि म. c सुहडा म. सिरसु क, सरिश्व म. झूझंता क, झूझत म. d प्रींय क. परिठसि क, परठशि म.

३२. a सुदरि क. के क. सेजी क, शेजि म. सूअता अ. पाठा० यी 'सूअंतो' म. b कली क. c सेन अमुक क, सेल अमूक म. सबलां म. सहियाइ म. d सहिसिउ किम क; सहश्य म. देय क म.

३३. a सिरि क; सरि कूच लहावी म. b सुदर क वेप क, वेपि म. सुयावडि मांहि म. c पोढी क, पासि म. प्रेचि क, प्रीछि म. बधावइ क, बधावि म. d नरवरना क म. नर क म. 'न' क म मां नथी. जोई क म. जाय क, जाइ म.

३४. a के क म. बोलि म. b कथा क. नीद्र क, निद म. नवारी क. c होई क म. d वाहाला म. कि म. वयरी क, विरी म. घरिबारि क.

कायर थाथरि थरिहरि धूजइ, देखइ अभय उघाडा खग्ग ।
अह्मे उलग छांडी छल जोई नासिउं, जल लहिसिउं घरमाग ॥
॥ ३५ ॥ आ तुं० ॥

आगलि अरिदल पूठि पृथ्वीपति, गयणे पेखइ सुर मन-खंति ।
के सूरा समरंगणि रोशि, मयगल गलइ देखत पयदंत ॥
॥ ३६ ॥ आ तुं० ॥

सुणि जिणसाली ढोल द्रमक्या, आलउ जे ढीलउ सनाह ।
सरवर कमलि जमलि जिम विहसि, परदल दीठइ मोरु नाह ॥
॥ ३७ ॥ [आ तुं० ॥]

रडइ पडइ के कायर काचा, पामर चामर पुंठि पुलंति ।
समरंगणि सूरा सिउं समवडि, धीरा धोरी धसी मिलंति ॥
॥ ३८ ॥ [आ तुं० ॥]

सूरा सूरपणइ समरंगिणि, मत्त मतंगज आवी उलि ।
दंतूसलइ मुसलि पग परठी, लीइ मोती कुंभस्थल रोल ॥
॥ ३९ ॥ आ तुं० ॥

---

३५. a धूलइ अ; कायर थाहर थरहर धूजइ क, कायर थाहरि थरहरे धूजइ म. b देखि क म. अटेप क, अलेपि म. ऊघाडा क, उघाडो म. c अम्हे क. छाडी अ. पाठा०थी 'यल' म. जोय क, जोइ म. d जासिउ क, जासिउं म. पाठा०थी उमेरे छे 'जु' म. लहिसउं क म. घरमग्ग क म.

३६. a अग्गलि क म. अरदल क. आरिदल अ. प्रथिवीपति म. b सुर पेषइ क, सुर पेक्खइ म. c रोसि क, रोशिइ म. 'गलि' क म मां नथी. देषइ क, देषते म. पयदंति क म.

३७. a जनशाली क दमक्या क, टमक्या म. b आलु क. आलउ म. ये म. ढीली क. सन्नाह म c सरोवरि क, सरवरि म. षमल मल यम क. यहिसइ क, विहसइ म. d परदलि म. दीठइं क, दीठइ म.

३८. a रडरडइ क रडि पडि म. 'के' ने स्थाने 'तिम' क. b झामर क म. पूठिय क, पूठि म. पलंति क, पूलनि म. सूराथु म. d धसी म.

३९. a सरासूरि क, सूरासूर म समरंगणि क. b मतगज क, मतंगज म. c दंतूसलि क, दतूसल म. मूसल क म. परि म. d लइ क, लिइं म. ते अ. कुंभस्थलि क. रोलि क म.

तुरीअ वि[रो]धि विमल यलि आयु, सिंधु-धणी जोउ मांडिउं झूझ ।
अति अभिमानी आण मनावइ, राउ पंडिउ अजाण अबूझ ॥
॥ ४० ॥ आ तुं० ॥

बे मदिमाता मुछि मरोडइ, घोडइ पाखरीआ पल्हाण ।
छत्रीसइ दंडायुध सरमइ, कर मइता काला केकाण॥४१ ॥आ तुं० ॥

काला टोप रंगाउलि काली, काला आंगानइ करवाल ।
काला के मयगल मतवाला, काला क्रोधि भरिया भूपाल ।
॥ ४२ ॥ आ तुं० ॥

अकल अबीह अतुल यल बोलइ, नवि डोलइ बे डुंगर धीर ।
भणति लावण्यसमइ जगि जोउ, झूझाला झूझइ बे मीर ॥
॥ ४३ ॥ आ तुं० ॥

अथ त्रोटक छंद

झूझाला झूझइ वीरवडा, रणि रोसि भरिया रसि भीमभडा ।
धुरि धइ धुरि धुंसट धाइ धसा, वयरी-दलइ याद[लि] वाउ इसा ॥४४॥

---

४०. a तुरीय क. विरोध क, विरोधि म. बल क. b सिंघ क म. सिउ क, जु म. माडि क, माडिउं अ. c अभिमांनी म. आंण म. न मानइ क, न मांनइ म. d रा म. अजांण म.

४१ a मदमाता क. मूछ क, मूछ म. मरोडइ क, मरड्डइ म. b घोडा क, घोडि म. पाषरीयां पलांण म. c छत्रीसि क. डडायुध क. शरमइ क म. d करि क म. केकाण क, कहिकाण म.

४२. a रगाउलि अ. b आगानइ क, अंगा नि म. c मयगल ये म मत्तवाला क. d क्रोध क. भरया क, भर्या म.

४३. a अवीह म. बोलंइ म. b बोल क, डोलि म. डगर अ, डुंगर क. c भणि म. लावण्यसमि म. d वीर क; बे झूझइ वीर म. चालि क, चाली म.

४४. b रोस क. भरया रसि सीम भडया क, भर्या भय (पाठा०थी रसि) भीम भडा म. c धुरिवई क, धरवै (पाठा०थी 'धुरि धई') म. धुसर क, धूसटि म. धसाया अ, धस्या क म. d वइरी दलि वादलि क, विरी दल वादलि म. वाउ क, वाय म. दसा अ, इस्या क, यशा म.

अणीआला काला कुंत कस्या, भड भाजइ वाजइ भीम जस्या ।
तीखाला काला घानि वली, पुंखाला काला पुंख मिली ॥ ४५ ॥

भर्ट नंखइ तीनां रणि भरिया, खेडा चुकी चालणी करिया ।
नवखंड अखंडित खंड करइ, भड खेलइ खांडइ खंति धरी ॥ ४६ ॥
॥

भल गोला गोफणि फार फिरइ, रणि सीगरि रूधा वीर तरइ ।
सरि वाजंति गुंजति मुरज समीं, खुलखुंटति लंटति जाइ नमी॥४७॥

ताजी तरूयारि ति तेज तपइ, देखी जन जाइ दूरि छपइ ।
छाना छल जोता चिति चडइ, चकचूर करइ ते चक्र वडइ ॥४८॥

मद-भंभल गज गजित भमइ, असवार असवार सिमरंगणि रमइ ।
दंतूसलि मुसलि मुरडि मुंडइ, भड कंप्या चंप्या पुहवि पडइ ॥४९॥

---

४५. a कुति क. यशा म. b वाजइ क, वाजि म. वाजइ क, भाजि म. तिशा म. c तीपाला क, वेपाला म. वांनि म. d पूषाला क, पंषाला म. 'काला' क म मां नथी. पूवि पंथि क, पूपइ पूप म. मली क.

४६. क मां आ गाथा ४८ मी छे. a ल्पइ क, लपि म. तीरतोणीर क, तीरतूणीर म. भरया क, भर्यो म. b पेडा क. चूकी क, चुहुकी म. चालणीअ क. करया क, करियां म. c नवि क. पंडिया क. पड ते क, अपड ति म. d भड पडया पडे पति करइ क; पेठे म; पाडइ अ, पांडे म; धरइ म.

४७. a धण क म. गोफिणि म फरइ क. b रणिसागर क, रणसागरि म. वीप्या क, रूप्या म. c सिरि म. वाजइ क, वाजि म गुरज ते गुरज समी क म. d पल क. पल (पाठा०थी 'खल') म. पूंटते क, खूटते म. छूंट ते क, म्ट (पाठा० थी ' छट) म.

४८. a 'ति' क मां नथी. हि' 'ति' ने स्थानें म. तेजि क म. b देखी दोपी जन धूरि छपइ क म c छाना छलटे क. जोतां क म. चित क, चित्रि म d पटि म.

४९. a भिमल क म. पाठा०थी 'गर्जत' म b असवार गवार मिसमरि भमइ क. असवार रणि समरि रमइ म. c गूणलि मुरड मरइ क. गूंसलि पेंडि मुरइ म. d चंप्या कप्या म. पुहवि क

तप तप तपंता प्रगट पटा, करि काती राती के विकटा ।
भड भडतां शलि लटकंति जटा, जड जाणे झूबइ वृक्ष वटा ॥५०॥

घण घुम्या घूम्या घाइ घडइ, भयभीता जीता रानि रडइ ।
गयणंगणि ऊडी अंगि अडइ. समली जमली जिम भूमि पडइ ॥५१॥

सुरकिनर कोड्डी लोकलखा, रण जोइ होइ पंचपखा ।
कटकटरे कट कविट-घटा, गढ फूटी लीधा लोकवटा ॥ ५२ ॥

हय वाल्या ढाल्या तीरि तपइ, रणझालइ फालइ टोप टपइ ।
वधि भखर तखर पनरि करइ, तिम सखर पखर लख वरइ ॥५३॥

भड भीषण रीपण रूपि थया, बालापण आपण आज भया ।
झण धूजी मूंजीमाहि मल्या, धरणीधर घोरी धरणि ढलिया ॥५४॥

हब हब [हब] हबकी हाक हबइ, झब झब झबकी बीज खडग खवइ ।
धब धब धब धींगट धीर धसइ, धमकमता कायर केलि खिसइ ॥५५॥

---

५०. a तपता क; तप तपता तपता म. पडथा (पाठा॰ श्री 'पटा') म. b कातीअ क. c भट भडतां क; लटा क; भडतां भडतां लटकंति ढल्या (पाठा श्री 'लटां') म. d जण क म. जांणइ म जांणे म. झूबि म.

५१. a घूम्या दुम्या क म. घाय क म. वडि म. b रमइ अ. c गयण ऊडंती क, गयणे उडंती म. अडि म. d जमली यम रजत पडइ क, जमली जम लीजतप (पाठा॰श्री 'जम जतर') पडइ म; जिम न्हुंमि पडइ अ.

५२. ५२ अने ५३ मी कडी क मां नथी. a कोटी म. c कट कट्टरि कट्ट विकट्ट कहा म. d कीधा लोटवटा म.

५३. a ढाल्या वीर वपइ म. b रणझालि फालि म. c पखर पक्खर पंच धिरइ म. d सक्खर पक्खर लक्ख म.

५४. म मां आ कडी ५६ पछी. a भिपण रिंपण क. रूप क, रूपि म. c मूंझी क. महिम क, मांहि म. मिल्या म. d धुरि म. ढल्या क म.

५५. a हव हव हव म. हबकीय क. हवई क. पडर म. b झबकीय क, झब म. बीज पगइ क, षडग विहइ म. c धव धवं धबकीआ धीर क, धव धब धव धींगड म. d केलि अ, षेटि म. धमइ क, खिसइ म.

रण रण रणकाहल रणकीअ[ल], डम डम डमरू डमकीअल ।
ढम ढम ढम ढोलंति ढमकीअल, चम चम चम चंचल चमकीअलि॥५६॥

भड ऊठिअं अंगोअंग सिउं, तड तड तड त्रुटइ कसण किसिउ ।
सिंहगलिउ जंबुक जीव जसिउ, विमल-गलिउ पंडीय राय तिसु ॥५७॥

तड तड तड तरडी द्रष्टि करी, महु मुरडी माणइ मुछ भरी ।
फड फड कड करडी तकली भड धायु पंडी पुंठि घली ॥५८॥

सिंहनाद करिउ गज घोट घरिउ, भड भाग्गा कोट कटक भरिउ ।
राउ पंडी खंडी खिच करिउ, गलि घली सींगणि धीर धरिउ ॥५९॥

कठ-पंजरि करि जंजीर भरिउ, घण गूहड करि जिम काग चडिउ ।
नव नव परि नरपति नाग नडिउ, घण मूल[हि मू]लहइ घाट घडिउ॥६०

---

५६ a रण रण काहुल क. रणकीअलि क, रणकीयलइ म. b डमरु क, डम डम डम म. डमकीयलि क. डमकीयलइ म. c ढम ढम ढोल क; ढोल म. ते क. 'ति' म मां नथी ढमकीयलिइ क. ढमकीयलइ म. d चम चम चचल चमकीयलइ क; चग चमकीयलइ म.

५७. a ऊठिउ क. उठी म अंगोअंग जसिउ क, अंगोअंगि इशु म. b त्रूटइ म कसिउ क, कसु म. c सीइ क म. आगलि क. अग्गलि म. जबूक क, जंबूक म. 'जीव' क मां नथी. यशु म. d विमल अगलि क, विमलग्गलि म. पडीउ राउ क म. तसिउ क, तिशु म

५८. a तड तड त्रडीअ क, तर तर तरडी म. द्रेठि क, दृष्टि म. b मुद क, मुहि म. मरडीय क. मरडी म. मांणइ म. मुछि क, मूछि म. c कड कड करडीय क, दतकुली क म. d धाउ म. पयडीय क. पुठि क, पुठ्ठि म.

५९. a सिहनाद क. गज घट क. रहिउ क, करिउ म. b भग्गा क म. कोट कटकि क, कोटि कटकि म. करिउ म. c पडीया क. पंडीय क, खिकिख (पाठा०मी 'खडी') म. खिच क. खिक्र (पाठा०मी 'खिच') म. d गलघल्ली क, गलीघल्ली म. सिगिणि क. धिरिउ क.

६०. a पजर म. जजीर क. जडिउ क म. b गूहड क म. जिम करी क; जम म. काग क म. c नरपति क. नाद क, नाद म. d गूलहि म. लहि क, मूलहि म.

रणघंघल मंगल तूर-रवा, नफेरी-मेरी-नाद नवा ।
जगि मंगल लक्ष्मी विमल वरइ, बंदीजण [जय]जयकार करइ ॥६१॥

ढाल चारणीआनु

सुहडा सुंदरि रण रलीआयत, वरवइ करवइ हाथि कीपण ।
पेखो सुहड पडिउ समरंगिणि, हुं न लजावी आवी पणि ॥ ६२ ॥

के वाला घोलइ वहिनडी, हणीउ मलउ अह्मारु कंत ।
जाउत जस जगि हुंते इसारथि, जउ भागउ आवत करणंत ॥६३॥

वेधिउ सीस यामु करि विलगु, अलगु घडथी लाइ आम ।
सामी कारणि सुहड सजोडा, पडता वइरी पाडइ ताम ॥ ६४ ॥

कायर कयधी कारण तकंता, पोलि उभू पूछति नीर ।
नीलज नीतक झूझणि चालिउ किम ति नाम रहाविउं वीर॥६५॥

---

६१. a मगल क. तूर म. b नफेरीय नाफरीअ नाद क; नफेरी म. c जगि विमल मनि जय लछि (लच्छि म) क म. d बदीजन म. जयजयकार क म. अ मा ६१ पछी बदीजण ज० ।

राग रामगिरी क, दूहा म.

६२. a सुहडा सुदर क. रणि रलीआ इति क, रणरल्या म b करवइ सहीअर साथि क, बलकर विघणि एण म. c समरंगणि क म d हू क म. नवि म. लजावी अ क.

६३. a वोलइ सुणि वहिनर क, बोलि सुणि वहिनी म. b रूमु मलि क, हणिउ भल्ड म. अम्हारु क c होअतइ सारथ जस जगि पोअत क; आअत म; हुव इसारत म. d जु भागु क म.

६४. a छेदिउ क, छेदिउ म. ताम थ वलगु क, वलगू म. b अलगू म घडथि म. थाइ क म. जीम म. c सामी म. सहड क, सुद म. d पडतां क म. विरी तामइ तीम म

६५. a कुवुधी क, कुबुद्धी म करणत क म कया क. b पोलिइ म. ऊभउ क, ऊभा म पूछत क, पूछइ म. c नीसति क, नीसत म. झझण क, झुझणि म. d ते क, तिह म नाम क म. रहाविउ क म.

सुरा पासइ मंदिरु मालीइ, भूतलि लीला जाइ कंत ।
जो तु मरतु काम कमातु, तु सुणि हुं झूझणि जंत ॥ ६६ ॥

वाला बालक दास दीकोला, ते उपरि घणि घालइ घाय ।
समरंगिणि सूरा सिउं भडतां, वादि के विरला करवाहि ॥ ६७ ॥

पांडीइ जीतु पुण्य तणइ बलि, मणिमाणिक सरसिउ भंडार ।
लिघा जे जे देस दूरंगम, लीघा गण तेजी तोखार ॥ ६८ ॥

जे सीमाडा-मारगि मोटा, दूद्धर देस तणा रखवाला
वेगि विमल तणा पय पूजइ, मेटि सहित नमीआ भूपाल ॥ ६९ ॥

विमल लेई दल पाछउ वलीउ, त्रिहु खंडे वरतावी आण ।
चंद्रावइ जव परिसरि पहुता, ढमक्या जांगी ढोल नीसाण ॥७०॥

तलीआ तोरण गूडी उडी, आवइ वधावा वरवाल ।
रोमनगरि जई आण मनावइ, वांमणीउ [बांधिउ] भूपाल ॥७१॥

---

६६ a शूरा म. पासि क म. मंदिर क म. माली क म. b भूतलि भली लजावी कत क, भूतलि भली सजाई कत म. c शु क. जउ म. तु मूअ घरि काम कमाउत क, तु मदिरि कांम कमाअत म. d तउ सुणि हू रणि झूझण जंति क. तु सुणि रणि हू झूझण जति म.

६७. आ कडी 'म' मा नथी. a दीकोलां म. b उपरि घण घालि घाउ म. c समरंगणि म. सिउ अ; सूराश्च म. भडता अ. d वादिइ म. कर वाहु म.

६८. a पाडीउ अ; पडीय जितु क, पडीउ जित्तउ म. तणि म. b मणिमाणिक म. सरिसु क, सरसु म. c लीघा क, लिद्धा म. ये ये म. देश क. d लिद्धा म.

६९. a मारगमोडा म b दुद्धर क म. देश क. रणिगार क, रयवाल म. c वेगि क, वेगिइ म. पाय क. d मेट म. नमीया म.

७०. b सवि हू क. c परिसरि यत्र क, परिसरि वय म. पहूता क, पुहता म. d जगी क, जागी अ. नीसांहण म.

७१. म मां ७१-७२ कडी ऊ० पा० छे. a तलीया म. तोरणि क, तोरण म. ऊडी क. रूडी म. b आवि म. वद्धावा म. c रोमिनगरि क. जं आंण म. मनावी क म. d वमणीउ क म. बंधिउ क.

मलिउं महाजन महिता मोटा, साम्हा सेवक हर्ष अपार ।
विमल जमलि को राउ न दीसइ, सात कोडि साहण परिवार ॥७२॥

वस्तु

विमल चलिउ विमल चलिउ, सेन घण लेउ ।
रोमनगरि पूर्वदशि, जेण बारइ सुरत्तान जित्ता ।
बांभणीउ राइ बांधीउ, दैस देसना दंड लीघा ।
दाण आण सवि आपणी, वरतावी संसारि ।
वेगि विमल वधावीउ, चंद्रावती मझ्यारि ॥ ७३ ॥

वाजइ तवलडी ए ढाल

कै गोरी के सामली, सोहावु रे, सोवन-पाटइ चइसारु कि, विमल वधावु रे।
माणिक मोती साथीआ, सोहावु रे, पहिरु सवि सिणगार कि, विमल० ॥ ७४ ॥
सोविन-थाल सोहामणा, सोहावु रे, चाउलि चुक पूरावु कि, विमल० ॥ ७५ ॥

---

७२. a मलिया क मिलिउ म. माहाजन क म मोटा महिता क. b सामहि सविकहि क म हरप क c विमलि क राय क d साहण पल्हाणइ क.

७३. a चलिउ म, चलिउ म. b सैन म. पाठा० थी 'लेइ' म. c रोमनगर पूरव क म. दसि क दिशइ म d जेणइ क, जेणि म. बार क म. सुलतान क, सुलतान म. जीता म. e बमणीउ क म. राउ क, रा म. बधीउ क म. f देश देशाना दंड क. लित्ता क म. g दांण आंण म. i वेगिइ म. j मझारि क म.

वाजि तिवलडी ए ढाल म.

७४, ७४ मी कडी क म मा बे कडी-रूपे छे. a गोरी का सामिलि म. सोहावउ रे क सोविन- क म -पाटि क -पाट म. बेसारु क विसारु म. 'कि' म मां नथी. वेगिइं विमल म. b माणिक म. साथीया सोहाय म. सिवि क सणिगार क, शणगार म. 'कि' म मां नथी.

७५ a सोहामणा क म. सोय क. चोखे चुक म. पूरावि के क.

गेलि गाइ गोरडी, सोहावु रे, बोलउ मंगल वाणि कि, [विमल०] ॥७६॥

चुपई

आवी विमल वईठउ पाटि, भीमराय तव भेटणि माटि ।
छत्र चमर मोकलीआं सार, त्रिहु खंडे तोरु व्यापार ॥ ७७ ॥
मिइ मोकलीआ मननइ भावि, सात छत्र सिरि चमर ढलावि ।
करइ वीनती बे कर जोडि, तुझ दूहवि अह्म लागइ खोडि ॥७८॥
अम्ह सिउं हंस रखे मनि धरु, तुह्म विवहार छइ आकरु ।
भीमि जे मोकल्या प्रधान, ते संतोखी आप्यां पान ॥ ७९ ॥
घणा दिवस दोहिलमि खलभलिआ, सींघ देसना महिता मल्या ।
मेह्वउ प्रभ पंडीउ राउ अखड, मुहि मागिउ वली [लेज्यो] दड ॥८०॥
छपन्न कोडि धन दड ज करी, त्रणि लाख वली ताजा तुरी ।
आण मनावी आलिउ देस, विमल वधाविउ नगर-नरेस ॥ ८१ ॥

---

७६. a गेलिं क. गाउ म. सोहा० क बोलइ क, बोलु म. वाणि के क, 'के' म मा नथी

चुपई क, चूपै म

७७. a वयठउ क b भीम क. भेटण क म. b मोकलीया क, मोकलीया म. c त्रिहू क. तोर क.

७८. a मइ क म. मोकलीआ म मननि म b सरि क शरि म. c करि म. d तम दूहविइ म मह्म क, अम म लागी म.

७९. a अम्ह्र म. b तुम्ह क, तुझ म. वव्यहार क, व्यवहार म. अछइ क, अछि म. c भीमिइं म. ये म. प्रधान म d सतोष्या म आप्या अ, आपी म. मान म.

८०. a दोहलिं क, दोहिलि म. पलभल्या क म. b सिंधु क म. देशना क. मिल्या म c मेह्‌ल क म प्रभु क म., राउ क म मा नथी. d मुष मागउ क. लेयो वर डड क लेयो दड म.

८१. a छपन क म. टका क. डंडि क. डडिइ म b त्रिणि म तेजी म. c आंण म. d –नरेश म

राय पंडीउ ठठइ जई रहिइ, अहिनसि आण विमलनी वहइ ।
रोमनगर नइ ठठा हुती, वरसि वरसि आवइ खजमती ॥ ८२ ॥
चडिउ रवाडी जोइ फरी, तिसी न देखइ चंद्रापुरी ।
विमल वाणि संमुखि उच्चरी, वासु नगर ववेकि करी ॥ ८३ ॥
गढपाया पाताले धरिया, कोठा लाख कोडि के करिया ।
कठोड कोठइ देवि अंबावि, आगलि नवी नीपाई वावि ॥ ८४ ॥
वावि वावि तलि कुआ च्यारइ, पाणी आणइ पाणीहारि ।
घरि घरि खारी मीठी कुई, जलव्हि-भरी वावि ते जूइ ॥ ८५ ॥
धवलगृह मांडी धोरणी, कोरी कारीगरि कोरणी ।
के मंदिरनी मोटी वात, भूमि भली सोहावी सात ॥ ८६ ॥
जोतां सुख तणां ते वार, आविउ चंद्रभवनि अवतार ।
राछपीछ रूडे घरि भरिया, जे हीणा ते अलगा करिया ॥ ८७ ॥
बाहु अन्न अवारी आज, जीणइ रूडउ भावइ राज ।
कण छाणां सोधइ ईंधणां, मांडयां जीव-जतन ते घणां ॥ ८८ ॥

---

८२ a राउ पंडीउ क, बमणीउ म. ठड्डइ जै म. रहइ क म. b अहनिशि आंण म. c नि म. ठठा थकी क, ठठ्ठा हती म d आवि म.

८३ b तसी क, लिशी म. पेषइ म. c विमम अ. वांणि म असो क. सइमुषि म. ऊचरी क, उच्चरी म. d वछेदि क, विवेकिइं म.

८४. a पातालि क, पातालिइ म. धरया क, ठव्या म. b कोठ क. लाप क म. करया क c कोठि कोठि म. d नीपाई क.

८५ a तलि क, तटि म. च्यार क, च्यारि म. b पांणी म. पांणी-हारि म. c मीठी पारी क. कइ क, कुइ म. d जलघरि क म जूइं क.

८६. a माडी अ. b कारी म. d सोहावइ क.

८७. a सुख तणा अ. जे क. b आवि म. इद्रभुवन क, इद्रभवन म. c सवि रूअडे क. घर क म. भरया क, भर्या म. d हीणां म. अलगां म. करया क, कर्या म.

८८. a अन क. b जींणइ म. रूडु क, रूडं म. भावि म. c सोधी क म. ईंधणा अ, इंधणां क म. d माडी क, माडया अ. जीव-म.-यतन क म. घणा अ क.

पाणी लोक भवेली गलइ, धरमि धन अधिकेरुं मिलइ ।
आण मज्झि को मारी नवि कहइ, सात विसन ते अलगां रहि ॥८९॥

घरि घरि लक्षणवंती नारि, सिणगारी अमरी-अवतारि ।
वेचइ वित्त चित्त परि-थला करइ पुण्य करणी के भला ॥ ९० ॥

चिहु पासे मंडावी पोली, चुहुटां चुरासीनी उलि ।
चुहुटा विण नवि थाइ पीठ, चुहुटा विण ते नगर म दीठ ॥९१॥

चुहटइ काव्य-कथा-रस कहइ, राना बेटा चुहटइ रहइ ।
चुहट[इ सोहइ दोसी हटी, चुहटइ घाटघडा घीहटी ॥ ९२ ॥

चुहटइ फल फोफल नइ स्याक, चुहटइ करइ कंदोइ पाक ।
फडीआ सूखडीआनां हाट, चुहटइ दही वेचाइ माट ॥ ९३ ॥

चुहटइ धुरि सोनी सोनार, मल्या मपारा नइ मणीआर ।
चुहटइ गांधी गुंगा करइ, फोफलीआ ते फोफल भरइ ॥ ९४ ॥

चुहटइ सांथ सयल मंडीइ, चुहटइ जोतां नवि छांडीइ ।
नाणावट्टी कपासी तणां, हाट सुगंधी पटूआ घणां ॥ ९५ ॥

---

८९. a पांणी म. जि वेली म. b धरमिइं म. अधिकेरु म. c माहि क, मद्धि म. न म. d व्यसन क म. रहइ, क म.

९०. b शणगारी अमरि अवतारी म. c पर म. थली म. d पुण्य परिघल केतला क; वे 'के'ने स्थाने म. भली म.

९१. a चिहु क. पाशे मंडावि पोलि म. b चहुटां क, चुहटां म. c चुहुटां क. चुहटा म. d चुहटा क म. म रीठ अ.

९२. a चहुटइ क. b चुहुटइ राना बेटा क; चुहटि म. c चुहुटइ क, चुहटइ म सोही दोशी म. हाटी अ d चुहुटइ क, घीवटी म.

९३. a चुहुटइ क. नि शाक म. b चुहुटइ क, चुहइटइ अ. करइं क. कंदोई क म. c फडीया म. सूपडीआना अ, सूपडीयानां म. d चहुटइ क. दही म. मांट म.

९४. a चुहुटइ क b मपारा वली क; मिल्या मपारा नि मणीयार म. b चुहुटइ क. गाधी अ. गूंगां क म. d फोफलीया अ.

९५. a चुहुटइ क. सयल साय क; साथ अ. मंडाइ क म. b चहुड क, चुहदं म. जोता अ. छाडीइ अ छडीइ क, छंडाइ म c नाणावटी क म. कपासी म. तणा अ, घणां म. d पट्टया म. तणां म. घणा अ.

सूत्र सांध ते सोहाम्मणी, चुहटइ सहूइं धाइ धन भणी ।
आवइ परदेसी वछीआत, चुहटउं देखि थाइ रलीआति ॥ ९६ ॥

वस्तु वीकाइ चुहटइ चडी, विसा विसाही लिइ तडफडी ।
महिला मांडवीआनां हाम, चुहटा विण नवि सीझइ काम ॥ ९७ ॥

जडीआ जडइ जडित्र आभर्ण, चुह[ट]इ वर्त्तइ सघला वर्ण ।
चु[ह]टइ वस्तु चडइ नवलखी, करइ परीख्या जे पारखी ॥ ९८ ॥

चुहटइ मोटी पाणी पर्व, चुहटइ गाइ गण गंधर्व ।
चुहटइ बइठा बोलइ भाट, चुहटइ धर्म्म तणा आघाट ॥ ९९ ॥

चुपट चुहटइं जो व्रवहरी, चुहटइ वस्तु अमूलिक भरी ।
तीरगरा चीतारा चाहि, घांची मोची चुहटा-माहि ॥ १०० ॥

खासड-खेडा मोत्रड घडइ, चुहटइ वस्तु जोई ते चडइ ।
दयावंतनी द्रुष्टइ पडिया, जीव मुंकाइ चुहटइ चडिया ॥ १०१ ॥

---

९६. a साथ अ क. सोहामणी क म. b चुहुटइ क. सहू क म. c आवि म. वछीयात म. d चुहुटा क, चुहटइं म. जोतां क. रलीयात म.

९७. a वस्त म. वेचाइ क, विकाइ म. चुहुटइ क. b विसाई क. लि दडवडी म. c माडवीआना अ, माडवीआनां क, माडवीयानां म. हाट म. d चहुटा क. सोही वाट ('सीझइ काम'ने बदले) म.

९८. a जडीया जडित घडइ म; जडित क. b चुहुटइ क, चुहटइ म. वरतइ क म. c चुहुटइ क. चुहटि म. चडइ वस्तु क; चडि म. नव-लखी म d परीक्षा क म. ये म.

९९. a चुहुटइ क. पांणी म. b चुहुटइ क. c चुहुटइ क. वयठा क, बिठा म. बोली म. d चुहुटइ क. चउहटि म. धर्म तणा क म.

१०० a चउपट म. चुहुटइ क चहुटि म. ध्रुइ क. b चुहुटइ, क चुहटि म. अमूलिक वस्तु म. धरी क. c तीरगरी क; चीतारा तीरगरा म. माहि अ. d घाची अ. चुहुटा क. चउटा म. मांहि म.

१०१. a पेडां क म. b चुहुटइ क, चुहुटी म. वस्त म. जोई क. जोईइ म. ती क वडइ क, जडइ म. c द्रष्टि क, दष्टिइ म पडया म. d यीव म. मूकाइ क, मूकाइ म. चुहुटइ क ये चहुटि म. चडया क म.

कडबी कंसारा कुंभार, गाछा छीपा सुई लोहार ।
चुहटइ चित वसइ चिहुगमा, माली तंबोली तेरमा ॥ १०२ ॥

चुहटइ जोउ मंडाइ जात्र, चुह[ट]इ नाचइ नवलां पात्र ।
चुहटइ मंडावी मोटी हारि, करियां त्रिकसां तोरण वारि ॥ १०३ ॥

संतापिउ घरथु नीसरइ, चुहटउं जोतां दुख वीसरइ ।
जेहनइ चुह[ट]इ दूसइ भरे करइ लीला ते वइठा घरे ॥ १०४ ॥

नगर तणां कीधां मंडाण, जे जोइ परदेसी जाण ।
वैद्य-वइद नइ विवसाईआ, ठामि ठामिथा ते आईआ ॥ १०५ ॥

ईटवटी नइ आटावटी, वसी वासि नवरंगी नटी ।
छाया ठाम भला भालवी, आवी वेगि वस्या मालवी ॥ १०६ ॥

वाजत्री ताई डबगरी, नगरी घणं अढारइ भरी ।
सीमाडा ते राखइ सीम, कोटवाल ते कीधा भीम ॥ १०७ ॥

---

१०२. a कणबी क म कूभार म. b घ्राची मोची मोची सई लोहार क; गांछा म; सै म. c चुहुटइ ,क, चहुटइ म. चित क, चीत म. चिहुगमा म. तेरमा म.

१०३. a चुहुटइ क. ज क मडाइ जोणा म. b चुहुटइ क, चुहटि म. नाचि म. नवला अ क. c चुहटानी क म. 'मोटी' क म मा नथी. वारि d. तोरण अ, तलीआं कलश त्रोरण वारि क; कर्यां कलसां तोरण म.

१०४. a घरियउ म. b चुहुटां क. जोता अ. दूख क म c जेहनि क, येहनि म चुहुटउं क. चुहट म. दूझि म. d वरिं क, करि म. लील क. बिठा म.

१०५. a तणु क तणा अ. कीधु क, कीधा अ b जाग म. c विद नइ क, विद नि म. व्यवसाईआ क, व्यवसाईया म. d ठाम ठामथी क, ठामि ठामिथी म. आवीआ क, आवीया म.

१०६. a इटवटी नि म b वसि म. वासि क. इटी इटी क. c ठाऊका क, ठाऊया म. भवी क. d वस्या म. सालवी क म.

१०७. a वाजित्री क म. b अढारे क म. c–d क म मां १०९ मी कडी पछी छे. d कीधु म. भीम क.

जे जे जोसी पंडित हता वसीआ न[ा]गरमती नाअता ।
सइ अढार वर मंदिर किद्ध, पोरूआड वास्या प्रसिद्ध ॥ १०८ ॥
ज्ञाति चुरासी जे निर्म्मली, विमल वसेखि वासी वली ।
वसइ विप्र वद्या अभ्यसइ, खित्री खांडे मन उल्हसिइ ॥ १०९ ॥
तूठी जस अंबाई मात, विमल प्र[ा]साद कराव्या सात ।
दंड कलस धज सिरि लहिलहइ पोढी जिनप्रतिमा गहिगहइ ॥११०॥
तपसी-मढ नवली नेसाल, राजगृह पासइ पोसाल ।
खटदर्शन कीधां विश्राम, ठाम अनोपम दीधां ताम ॥ १११ ॥
वाडी नव नंदन अवतरियां, दह दसि सभर सरोवर भरियां ।
पाषाणे दृढ बांधी पालि, खाई धाई गई पातालि ॥ ११२ ॥
कइ लंका कइ अमरावती, चाहु नगरी चंद्रावती ।
इंद्र सिरीखु विमल नरिंद, करइ राज त्रिभोवन आणंद ॥ ११३ ॥

---

१०८. a जोशी म. वता म b वसीया क म. नागमती क म. नायता क म c सइ क, सिइ म किध अ d पोरौआड क, पोरुयाड म. वास्या म. परसिद्ध क म.

१०९. a न्याति चुराशी ये म. नर्मली क. निर्मली म. b विशेषि क, विशेषिइ म. वाशी म c वसि क म. विद्या क म. d क्षत्री म. षाडे अ, षाडे क. म. उल्हसि क.

११०. a तुठी म अबाइ म b प्रसाद म. c डड क. कलश म धज सरि लहइलहइ क, सिरि धज लहलहइ म d पोढी प्रतिमा जि गहि-गहइ क; गहगहइ म

१११. a मठ म. पोशाल क b राजग्रह अ पासिइ म. पोशाल क. c षट्दर्शन क, षट दरशन म. कीधा क. विश्रांम म. d ठाम म दीधा अ. ताम म.

११२. a वन नंदन क म. अवतरिया अ, अवतरया क, अवतर्यां म. b दिशि म सजल क म. भरिया अ, भरया क. भर्यां म. c पाषाण क. द्रढि क. बांधी अ, बधी क म. d पाड पाग्री म

११३. a कि म. b चाउ क c इद म. सरीषु क, सरीखु म. d त्रिभोवनि क म.

मागण जण-वंछित दातार, करइ निरंतर पर-उपगार ।
त्रिभोवनि तेज तपंतु धीर, परनारीनु प्रगटिउ वीर ॥ ११४ ॥

वस्तु

विमलइ वासी विमलइ वासी नगर सुविशाल ।
चंद्रावइ पोसाल वर जेणि धर्म्म-थानक करावीअ ।
सात प्रासाद सोहामणा, जेणि बिंब पोढां भरावीअ ।
चतुर्विध श्रीसंघ मेल करि, श्रीसेत्रुंजि गिरनारि ।
जात्र करी घरि आवीआ, वधावइ नरनारि ॥ ११५ ॥

चुपई

पट्टणि सहिगुरु करी प्रवेश, अर्बद तीरथनु उपदेस ।
अंबाई-आराधन कहिउं, तु मनवंछित विमलि लहिउं ॥ ११६ ॥
धर्मघोषसूरीसर सोइ, चंद्रावती पधारिया ओइ ।
[उच्छव विमल करइ उल्हासि, चंद्रावइ राख्या चुमासि ॥११७॥]

---

११४. a जिन क b–ऊपगार म c तेजि क. वीर म.

११५. a विमल क म. वसिउं क, वाशी म. क मा बीजी वार नथी विमल, वाशी म. c पोशाल क. d जिणि क. धर्म म. थानिक क. करावीय म. f जैन क. पोढा क. भरावीय म. g चतुर्वधि क. 'श्री' क मां नथी. मिल क. करी क; पाठ०थी उमेरे छे 'करी' म. h शेत्रुंजि क, शेत्रुंज म. गरिनारि क, गिरिनारि म. i यात्रा म. आवीउ क म. j वधावइ क, वधावि म. वरनारि क म.

चुपै म.

११६. a सहिगुर क. b अर्बुद क म. c कहिउ अ, करिउ म. d विमलिइ म

११७. a सूरीश्वर क म जोइ क. b पधारया क. पधार्या म. जोय क. a b पछी क म मां अडधी कडी छे जे अ मां लखवी रही गयेली जणाय छे; आ [ ] कौंसमा तेथी उमेरी लीधी छे :
उछव विमल करइ उल्हासि, चद्रावइ राख्या चुमासी ॥ ११५ क
a उच्छव विमलि करिउ उल्हाशि म. b चुमाशि ॥ ११८ म

खंडि खंडि छइ मति निर्म्मली, पढतां सुणतां संपति घली ।
मुनि लावण्यसमयची वाणि, पतलइ अष्टम खंड वखाणि ॥ ११८ ॥

इति पंडित श्रीलावण्यसमयकृते श्रीविमलमंत्रमनोहर प्रगट प्रबंधे नवरस नवखंडे पत्यामाधिपति पंडीपृथ्वीपति जाबाधिकारे युद्धवर्णन पाटस्थापना भीम भूपतिप्रेक्षित छत्रचामरनगरवर्णन धर्म्मस्थापन गुरुप्रवेश महोछवाधिकारे अष्टम खंड समाप्तः ॥

११८. a थ मां आ चरण लखवु रही गयुं छे; षंडि षंडि छइ मति नर्मली क; पड [पछी कोरी छे] म. d एतलि म. अठम क, अठ्ठम म. वषांणि म. ११७ ख, ११६ क, ११९ म.

पुष्पिकाओ —

इति श्री विमलमत्र रासे अठम षड सपूर्ण ॥ श्री ॥ छ ॥ क

इति श्री विमलप्रबधे नव रस नव षडे पत्रमाधिपति पंडीपृथ्वीपति जित्रा-धिकारे, युद्धवर्णन, पाटस्थापना, भीमप्रेषित छत्र चामर नगर वर्णन धर्मस्थापन, गुरुप्रवेश, महोत्सवाधिकारे अष्टमं षड संपूर्ण ॥ म

खंड ९

चुपई

सं[घ]पति-पदवी पामी वली, विमल मंत्रि पूगी मनि रुली ।
नशि पुढि[उ]जिनवरनइ ध्यानि, सपन-मझि गज साहि कानि ॥१॥

जागिउ तव गुरु आगलि गयु, सपन कही रलीआयति थयु ।
सद्दिगुरु सपन विचारिउ तसि, कइ को करमी वेट्ठ हुसि ॥ २ ॥

धर्म्मघोष बोलइ गणधार, कइ को तीरथनु ऊद्धार।
कइ को करसि मोटउं काम, जीणि तुह्म रहिसि अविचल नाम ॥३॥

आविउ संघ सकल समुदाय, धर्म्मकथा कहिसि गुरुराय ।
जे जिनधर्म्मी जगति दाखीइ, चिहु भेदि जिनवर भाखीइ ॥ ४ ॥

अ मां अने क मा शरूआत नथी पछ नवमउ म.
क मा नथी; चुपै म.

१. a संघपति क म. b मन म. रूली क, रली म c निसि क, निशि म पुढिउ क म. जनवर– क. –नि म. ध्यांनि म. d सुपन– क म मद्धि म साहिउ क म. कांनि म.

२. a तु म. b सुपन म. रुलीआयत क, रलियायति म. c सपन म. विचारिउ क म. तसिइ क, तिसइ म. d कि म. वेट्ठ करमी क; बेटउ म हुसिइ क, हशि म.

३. म मां लीटीओ ऊ० पा०. a धर्म्मगोष अ. यारं म b कइ अ, कि म. तीरथ लि म. उधार क उद्धार म. c कि म. करसिउ क, करशु म. मोट्ठ क, मोट्ठ म. यांम क म. d जेणइ क, जिणि म. तुम्ह क, तुम म रहशि म. नांम म.

४. a आवि म. b धर्मकथा क म. कहि सहि गुरराय म; c जनधर्म क, जिनधर्म म. जगत्रि अ, जगत्र क म. दाषीउ क म. d चिहू क. भेदे क म. जिनवरि म. भाषीउ क म.

वीस सहस्स नवसइ त्रिणि मास, पण दिण पुहुर घडी एक आस।
दो पल उर अक्षर अठताल, वीर पछी होसि विसराल ॥ ५ ॥

वरस छेह दुप्पसउ हुसि, धर्म्म शिरीसु ते जाइसि ।
मानव-बीज रहि तेणइ खले, गिरि वैताढ्य बहुत्तिरि बले ॥ ६ ॥

कहीइ सकल धर्म्म तेहनइ, गुणि एकवीस अंगि जेहनइ ।
काचु कुंभ अमी आवासि, सुंदर साम्हुउ हुइ विणास ॥ ७ ॥

श्रावक-गुण एकवीसइ वडा, नहीं क्षुद्र इंद्रीपरिवडा ।
प्रकृतिसोम लोकप्रिय सदा, श्रावक क्रूर न बोलइ कदा ॥ ८ ॥

पापभीरू जे मूरख नहीं, दाखिन लाज दयालू सही ।
मध्यभावि सविकहि सिउं रहइ, सोमदृष्टि गुणरागइ वहि ॥ ९ ॥

धर्म्मकथक निर्मल कुल होइ, दीरघदरसी श्रावक जोइ ।
संगति वडां विनय आदरइ, गुण कीधउ ते हीयड[इ] धरइ ॥१०॥

---

५. a सहिसं क, सहस म. त्रणसि नव क, नवसिइं म. b पुहुर क. इक क c पुल क. 'उर' क मां नथी. अदक्षर अठ्ठताल क. d होशि म. विशराल क.

६. a वीस सहिस दुप्पसहु क; छेहि दुप्पसहु म. हशि म. b धर्म क म. सरीसु क. सरीरइ म. जायसि क; जासि पछइ म. c मांनव म. रहइ क. तेणे क, तिणे म. भले क म. d वैताढ्य बहुत्तरि क म. बिले म.

७ a धर्म क म. तेहनइ क. b गुण क म. इकवीस. म. जेहनइं क, मेहनइ म. c काचुं अ, काचइ क, काचि म. कुंभि क म. अमीका क, अमिया म. वास क म. d सुंदरि म. साहमुं क, साहस म. हूइ म

८ a एकवीसि क, एकवीसं म. वडां म. b –पडवडां क, –परवडां म. c लोकप्रिय अ. d कूड म. बोलिउ क, बोलि म.

९. a पापभीर क, पापभीरु म. मूरिप क. नहीं म. b लज क. c मध्यभवि क, मध्यभाव म. किहिंइं म. रहिउ क म. d सोमदृष्टि म. गुणरागी क म. कहिउ क म.

१०. a धर्मकथक क, धर्मकथा (पाठा० धर्मकर्म) म. विमल (पाठा० श्री 'निर्मल') म. b होई क. c वडी म. d कीधा क, कीधु म. हैयडइ क, हीअडि म.

लब्धलक्ष परहित जे दया, श्रावक-गुण एकवीसइ कहिया ।
न्याय थिकु घरि लखिमी मिली, वर आचार वखाणइ वली ॥११॥
सरखे कुलि वरतइ वीवाह, पणि ते गोत्र अनेरा-माहि ।
मात-तात-गुरुभक्ति अपार, देसाचार करइ व्यवहार ॥ १२ ॥
अवगुण कहिना नवि उचरइ, सदाचारनी संगति करइ ।
नही संकट नइ नीच नही जिहां, थोडे वरसे लखमी तिहां ॥१३॥
अति छानु परगट नवि घसइ, टालइ पाप पुंण्य अभ्यसइ ।
लाभ मानि लागइ घर वरइ, सिरि अजरइ भोजिन परिहरइ ॥१४॥
जाणइ अंग तणां बल भलां, जीपइ वइरी जे महिला ।
दान दया दम आणइ देस, वित्तमानि पहिरइ पणि वेस ॥ १५ ॥
पहिलुं इसी परीक्षा करी, धर्म्मयोग्य श्रावक ते धुरी ।
समकित आदि देई व्रत बार, पच अणुव्रत ठवीइ भार ॥१६॥
धरीइ ध्यान देव अरिहंत, भगति भली सहिगुरु नइ संत ।
जिन-भाषित ते साचउ धर्म्म, चिहुंप थोभे समकित-मर्म्म ॥१७॥

---

११. a सवघलक्ष क. ये म. b एकवीसि क. कह्या क म. c थिकु क म. परि म. लषिमी क. लिषिमी म. मली क.

१२. a सरपे म. वाघइ म. b पुण म.

१३. a कहिनु क नव उचरइ म. c संकट (पाठा०थी 'संगति') म. नई क, पाठा०थी 'नइ' नथी म. पाठा०थी 'नीचनी' म. नहीं क, पाठा०थी 'न' नथी म. जिहा अ. d थोडे मारे मंदिर तिहा क म; तिहा अ.

१४. a छानु नवि परगट क म. c मानि म. वहइ क. d भोजन क म. परहरइ म.

१५. a जांणी क. तणा अ. भला अ. b वयरी क. जे ('मन'ने स्थाने) क म. c दमि क. दोप अ, देप क म. d वित्तमान क, वित्त-मांनि म. आंणइ म. ते पहिरइ म. 'पणि' म मां नथी.

१६. a पहिलू क पहिलउ म इसी म. b धर्म- क.- योग म. ते श्रावक क म. c देइ म. d पच म. अनुमत क.

१७. a ध्यानि म. अरिहत देव म. b गुरुनि क, गुरुनी म. सेव म. c जे जिन-भाषित क, -भाषीत म. साचु क धर्म क म. d चिहु क म. स[म]कित क, साचउ (पाठा०थी 'समकित') म. मर्म क म.

पहिलइ प्राणी-हिंसा टली, बीजइ अली म बोलु वली ।
त्रीजइ व्रति चोरी स म करु, चुथइ परनारी परिहरु ॥ १८ ॥

व्रत पांचमइ लोभ स म चालि छठइ दिसिनु निश्चउ पालि ।
व्रत सातमइ भोग-उवभोग, अनरथ-दंड आठमइ जोग ॥ १९ ॥

नवमइ सामाइक आखेप, दशमइ दिशिनु सदा संखेप ।
पोसह पुण्य व्रत अग्यारमइ, अतिथि दान दिउ व्रत बारमइ ॥२०॥

आपणि उत्तम दिउ व्यापरइ, खावइ पीवइ विगति न करइ ।
विण अंतरि जु उत्तम थाइ, नर बीजा किम नीच कहाइ ॥ २१ ॥

श्रावक-नइ घरि हुइ आचार, जाणइ भक्ष अभक्ष विचार ।
सद्गुरु वयण वखाणइ इसिउ, जाणइ नही तु पालइ किसुं ॥२२॥

कंद-जाति जे सघली भणी, ए बत्रीस कही छइ गणी ।
सुरण वज्रकंद तेवली, आदु नीली हलद्र ते वली ॥ २३ ॥

---

१८. a पहिलिइ व्रति हंसा टालीइ क; हिसा अ. b अलीअ क म नवि ('म'ने बदले) क. बोलीइ क, बोलउ म. 'वली' क मा नथी. c म म क, म न (पाठा०थी''म म') म d चउथइ म. परहरउ म.

१९. a पचमइ म. धण ('सम'ने बदले) क म. टाली क म. b छट्ठइ म दिसिनउ क, दिशिनु म. निश्चय म c–उपभोग क म d इह म. योग क म.

२०. a नवमइ क. सामायक क आक्षेप क म b दसमइ क दसनु क. दिसिनु म सक्षेप क म c पण म. वृत्त अ d दान क म. 'व्रत' म मा नथी

२१. a उत्तिम क थइ क आदरइ क. वावरइ म b नवि करिइ क. c जु उत्तम क विण पालिइ ते म. d नर बीजा म

२२. a श्रावक घरि म b जाणइ म. c इसिउ अ, असिउ क, इसुं म d जाणइ म कसिउ क, किश्य म

२३. a ते क म b ते क बत्रीसइ क अणधाइ, ('कही छइ'ने बदले) म. सि ('छइ'ने स्थाने) क. c न ('ते'ने स्थाने) क. d आदू क, आदू म नील क म. हरिद्रा वली क, हलद्रा भणी म.

थेगत मूला गज्जर भला, आलूं पीडालूं नइ वल्हा ।
मोथ कचूर नीला खरसूआ, भूमिरुहा खिलुडा जूआ ॥२४॥
वंश करेलां ताजी कूपली, अमृतवेली कुंली आंबली ।
प्रथम वाथलु कापिड जेह, स्याकभेद पलक स्युणेह ॥ २५ ॥
सूरण वल्ल वसेस्वि वारि, गिरिकन्नी थोहरि कुंआरि ।
गलो शितावरि लसण विरालि, लूणढ लूणा तरुनी छालि ॥२६॥
लूण योलिइं साजी थाइ, कमल-कंद ते लोढ कहाइ ।
लुणाछालि भमरतरु नाम, विण प्रीछइ किम लहीइ ठाम ॥ २७ ॥
संधेसरा ते गूढी अंगि, जे भांजिउं भाजइ सम-भंगि ।
डालवेलि छेदी पालवइ, जीव अनंता जाणि जालवइ ॥ २८ ॥
पणी पगि वोल्यां अहिनाण, पुहुतु देश देसाउरि जाण ।
जिहां जिहां विणसइ देखइ सही, इसी जीव अनंतकाय कही ॥२९॥

---

२४. a येग न गजर भूला भला क. येग गज्जर नि मूला भेला म. b पीड पीडालू वल्हा क, पीडालू नहुला म c मोथ कचूरा नइ पडसूआ क, कचूर नील षडसूआ म. d भूमिरुहा क म. पिल्लोडां क, पिल्लोहडां म जूआ क म.

' २५. a वस करल क म. कूपली क म. ' b कूली क, कूली म. आंबिली क, आंबिली म. c पीपलु क, वधेलु म. कापित्त म. जेभ क, येह म. d -भद क, शाकभेद म. पलक क, सल्क म. सुणेइ क म.

२६. a सूरण कंद म. निशेपि क, विशेपिइ म. b गिरिकभी अ क थोहर म. कूआरि म. c सताउरि क शतावरि म. d लूण लढ लूणा क, लूण लोढ लूणा म. तरछालि क, तरछालि म.

२७ a लूण क, लूणइ म. वालि अ. वाली क. b कहाई क. c लूणछालि क, लूणाछालि म. नाम म. d प्रीछिइ क, प्रीछि म ठाम म.

२८. a सधि सिरा क म सिरा म. b भाजिउ क c डालिवेलि क म. छगोय ('पालवइ' ने स्थाने) क. d अनत म. जाणु क. जाणि म. वेस .. ('जालवइ' ने बदले) क.

२९. a पाणि परि अ, एणि परि म. बोल्या अ क. अहिनाण म. b पुहवइ म. देशि क, देस म. जांण म. c वसइ क. जे देपइ क, देपइ म 'सही' क म मां नथी. d इसी म. अनता क, अनते म काया मही क म.

ते नवि खाइ जे हुइ दक्ष, प्रीछइ जे बावीस अभक्ष ।
वट पीपल उंबर नइ प्लक्ष, काकोदुंबर पंचम वृक्ष ॥ ३० ॥

मधु माखण नइ आमिष सह, रयणी-भोजिन ते परिहरु ।
सवि मट्टी अत्थाण अनंत, बहु बीजां फल तुछह अंत ॥ ३१ ॥

घोलवडां वयंगण जाणि, अणजाण्यां फल फूल म आणि ।
हीम करहा विष सवि रस चल्या, ए अभख्य बावीसइ मिल्या ॥३२॥

द्रव्य खेत्र काले नवनवां, ते अभक्ष जाणे तेहवां ।
घर्ण वसेखि वली टालीइ, त्रिणि वार पाणी गालीइ ॥ ३३ ॥

लांबां गलणां अंगुल त्रीस, अति सघडां पुहुलप्पणि वीस ।
खारां मीठां नवि मेलीइ, संखारा थानक मेल्हीइ ॥ ३४ ॥

ईंधणि कणि रंधणि पाणीइ, जीव तणी जयणा आणीइ ।
खंडणि पीसणि लीपणि लिखे, जाणी जीव वधाइ रखे ॥ ३५ ॥

---

३०. a जु म. b प्रीसइ क ये म e ऊंबर पीपल पलक्ष क, पींपल ऊंबर नि म. d कोकोदबर क.

३१. a मापण आमिय नइ क; मांपण म. रारहउ म. b परहरु म, c अत्थाणु क. d बिहू क, बहु म. बीजा अ. तुच्छ म. अनत क म.

३२. a वायगणि क, नि वयगण म. जांणि म. b अणजाण्या अ. c चल्यां म. अभक्ष क म. बावीसि क. मिल्यां म.

३३. a ब्येत्र क, क्षेत्र म. काळे म. नवां म. b जे क. अभक्ष क म. जांणइ म. नवनवा क, तेहवा अ. c वशेपि क, विशेप म. d त्रणि क. वारि क, पांणी म.

३४. a लाबू क, लावा अ. गलण् क, गलणा अ. b सुघड क. सघडां म. पुहूलिप्पणि क. c षारा अ, षारां क म. मीठा अ. d थानिक क, थानकि म. मेळीइ म.

३५. a ईंधणि अ, ईंधण क, इंधणि म. कण क. रांधणि म. पीस-णीइं क, पांणीइ म. b दया आणीइ क. c लीपणि म. रषे क. d जाणइ क, जांणी म. विरोधइं म.

वासी पोली ओदन दही, सोल पुहुर उपहरुं नही ।
घरजे वासी वली कठुल, म जिमे जे मलधारी गुल ॥ ३६ ॥

सीयालइ दिन बोल्या त्रीस, उन्हालइ दिन बोल्या वीस ।
वरसालइ दिन पनर मान, दिन वउले म जमे पकवान ॥ ३७ ॥

फासू लवण रहइ दिन सात, वरसालइ ए बोली वात ।
पनर दिवस सीआलइ जोइ, मास दिवस उन्हाल[इ] होइ ॥ ३८ ॥

पीसिउ लोट पंच दिन लगइ, बोलिउ मि ए शास्त्र मूलगइ ।
अणचालिउ श्रावण भाद्रवइ, नव नव निरति मासि नव नवइ ॥३९॥

आसो काती च्यारि वखाणि, मागसिरि पोस त्रणि दिन जाणि ।
पंच पुहर महा फागणि माहि, पुहर च्यार ति चैत्र वइसाह ॥४०॥

जेठ आसाढि ते पुहर सत्त, त्याहार पछी दल होइ अचित्त ।
चाल्या पूठि वि घटी होइ, फासू लोट कहीइ जोइ ॥ ४१ ॥

३६. b साल क म. पुहुर क, पुहर म. उपहिरू क, उपहरूं म. नहीं म. c वइये म. कठउल म. d 'जे' क मां नथी, ये म.

३७. a बोल्या दिन क, दिन जांणे वीस म. b दिन जांणे त्रीस म. c पनर दिन मांन म. d दन क. वुलिइ क, वुळे म. जिमि पकवांन म.

३८. a फांसू म. b घोली ए क. c पन्नर म. शीयालइ म. d उन्हालइ क, उन्हालइ म. होय म.

३९. a पीसिउ म. b बोलिउं क. 'मिए' ने स्थाने 'इम' क, मिभ म. c चालि (पाठा०थी 'चालिउ') म. d मास क.

४०. a वरती क. च्यार क. वषांणि म. b मागशर क. पोषि त्रिणि म. c पुहुर क. माह फागुण क म. मासि म. d पुहुरि क. च्यारि ते क म. वइसास अ, वैसाह क, विहाशि म.

४१. a जेठि असाढि म. 'ते' क मां नथी. पुहुर क. सत्त म, ति रत्त म. c त्यार क, च्यारि म. हुइ क. c पूठि क, पुठिइं म. होय क. d कहीजइ क म. सोय क, सोइ म.

पंच पुहर उन्हालइ कहिया, च्यारि पुहर सीआलि लहिया ।
त्रिणि पुर वरसालइ भणु, कहिउ काल ए चाल्या तणउ ॥ ४२ ॥
दीहि पाणी फासू करइ, राति ऊकालिउ वावरइ ।
निरति विरति जु आणइ सार तु श्रावक सुधउ आचार ॥ ४३ ॥
पाछि[म]रयणी घडी जव च्यार, तव नयणे नर नींद्र निवारि ।
उठइ मुखि गणतु नवकार, संभारइ कुलधर्म्माचार ॥ ४४ ॥
सामायक पडिकमणु करइ, दिन उगि सिरि चिंता हरइ ।
अक्षत फल दीवउ जिन भाण, सेटी सहिगुरु करइ वखाण ॥ ४५ ॥
दि वांदणां विनयना आण, गुरु श्रीमुखि करइ वखाण ।
पछइ आजीविका-उपाय, लहु आरंभ तणु विवसाय ॥ ४६ ॥
भोजिन-वेला हुइ जेतलइ. कुसम काजि नर को तेतलइ ।
पहिरी धोति ज्योति निर्म्मळी, करी हाथि वरक चुंडली ॥ ४७ ॥

---

४२ a पच पुहर क. उन्हालइ क. कह्या क म. b च्यार पुहर क. सीआल क. शीआलइ म लिह्या क, लह्या म. c त्रणि पुहर क भरिउ (पाठा०थी भणिउ') म. d ए जल कील काहिउ तेह राणु क; कहि (पाठा० थी 'कहिउ') म. 'ए' म मा नथी. 'ए चाल्या' ने वदले 'जल फासु' (पाठा० थी 'ऊकाल्या') म.

४३. a दीहइ क. b रातिइ म. ऊकालिउ क म. c वरति क, रत्ति म. जउ म. d सुधु क म.

४४. a पाछिम क म. राति म. च्यारि क म. b नींद्र नवारि क. c ऊठइ क, ऊठि म d-धर्माचार म.

४५. a सामाइक म. पडिकमणू क, पडिकमणउ म. b ऊगिइ क म. चिता क, चिता अ. करइ क. c दीठउ अ, दीठु क, दीवु म. जिनभाण क. d सुणइ क म. वषाण म.

४६. a दिइ म. वंदना क. विनय ता क, निनयनां म. जांण म. b मुपि क, मुखिन म. पचखाण म. c पच्छइ म. आजीवका क. d गुरु (पाठा०थी 'लघु') म. तणइ क, करइ म. व्यवसाय क, व्यवसाइ म.

४७. a भोजन म. जेतलई क, येतलइ म. b को नर तेतलि क. c योति अ. नर्मेली क, निर्मली म. d वरव सुढली म.

अणुहण चलणे चालि जाइ, वेगि पुहतु वाडी माहि ।
माली सहिजि चूटइ फूल, घरइ ठाम आली लि मूल ॥ ४८ ॥
आण्या मूलि विधि जे घणा, पय पूजइ परमेसर तणा ।
न रहइ पंथि अनेरइ कामि, आणी मेल्हइ उत्तम ठामि ॥ ४९ ॥
घरनायक तव आविउ घरी, पश्चम साम्हउं पावन करी ।
पहिरयां वस्त्र परहां ते मेल्हि, मर्दन अंगि सुगध तेल ॥ ५० ॥
गली नीर साचवणी करी, उन्हा जलनुं भाजन भरी ।
जोई चोखइ थानकि ढालीउ, पोढउ पाते परनालीउ ॥ ५१ ॥
बइठउ पूरव साम्हउ थई, अंग पखालइ पाणी लही ।
अंगोहलि जलकुंडी भरी, ते लाखइ जयणा जल करी ॥ ५२ ॥
जे अंगोहलि तेणउं पोतीउं, मेल्ही पहिरइ पडपोतीउं ।
नही खांडउ <u>बांडउं</u> जे विमल, ते धोतीउ पहिरिउं धुरि धवल ॥५३॥

---

४८. a आणुहाण क, अणहुण म. चालिउ क म. जोय क, जाइ म. b वेगिं क, वेगिइ म पुहुतु क. माहि म c सहिजि क, सहिजइ म. चूंटई क, चूटइ म d ठामि क, ठांम म लिई आली क, लिइ आली म.

४९ a आण्या फूल विधि जें क, आण्या फूल विधोगति (पाठा०भी 'विधिइ जे') म घणों क म b पूजणि परमेश्वर तणां क म c ठांमि म. d मेहलइ क, मेहल्या म ठांमि म

५०. a आविउ तव क. परे म b पश्चिम क, पश्चम म साहामूं क, साह्मु म. दातण क करे म c पहिरया अ, पहिर्या म परयां क, पहां म मेहलि म d अगि क. करइ (अगि ने बदले) म. सुगंधी क. सुगंधि म. तेलि म.

५१. a नीरि म b उन्हा क. जलनु म c चोषइ क म. थानिक क ढालीउ म. d पोढु क पाटने क, याजट म.

५२. a बयठु क, बिठउ म. साहामु क म. b पांणी म c कूंडी d नाषइ क, ईपइ म जलजयणा क म. भरी क

५३. a अंगोलि क म तणु क तणउ अ b मेहली क म पोतीउ अ, धोतीउं म c नहीं म पाडउ अ, पाडु क, थांइ म. बीडउं अ, याडु क. बोलिउं म. ये म d तेह पोतीउ म पहिरू क, पहिरु म. 'धुरि' क म मां नथी,

रक्त वस्तु नइ राते फूलि, वसि कारणि ते पूजा मूलि ।
लिखिमी कारणि पूजा करइ, पीलां वस्त्र पुप्फ ते धरइ ॥ ५४ ॥
कालां धोती कालां फूल, वइरीनइ सिरि माथा सूल ।
धवलां धोती धवलां ध्यान, धवले फूले मुगति प्रधान ॥ ५५ ॥

धवल ध्यान पूजा सारिखां, पुहचइ मनवंछित पारिखां ।
धवल वस्त्र दिसि उत्तर भणी, पहिरिइ लिखिमी लाभइ घणी ॥५६॥
पहिलुं जातां मंदिर माहि, देवालु जो डावइ ठाहि ।
निर्म्मल थानक अति अभिराम, उपरि चंद्रूआ चित्राम ॥ ५७ ॥

इद हाथ मुं[इ]थी भणी, उंची प्रतिमा रहि जिन तणी ।
अधिकइ उछइ दोष ज जाणि, कइ मृत्य कइ पाडइ हाणि ॥५८॥
उत्तर पट उपरि उढणउं, लिणि सिर ढांकण आपणुं ।
आठ-पडु करज्यो मुखकोस, जिनवरसासन लागइ दोस ॥ ५९ ॥

---

५४. a रक्त क. वस्त्र म. नि म. b वशिकारणि म फूलि अ. c लपिमी क, लिपिमी म d पीला अ. तेतला ('पुप्फ'ने बदले) क; पुप्प वस्त्र म

५५. a काला अ. काला अ. d वयरीनइ क, वइरनिइ म. शरि म. शूल क म. c धवला अ. धवला अ. d निधान म.

५६ a ध्यान म. सारिखा अ, सारिषा क, सारषी म. b पुहुचइ क पारषा अ, पारषां क, पारषी म. c दिशि म. तणी अ म. d एणी परि लषिमी क, पहिरिइ लषिमी म. ल्हीइ म.

५७. a पहिलू क म. भणी म. b देवाल्हइ क, देवालउ म. जु डा-वइ क, डावउ म. ठाइ क, ते भणी म. c नर्मल क, निर्मल म. थानिक क. अभिरांम म. d चद्रुआ चित्रांम म.

५८. a भुंइथी क, भुइथी म. b ऊंची क, ऊंची म. रहइ क म. c अधिक म. ते दोषह जाणि म. d करइ म मृत्यु क म. के म.

५९. a पाट क. ऊपरि क. उढणू क. b तेणइ क, तीणइ म. सर क, शिर म. ढाके क, ढांकइ म. आपणु अ, आपणू क, आपणउं म. c करजे क, करयो म. मुषकोश क, मुखकोश म. d सास लगाडइ क म.

घइसइ पूरव उत्तर भणी, पूजा करिवा घरनु धणी ।
दक्षण दशि संतान न सरइ, पस्चम चुथउं नवि उद्धरइ ॥ ६० ॥

नैरत कूणि कुलक्षय जाणि, अग्नि कूणि दिन दिन धनहाणि ।
वाय कूणि संतान न फलइ, ईशानि अवस्य उचलइ ॥ ६१ ॥

पूजन चंदन केसर घसइ, देव-काइ म म खरडउ रखे ।
ओरसीउ आणउ कसकसउ, तेणइ सूकडि अलगी घसु ॥ ६२ ॥

पहिरु मुगट कनक कांकणां, नहीतरि करज्यो सूकडि तणां ।
पूजेवु त्रिभुवननु नाथ, अंगु[लि] म करे वली अइइ हाथि ॥ ६३ ॥

जु घरि रद्धि तु पुहचइ घणी, करि मुद्रा तुहि सोवन तणी ।
आणी पाणी निर्म्मल गंग, पूरां देव पखाले अंग ॥ ६४ ॥

थालाकुली खूणो खणे, लूहे घणे अंगलूहणे ।
पूज्या विण करथी म न मेल्हि, कइ चंदन चंपक कइ वेलि ॥ ६५ ॥

पाय जानु कर दो दो खवा मस्तकि पूजा थोली सवा ।
भालि कंठि रिदयस्थल पेटि पूजा प्रीछी जिनवर भेटि ॥ ६६ ॥

---

६०. a उतर क b करवा क म. c दक्षणि क दसि क दिसि म. सिरइ क. d पश्चमि क, पश्चम म. चुथु क थउ कुल म

६१ a नैरति कूणइ क, नैरति कूणि म. जाणि म. b अगनि कूणि क, अग्निकूणि म c वावि कुणि क, वायकूणि म नवि क d ईशानिइ म. अवसि क अवश्य म. ऊवलइ क म.

६२. a केसर चदन म b कीइ क, कोइ म परड क म नपइ म c उरसीउ क म. आणु क कसकसु क. d तेणइ म. घसउ म.

६३. a पहिरउ म. कावणा क म. b करयो अ म c पूजेवा क. त्रिभोवननु क. d आघु क. करे डाक क करे अइउ म. हाथ क म

६४. a ऋद्धि क. रिद्धि म. न क म. पुहुचइ क b तुहइ क, हुइतु म. सोविन क c पाणी म. निर्मल क म. d पूरा अ.

६५. a वालाकूची क, वालाकूची म. पूणा थाल क, लूणा पणे म. d घण क c पूजा म. करवी म. म म क. मेहेलि म d कइ चपकइ कइ सोविन वेलि क, कइ चंपक म

६६. a जान म. c कठ क हृदयस्थलि क, हृदयस्थल म. d पूज्या म. पूजी क, पच्छी म.

नवइ तिलक निरता साचवे, दीवउ जिन दक्षण कर ठवे ।
ठोवुं अगालि डावइ धूप, दक्षण वंदन ध्यान स्वरूप ॥ ६७ ॥

क्यारि कुसुम हाथथी खलिउं, अथवा भूमि हाथि जई मिलिउं ।
लागु पाय वसने धरिउं, नाभि हेठि सिरि ऊपरि करिउं ॥६८॥

जे जे जंतु जीव आमडथा, कीडे खाधा खरडिया सिडथा ।
रक्त धवल कणअर परहरे, आखुं फूल म् कटका करे ॥ ६९ ॥

इस्यां फूल फल दूरि धरु, भगति मुगति कारणि परिहरु ।
पइवा करु शिवपुर सारथी, ताहरी पूजा सारू नथी ॥ ७० ॥

तेणइ फल फूलि पूजा करी, नीच तणइ कुलि ते अवतरी ।
पामइ फल पूजानां सोइ, उत्तम कुलि नरवइ जोइ ॥ ७१ ॥

कलस धूप धाणइ चिहु पखे, जिनवर ठवकु लागइ रखे ।
जिनघर पूजानु समदाय, रखे कसु घरमां विवराय ॥ ७२ ॥

---

६७. a नरता क b दीवु क. जिण म. c ठोवू क, धूपइ (पाठा॰ भी 'ठोवउ') म. धूपि क d दक्षणि डावइ ध्यान सरुप क, दक्षिण वदन ध्यान स्वरूप म.

६८. a क्यारइ क, क्यारिइ म कुसम हाथिथी क म. b साथि क म जे क जै म. मलिउ क. c लागु क, लागउ म. कंवसनं क, कुवसने म. d सिर क, शर म. उपरि क.

६९ a नीच जीव जतु आमडया म; नीच ('जीव'ने बदले) क. d घाध्या क करडया सडया क म c क[ण]वीर क, कणयर म. परिहरे क म. d आखु म. मु अ.

७० a इस्या क, इस्या अ. फूल ता रिरि नवि धरु म b परहरु म c ए क म. ठाकुर क म. शवपुर क म. d ताहारी म साहु म.

७१. a तिणि क, तेणे म. फूल फलि क; फूले म. b तणि म ये म. c पूजाना अ. सोय क. जोइ म d कुलि नावइ नर सोय क; फुल पामइ नर जोइ म.

७२. a धपू क b आवइ म. c समुदाय क, समदाइ म d कसिउ क, किशु म. मदिर ववराय क, मदिरि ववराइ म.

देव[ा]लाना दीवा मई, घरनु दीवउ म करसु सही ।
दूध दही नइ फल पकवान कोरां टाली रांधां धान ॥ ७३ ॥

ते सघलां थाइ देवकां, जिन-द्रिष्टि पडीआं घर थिकां ।
जाणइ देव अछइ घर तणा, ठाकुर कहीइ तुह्नि आपणा ॥ ७४ ॥

तु जाणइ परि सेवा तणी, ठाकुर-पदवी दि आपणी ।
जिनवर-पूज सदा संभालि, प चुरासी आस्यातन टालि ॥ ७५ ॥

जिहां थानकनी तुह्नि माठि रही अलगु प्रणमइ कर साठि ।
नव कर निरति कही निरवाणि, अवर अवग्रह मध्यम जाणि ॥७६॥

निसही पहिली घर परिहरइ, चिंता देवभवननी करइ ।
बीजी निसिही पूजा सार, जिनमंदिरनी चिंता वारि ॥ ७७ ॥

त्रीजी निसिही पूरी कही, करी अविधि आस्यातन हवी ।
वचन काय बे संखेपवी, मन थानकइ नसकु राखवी ॥ ७८ ॥

---

७३. a देवालानइ क, देवालानि म. दीविइ क, दीवइ म. d दीयु क म. कीजइ नही क, म करे सही म c दही फल नइ पकवांन म. d कोरा म. राधा अ, राध्यां क, राधिउ म.

७४. a सघला अ देवका अ d द्रष्टि क; जिनवर दृष्टिइ म. पडीआ अ क थका अ क. 'धर' म मा नथी. c आपणा क म. d न म.–हइ क, हुइ म.

७५. a जउ म. जांणइ म b दि पदवी क; दिइ म d चउराशी आशातन म.

७६. a थानिक जनवर हुइ माठि क, थानकि नवि हुइ माठि म. b प्रणमे क; प्रणमइ अलगउ म. d अविग्रह म जाणि म.

७७. a निसिही म. घरि परहरइ क. b चिंता क. देवभुवननी क म. c बीजा अ. निसही क. सारि क म. d टालि म.

७८. a निसही क. b करइ ध्यान जिन आगलि रही क, करइ ध्यांन जिन आगलि रहइ म. c करी अवधि आस्यातन रही क, करी अविधि आसातन हवी म. d जिन म. थानिक क. थानकि म. नसकि क, नसकिइ म. राहवी क म.

खेल थूंक रामति कलगुला, फोधुं लेखउं सीखी कला ।
मिथन मर्जन कलहु करिउ, जिनमंदिरि को हडिउ धरिउ ॥७९॥

छाणां कापड पापड वडी, दालि उगधी देहरइ चडी ।
सिरि कर अंग पखाल्या पाय, करी वात वीजाव्या वाय ॥ ८० ॥

नाख्या नख नीमाला पली, चामर छत्र धराव्यां घली ।
धरियां शस्त्र पहिरी पावडी, नाखी मलगूवड खालडी ॥ ८१ ॥
नयण कर्ण मस्तक नइ खाल, नख नाशिका दंत नइ गाल ।
ए आठइ मल लेख्या हरी, बइठउ पगठ उपरि पग करी ॥८२॥

रांधिउं कइ अंगीठउं करिउं, कइ जिनमंदिर ढोरे भरिउं ।
मेटया जिन पहिरे खासडे, रामति रमीउ गेडीदडे ॥ ८३ ॥

नाख्यां रगतपित नही भलां, हुआ विमन नाख्या कुगला ।
नाठउ कइ बइठउ जूयटइ, करिया विणज साटइ पालटइ ॥ ८४ ॥

कइ तंबोल भखी सूखडी चंपिउं चंपाविउं पड पडी ।
करियां युद्ध राखी पाघडी, करी नीति ते लहुडी वडी ॥ ८५ ॥

---

७९ a पेल म कुलगला क म. b कीधू म लेखू क, लेखू म. c मथन क. मैथुन म. मजन क मर्दन म. करु क d जिनमदिर क ढढिउ क, उहडु म. धिरिउ क.

८०. a छाणा अ म. d उगवइ क, उगवी म वढी अ. c सिर म. करि क.

८१. a नाष्या म. नीमाल्या क b धराव्या अ c धरथा क धरियां म. छत्र क. d नाध्या क, लाषी म. गडगूवड क, गहगूवड म.

८२ b नासिका क. नइ म c लेक्षा अ, नाष्या क, नांष्यां म d चयठा क, विइठउ म पग क. ऊपरि क म.

८३. a रांधिउ अ, अगीठुं क, अंगीठउ अ. करिउ क b भरिउ म. c भेटिउ म. d कीधी ('रमीउने बदले) म.

८४. a लष्या क, नाष्या म. रगतिपति क, रक्तपित्त म b हूआ क हूआ म. नाक्षा अ, नष्या क, नांष्या म. उगला क, उगल म c नाटिक करइ रमइ जूयटइ क, नाहाठउ म. d करया क, करिआ म. वणिज क.

८५. क मां b c d ते बदले c d b क्रम. b चपाविउ अ क. c करिया अ, करयां क.

दीधा स्याप गालि घणहठी, पाडी होड करी पालठी ।
पाडी पगरज पगलुं पंक, सूता निद्रा करी निस्यंक ॥ ८६ ॥

भंडकला भोजन झीलणुं, येणि समारी पारखिपणुं ।
नाख्या दंत दम्या खर तुरी, साती वस्तु, विहिचिणि करी ॥८७॥

कग्गिउ मंत्र खेडां हथीआर, कीधउ साद देई रेकार ।
मुगट खुंप ते नवि छोडीआ, जिण दीठइ कर नवि जोडीआ ॥८८॥

नवि कीधउ सचित्त परिहार, विण सचित्त न करिउ सिणगार।
वईईं करिउं कराविउं होइ. मेल्या लोक आप काज कोइ ॥ ८९ ॥

आठ-पडउ न करिउ मुखकोस, विण उत्तरासणि लागु दोस ।
पहिरी धोती सामणी जेउ, बइठउ पाउ पसारी बेउ ॥ ९० ॥

दीधी पूठि जोई जिन भणी, आशातना अवर जे घणी ।
ते वरजउ जाणी मन माहि, जिम तूसइ त्रिभुवननु राइ ॥ ९१ ॥

---

८६. a शाप म. c घोडी क. पगनुं क, पगनूं म. d सुतु क म. निशक क म.

८७. a भोजिन क. झीलणु अ, झीलणउ म. b वीणि क, विणि म. पारिखपणू क, फरषिपणउ म. c नाक्षा अ, नाष्या क, लांष्यां म. वहिचणि क.

८८. a करिउ अ खेडा अ, घडीआ क, घडीया म. हथीआ हथीआर क. b कीधु क c धूप क, खूप म छोडीया म. d जिन क. दीठइ म मोडीआ क.

८९ a नव क. कीधु क. सचित क, सचित्त म. b सत क, सचित्त म. शणगार म. c वईदु अ, वइद क, वइदउ म. करिउ कराविउ अ. होय क d मेलिआ म आपकजि क म. कोय क.

९०. a पडु क म. मुषकोश क, मुखकोश म. b वणि क लागउ म. दोश क. c मान विण क म. जोय क, येअ म. बयठउ क, बिइठउ म. पग क, पाय म. बेय क म.

९१. a जोइ क. b ये म. c वरजु क. जांणी म. मांहि म. d त्रूसइ अ, तूसइ म. त्रिभोवननु राय क म.

फुंक ढीक नइ तंती ताल, लाली पंचम मेद विशाल ।
नवले नाटिकइ परठइ पाग, वाजइ वाजित्र रंगि राग ॥ ९२ ॥

गौडी कोलाहली विचारि, मालवकोसी देवगंधार ।
द्रवडीसिरी अधाउलि खरी, खट भाषा श्रीरागि वरी ॥ ९३ ॥

रामगिरी देसाख तोखार, गुडगिरी खलंजरि सारि ।
धन्यासी कोअइ मन-खंति, ए खट भाषा वरी वसंति ॥ ९४ ॥

रक्ताहंसी नइ भैरवी, कर्णाटी गूजरि सींधवी ।
वेलाउल खट भाषा लहे, तेहनु स्वामी पंचम कहे ॥ ९५ ॥

त्रिगुणी कुकुभा खंभाअती, आमेरी सामेरी सती ।
वयराडी खट भाषा वली, भावि भैरव सिरसी मिली ॥ ९६ ॥

वंगाउलि देवज्ञि मद्दुअरी, दोपशाटिका देवगिरी ।
कामोदा खट भाषा पद, मेघराग सरिसु सनेह ॥ ९७ ॥

तोडी तोटिक नइ भूपाल, डाहिम डूबी मल्लीमाल ।
खट भाषा नव नव परि भणी, ए छइ नट्टनारायण तणी ॥ ९८ ॥

---

९२. a ढींक क, ठीक अ ति म. b लाला म देव क. c नवलइ क. नाटिक क, नादकि म. परठिउ म d वाजित्रे वाजइ क रंगिइ म.

९३. a गुडी क b मालवकोशी म -गधारि म c द्रवड- क, द्रविड- म -सिरि म आधाउलि क, अंधाउलि म. d षट् क. रागि क, रागिइं म.

९४. a देशाष क म. तोषारि क, तुषारि म b गुडगिरि क, गुंढि-गिरि म. पलवजरि क, पुलजलि म. सारी क

९५. a कर्णाटी म गूजर क, गूर्जर म. सिंघवी क म b वेउलि क, वेलाउलि म. c स्यामी क.

९६. a त्रिगुणा म, कुकभा क, कउुभा म. पभाइती म. अम्भारी (पाठा०श्री 'आमेरी') म. c वइराडी म d भावि क, भाविइ म. सरसी क, साथिइं म. मली क, घरी म.

९७. a वंगालि क. देवज क, देव म. महूयरी म. b देपशाटिका क. c कामोदी म. d सरसु म. नेह क.

९८. a तारिक क, त्रोटकि म. b डूबी क, डुंबी म. c छ क.

खट रागि इम भाषा छत्रीस, बोल्या राग सहस बत्रीस ।
मिल्या मिश्र नामि बुहु होइ, तेहनु पार न पामइ कोइ ॥ ९९ ॥
रद्धिमान जिनपूजा कही, आठे सतरे भेदे सही ।
एकवीसे ने अठोतरे, सहस्स लाख परि कोडि करे ॥ १०० ॥
दहइ पाप उवेखिइ धूप, दीध मुहाडि दुर्गति रूप ।
पूजा राज्यरिद्धि रसरंग, दिन दिन वृद्ध सौख्य सप्तंग ॥ १०१ ॥
तवनि लहु सुगति विस्याल, दानि नव नव भोग रसाल ।
देव-भगति भल राणिम जोइ, अणशण मरणइ इंद्रपद होइ ॥१०२॥
जिम जिम पूजा चोखी बुद्धि, तिम तिम पामइ परिघल रद्धि ।
पूजा करी धोति परिहरी, [आवइ जमण ठामि संचरी] ।
सतर अढार भोज्य रसवती, तिहि अभक्ष पालइ जिनमती ॥१०३॥
दि सहिगुरु सूझतु आहार, मातापिता तणी करइ सार ।
दोहिलां दूबल-नइ समधरइ, जिहां जिहां जिन-थानक उधरइ ॥१०४॥

---

९९. a रागे क राग म. भाष क. b सहिस क. c मिल्या म. वहु नामिइ म. बाहु क म. होय क. d जाणइ म कोय म.

१००. a रिद्धि मानि क म करी म. b सतरे आठे म. c इकवीसे म. नइ क, निइ म. अठ्ठोतरे म d सहिस क, सहस म. कोडिहिं म.

१०१. a ऊषेवउ क. b दीप नसाडइ क म. दुर्गत क c पुज्या क. राजरिद्धि म b वृद्धं सौक्ष म; नैवेद्यि सोम्य सपतग क; देइ नैवेद सौख्य सपतग म.

१०२. a स्तवनि क, लहइ क, यमिइ (पाठा०थी 'तविइ') ल्हइ म. सुविशाल क, विशाल म. b दानिइ म. भोग क म. विशाल क. c जोय क; रांणिम होइ म d अणसणि मरणि क म. इदपद म. होय क, जोइ म.

१०३. a यम यम क. b परयल म. रिद्धि म c अमा नथी; आवइ जयण ठामि संचरी क, आरइ यमण ठांमि सचरी म. e f चरणो १०४नां c d. क म. f जिनमति क; तिहां अभक्ष टालिइ जिन-मती म

१०४. a दिइ क, दिजिइ म b मातपिता क. करइ म. c d क म मां नथी.

घंटफली करसडउं प्रधान, त्रणि प्रकारि बोल्यां धान ।
कंद मूल फल पुष्फ शाखापत्र, पंच स्याक ते कह्वियां विचित्र ॥१०५॥
जलथल खचर जीव जगि भणे, त्रिहुनां आमखि त्रिण्हे गुणे ।
तीखुं मधरुं कटुक कसाय, खट खार खट रस कहिवाय ॥ १०६ ॥
सतर भोज्य प पूरयां थयां, सुणि अढार जे जिणी परि कह्वियां।
वाञ्यां वेढूधान जि दोइ, त्रिणि आमिख परिसिध्यां जोइ ॥ १०७ ॥
गोरस स्याक नव नव परे, तिल हींगु अक्षुरस आदरे ।
लवण धारि नव नव विस्तारि, मिल्यां भोज्य पतलइ अढार ॥१०८॥
पील्ू सागरि जे नवि तजइ, तेह्नुं नाम विदल उपजइ ।
ते म जिमु दधि तक मझारि, इम बोलुं गौतम गणधारि ॥१०९॥
जीव तणी नितु जयणा भणो खेप कीजइ चंद्रूआ तणी ।
जलदलइ थलि खांडण रांधणइ, शिय्याथानकि संझेरणइ ॥११०॥

१०५. a कणसड्ड क, करसणी (पाठा०श्री 'कणसइ') म. प्रधान म. b त्रिहू क, त्रिहु म. प्रकारे क म. बोल्या अ. धांन म. c कद पुष्प फल शाखा पत्र क म. d शाक म. कहिया अ. पवित्र क.

१०६. a थिगि क. b आमिष क म. त्रणि क, तिण्हि म. मणे अ. c तीखु अ. मधुरू क, मधुर म. कटूक म. d कडुक ष्यार क, कहिवाइ म.

१०७. a पूरथा अ. पूरा क म. थया अ. b जे जेणि परि क, ये जिणवरि म. कहिया अ. c वाञ्या अ धांन म. ज दोय क. d त्रणि क. परिसिध्या अ. परसिद्ध क, परिसिद्धा म. जोय क, होइ म.

१०८. a शाक म. विहू विहू क, विहु विहु म. b हीग क, हिंग म. इक्षूरस क, इक्षुरस म. d मिल्या अ.

१०९. a पीलिउ अन्न तेह नवि त्यजइ क, पीलिउ अन्न तेह सवि त्यजइ म b तेहनू क, तेहनउ म. नांम म. द्विदल ऊपजइ क. c जिमे क, यिमउ म. d बोलिउ क म.

११०. a जयणा नितु क. b षप क म. चदरुया तणी क, चंदोदय तणी म. c जलि थलि क, जलि दलि म. खाडण राधणइ अ; दलिणि राधणि षाडणइ क; पढणि म; रांधणइ म. d सय्याथानिक क, सय्यायानकि म.

भोजनि भूमि घणी धवराय, छुणि दशमु देवाला ठाय ।
करि चंद्रोदय चुपट चंग, जु मनि जैन धर्मनु रंग ॥ १११ ॥

जिमतां अन्न जि न विखोडीइ, विण सवादि मुख नवि मोडीइ ।
प्रीसिउं भोजिन नवि छांडीइ, घात जीह-रिसि नवि मांडीइ ॥११२॥

बइठउ आसणथी म म चले, भोजिन अवर साथि म म मिले ।
ऊंणउ ऊठे कुलि त्रि व्यारि, मुख पवित्र तंबोल समारि ॥ ११३ ॥

देहशुद्धि निरधारी करी, पछइ दरसिन जिनवर करी ।
धाम अंगि धुरि धरीअ ववेक, जई सिज्या पुढइ खिण एक ॥११४॥

ऊठिउ वली करइ विवहार, नीच सरीसु नहि व्यापार ।
नवि लोपइ जिनवर-नउ धर्म्म, प्रीछइ पनर खरां जे कर्म्म ॥११५॥

वाली काठ करइ अंगाल, वेचइ फइ कर्म्म करइ कुंभार ।
पटवाह सोनार लोहार, अगनि-कर्म्म अंगाल विचार ॥ ११६ ॥

---

११९. a ववराइ क म. b दसमु क म देवालइ क ठाइ क म c चद्रूआ क. चउपट म d जउ मनि म. धर्मनु क, धर्मनउ म

११२. a जमता क यमता म. अन्न ज क, अन्नजि म वखोडीइ क b मुष क म c भोजन क म छाडीइ अ d जीहरस क म. माडीइ अ

११३. a बयठउ क बिइठउ म आसनथी क. मन (पाठा०शी 'म म') म. b भोजन क, भोजनि म. मन म भले क म c ऊणउ क, उणउ म. उठे म. बि कुलि क म. d पवित्र कीजइ तबोलि क म.

११४. a नरधारिइ म. b दरशन क, जिनवरनू पच्छइ जिनवर दरशन करी म. c विवेक क म. d जै क म शय्या क शिय्या म ध्यण क, क्षण म

११५. a उठिउ म. व्यवहार क म b नींच सरीसउ नहीं म. c जिनवरनु धर्म क म. d जे पनरइ क्षर कर्म क, षरा अ, पनरये परकर्म म.

११६. a अगार क म b वेचइ कर्म जि के कुभार क वेचइ कर्म जि ये कुभार म. c इटवाह क, इटवाह म लुहार क म d कर्म क म. इगाल म. विचारि क.

पाडा आंबा रायण तणां, घन छेद्यां अणछेद्यां घणां ।
वाडी काछा कणदल करइ, पानफूल वन-कर्म्म जि करइ ॥११७॥
घडइ घडावइ धुंसर सिकट, साडी कर्म्म कहिउं ते किवट ।
भाडइ बलद् उंट गाडलां, वाहइ भाडी कर्म्म नहीं भलां ॥ ११८ ॥
कूप तलाव खणावी खाणि, पाहण फोडि खेडि घली प जाणि ।
फोडी क्रर्म्म भूमि लिउं मिलइ, पंच कर्म्म कहियां एतलइ ॥११९॥
आगरि दंत चर्म नइ चमर बुहरिउं अंग अंग जे अवर ।
मोती हीग कवड सिखला प वाणिज्य दंत केतला ॥ १२० ॥
लाख गुली मणशिल नइ खार, लख वाणिज्य करु परिहार ।
मधु माखण घृत गुल दधि सार, ताडीरस सवि तेल परिहार ॥१२१॥
पसू पंखि मानव विवसाय, केसवाणिज्य विरूउ कहिवाय ।
विपपाखर आंगा हथीआर, लोहघाट विपविणज्य विचार ॥१२२॥

११७. a पाडइ म, तणा अ. b अणछेद्या अ. घणा अ. c करसण म. d वनि क. कर्म ज क, कर्मजि म. हरइ म.

११८. a धूशर क, झूसर म. शगट क, शकट म. b कर्म क म. करइ क, कहिउ अ. विगट क. c ऊंट क. d कर्म क म. कहिया अ. तेवत्थां क, न भलां म; भला अ.

११९. a पांणि म. b फोड क. वलि म 'ए' क म मां नथी. जांणि म. c कर्म क म. भूमिसिउ क, भूमिश्रू म. d पाच क. कुकर्म क म. वस्या क, कहियां म. एतलइ क.

१२०. a मर्म अ; आगर दत चरम चमर क, आगरि दत चर्म नइ चमर म. बुहरिउ अ, चउरिउ (पाठा०वी 'बुहरिउ') म. अंग जीव क, जीव अंग म. ये म. c हींग क, हीर म. शंपला म.

१२१. a गली म. मणसिल क, मणिसिल म. b लाप क, लप म. c मांषण म. दधि गुल रस क, दधिरस म. d भाडीरस वाणिज्य परिहरु क, दीलारस व्यवसा परहरु म

१२२. a पशु क, पशु म. पषि अ, पंषि म. व्यवसाय क म. b विणव क, वणिज्य विरुउ म. कहिवाइ म. c आगा d वाणिज क, वणिज म. विचारि क.

प वाणिज्य पंचइ म म करु, वली सामान्य पंच परिहरु ।
उखल मुंसल नीसा वाट, कोल्ह् घाणी घरंटी खाट ॥ १२३ ॥

करइ विणज कांकसीआ कोइ, पीलण-कर्म्म कहीजइ सोइ ।
पसूआं अंग पडावइ आंक, समरावइ फोडावइ नाक ॥ १२४ ॥

कान पुंछ छेदइ आपणी, पूठि गलावइ करहा तणी ।
दाण वुलावी थाइ तलार, लि गोतिहिरा तणउ व्यापार ॥ १२५ ॥

पाटा गाम मकायंत धरइ, अणहूतां अकराकर करइ ।
निर्दयपणा तणउं काम, ते निर्लंछनइ कहीइ नाम ॥ १२६ ॥

धर्म्मबुद्धि कइ वइरी करी, कइ वालर कइ ऊग्या हरी ।
दि दवानल ते दवकर्म्म, किम पामइ ते जिनवर-धर्म्म ॥ १२७ ॥

सर द्रह वावि सूकवीआ कूआ, कइ उलिच्यां जल जूजूआं ।
कास-नीर वालतां अधर्म्म, प कहीइ सुर सोसण कर्म्म ॥ १२८ ॥

---

१२३. a वाणिज क. पच परिहरे क. पचम म (पाठा०थी बीजो वधु 'म') करे. म. b परिहरे क परहरे, म. c ऊपल क. मूसल क, मूसल म. वट्ट क, वाटि म. d कोल्हू म. घरटी घाट क म.

१२४. a वणिज क म. काकसीया क. b कर्म क म. कहीजय सोय क. c पशुआं क. अंगि क म आक क.

१२५ a कान क. पूछ म. आफणी क म. b पूडि (पाठा०थी 'पुढि') म. c दाण क. वुलावा म. d लिइ म. गोतिहिरा क गोतीरा म. तणु क.

१२६. a गांम म. मकाता क, मकाता म. b अणहूत क c तणु जे क तणउ ये म. कांम म. d निर्लछन क म. कर्म क.

१२७. a धर्मबुद्धि क म. वयरी क, वइरिइ म. करइ म. b वालइ म. ऊगइ क म हरइ म. c दिइ दावानल क म. दवकर्म क म. d धर्म क म.

१२८. a सूकव्या म. b उलिच्या अ, उलीच्यां म. जूजूआ अ. c कांस म. नीक क म. अधर्म क म. d सवि क म. कर्म क म.

हिंसा करइ जीवनी सही. पोसइ सूडा नइ सालही ।
कूकड स्वान मोर मांजार, दुष्ट नारि सुत करि परिहार ॥१२९॥

पोसइ दास दीकोला घरी, जाणइ वेचुं माता करी ।
माछी तेली नइ तेरमा, वावर कठिन कसाई समा ॥ १३० ॥

वागरीशा सरसु विवहार, असती पोष म करि लगार ।
प पनरइ कखर कम्मीदान, टालइ श्रावक सोइ प्रधान ॥ १३१ ॥

पुहर पाछिलइ वेला लही, सामाइक पडिकमणुं सही ।
धुरि निर्म्मल काजु उद्धरी, आघइ शिरि सावचणी करी ॥ १३२ ॥

पुर मंदिर चिंता परिहरइ, समता सामायक आवरइ ।
गुरु-विरहि ठणहारी थापि जीवायोनि खमावी आपि ॥ १३३ ॥

पंच सहस खट शित नइ त्रीस ।५६३०। जीवभेद बोलइ जगदीस ।
मिछा दुकड भेद विचार, विगति वर्णवि लाख अढार ॥ १३४ ॥

---

१२९. a हिंसा अ. जीव ते क, यीव ते म. c कूकड म. स्वान क, श्वान म. माजार क, मार्जार म. d सवि ('करि' ने बदले) क म. परवार म.

१३०. a दीकोला क म. b जांणइ वेचउ मातां म d वारि कठणि क. कसाइ म.

१३१. a वागुरिया क, वागुरीया म. सरिसु क, सरिसउ म. व्यापार क, व्यवहार म. b पोषण क कइ क म c पर क म कर्म्मादान क, कर्मादांन म. d सोय क प्रधान म.

१३२. a पुहुर क. सही म. b सामायक क. पडिकमणू क, पडिकमणउ म. c नर्मल क, निर्मल म. काज म. d सर क वारि म.

१३३. a चिता अ; चिंता मदिर म. परिहरउ अ परिहरे क परहरी म ·b सामाइक म. उद्धरे क, आदरी म. c गुरु विण रहइ उणहरी करी क, विरहइ म. d जीवयोनि पमावइ क म. परी क.

१३४. a शत क म. b बोल्या म. जिगदीस क c मिछा दुकड क, मिच्छा दुक्ड म. विचारि क. d विगति क, विगतिइ म.

पूरा परठइ सहस्स चुवीस. एक सु ऊपरि अधिका वीस ।
मिछा दुकड अरथि करी, सामंतु पामइ शिवपुरी ॥ १३५ ॥

मइ मृदु भावि घणइ मांकीइ, छापरदोष सकल ढांकीइ ।
मिइ कहितां मर्यादा रहिउ तु आपोपुं निंदा ग्रहिउ ॥ १३६ ॥

के कहीइ जे कीधउं पाप, पाडइ ते उवसम आणी आप ।
अरथ सहित जे पणी परि लहिउ, सूधउ मिछा दुक्कड कहिउ ॥१३७॥

पूढवि-काय अप-तेउ-वाय, सात सात लख ते कहिराय ।
वणसइ दश लख बादर वली, चौद लाख अनंते मली ॥ १३८ ॥

बि-ति चुरिंद्री दो दो लाप, तिरि-पंचिंदी चु लख भाख ।
सुर नारय चु चु लप कवी, चौद लाख भेदे मानवी ॥ १३९ ॥

सामायक पूंठि पचखाण, चौद नीम संभारइ जाण ।
प्रह्वि ऊगमि लीधा मन-रली, ते संध्या संखेपइ वली ॥ १४० ॥

---

१३५. a परठि क, परठी म. सहस क म. चउवीस म. b इकसउ म. अधिका क c मिच्छा दुकड म एहरंइ क, अरथिइ म d पमुतु क, पामु म. पामु क यम पामु म शिविपुरी क.

१३६ a मृदु भाव सघला मूकीइ क; मि म; मां कीइ माकीइ अ, (पाठा०थी 'मूकीइ') म b क मा 'छा' नथी. सघला क. c मइ क कहिता अ, कहीए म रहु म d तु क हु म. निदा अ; आपोपु नही क, आपो पूनिदा म ग्रहिउ क रहु म

१३७ a क म ये म कीधु क, कीधउ अ. b ते वसमु आणी आप क, ते उपशम आणी आप म. c ये म. यणी परि म. d सुधु क मछाकड क, मिच्छादुकड म

१३८. a पढवकाय क तेऊ क b लाप कहि जिनराय क, लप कहि जिनराय म c दस क म. लाप क, लप म. d अनंती क मिली म

१३९ a चुरिंद्री क, चउरेंदी म b तरि क पंचेंद्री क, पंचेंद्री म चउ म. लप भाप क म c नरय क चउ चउ म. लाप क, लप म. d अनते ('भेदे'ने बदले) क मांनवी म.

१४० a सामाइक म पूठि क, पूठिइं म. पचपाण क म. b जांण म. c मनिरुली क d सेंध्या क. संक्षेपि क, संपेपइ म.

सच्यत द्रव्य विगइ पगरखां, वस्त्र कुसमवाहन सारिखां ।
सयन थलेपन दिसि अंघोल, ब्रह्मभगति संख्या तंबोल ॥ १४१ ॥

पांदी देव अर्धज बिंब, लही वेला ठाइ अविलंब ।
अतीचार पकसु चुवीस, आलोइ कर नामइ सीस ॥ १४२ ॥

समकित आदि व्रत अग्यार, संलेखणा शिरीसा धार ।
पंच पंच वोल्या नव माठि, अतीचार पहुता पांसठि ॥ १४३ ॥

व्रत सातमइ वीस विस्तार, तपाचारना बोल्या बार ।
वीर्याचार तणा त्रिणि भेलि, अतीचार पूरा शित मेलि ॥

ज्ञान अनइ दर्शन चारित्र, आठ आठ बोल्या पवित्र ।
मन सिउं आलोउ निसदीस, अतीचार पकसु चुवीस ॥ १४४ ॥

सामायक पुहतइ सज्ञ थयु, पारी पाछउ मंदिरि गयु ।
अणसण समकित गाथा भणी पुढिउ निद्रा अल्पनु घणी ॥१४५॥

---

१४१ a सचित क, सचित म द्र क वगइ क म पगरया अ. b वस्तु अ क कुसम वाहन म सारिया अ, सारया म. c शयन क विलेपन क म निशि क अघोलि म d सक्षा अ, ब्रम्ह व्रत सख्या क, द्रव्य व्रत सख्या म तबोलि म

१४२. क मा आ कही नथी a वादी अ, वदीअ म अर्द्ध जत बिंब म c इकसु एकवीस म d आलोइ गुर नामी सीस म

१४३. a समकत क आदिइ म इग्यार म b संलेषणा म सरीसा क, सरीसां म c वोल्या म सवि मठि क, मनसठ्ठि म. d पुहुता क, पुहता म पासठि अ, पासठ्ठि म

१४४ a वस्तारि क c तणा म. घणि क d शत पूरां क, शत पूरा म e दरशन म f बोलीआ क, वोलीया म. g मनश्च म. आलउ अ, आलोइ म नसदीस क, निशिदीस म h इकसउ इकवीस म

१४५ a पुहुतइ क b पाछु क c अणसमकित क, अणसमकिति म. ते गाथा म. d पुढउ (पाठा०भी 'पुढइ') म. अल नवि पणी क, अल्प न घणी म.

आवि परव पोसह घरइ, त्रणि काल जिन-वंदन करइ ।
सुद्ध सावद्य योग्य परिहार, सद्गुरु सरिसु अर्थविचार ॥१४६॥

जउ इम श्रावकनु आचार, पालइ पामइ मोक्ष-दुआर ।
पहीउ मोह तणइ जंजालि, नरभव गमइ अमूलिक आलि ॥१४७॥

कहिना गज कहिना रथ तुरी, गिउ रावण जे लंकासिरी ।
गया राम राजा हरिचंद, मुंज भोज गणपति गोव्यंद ॥ १४८ ॥

गया देव चुवीसइ आज, गया नल विक्रम मेल्ही राज ।
गयु राम गयु दशरथ तात, गयु भरथ जे जगि विख्यात ॥१४९॥

महारी महारी म करसउ धरा, नही आ[प]णा नही को परा ।
नव नंद नइ नव डुंगरी, ते कुद्द कुण साथि सांचरी ॥ १५० ॥
गाम देसनु करी संहार, आगलि भरिवु पेट-भंडार ।
एक जीव वधतां जे पाप, जाणेशि परभवि देतु आप ॥ १५१ ॥

फरइं राज मद आणइ हीइ करता पाप आप नवि बीहइ ।
कुण मोटउ नान्हउ आतमा, परभवि राय रंक बे समा ॥१५२॥

---

१४६ a आवे परवे क म b त्रिणि क c विहू क, बहु म. सात्रिय क. योग क म d सरिसउ म. अरथ क

१४७. a जु क म.

१४८. b गयु क म. 'जे' क मां नथी, ये म. लंकेश्वरी क म. c हरिचंद्र क. d मुज क, मूंज म गोविंद क.

१४९. b ग्या म. नल' क मा नथी. मेहली क म c गयु दशरथ रामनु तात म, दसरथ क. d जे जिगमाहि हूआ विक्षात क, भरथ ये म

१५०. a माहरी माहरी क, माहारी माहारी म करसि क, केरु मि b आणा अ; नही पाधरा देह पाधरा क. म नहि आपणा देह पाधरा म. c नवइ क म डुगरी क म. d कुदु क, कहु म. सचरी क म.

१५१. a गाम म देशनु क करइ क म सिंहार म. b भरखु क, भरखु म. c वधता अ ये म. d जाणसि क, जाणशि म. परभव क.

१५२. b करता म पापि क. न आपिइ म. c मोटा क म. नाहना क म. d परभव क. राक म.

वेला घडी पुहर जे जाइ, ते आउखुं ओछउं थाइ ।
खदहद जल वूढां गिरिवलइ, ते नीझरण [न] पाछां वलइ ॥ १५३ ॥
सहिगुरु वाणि श्रवणि सांभलइ, तिम तिम विमल नयण जल भरइ।
कर्यां कर्म-भारि प्राणीउ, दुख सहिसि दुर्गति ताणीउ ॥ १५४ ॥
दान सील नइ तप-भावना, करतां दिन जाइ जेहना ।
तेहनुं नाम जपु मन-माहि, जिम प काया निर्मल थाइ ॥१५५॥
जां घरि धन तां अप्रगां मिलइ, धन विण सगां सहोदर टलइ।
बेटा बेटी बहिनर माइ, धन विण [नारि] पीआरी थाइ ॥ १५६ ॥
जे करसि भोगवसि सोइ, पाप न वहिच्यी लेसइ कोइ ।
देहि दुख जिम विसमु थाइ, वेदन विहु कुणइ न लेवाइ ॥१५७॥
सुणी वाणि सहिगुरुनी घणी, पंगि लागु चंद्रावइ-धणी ।
स्वामी प[क] वीनती करुं दिउ आलोयण जिम भव तरुं ॥१५८॥

---

१५३. a पुहुर क. ये म. b तेह म. आउखु अ. आऊषउ क, आऊख् म उछु क, उछउ म c षलहल क, खलहल म. वूढा क, वूढा अ म. गिरवलइ (पाठा०थी 'गिरितलइ') म d पाछा अ न पाछा क म.

१५४. a वाणि म. श्रवणे क; म मा नथी. सामलइ क, b नयणे क. जलि म ढलइ क. c करया अ, करियां म कर्म म. भारिउ क म. d दुष क. सहित म जाणीउ म.

१५५. a दान म. शील क म. b येहना म. c तेहना क, तेहनू म. नाम म. जपउ म. d यम क निर्मल क.

१५६ a ता क. मलइ क. b सगा असगां मलइ क; सगा अ. c धन विण सगा सहोदर टलइ क. d धनि करीनइ आपद टलइ क; नारि पीयारी म

१५७. a करसिइं म भोगवशि म. सोय क. b विहिची क, विहिंची म. लेशइ म. कोय क c देह क म. दुष क; दुःष म. यम क म. पाठा० थी 'विषम' म. थाय क d विसिउ क केणइ म.

१५८. a वात ('वाणि'ने वदले) म. सुणी क b लागई म. c एक ('ए'ने वदले) क म. करू क म. d आलोयण क, आलोअण म. यम क म तरू क म.

वस्तु

सुगुरु-वाणी सुगुरु वाणी सुणी नरराजि ।
मनि वइराग अतिघणु, करियां कर्म्म मइ कठिन गाढां ।
हवइ मनि आविउ उरतु सुण्या श्रवणि गुरु वयण टाढां ।
विमल मंत्र इम वीनवइ, पाय न छोडू हेव ।
पाप करी हिवइ ऊसतु, दिउ आलोयण देव ॥ १५९ ॥

करि पडिकम्मणउ ए ढाल

हुं उसिरण प्रभ नरग परहुणउ, तु समरथ गुरराय ।
कर जोडीनइ करु वीनती, सेव[क] करु पसाय ॥ १६० ॥
दिउ आलोयण, मागइ विमल प्रधान,
धर्मघोषसूरिश्वर पासइ आणी उपशिम ध्यान ॥ १६१ ॥ दिउ० ॥
गुरु जंपइ सी आलोयण, कीधा कर्म्म अपार ।
सहस्स लाख लेखा-माहि घलीउ, जीव तणा संहार ॥ १६२ ॥ दिउ०

---

१५९. b सुणीअ म नरराज क नरनाह म c मन क म वय रागि क, वइरागिइ म घणु क पूरीउ ('अतिघणु'ने बदले) म d करिया अ, करिआ म कर्म क म ते अतिहि ('मइ कठिन'ने बदले) म गाढा अ e हव म उरतउ म f सुण्या अ वचन क –वचनि म टाढा अ, ताढा म g विमलमत्रि मनि चितवइ म i हवइ क हू म पाठा०थी 'ऊसतु' म j दिइउ आलोअण म

करि पडिकमणू करि पडिकणू ए ढाल क, करि पडिकमणउं करि पडिकमणउ ए ढाल म

१६० a हू म असारण क म प्रभु क म नरगि क परणु क, परहुणउ म b तूं क म समथ क c करू क म d सेवक क म पसाइ क बधुमां दिउ आलोअण' म

१६१ a दिउं अ म मां १६० ने अंते. b प्रधान म c धमघोष-सूरीसर म पासिइ म d उपशम क म. ध्यान क.

१६२ a तुझसी क म आलोअण म b कीधा अ कर्म क म c सहस क म लिषा नवि गणीइ क, लेषां नवि लहीइ म d सिंहार म.

मांज्यां नगर देस तेइं लूस्यां, माय विछोहां बाल ।
अणचिंतइ घरि आग लगाई, पसूआं खूटउ काल ॥१६३॥ दिउ०

खांडानइ वलि तिइ क्षोणीतलि, लीधी परधन कोडि ।
ति दंडया [मोटा] पृथ्वीपति, लागी पातिक कोडि ॥१६४॥ दिउ०

बोल्यां कूड ति मर्म मोस, कीधा अतिघण लोभ ।
गुरु बोलइ संभलि पृथ्वीपति, तुझ सी दीजइ थोभ ॥१६५॥ दिउ०

चुपई

धर्म्मघोषसूरि बोलइ इसी तुझ आलोयण आलुं किसी ।
महा आरंभ कीधा लख कोडि, आलोयण देतां अम्ह खोडि ॥१६६॥

पणि आगमि बोलीउं छइ तोइ, मिथ्यादृष्टी थानक होइ ।
तिहां जिन मंदिर किम्हइ कराइ, तु नरव[र] आराधक थाइ ॥१६७॥

---

१६३. a माज्या अ माज्यां क, भाज्या म. देश नगर नइ गाळ क; देस नगर म. ; तिइ लुस्या म b विछोहा अ विछोहिया म. c अणचीति क, अणचींतइ म. घणि अ आगि म. d पसूआ अ, पशूआ क म. घूटउ क खुटउ म.

१६४. a षाडानइ क, षाडानि म. त क, तिइ म क्षोणीतली क, क्षोणीपति म b लीधा क. c ति क, तिइ म नडया क, डंडया म. प्रथिवीपति मोटा म. d पातक म

१६५. a तिम्मर्म अ, कूड मर्म घण मोस क, कूड कर्म तिइ मोसा म. b घणा क. c जपइ म. सभलि क. प्रथिवीपति म d तुम्ह सी क, तुस सी म.

चुपै म.

१६६. a धर्मघोषसूरि क म b तुम्ह क. आलोअण म. दीजइ क. आपु म. नही क. किशी म. c महारंभ क म. d आलोअण म. देता अ अम्ह क, अम म.

१६७ a पण म. बोल्यु क तोय क. b मिथ्यादष्टी क, मिथ्यादृष्टि म. जोय क. c किमहि क किहेर म d नरवर क म.

तुझ छइ आलोयणनी खंति, धर्म वसिउ छइ ताहरइ चिंति ।
वरि मिथ्याती शरिसु वाद, करतां जु नीपजइ प्रासाद ॥१६८॥

अर्बुद-शिखर छइ अभिनवु, तेहनु महिमा सिउं वर्णवु ।
ए बोलिउं छइ उत्तम ठाम, करतां उद्यम सीझइ काम ॥१६९॥

अचलेश्वर जे आगइ अछइ, ए पर्वत आविउ छइ पछइ ।
तापस तप करता इणि ठाइ, तेह तणी नितु चरती गाइ ॥१७०॥

मोटी खाड हती अति वडी, चरती गाइ घरांसइ पडी ।
तेणइ धूबकइ धरणी धडहडी, आव्या रखि तापस चडवडी ॥१७१॥

नवि पइसाइ नवि नीसरइ, डांग देखाडइ डचका धरइ ।
कामधेन तव खीरि झरी, भरी खाड नइ आवी तरी ॥१७२॥

संकट सोइ सुखि उत्तरी, आवी रखि-आश्रमि पाधरी ।
चिंति रखि ए आव्यां मात, पणि ए आधी दोहिली वात ॥१७३॥

---

१६८. a आलोअणनी म. b धर्म क म. विसु ताहरे म. चींति क. c मिथ्याती अ, मथ्याती क, मिथ्याती म सरिसु क म d करता अ.

१६९ a -सिषर क. अछइ क म. अभिनवु क, अभिनवू म. b तेहनउ म. सिउ म. वर्णवू क म c बोलिउ अ. छि म ठाम म. d करता अ सीझइ म. कांम म.

१७०. a आगइ जे क, ये आगलि म. b परवत क c करता क एणइ क, इणइ म ठामि अ म. d चरती निति क; चरति म.

१७१ b चडती (पाठा०थी 'चरती') म नरासइ क, विरासइ म. c धूबकी क, धबकइ म. धरती क d रिषि म

१७२. a पयसाइ क. b डाग क. करइ क म. c कामधेनु म. षीरिइ म. d लव ('नइ'ने बदले) म.

१७३. a सोय क, जोइ (पाठा०थी 'सोइ') म. सुषि क सुखिइ (पाठा०थी 'सुखिइ') म. ऊतरी क म. b आ क ऋषि क, रिषि म. आश्रमि क म. c चिंति अ, चितइ क, चिंतइ म. ऋषि क. d दोहेली क.

मिल्या रखीस्वर रावि गया, भणइ हेमाचल कोंधी मया।
तुह्म दीठइ अम्ह निर्म्मल कया, सज्जन-माहि समुहता थया ॥१७४॥

अह्म घरि रद्धि अछइ तुह्म तणी, कुह कारण आव्या जेह भणी।
कहि रखि अह्म अर्बुद गिरि रहुं, कामधेन चारिवा नचि लहुं ॥१७५॥

आगलि प्रगटी मोटी खाड, पडइ गाइ [नइ] भाजइ हाड ।
ताहरा बेटा तुं योलावि, घरी खंति ते खाड पूरावि ॥१७६॥

निसुणी गौहत्यानी वात, लघु बेटउ बोलावइ तात ।
आविउ अचल न लागी वार, आम तात-नइ कीध जुहार ॥१७७॥

ते रखि-नइ सुंपी आपीउ, तिणि थानक ते थिर थापीउ ।
पूरी खाड ठांम थिर रहिउं, ए अचलेश्वर तीरथ कहिउं ॥१७८॥

प्राणनाथ पारवती तणउ, थापी वात अवधारिउ घणउ ।
गुरु जंपइ चंद्रावइ-धणी, ए वाणी परंशासन तणी ॥ १७९ ॥

---

१७४. a मल्या-क. ऋषीश्वर क, ऋषिश्वर म. रावि क, राविइ म. b हमाचल क, हिमाचल म. c क मां d जुओ. तुम्ह क, तुम म. दीठइ क. अम म. नरमल क, निर्मल म. d क मां c जुओ. सज्जन म. मांहि म. समुहुता क

१७५. a अह्मे अ, अम्ह क, अम. म. रिद्धि म. अछि म. तुम्ह क. b कुहु क, कहु म. काज म जे क, श म. c कहिइ क, कहइ म. ऋषि क, रिषि म. अरबुदगिरि म. रहूं क म. d कामधेनु क. चारिवा क, चारवा म. लहू क, लहउ म.

१७६. b पोढी क; आगलि पोढेउ पगटिउ पाड म b गाइ भई क म. c ताहरु क म. बेटउ क म. तूं क ते म.

१७७. a सुणीनि म. b बोलाविउ म d आप (पाठां०थी 'आम') म. किद्ध क, कीद्ध म.

१७८. a ऋषिनइं क. रिषिनइ म. सुंपीउं क. 'आपिउ' क मां नथी, आपीओ म. b तेणइ क, तीणइ म. थानिक क थानकि म थापीया म. c पूरीउ म. ठांम म. 'थिर'ने बदले 'ते' म. रहिउ म. d ते म. कहिउ अ.

१७९. a तणु क. b वात म. धारिउ क म. घणु क.

अर्बुद शिखिरइ रहि अर्बुदा, तेह्न तणउं थानक ए सदा ।
श्रीमाता जे पासइ रहइ, तेह्ननी वात केनला कहइ ॥ १८० ॥

श्रीमाता छइ रूपनिधान आविउ रसीउ देव प्रधान ।
बोलावी श्रीमाता माइ हु रसीउ आविउ घर राय ॥ १८१ ॥
जाणउ ताह्नरी बेटी वरु, वरि हुं काम कहु ते करुं ।
हु रसीउ छउं लीलविलास, तुह्म बेटीनी पूरिसु आस ॥ १८२ ॥
सासू जाणि जोई आथि, तु बेटी वलगाडउ हाथि ।
तव सासू रसीआ सारिखुं, राखि राति करइ पारखु ॥ १८३ ॥

बार गाम वासु वरराज, चिहु पुहरे तु बारइ पाज ।
आविउ गिर नीपाई नवी, तु पुत्री परणेवी ह्नवी ॥ १८४ ॥
जा कूकड नवि वासइ वली, शिबद कहीनइ सासू वली ।
मुडिउ रसीउ वास्या गाम, बार पाजना कीधा ठाम ॥ १८५ ॥

बांधी पाज मकल जव समी, थोडी थाकइ छइ बारमी ।
सासू मनि पइठउ अदोह, श्रीमाता उपरि अति मोह ॥ १८६ ॥

---

१८० a सिपर क, शिपरि म रहइ क म b तणु क, तणउ अ थानिक क कदा क c ये म

१८१ a छि म रूपनिधान म b प्रधान म d हू म [क मा c d नथी]

१८२ a क मा b नथी a जाणउं म वरू म हु अ, हू म करु अ, करू म c हू क म छु क, छउं म d पूरिसि क म

१८३ a जोईइ म b वलगाडू क म c रसीया म सरिखु अ सारषू क सारखू म d राखि म. पारखु अ, पारषू क, पारखुं म

१८४ a चिहु क पहुरे क जु क म बाधु म c आवु क, आवइ (पाठा०थी 'आवु') म गिरि क म d बेटी म परणावी क म

१८५ a जा क कूकड क म b शबद क, शब्द म कहीइ म क c मुडिउ क वास्या अ वासिआं म गाम क d पाजना अ कीधा अ ठांम म

१८६. a ते ('जव ने बदले') म d ऊपरि क म

मिइ ए थापी बेटी करी, ए वर लेई जासइ वरी ।
हुं सूनी एकली निट्टोल, मुझ बीजउ कुण देसइ बोल ॥ १८७ ॥

डमडोलउ पइठउ मनमाहि, ए वर नयणे दीठउ कांइ ।
दीठउं काम करि ततकाल, दीधा बोल थया विसराल ॥ १८८ ॥

जे दीधा नारीना बोल, ति जाणेवा जांगी ढोल ।
माहि पोला बाहरि नाद, वनिता सरिसु केहु वाद ॥ १८९ ॥

पतली सासू तव ग्रहि समा, करि कुकड वास्या कारिमा ।
रंगी रसीउ वलखु थयु, श्रीमाता आगलि जई रहिउ ॥ १९० ॥

द्रिष्टोद्रष्टि रहियां बे जणां, चित्त रमाडइ इम आपणां ।
अंग तणु टलीउ संयोग, मन सिउं मांडिउ मोटु भो[ग] ॥१९१॥

बोल थकी चूकी तव घरी, साद्य पंच इंटाली करी ।
लोक तणउ ए पडिउ प्रवाह, गुरु बोलइ सुणी विमल ज साह ॥१९२॥

---

१८७. a मइ क म. बेटी री क b जासि क, जासिइ म. c हु अ, हू क म. निटोल क म. d मझ म. बीजु क. देसि क, देशइ म.

१८८. a डमडोलु पयठउ क मनमाहि म b काइ क. c दीठउ अ, दीठु क, दीधू म. करु क, थयू म. d विशराल क.

१८९. a ते क म. जंगी म c माहिइ म. d विनिता क. सिरिसुं क, सरसु म. करइ जे वाद क.

१९०. b करया क. कूकडा क, कूकड म. तव ('वास्या'ने बदले) क. c रंगिइ रसिउ विलपउ म. d जै क म.

१९१. a द्रष्टोद्रष्टि क, दृष्टोदष्टि म. रह्या क, रहिया अ. बेहू क. जणा अ. b रमाडि म. आपणा अ. c तणउ म. टलिउ म. सयोग अ. d मनशु म. मांडिउ अ, मडइ क, मडिउ म. मोटा क, मोटउ म. भोग क म.

१९२. a 'बोल थकी'......शब्दो क मां नथी; जग्या खाली छे. तव चूकी म. b सासु म. ईटाले म c तणु क, तणउ म. 'ए' क मां नथी. पडिउ म. d विमलड साह क, विमलउ (पाठा०थी 'विमलइ') साह म.

देव प्रति ए पर्वत इष्ट, गौतम रिखि नइ रहिया विशष्ट ।
तेह तणां छइ थानक वडां, डुंगर-मांहि रहियां एक-तडां ॥ १९३ ॥
अर्बुद मिथ्याती संग्रहिउ, सद्‌गुरु बोल विमल-नइ कहिउ ।
पुहुतु विमल गयु अंबावि, ध्यान धरी बइठउ मन-भावि ॥ १९४ ॥
त्रिहु उपवासे परतखि हुई, मागु वर तुह्म तूठी सही ।
पहिलु वर मागिउ प्र[ा]साद, अर्बुदशिखिर सिरीसु वाद ॥१९५॥
बीजु वर मागिउ एक पुत्र, जेणइ पूठि रहइ घरसूत्र ।
कइ सुत कइ पोढउ प्रासाद, बिहु वस्तु पछ म करिसि विवाद ॥१९६॥
बोलावी निज मंदिरि नारि, वात पडी छइ वडइ विचारि ।
कुहु तु सुत मागुं वरलब्ध, कुहु तु जिनप्रासाद प्रसिद्ध ॥ १९७ ॥
श्री जंपइ संभलि भरतार, सुत मागइ वाधइ संसार ।
के सुत जन्म्या कुलमंडणा, के खंपण ऊपाइ घणां ॥ १९८ ॥

---

१९३. a प्रति क; इष्ट क; देव तणइ ए पर्वत इष्ट म. b गोतम ऋष नइ क कहइ क, रहइ म वसिष्ट क म. c तणा अ. थानक क; थानक ए वडा अ a डुगर क.म. माहि क रह्यां क रहिया अ. इक-तडां म, एक-तडा अ.

१९४. a ए अर्बुद क म. मथ्याति क. मिथ्यातिइ म. ग्रहिउ क म. b सद्‌गुरि म. c पुहुतु क, पुहतउ म. विमल क. d ध्यान म. बयठउ क, बिइठउ म.

१९५. a त्रिहू क. हूइ क. b तुम्ह क; संसही म; मागि मागि वर तूठी सही म. c पहिलइ वरि म. मागु क प्रासाद क म. d सिषर क, शपर म. सरिसु क, सरीसु म.

१९६. a बीजाउ क, बीजउ म. वरि म. मागुं क. इक क. पुत्र क. b जेणइ क, जिम म. पूठइ क, पुठिइ म. रापइ म. c किंइ म. d बि धर वच्छ म.हु परंति क, करेशि म. याद क म.

१९७. a मदिर क म. b वचारि क. c कहु क. मागव म. d कहु क.

१९८. a सभलि क मागि क, मागिइ म. c जन्मा क. कुलमंडणां अ. कुलमडणा क. d ऊपाइ क, ऊपावइ म. घणा क म.

विरला बेटा भगता होइ, विरला सुकलि कर्म्मी कोइ ।
कहिनी बेटी कहिनी मात, कहिना बेटा कहिना तात ॥ १९९ ॥

वेगि करी मागिउ प्रासाद, बेटानु माणु विखवादं ।
विमल आणी ऊलट घणउ, वर मागिउ प्रासादह तणउ ॥ २००॥

आविउ विमल सहित परिवार, अर्बुद जिनप्रासाद विचार ।
पूजारा नवि लाभइ पार, मलीआ भरडा सहस्स अग्यार ॥२०१॥

ए थानक शिव शासन तणउं, महिता तुम्हे म कहिसिउ घणउं ।
रूडा मंत्री लेसिउ प्राण, ठाम न आपुं शिवनी आण ॥ २०२ ॥

करइ भरड नइ बोलइ बोल, घरितूं विसरिउ मारि निटोल ।
बोलइ सवे थया एक-मती, भूमि न आलूं अम्हे एक रती ॥२०३॥

मांडिउ कलकल भरडे मिली, वारी विमल मनावइ वली ।
कां थोलु [कां] ज्ञाउ तापि, धर्म्म काजि खप नही संतापि ॥२०४॥

---

१९९. b सुत कुलि क, सुत को म. करमी क म. जेइ क. जोइ म. c कहिना बेटा कहिना तात म. d कहिइना क, कहिनी म. बेटी कहिनी मात म.

२०० a वेगिं क मागु क, मागउ म. b माणउ म. c विमलि कं. विमलइ म ऊलट आणिउ म, घणु क d मागु क मागिउ म, तणु क.

२०१. a परिवारि म. b विचारि म. d मलीआ क, मिलीया म. सहस क म इग्यार म

२०२. a थानिक क म शव क. तणु क b महिमा अ तुम्हे क, करसिउ क, कहिसिउ म. घणु क. c लेसु म. d आवु अ; थानक नापू म. शवनी क म.

२०३. a बोलइ बोल क, नइ भरडइ बोल म b वरितुं क, वसरिउ क, विरडिउ म. c सर्हे म. इक म. d आलु क; अम्हे क; नवि आपू धरणी इक रती म.

२०४. a मांडि क, मांडिउ अ. कलि कलि क. मली म. b वली विमल मनावि म. c का थ बोलउ म. जाउ ज्तापि क. d धर्मं क म.

कहुं बोल जे तुह्ये सांभलु, मेदली मन तणउ आमलु ।
शु जोता ए थानक थकुं, कांइ प्रगट हुइ श्रावकुं ॥ २०५ ॥

तु तुह्ये करया दिउ प्रासाद, नही[तु] तुह्म शरिसु नही वाद।
बीजुं ठाम सवि संग्रहिउं, श्रीमाता आगलि जे रहिउं ॥ २०६ ॥

ते भुइ सवि कहि नइ तेतलइ, जोड जोआयु तेतलइ ।
इम कहीनइ भरडा चल्या, मन्नीसर अंबाई मिल्या ॥ २०७ ॥

घरी ध्यानि करि बइठउ यक्ष, अंबाई आवी परलक्ष ।
विमल वात जणावी ताम, पूजारा सिउं परठिउं आम ॥ २०८ ॥

कहइ अंबावि हूआ तुह्ये भला, श्रीमाता आगलि जे सिला ।
ते टंकावी अलगी नाखि, पासइ करडा भरडा राखि ॥ २०९ ॥

इम बोलइ अंबाई अंब, ते हेठलि दादानां बिंब ।
लाए वरस अग्यारनु घडिउ, करमि कर तह्मारइ चडिउ ॥२१०॥

---

२०५. a कहू बोल तुम्हे सामलु क. कहू बोल तुह्मर्य हू भलु म b तणु आवलु क; मूकउ मघ तणउ आमलउ म c जोता क म. थानिक क. थकु क. d काइ क. श्रावकु क

२०६. a तुम्हे क. b नहितरि क म तुम्ह क. सरिसिउ क, सरिसु म नहीं म. c बीजु क, बीजउ म. स्थानक म. सवे क, सविसु म. संग्रहू क, ग्रहिउ म. d जे क. रहू क, रहिउ अ.

२०७. a भूइ क कहइ क, कहि म. तेतलइ क b जोवरावउ म. एतलइ क. c कहीनि म. d मन्नीश्वर क. मल्या क

२०८. a धरीय क. ध्यान क, ध्यान म. बयठउ क. b क मां आ चरण नथी भूली जवायु छे. होई म. प्रत्तक्ष म c विमलि क, विमलिइ म ताम म d पूजाराश म. परठिउ अ आम म.

२०९. a कहि म. तुम्हे क. b ये म. सला क, शला म c राषि म. d भरडा करडा क. साषि म

२१०. b दादानू क म. c अग्यार वरसनू क. अग्यार वरिसनू म. घडिउ क म d करमइ क, करमिइ म. करि क म. तुम्हारइ क, तुह्मारिइ म चढिउ क, चडिउं म.

खेत्रपाल अंबाई तणी, पासइ मूरति काढे खणी ।
इम कही अंबाई चल्यां, भरडा सरिसा मंत्री मिल्या ॥ २११ ॥
कीधउं कहिउं अंबाई तणुं, भरडा-मन मनाविउं घणउं ।
मोढउ मढ कराविउ तिहां, हिवडां दाढ दीसइ तिहां ॥ २१२ ॥
खेत्रपाल अंबाई तणी, देती दान मूरति आपणी ।
कामिणि सहित करा[विउं] सही, तीरथ जैन थापना हुई ॥२१३॥
आगलि आलेखिउ प्रासाद, भरडे सरडे मांडिउ वाद ।
भूमि अह्मारी विहिचिणि पडी, विणअरथि नावइ पवडी ॥२१४॥
सोविन टका मांडु ओलि, जां प्रासाद तणी हुइ पोलि ।
रापती भूमि तुह्मारी करु, तु लेसिउ जउ करिसि वरु ॥ २१५ ॥
तब सोविन टंका पाथरी, जण जाणइ मांडइ साथरी ।
जिहां वहिचइ अलग अगासी रहइ, भूमि न आलुं भरडा कहि ॥२१६॥
सोनईआ मांडथा चुकडइ, ते ऊपरि जउ पंचम चडइ ।
आपुं भूमि अह्मे [तु] हसो, काम तह्मारूं करिसिउं घसी ॥ २१७ ॥

---

२११ a क्षेत्रपाल क. c वल्या अ d सरसा क म.

२१२. a कीधुं क. अंबाइ क. तणउ म b मन म. मनाव्या क, मनाविउ अ. घणु क. c मठ्ठ (पाठा०थी 'मढ') म. तिहा क, यहा (पाठा०थी 'तिहां') म. d हिवडा अ, हवडा क. दाडु म जिहा क, यहा म.

२१३. b दान म. c कमिणि अ, कामिन क, कामिनि म. करावी थई क, कराविउ जै म. d तीरथि म. हुई म.

२१४. b माडिउ अ. c अम्हारी क. वहिचणी क, वहिचिणि म. d विण गरथिइ नवि लाभइ वढी म.

२१५. a सोवन म. माडु अ. वोलि क उलि म b जा क. उलि म. c अम्हारी क. d तु लेसिउ करसिउ वरु क; लेशु जु करशु म.

२१६. a सोना क, सोवन म. b जन क. जाणइ म. जाणे म. माडी क, माडी म. c जिहि क. वचि क, विचि म. अगासी म. d भुमि अ. आलु क, आलु म. कहइ क म.

२१७. a सोनैया म. माडया क, माडिआ म. चुकडे म. b जु क म. चढइ क, चडे म. c अम्हे क तु हसी क म. d तुम्हारु क, तुह्मारु म. करसिउ क, करशु म. घशी म.

विमलि ते घरि मानी घात, सोनईए सु देमइ घात ।
मांडिउं काज सिराडइ चडइ, कुण गजुं सोनईआ वडइ ॥ २१८ ॥

आप्या सोनईआ अघ कहिया संतोख्या भरडा शवि गया ।
मिल्या सिलावट्ट सइ सात, जे जाणइ घरतारा घात ॥ २१९ ॥

विद्यावास्तु वशेखि लहि, जे पूछयातु ऊतर कहि ।
पूछइ मंत्री जण जण मेदि, आपइ ऊतर वडइ चछेदि ॥ २२० ॥

दूहा

परि प्रासाद अनेक छइ, सुणि मंत्रीसर सार ।
एक थारु दो थार हु[इ], त्रि थारु चु थार ॥ २२१ ॥

मंडपि मंडपि मंडीइ, सोल सोल सोल ज्ञो थंभ ।
थंभि थंभि पणि पूतली, नाटक करती रंभ ॥ २२२ ॥

चिहु दशि मंडप-मांडणी, चिहु दशि पोलि सुरंग ।
मेल्या मंडप ऊपजइ, अट्ठोत्तर सु चंग ॥ २२३ ॥

---

२१८. a विमलिइ म, वली क. मानी म. b सोनईइ क, सोनैए म. जु क. चढसइ क, जुडशि म. c माडिउ क, माडिउ अ सराडइ क, जु' थाढइ म चढइ क. d गजउ म. सोनैआ म.

२१९. a सोनैआ म. जि क, यम म. कह्या क, कह्या म. b सवि भरडा क म. रहिया म. c तेडा क, तेड्या म. सलावट्ट क, सेलावट म. सइ क. d जाणइ वरतावी म.

२२०. a विशेषि क, विशेषिइ म. लहइ क म. b पूछयाना म. ऊत्तर म. कहइ क म c जेणइ क, नव नव म. d उत्तर आलइ क, उत्तर आपइ म. विछेदि म.

२२१. a छइ म b मनीश्वर क c वार क. हुइ क म. d चउ म.

२२२. a माडीइ क. b हुइ क, जु म. c थपि।थपि अ. पण। म. d नाटिक क.

२२३. a चिहू क, चिहुं म. दसि क, दिसि म.–मडणी क म. b चिहू क, तिहु म. दसि क, दिसि म. c उपज्जइ क, उपजइ म. d अट्ठोतर सउ म.

च्यारि अट्ठ किहां उपजइ, च्यार सोल किहां वीस ।
तु पंच्यासी उपजइ, जु दशि दशि एकवीस ॥ २२४ ॥

चुपई

मंडप प्रथम शिलाका कहिया, आगलि गूढ मंडप ते रहिया ।
त्रीजु ते नैवेद्य वखाणि, चुथउ तंदुल-मंडप जाणि ॥ २२५ ॥

मंडप स्नात्र पंचम जाइ, छठउ चुकी-मंडप होइ ।
मंडप समोसरण सातमु, नाटक-मंडप ते आठमु ॥ २२६ ॥

[नुमु गीत मंडप ते नाम, दसमु मंडप वाजत्र-ठाम ।
कौतक-मंडप अग्यारमु], बोलिउ इंद्र-मंडप बारमु ॥ २२७ ॥

माला उछव जे जे कहिया, मंडप पनरइ पूरा थया ।
रंगमंडप मह मंडप नालि, सोल सत्तर सूधा संभालि ॥ २२८ ॥

मंडप कहिउ वलाणा वली, मेघनाद पूरइ मन-रली ।
माली मंडप जोता समइ, मंडप पोलि पोलि नइ गमइ ॥ २२९ ॥

---

२२४. a च्यार क. उपजइ क, ऊपजइ म. b किहा अ. c ऊपजइ. म. d दसि दसि क, दिशि दिशि म. इकवीस म.

क मां नथी; चुपै म.

२२५. a सलाका क, शलाका म. कहिउ क म. b रहिउ क म. c त्रीजु ते नंवेद्य क; त्रीजउ ते म. d चुथु क, चउथउ म. तेदल म. जाणि म.

२२६. a पंचमु क म. b छठु क, छठुउ म. चउकी म. d आठमउ म.

२२७. मूळमां a b c नथी, d लीटी छे. a नवमु म. नांम म. b वाजित्र म. ठाम म. c कौतक म. d चंद्रमंडप म. [मूळमां कडी २२६ नु ज पांचमु चरण छे].

२२८. a उत्सव क, उच्छव म. जय जे क जय ये म. कह्या क. b पनर क, पनर म. c 'नइ' क मा नथी. मंडया तानि क. d सतर क म.

२२९ b मनरली क. c मालीमडपि म. चुवीसमइ क, ठेवीसमइ म. d मडपि म. पोलिनइ क. पोलइन अ.

चिहु दशिना मलीआ जूजूआ, तु मंडप चुरासी हूआ ।
सिखिर तणउ मंडप छइ जेअ, चिहुप पासे सिरीखु तेअ ॥२३०॥

सु मेलु चुरासी-माहि, तु पंच्यासी पूरा थाइ ।
चुमुखि चिहु चिहुनी परिसिद्धि, जेतां मुख तेती हुइ वृद्धि ॥२३१॥

संभलि मंत्री घउ विचार, भूमि देखि कीजइ विस्तार ।
उपरि सिखिरि सिखिरि नवि चडइ, जु कीजइ तु तूटी पडइ ॥२३२॥

भूमिभाग जोई जसवाद, थापिउ पूरव मुखि प्रासाद ।
सबि सावटू दिया सिणगार, सोविन कलस भरया भंडार ॥२३३॥

करि सोवन सांकलां उदार, शिलावट महा हर्ष अपार ।
लागा लख गमे मजूर, करइ काम तां चालइ पूर ॥ २३४ ॥

सात-पुरुस तल पाया तणुं, थिउ अवसर पूरणीआ घणउ ।
पहिली विमल जणावी घात, भरी सादि सइ आवी सात ॥२३५॥

---

२३०. a चिहू क. दसिना क, दिशिना म. मेल्या क म. जू जूआ म. b चउरासी म. c सिगिर क. शिपर म. तणु क, तणा म. छि क. येह म. d चिहू म. सरिपु क, श्रीषा म. हुइ तेह क; तेह म

२३१. a मेलउ म चउरासी क, चउराशी म मांहि म. b थाय क. c चिहूमुखी क, चिहुमुषी म 'चिहु' क मा नथी. चिहूनी क, चिहुनी म परसद्धि क, परसिद्धि म. d जोता अ, जेता क म मुख क, ते मुष म. तेती वृद्धि म.

२३२. a साभली क, संभलि म. वली ('घउ'ने बदले) क म. b करि क. c सपर सपर क, शपर शपर म d त्रूटी क म.

२३३. a-भग क. जोइ म b दसि ('मुखि'ने बदले) क; पूरव मुष थापु प्रासाद म c कोउ क, दीया म. शणगार क म. d कलश क म. भरिया क.

२३४. a सोविन क. साकलां क, साकला अ. b सिलावट्ट क, शलावट म. मनि क म हरष क, हरिष म. c मजूर अ. d काम तेन क. कामनां म. चलइ पूरि क.

२३५. a पुरिस म. तणु अ, तणउ म. b थयु क. पूरणीइं म. घणु क. c वली क. d सादसि क, सादि सइ म. ल्यावु सात म.

सोनईआ रूपईआ तणा, लिउ वदिरा पूरणीइ घणा ।
आविउ विमल वहइ घण सांढि. सामी वदिरा अलगा काढि ॥२३६॥
इणइ वदिरे चेजुं डगमगइ, मांडियां घर नवि आवइ वगइ ।
सोविन रूप गलावी करी, तेहनी ईंट करावु खरी ॥ २३७ ॥
तेहनुं चेजुं संपटइ रहइ, ते डगमगया किम्हइ नवि लहइ ।
सोविन टंक गलावइ जाम. विमल कसुटी पहुतु ताम ॥ २३८ ॥
सूत्रधार जोइ घण कठी, विमल साहा पुणि गाढउ हठी ।
जे जे बोल कहिया मुखि जिम्हइ, ते मरणंति न मुंकइ किम्हइ ॥२३९॥

वस्तु

सत्त समरथ सत्त समरथ, सत्त गढ-माहि ।
सत्त पडा तेणइ कारणि, सत्त खेम निअ चित्त वावइ ॥
सुगर-आण नितु सिरि वहइ, दान शील तव भावम भावइ ।
रणि राउलि सूरा सदा, देवि अंबावि प्रमाणि ।
पोरूआड प्रगट मिलइ, मरइ न मुंका[इ] मान ॥ २४० ॥

---

२३६ a सोनैया म. रुपईआ क, रूपैया म. b वदरा क म. पूरणीइ क. घणु क, घणां अ c साढि अ d थीमी क सामी म वदरा क म

२३७ a इण म. वदरइ क, बद्रे म. जेजु क, वीजउ म. डगमइ क, डगमगइ म b मांडिया अ माडया क, माडया म घरि क. c सोवन म रुप क d ईंट अ. करावी क, पडावी म

२३८. a तेहनू क म चेजु अ, वेजिउ म संपट क म b डगमग या म. कम्हइ क किमहि म. न म. c सोवन म टका क. जांम म d सुहुतु क पुहतु म तांम म

२३९. a घण जोइ कठी क; कसवठी म. b साह पुण क. विमल मन्नि ए गाढउ हठी म; c ये ये म. वस्या निज मुखइ क, कहिया यम यमइ म. d मूकइ किमइ क, ते ते मरणि न मूकइ किम्हि म.

क मां 'वस्तु'नो उल्लेख नथी.

२४०. b माहि म. c पडा (पाठा० थी 'पडा') म तेणइं क कारणइ क, कारणिइं म. d व्येन क, चेति म. वावइ म. e सगुरु क, सुगुरु म. आण क म. 'नितु' क मां नथी. शरि क म. f दांन म. तप भाव क; शील नितु भावि भावइ म. h देव क, देवी म. प्रमांणि म. i पोरुआड क. प्रगटमल क, परगटमल म. j मरणि म. मूकइ क, मूंकइ म. माण क, मांण म.

चुपई

स्वामी सोविन घदिरा जेह, हवडां अलग रखावु तेह ।
अवसरि वात कहीसि वली, चेजुं चालइ जव मनिरुली ॥ २४१ ॥

भूमि घणी छइ वालीनाह तेणइ लंपटि लाधउ वाह ।
जे जे चेजुं दीशइ चडइ, ते ते राति पाछउं पडइ ॥ २४२ ॥

इम करतां हूआ आठ मास, थया सिलावट्ट सवे निरास ।
आवी पूछइ विमल ज साहा, तेतलइ बोलीउ वालीनाह ॥२४३॥

कलकलतु क्रोधि घमघमइ, माहरूं ठाम न मूकुं किमइइ ।
कहिना जिन कहिनु प्रासाद, कुण मंडइ मुझ सिरिसु वाद ॥२४४॥

मइ जीता सुर किंनर कोडि, माहारी समवडि आवइ जोडि ।
विमल विणग सिरखा स्या लोक, माहर[इ] मनि ते त्रभोवन फोक ॥२४५

विमल भणइ सुणि वालीनाह, खीर खांड लि मोदिक लाह ।
आलउं बलि जु आपइ धीर, तेतलइ बोलिउ खेतल वीर ॥ २४६ ॥

चुपै म

२४१. a सोवन म. यदरा क म. जेय क येह म b हवडा अ. अलगा क म. राषु क रापु म तेय क c वहीसइ क, वहीशि म. d वेजू म. यम म. मनरुली क म.

२४२. a भूमिघणि म. छिं क, छि म. b लाधु क. c ये ये म. वेजउ म. दीहइ क म d ते ते चेजु राति पडइ क, ते ते सघलउ रातिइ पडइ म.

२४३. a ईम क. करता अ. हू क, हीआ म. आठ्ठम्मास क छ मास म. b थया क म. सलावट्ट क, सलाट म. c विमल साह क, विमलइ साह म d तेतलइ क आविउ ('बोलीउ'ने बदले) क म.

२४४. a कलकल क, कलकलउ म. क्रोधि क, क्रोधिइ म. घमघम धमइ क. b माहरु क. ठाम म. मूकु क. मूकउं म किमइ क म. c कहिनु क, कहइनु म. d माडइ म. मत म. सरिसु क, सरिसउ म.

२४५. a मइ क. किंनर क. घणा क म. b नाद उतारथा [उतार्या म] नरवर तणा क म. c वणिग क म. सरखास्या क. सरखा स्या म. d माहरइ क, महारइ म. 'ते' क मां नथी. त्रिभोवन ते म.

२४६. a वणिग म. सणि क. b मोदिक लि क, मोदिक लिइ म. c आलु क, आलु म. आपु क म. d तेतलइ क.

जीव तणी बलि दिउ मंत्रीस, तु हूं वलती नाणुं रीस ।
रहिउ मंत्र दि गाली सोइ चेजं सदा सह्मारे होइ ॥ २४७ ॥

पडी रयणि करि खाडूं करी, दीवा छाहि रहिउ सत्त घरी ।
आविउ वाली ते विकराल, धाउ मंत्री गयु देई फाल ॥ २४८ ॥

तां गिरिवरि गज गर्जित करइ, परथल पाणी सालरि चडइ ।
पुछगुछ पोढउ सिरि धरी, जां करडिउ नावइ केसरी ॥ २४९ ॥

खेतल वीर हतु जे वंक, दीठउ विमल थयु ते रंक ।
राव करइ अंबाई कन्हइ, विमल न मानइ जो मूंहनइ ॥ २५० ॥

अंबाई कहि खेतल जाणि, पह सिउं कोइ न पुहचइ प्राणि ।
संतोखी कीधउ सासतु, नेवज देसि मनि भावतु ॥ २५१ ॥

जउ तुं वलतुं मारोसि जीव, तु नही छूटइ करतु रीव ।
पहनी हाकइ फाटइ आभ, पहसिउं बल करतां नहि ला[भ] ॥२५२॥

२४७. b हे क; तु हू हीइ न आणउ रीस म. c मत्री क म मनि लागी सोइ म. d चेजु क, वेजू म. सवारे क, समारे म.

२४८. a पाडु क, पांडू म धरी म b छांहि म. सत घरी क, सतरी (पाठा०थी सत धरी') म c ति क म. वकराल क. d मत्रि ते देइ म.

२४९. a जा म गिरिवर क, गयमर म. गर्जित क म. b परिथल क, परथल म सालर क, वरइ म. c पुछ गछ क, पुच्छ गुच्छ म. गाढउ क, पोढउं म. शिरि क, शरि म. d गडउ क, करडु म. नाचइ म.

२५०. a ख्येतलवीर क ये म. रंक क b दीठइ क. c कह्इ म. d जउ क. तूहनइ क.

२५१. a कहइ क. ख्येतल क. जाणि म b एहसिउ अ, एहसूं म. पुहुचइ क. c कीधु क. शासतु क, सांसतु म. d नैविज क, नैवज म. देसिइ म मन क

२५२. a जु तू वलतु क म. मागिसि क, मागिशि म. b छूटइं क, छूटउ म. c हीकइ अ, हाकइ क, हाक म. फाटि म. d एहश्य म. करता अ. नवि क, नही म. लाभ क म.

जु तुं कांई ज्यान करेसि, तु तूं वलीअ घण दुक्ख पामेसि ।
ए विणग नही कहिनइ हाथि, घरी नाक नाथेसि नाथि ॥ २५३ ॥

फोकट तुं चलि घालइ म मुंछि, ते तुझ साद्दी नाखइ पुछि ।
निरदय नरि नवि मानी आण, इहां ताहरु छइ विनय वखाण ॥२५४

तुझे म थासिउ अति आकुला, दिवश विसु तिलवट वाकुला ।
वडां वेढमी नइ लापसी, दीठी चलि ते लेई गयु हसी ॥ २५५ ॥

वालीनाह मनाविउ जूउ, तव प्रासाद-गभारु हुउ ।
घन थोडउं लागइ आपणउं, करु काम सवि सोविन तणउं ॥२५६॥

मोटा संघ पुरुष कें कहइ, सोविन जिनमंदिर किम रहइ ।
हवइ आव[इ] छइ पडतु काल, तुझ सिरिखा किहांथा भूपाल ॥२५७॥

आरासणि उघाडउ खाणि, नीपाउ तेहने पाखाणि ।
ओतरीआ रहकल संचरइ, बलद वईठा फूलेर चरइ ॥ २५८ ॥

---

२५३. a तूं म. कांइ म. घ्यान अ अन्य क, यान म करेशि म. b जु त एहसिउं चल माडेसि क, जु तूं एहशू चल माडेशि म. c एह क म. वणिक क, वणिग म. नहि म. कहइनइ क d नाथेसिइ म.

२५४. a तूं चल घालि क म. मुछि क म. b तुम्ह क. नापइ साही क; लांपइ म. पूछि क, पुछि म. c नर क म. मानइ क म. आण म. d इहा क म ताहरु क. 'विनय' क मां नथी. विखाण क, वखाण म.

२५५. a तुम्हे क. आवला म b दिवसवसि क तिलवइ क, तिलवट म. वाकला म. c वडा अ. लाफसी क. d दिठी क, दिथे म. घेतल ('ते लेई'ने बदले) क म. थिउ गुशी म.

२५६. b हुउ म. c थोडउ अ, थोडुं क, थोडू म आपणुं क d कांम म तणु क, तणउ अ.

२५७ a गोठी (मोटा'ने बदले) क; मोटा पुरुष संघवी कहइ म. b सोवन म. c हवे म. आवइ छइ क म. d सरिखा क म किहाथा अ. छइ म

२५८. a आरासण क उघाडु क, ऊघाडउ म. पांणि म. b तेहनी क, तेहना म. पाषाण म. c जोतरीया म वोतरइ क. d बयठा क, बइठा म. फूलिरि क म.

फीजइ सबला नाहर दोर, कीजइ जण जे जाणइ जोर ।
आरासणथी उंचा चडइ, पाहण रूपामूलि पडइ ॥२५९॥

मांड्या मंडप नइ थिर थंभ, घडी पूतली रूपि रंभ ।
घाटपाट तोरण कोरणी, दंड कलस वसपति धज घणी ॥२६०॥

दीपइ देहरी तणा झमाल, आगलि चुक रचिउ चु-साल ।
सेत्रुंज अष्टापद गिरनार, तेह तणा मंडया अवतार ॥ २६१ ॥

नेढा वेढा बंधव जोडि तेह तणा सुतनइ थयु कोड ।
दशरथ नाम प्रसिद्धउं जेअ, विमल तणउ भत्रीजउ तेअ ॥ २६२ ॥

हस्तशाल जे आगलि घडी, विमल-मूरति जे घोडइ चडी ।
हरखि धन खरचिउं आपणउं, ए करणी भत्रीजा तणउं ॥ २६३ ॥

नाच गीत नाटक नवरंगि, थानकि थानकि मूरति चंग ।
कुसम कुली ऊतरइ अनेक, धारू वाडी तणा ववेक ॥ २६४ ॥

---

२५९ a सबलां म नांगर क म. c ऊचा क म. d रुपामुलि क, रूपामूलिइं म

२६०. a माड्या अ, मड्या क, मांडिआ म. b रुपि क, रूपिइं म. c कलश क. धज एते घणी अ, धन वतिपति घणी क, धज झलकर घणी म.

२६१ a देह तणा क. दहेरा तणी म. a चउक म. करया ('रचिउ' ने बदले) क चउसाल म c शत्रुंजि क, सत्रुज म. अष्टापदि म. गरिनारि क, गिरनारि म. d माडया क माडियां म. अवतारि म

२६२ a नेढा क जोड क म. b सुतनिइं थिउं म c दसरथ क नामि क नांमि म प्रसिद्धउ क. जेय क, येह म d तणु क. भत्रीजु क म तेय क, वेह म.

२६३. a हस्तिसाल क, हस्तिशाल म. ये म. घडी म. b मूर्ति क, मूर्ति म. 'जे' क मा नथी ते म. c हरपि क, हरषिइ म. वेचिउं क. आपणुं क. d तणु म.

२६४ a नाटिक क. नवरंग क म. b थानिक थानिक क, थानकि थानकि म. c कली म. d वाड क. तणी अ. विवेक क म.

विमलमंत्रि मनि उलट घणु विस्तर करइ प्रतिष्ठा तणउ ।
लोक लक्ष आवइ अभिराम, धर्मघोषसूरी तेडया ताम ॥ २६५ ॥

वस्तु

विमल-वसही विमल-वसही, विमल-प्रासाद ।
पित्तल भार अढार सम, आदिनाथ प्रतिमा प्रसिद्धी ।
संवत दश अठ्यासीइ वर प्रतिष्ठा शुभ लगनइ किद्धी ।
दंड कलस धज लहिलहइ, उछव मेरु समान ।
मूल नायक थिर थापीआ, जिम उदआचल भाण ॥ २६६ ॥

चुपई

विमल मनो[र]थ चडया प्रमाण, वंदिण बोलइ मंगल वाणि ।
संघलोक पहिराविउ सहू, महीअलि उछव कीधा बहू ॥ २६७ ॥
मेरु सरीसु मंडइ वाद, इंद्रभवनि अधिकु प्रासाद ।
जोतां चित न मेल्हण जाइ, आवइ उलट अंगि न माइ ॥ २६८ ॥
अर्बुद-शिखिर अनोपम कीध, तेडी संघ भलामण दिध ।
गाम तणा कीधा मासीआ, पोरूआड पासइ वासीआ ॥ २६९ ॥

---

२६५ a उलट म. घणउ म. b विस्तार क. प्रतष्ठा क, प्रतिष्ठा म तणु क. c आवइ आवइ क. अभिरांम म d धर्मघोपसूरि क म तांम म.

२६६. a -वसहीय क म. c पित्तल भार अढारनी क, पित्तलमइ अढार भारनी म e दस क; १०८८ म. f प्रतिष्ठा क, प्रतिष्ठ म. शुभ म. लगनि क, लग्नि म. कीधी क म. g कलश क. लहइलहइ क, लहलहइ म. h उत्सव म. मेर समान क. i थापिआ क, थापीया म. j यम क म. उदयाचल क, उदयाचलि म भांण म.

चुपै म.

२६७. a मनोरथ क म. चडिआ क म. प्रमाण क, प्रमाणि म. b मंदणि क. वाणि म. c पहिराविउ क म. d मलीआ क. उत्सव क म.

२६८. a सरिसु क. मांडइ म. b मेरुभवनि क. c चिनि क म म्हेलणि क. d ऊलटि क, ऊलट म अंग क.

२६९. a शिषर क, षषर म. कीद्ध क, किद्ध म. b दीद्ध क म. c दीधा क. मासीया म. d पोरुआड क. वासीया म.

आदि जनम कल्याणिक सणउ, चैत्र अंधारी आठमि गणउ ।
वहींइ जिनवर पूजा हूता, पूजारा पामइ कणहूता ॥ २७० ॥
आज लगइ ते चालइ रीति, अमरख कोइ न आणइ चीति ।
तीरथ वालिउं विमल प्रधानि, सहू संतोख मनाविउं दानि ॥२७१॥
मुंडइ मुंडइ वाधिउ व्याप, चिहु दशि अर्बुद चडिउ प्रताप ।
लूणग-वसहीना जूजुआ, प प्रासाद पछइ सचि हूआ ॥ २७२ ॥
संघ लोक वलीउ परिवार साथि धर्मघोष गणधार ।
हरखिउ विमल चंद्रावइ-धणी, पाछा आव्या मंदिर भणी ॥२७३॥
मागत लोके मागिउ दूउ, करमी कल्पवृक्ष तव हूउ ।
करइ राग ते लीलविलास, चिंतामणि परि पूरइ आस ॥ २७४ ॥
आलस निद्रा अलगी करु, कविता-बोल कर्णिके धरु ।
विमली [श्री] कहीसुप्रभात, तेह तणउ बोलिसु अवदात ॥ २७५ ॥
नवइ खंडजु अवसर हूउ, प प्रस्ताव कहीसि जूउ ।
तिहां वर्णन श्री नारी तणउं, नाम विवेकि राखिउं घणउं ॥२७६॥
मेर तणइ मस्तकि चूलिका, सांहि सिरिवरि जिम वेणिका ।
लिखिमी पूरी जु घरि गजा, पूरे प्रासादे हुइ धजा ॥ २७७ ॥

---

२७०. a जन्म क. कल्याणक क म. सुणु क, सुणउ म. b चैत्रि म. भणु क, तणउ म c तहीइ अ, तहीइ क, तिहां म पूजाहतां म. d कणहृतां क म.

२७१. b चिंति क म. c वालिउ अ, चालिउ क. प्रधन क, प्रधानि म. d संतोषि क. मनाविउ अ,

२७२. a मानाविउ क दांनि म मुडिइ मुडिइ म. व्याधिउ क. d चिहू क, चिहु म. दसि क, दिशि म. अधिकु ('अर्बुद'ने बदले) म. चढिउ क d प्रसाद क. हूया म.

२७३. b साथि क, साथिइं म. धर्मघोष क म.

२७४. a मागत जन ते क मागइ क. b करमी क. ते क म. d चतामणि क, चिंतामणि अ.

२७५. b कर्णके क म c विमल श्री क म. कहींइ क, कहइ म. सुप्रभाति क म. d तणु क बोलसि क, बोलेसु म.

२७६. b वहीसइ क, कहीशि म. c तणु क. d विवेकइ क, विवेकिइ म राषिउ अ. घणु क

२७७. a मेरु तणउ म मस्तकि क, मस्तक म. b सोहइ क म. शिरवरि क. यम क म. वीणका क c लक्ष्मी क, लषिमि म परियजा (पाठा०भी 'परि गजा') म. d प्रगादे क. ध्वजा म.

नवइ खंड पूरा प्रमाण, जु सुणीइ श्री तणउं वखाण ।
श्रीइ सोह चडावी घणी, फहीइ कल्पवेलि कुल तणी ॥ २७८ ॥
खंडि खंडि मति छइ निर्म्मली, पढतां सुणतां संपति वली ।
मुनि लावण्यसमयनी वाणि नवइ खंड ए निर्म्मल जाणि ॥२७९॥

इति पंडित श्रीलावण्यसमयगणिकृते श्रीविमलमंत्रि, प्रगट प्रबंधे नवरंग नवखंडे, स्वप्नाधिकारे धर्म्मस्थित श्राद्ध स[त्वे]कविंसत्यादि गुण सम्यक्त्वादि, द्वादशव्रत द्वात्रिंशदनंतकाय द्वाविंशत भक्ष नाम गलस्य, चंद्रोदयस्थितइ, पक्वान्नप्रासुक लवण, कालश्राद्ध त्रिकाल देवार्चन, ग्रहदेवालकविचार, चंद्रोदय आलोचनाधिकारे प्रासादो‑पदेश, अचलेश्वरोत्पत्ति श्रीमाता प्रबंधि[व]शिष्टयोमिधानो अंबिका आराधनं, भरडकमनापनं, सुवर्णकादिकतापनं, प्रासाद‑स्थापनं, एकविंशत मंडपाभिधान‑प्रकाशनं, वालीनाहजीवनं, प्र[ा]सादपरिपूर्णनिष्पत्ति, गजशाला आकारापण, प्रतिष्ठा महोछव अढार भार पित्तलमय श्रीआदिनाथमूर्त्तिस्थापने, मूलस्थापन‑महोछवानंतरं गृहागमनं, श्रीवर्णनाधिकारे, नव खंड समाप्तः ॥

---

२७८ a पूरा म. परमाण क, परमाण म b तणु क वषाण म c थोइ क वडावी म d घर तणी म

२७९ a छइ मति नरमली० क. छइ मति जूजूइं म b पढता गणता अ मिलि म. d एतलइ नवसूं पड वषाणि म. २७९ क म

पुष्पिकाओः—— ‑विसत्यादि अ; प्रवतिशिष्टा‑ अ; सुवर्णका‑ अ; पित्तलामय अ;

इति श्रीपंडित लाव्यण्यशमयगणिकृते विमलमत्रि मनोहर प्रगट प्रबधे नवरंग नवपडे नवम षड संपूर्ण ॥ छ ॥ क,

इति श्री विमलप्रबधे नवरस नवपडे स्वप्नाधिकारे धर्मस्थिति, श्राद्ध सत्वेक विंशत्यादिगुणा सम्यक्त्वादि १२ व्रत, ३२ अनतकाय, २२ अभक्षनाम, गलन चंद्रोदयस्थिति पक्वान्न प्रासुक लवण काल श्राद्ध त्रियादेवार्चन गृहदेवालय विचार आलोचनाधिकारे प्रासादोपदेशे अचलेश्वरोत्पत्ति श्री मात प्रबंध वशिष्टाय अभिधान अबिकाराधन भरड मनापण सुवर्णकादि तापन, प्रासाद स्थापन एकविंशति मडपाभिधान प्रकाशन, वालीनाह वेतलवीर जीवन प्रासाद परिपूर्ण निष्पत्ति गजशालाकारण प्रतिष्ठा महोत्सव अढार भार पित्तलमइ श्री आदिनाथ मूल स्थापनिकि स्थापना । इति स्वप्नाधिकारे नवम षंड समाप्तम् श्रीरस्तु ॥ इति विमल चरित्र समाप्त ॥ म.

चूलिका

चुपई

पुहवीतलि पोढा परगट्ट, पचसया मलीआ भल भट्ट ।
थीघर भूपति भूधिर भला, कल्पां नाम कहुं केतला ॥ १ ॥

अ क मा नथी चूलिका म

'चुपई' शब्द क, मा नथी, चुपै म

१ a पुहुवीतलि क b पचसया क म मलीया क सिलीया म c भूधर भूपति क म d कल्पा अ कल्प्या म कहू क कहइ म केतला म मात्र म मा आ पछी १ कडी वधु —

अध, अचल अमरेश्वर अलु, इस उमापति, रूडु रसु ।
कमल, कृष्ण, कुजर, कामलु पेम पाम, पेचर, पोपलउ ॥२॥ म

आ पछी क म मा वधारो –

गय गदाधर गणपति भला, घोघर घूघू घूसु घलु ।
नागु नगु नारायणे नलु, चपक चचल चाडु चलु ॥२॥ क

a गलु म b घूलु, घूघउ म c नागु, नारायण म d चंपु, चदउ, चापु चलउ ॥३॥ म

छाडु छाहड छीधु छलु, जोग जगु जालधर जलु ।
झझण झीझु झाईउ झलु, नाईस नरचद नारद नलु ॥३॥ क,

a छाछु छाहलउ, छोलउ, छलउ म b जलउ म c झाझण झीपउ झाईउ, झलउ म d नाकर, कलउ म

आ पछी मात्र म मां १ कडी वधु —

टाहु, टोकर, टामल, टलउ, ठाईच, ठाकुर, ठीमण भलउ ।
डोसु डुगर, डाहु, डलउ, ढोलउ, ढहुउ, ढाहु ढलउ ॥५॥ म

आ पछी क म मा वधारो :—

नरपति नरदे नागु नरु, नीसल नाथु नाकर हरु ।
ताहलु तेजु तापी तलु, थावर थाहर थिरीउ थलु ॥४॥ क

a नाथु म b नीसल, नारद, नानु, नरु म. c ताहालउ, तेजल, तापी, तिलउ म. d थावर, थारू, थरीउ, थलउ ॥६॥ म.

देवु देधर दानु दलु, धाधर धरमु धीरु धमु ।
मुजु माकु मेहु धनु, नाकु नरीउ नील अलु ॥५॥ क

a दादु, दलउ म. b धाधल म. धलउ म c मूजउ, मांकु, मेहउ, मनउ म. d नकु, नरेश्वर, नीलउ, नलउ ॥७॥ म.

आ पछी मात्र म मां २६ कडी वधु —

पदमु, पाचउ, पोपट, पलउ, फाईउ, फागण, फालु फलउ ।
बाधु, बलीउ, बीजल, बलउ, भोगी, भूधर, मीसु, भलु ॥८॥

मोटउ, मटकु, माडण, मकु, जागु, जालु, लाखु, रखु ।
रूडु, राजु, रुपु, राम, रीडु, रतनु, देवउ, दाम ॥९॥

लींबु, लहूउ, कालु, लु, विरूउ, वेगड, वीसउ, वलु ।
सीहु, सामल सामउ, सवउ, सूरु, सोनु, लटकण, लवउ ॥१०॥

चेलु, पेतु, हरपति, हस, धाहानु, कीन्हु, कल्हण, कस ।
अजय, विजय, गोवर्धन, रंग, लक्ष्मीधर, लीलाधर चग ॥११॥

सुदर, सोमेश्वर, श्रीवंत, आस, अकल, आनद, अनत ।
गगाधर, गोपति, गोव्यद, धरणीधर, माली, मचकुद ॥१२॥

श्रीपति, शिवकर, माहव, मेर, सागर, नागर कुभ, कुबेर ।
हेम हीर, हरखु, हींगोल, कानु, कर्मण, करणउ, कोल ॥१३॥

कासमीर, दामोदर, राण, भारमल, भाधर, नइ भाण ।
मगल, पिंगल, गोगिल, गोर, रैकड, वकड, मकउ, मोर ॥१४॥

घाघु, धींगु, धूमु, घमउ, सीधउ, सादउ, सूदउ, समु ।
सारण, तोरण, नइ श्रीकसु लाडण, लापु, आढु, असु ॥१५॥

धरणउ, धर्मण, गोगद, गेद, विश्वभर धारीधर, वेद ।
सरवण, समधर, सहि, सुरंड, लूणउ, चूणउ, चेल्ण, चड ।
नीद, बरघु, नइ वणवीर, दासु, वासु, हर्ष, हमीर ॥१७॥

धाघ धणपति, धूंधउ, धवल, धाछउ, विद्याधर नइ विमल ।
धूल, दिवाकर दासु, दसु जोम्हण, मोम्हण वेल्हल, वसु ॥१८॥

सहिजउ सुदर सादउ, सदउ, लोलउ लूलउ गेदउ, मदउ ।
भरसु माधु भाडु, भडु गेलउ गोल्ड, गणपति गदउ ॥१९॥

नीतु नरसुद न नरसिंग, वइरु वइजउ, वजउ, वरशग ।
जीजु, जावड नइ जेसिंग, भावड, भोज, समर, थीरंग ॥२०॥

गाजण, साजण, गोनउ गनउ, वेहलु, वीजल, वीरु, वनु ।
माजउ मेरू मूलउ, मनउ, जाजउ, आलप, जालु जनउ ॥२१॥

हासु, हाडु हरि, केसरी, मीतु, मोकल, माहेश्वरी ।
कथिल, कोचर, कुतल, कीत, देत, देल्ह, देईउ, आदीत ॥२२॥

नरहरि, नाम, नाल, नरसूर, हल हेलर, हरभु हरसूर ।
सामेसाल, सागु साईउ, महिरू मोक मोप, मादउ ॥२३॥

उज्जल, काजल, कूह, कूंप नरसु, वसिहर, वीझ विरूप ।
सेघ मेघ सिंघउ सारिंग, नीलकठ नरसु नारिंग ॥२४॥

रुद्दु, उदेसी राजसी तोल्ह, तिहुणउ, नइ तेजसी ।
वीकु, वीकम, नइ, कर्मसी, लखमण, लद्दू रणु लूणसी ॥२५॥

आक, कूक भडसी, भीमसी, देवीदास, देवु, देवसी ।
गधू गोध जोध धर्मशी प्रास, प्रेम, पूरण प्रमसी ॥२६॥

देवदत्त शिवरा, जहरान, गगाजल गिरूउ, गणराज ।
मेहाजल मातर, महिरान सोमदत्त सोमु, श्रीराज ॥२७॥

सापु सजनु, गज गेजलु, भरत, मूण, भोलद, भोगउ ।
थीमु, वद्दु अद्दु देपाल सदयवच्छ, श्रीवछ, श्रीपाल ॥२८॥

टीलउ हीसउ, टापर टकू गोगल, गोपी, छपपति लकु ।
रामण, महिरामण, टीलीउ, झल्हउ झा, झवलु झालीउ ॥२९॥

जूठउ येठी, टेभल, पउ घरकण धूल फूल, वाघलउ ।
उडल, रोडल, मोडल मींद, लाडु लाल, ल्खाई, लीड ॥३०॥

ठीमराउल, रणसु सीम, मलु, मदनु मदिर, मुगताफलउ ।
शिपु, सदाफल, शिव, थीपलउ, सीतल, सपु, सिवु, शंपलु ॥३१॥

वासु वधउ ब्रह्म वेताल, रा-रंजण भूपण-भूपाल।
ईचु ऊजल भल्लु महिराज, पुंजउ प्रभाकर, पेचु पहिराज ॥ २ ॥

वाहड छायउ नइ हरिसिद्ध, पंचयायण परखु प्रसिद्ध ।
सहिदे घलदे गुरु केदार, मन्या भट्ट अर्बुद गिरनारि ॥ ३ ॥

पंचसया अधिका अग्यार, प्रगट्ट भट्ट परदेसी सार ।
कीधा चडणि तरल तोखार, लीधा सकल सुहड-सिणगार ॥ ४ ॥

कीरत्ति कलयुगि सुणी अपार, विमल समु को नहीं दातार ।
चाल्या आस करी अति घणी, भड सिरया चंद्रावइ भणी ॥ ५ ॥

दूहा

मारगि वेगि वही गया छंडी नव नव देश ।
चंद्रावइ नगरी तणी पोलि कीध प्रवेस ॥ ६ ॥

रहीउ, पहीउ, पूनउ पतु, वयरागर, रतनागर, रतु ।
घोरी, धुंधल, दीवाधरु, गोजल, मयगल, महीसागरु ॥३२॥

ब्रासण, ब्रबक, तोकन तकु नेद्दु वेढउ, वीदु वकु ।
मूगल, माणिक, मनकु मकु, थूलण, फूलण फूटउ, फकु ॥३३॥

२. a वासण वदु म. ब्रह्म अ क. वैताल म. c इचउ अजलु सामल सधराज म. d पुज म. पथउ म. क मां आ कडी नथी.

३. a वाहड, माहड म. परसिद्ध क, हरसिद्ध म. b पचसया क. पचायण म. पुरखु क, परखु म. हरिसिद्ध क, परसिद्ध म. c वहिदे क म. गुरुस केदार क. d मिल्या क म. गरिनारि क, गिरनार म

४. a पचसया क. अग्यार क, इग्यार म. b प्रगट क म भाट क. परदेशी म. d लीधु क लिद्धा म सुभट्ट म. सणगार क शृंगार म

५. a कीरति कुलयुगि क b नहि को म. d सरिया क, सरपा (पाठा०थी 'सरिया') म. ~धणी क, (पाठा०थी 'भणी') म

६. a वेगि क. पहिला (पाठा०थी 'वही') म. b छडीअ म. देस क म. b पोलिइ क, पोलिहि म. करइ क. करिउ म. प्रवेश क.

सहड रूप समरथ सवे, पंचसया भड भट्ट ।
पोलि पइसत पोलीइ, पोलइ थंभ्या थट्ट ॥ ७ ॥

पेखि विमासइ पोलीउ, पंचसया असवार ।
दडायुध दीसइ भला, झबकइ सवि झूंझार ॥ ८ ॥

पूछइ कुहउ तुह्मे किहां वसु, कवण गाम कुण ठाम ।
कारणि केणइ पधारीआ, कवण तुह्मारुं नाम ॥ ९ ॥

वसु जे नरवर-देसडइ, नाम भणावुं भट्ट ।
पोलि म रूंधिसि पोलीआ, मेल्हि वहिली वट्ट ॥ १० ॥

कवण कज्जि तुह्मे सामटा, भंजउ मननी भ्रांति ।
पट्टणे भमइ हो पोलीआ, तुं सांभलि पकंति ॥ ११ ॥

चिहु खंडे चुपट्ट भमु, जिहां वंकड वड ठाम ।
तिहां तिहां विमल वखाणीइ, चंद्रावइ अभिराम ॥ १२ ॥

---

७. a सुहुड क, सुहड म सवि म b पचसया एक भट्ट क, पचसयाइ भट्ट म. c पोलि क पोलिइ म पइसित क d पोलि क, पोलिइ म. थभिउ क, रूंढिउ म

८. a पखि क, परि (पाठा०श्री 'पिखिस') म विमासइ क, विमासइ म. पोलीउ म. b पचसया क म c घणां ('भला'ने बदले) म.

९. a पूछ क. वहु तुम्हे म. जिहा अ क b गाम म कवण क. ठांम म c कारण केणि क, केणइ कारणि म पद्धारीया म. d तुम्हारा क, तुम्हारु म नांम म.

१०. a वसु जन वसु जन देसडइ क, वसुति जिनवर देसडे म. b कहावुं क, भणावू म c रुधसि क. रुधिशि म पोलीया म d वहिली मेहले क; मेहली म

११. a कज्ज क. तुम्हे क. b भंजु क भ्रति क, निति म. c भट्ट भणइ हो क म. पोलीया म. d तू सभलि म.

१२ a चिहू क चुपट क, चउपट म भमू म. b जिहा वड ठकर नाम क, जिहां वड ठकर ठाम म.

अम्हे तसु पेखणि आईआ, मूरख अवर न कज्ज ।
परगट्ट घोलिउ पोलीउ, विमल नही घरि अज्ज ॥ १३ ॥
झायक सवि झाखा थया, भट्ट विमासइ मन्नि ।
कइ चलीइ पाछी वला, कइ रहीइ एक वन्नि ॥ १४ ॥
जेह घरि हुइ नर निरमलु, तीह घरि तिसीअ ज नारि ।
जोडि न युगती पामीइ, सही जोता संसारि ॥ १५ ॥
वसुहा विमल वखाणीइ नारि किसी घरि तास ।
ते पणि अलजु अति घणु जईइ जोवा आवास ॥ १६ ॥

चुपई

चडवड चुपट्ट चाल्या भट्ट, पचसयातु पोढउ थट्ट ।
नगर-माहि घर जोइ जास, सवि सिरीखा छइ आवास ॥ १७ ॥
घर राउला भणी जई चडइ मोटा मंदिरि मूला पडइ ।
पूछइत पाम्या विमल आवास, करि अवतार कोउ कैलास ॥१८॥

---

१३ a अम्हे क तस म पिखणि क, पेक्खणि क आवीया म c परगट म

१४ a झावकि क झापा अ झंपा म b विमासइ म मनि क c चलीइ क, जई म पाछा क म d कइ रहीइ दन एक दनि क, रही इकि दो दिशि म

१५ a नर हुइ क म नरमुउ क, निर्मलउ म b तेह क म तसी क अन नारि क न नारि म c जोड क म

१६ a वसुहा अ b तसी घरि क किसी छि तास म c पेषिणि क, पेखणि म अलजउ म घणउ म d जई जोईइ क जै जोवा म. आवास क म

चुपै म

१७ a चड चड म चुपट क म b पचसयातु म c नगर माहि क. d सवे क, सद्दे म सरिया क सरीपा म छि म

१८. a राउलां म जे म चडइ क b पोढे क, मोटे म मदिर क c पूछत क म पाम्या म अवास म d कहि अवतरिउ करि म. कैलास क

घर देखी मोटा हरखीआ, पक भणइ तिणि परखीआ ।
किं किजइ कृपणइ-[नइ] घरे, अति मोटा धूले घलहरे ॥ १९ ॥
घरि पश्चाला वरि झंपडां, पद्दि विलंबइ जिहि बापडा ।
अवसरि रांधी कोरी लहइ, वीसामइ घर ओटइ रहइ ॥ २० ॥
कृपण[इ] मंडाविउ आवास, नारि भणइ सिउं मांडिउ पास ।
खरचिउं धन आणिसि ठाणि, घरधणीआणी बोली वाणि ॥२१॥

१९. a मोटा देषी क, मोटां देषी म. हरषीया म. b तिसिउ क, तिइ दाइ म. परषीया म. c कीजइ क. कृपणहने क, कृपणने म. d मोटु क, मोटे म.

२०. a पश्चालां म. वर क. झूपडां क झूपडा अ. b पषि क. रहइ अविचल बापडां क, पाह अविलवइ मिहां बापडां म c राधी अ. d विसामइ म. उठइ क. उटइ म

२१. a कृपणि क, कृपणि म. मंडाव्या म. b सि क, शु म. माडिउ अ. c घरचु धन क. परचिउ अ क, परचिउ म. किम आणसि कां, किम आणशि म. ठाम क, ठाणि म. d वांणी म.

पछी क म मा वधारोः—

कोपि कृपण तव ऊठिउ भडकी, घर आगणि करावसि पडकी ।
कडी कापडी रहइसइ अडकी, दिन्दे बारे आसिइ पवडी ॥२५॥ क

a कोपि म. पाठा०मां 'फडकी' म. b आंगणइ करावेशि म. c रहशइ म. d जाशइ भडकी ॥५४॥ म.

पही पहुण न तु न वेरु, वाम्हण सरवण यती अनेरु ।
दिन्दे बारे फोकट फेरु, दिहाडी परच वलइ धन केरु ॥२६॥ क

a परहुणउ कोइ न वेरु म. b ब्राह्मण म. यतीअ म. c दीधे म. d दाहाडी म घरकेरु ॥५५॥ म.

म मा अहीं 'चुपै' छे, क मां नथी.

एक साकली भली भालवे, वयठीय तन बार जालवे ।
हूं गाढउ डाहू तुझ पाहि, थालमि धन थोडा दिन माहि ॥२७॥ क

a संकली भलीअ भरावे म. b बिठी बार यतन जलावे म. c आहूं म. पाहिइं म. d वलशइ म. दिन थोडा मांहि ॥५६॥ म.

छंद भाग्य

मणइ भट्ट घर देखि म दरखु, घट्टरि जईनइ पहिलु परखु ।
धुरे दातार जोउ मयवट्ट[उ], तु सुंदर तु सही सुखवट्टउ ॥२२॥

चुपई

वात करंता पामी पोलि, आगलि मंदिर मोटी ओलि ।
जोतां जामलि रंग रसाल, सवि सिरखां सवि झाकझमाल ॥२३॥

करी निरति विहु पासे सामि, विचिलि मंडपि आव्या ठामि ।
दिट्ठउं वासभवन-वारणुं, इंद्रभवन लहिउं आरणउं ॥ २४ ॥

जोई जव मंदिर-मांडणी, छाजे छाजे छांडी छांडणी ।
ताजां नलीआं उंचां घणां, रूप राछ ते रलीआमणां ॥ २५ ॥

कि कीजइ अति ऊचा ताड वरति वारु नीचा ताड ।
फल ऊचा नइ दाझइ देह नाहना वाट न आपइ छेह ॥२८॥ क

a कि किज्जइ म. b वरि ति थारू म नीची वाडि (पाठा०थी नीचा वाडइ') म c ऊचा म. d नाहाना म ॥५७॥ म.

२२. a देवइ घर क, देखु म. b घरि क, कुलवट म पहिलु परखु म. c धरि क, धुरि म. जुउ क सुपटकु क, सुपवट्टउ म. d सुखवटउ क, सुपवट्टउ म.

चुपै म.

२३. a करतां क, करता, म. b मोटी मदिर उलि क, मोटां मदिर उलि म. c रंगि क. d सरिषा क, सरपा म.

२४. a विहू क. पाशे म. समी क म b वचलइ क. विचिइं म. भमि क म. c दिठु क भुवन वास क. वारणउ म d इद्रभुवन क. लहइ क म. ऊआरणु क, ऊनारणउ म.

२५. a जोइ क, जव जोइ म. मडणी क b छाजे छवी क, छाजे छवइ म, छाडी छाडणी अ. c ताजा नलीआ उचा घणा अ; नामा क, श्रवा म; तणां क म. d रूपरा क, रूपराज (पाठा०थी 'रूपराछ') म. रली-आमणा अ, रलीआमणा क, रलीयामणा म.

आ पछी क म मा वधारोः—

त्रिवलां तोरणनी जोडणी, उडुगणि मांडी आडणी ।
जोतां खंति नही पक खोडि, कनक-थाल-थाली लख कोडि ॥२६॥

वस्तु सुगंध सुर[स] खूखडां, मनना मोह[न] नर मेकडा ।
जोइ भट्ट मन-माहि हसी, लिखमी लीलावासि वसी ॥ २७ ॥

कोडी दीकोडी दस वीस, श्रीनी सार करइ निसिदीस ।
पद्मकला ते चंपइ पाइ, वीरकला ते नाखइ वाइ ॥ २८ ॥

सोमकला ते सेज विछाहि, लीलकला सिरि चंदन वाहि ।
रूपकला मेल्ही रांधणइ, मदनकला मेल्ही मांजणइ ॥ २९ ॥

प्रेमकला ते धोइ घसी, जीवकला जल नामइ हसी ।
हीरकला पहिरावइ हार, सूरकला सिरि सेवि सिणगार ॥३०॥

सोविन पाट घडा माटलां, रतन जडथा वारू त्राटलां ।
पदी पाट के हिंडोला खाट, राग छत्रीसे पूरिउ पाट ॥२३॥ क

a मांटलां म. b जडथो वारू वाटलां म c हींदोलाट म d पूयां म ॥ ६२ ॥ म.

२६. a त्रिपला अ, त्रिलपां क त्रिलपा म. तोरण क. b उडिगणि क, उडीगण म. माडी अ, मूडा क, ऊन्नी म. c जोता अ. पति ऊपजइ घणी म. d भरीआं ('थाली'ने बदले) क; कनक-थाल बहू यमवा तणी म.

२७. a वस्त्र म. सुगधा अ. सरस क म. सूपजा अ. a मननां क; मेकडां क; मनमोहन नाचइ मांकडां म. c माहिइ क, मांहिइं म. हशी म. d लखिमी क म. वासि क, वासिइ म.

२८. a दीकोडी कोडी दस क म. b नसदीस क, निशिदीस म. c पद्कमाला क, पद्मकला म. d लपइ गाय क म.

२९. a. वछाहि क, विछाही म. b लालकला क म. ते क. शरि म. लाइ क म c मेहली क म. रांधणइ अ, रांधणइ म. d आवइ ('मेल्ही' ने बदले) क म. माजणइ क.

३०. a पग धोइ क म. घशी म. b नांमइ क. हशी म. c पहि-रावइ क. d सूरकला दिइ सवि सणगार क, सूरकला सवि शरणागार म.

२८

चंदकला चुढइ चांदलु, नयणकला निरतइ नागलु ।
चंपकला पहिरावइ चीर, झागकला ते पाइ नीर ॥ ३१ ॥
लोचन आंजइ अमरावती, लूण उतारइ लीलावती ।
पुण्यकला ते पाणीहारि, भीमकला मेहली भांडारि ॥ ३२ ॥
दीवकला ते दीवउ धरइ, रत्नकला ते रामति करइ ।
दर्पकला ते हासा होड, कमलकला ते पूरइ कोड ॥ ३३ ॥
भोगकला ते भोजनि रहइ, चंद्रकला ते अवसर लहइ ।
आपआपणी चिंता धरी, करइ काम ते अपछर आदरी ॥ ३४ ॥
जोइ भट्ट विमासी किउं, त्रिभोवन-मांहि भव[न] नही वसिउं ।
मोहि[या] इंद चंद नागिंद, मोहिया मानव देव नरिंद ॥ ३५ ॥

---

३१. a चद्रकला चुडहइ म. चादलु क, चांदल म. b नयनकला म. नरपइ क, निरतिइ म. c पहइरावइ क. d न्यानकला क म.

३२. a अंजइ क. आजइ म. b मेहली भंडारि क म.

३३. a दीपकला क म. दीवु क म. b रत्नकला म c हासा होड क. d कामकला क म ने' क मा नथी

आ पछी क म मां वधारो :–

तेजकला टोडर व्यापार, धर्मकला कहइ धर्मविचार ।
अमरकला आरीसु ठरइ, कीर्त्तिकला कविरस केलवइ ॥ ४२ ॥ क

a तेजकला म. व्यापार म b धर्मकला म. धर्मविचार म. c ठवइ म. d कीर्तिकला म. ॥ ७१ ॥ म

३४. a भोजिनि क. b इदकला म. कहइ क म. c करइ म. d काम क म. ते' म मा नथी. अवसर म.

३५. a विमासी म. वसिउ क, किश्र म b माहइ रुप नही तसिउ क, मांहि रुप नहीं इस्र म. c मोह्या क, मोहिया म. इद्र चद्र क म. निरैंद क, नागेंद म. d मोह्या क, मोहिआ म. मानव क म दणिद क; दिणद म.

आ पछी क म मां वधारो –

ब्रम्हा भट्ट शब्द उच्चरइ, दासी माहि जाण जे करइ ।
आवइ झायक झारी लेवि, जोइ भट्ट नयणे नरखेवि ॥ ४५ ॥ क

कइ प लिखिमी श्रवणि सुणी, कइ प सरसति रंभा भणी ।
कइ प अमरी कइ वितरी, कइ प चमुहा विद्याधरी ॥ ३६ ॥
झव झव श्रवणे झवकइ झालि, मयमता गज जिसा चालि ।
हाथ पाय तल कुंकमरोल, हीइ हरप नइ हसइ कपोल ॥ ३७ ॥
वेगि धारि अभोखण दीधउं, अंगि मान अमूलिक लद्ध[उं] ।
आगलि पंचसया थिर थाट, बोलइ कवित विमलनां भाट ॥३८॥

अथ कवित्त

आम किंत्ति किहां लगइ, जोड उत्तर अनुत्तर ।
आम किंत्ति किहां लगइ, पुब्व नही नरति [निरंतर] ।
आम किंत्ति किहां लगइ, पेखि पस्थ[म] समुद्र [पर] ।
आम किंत्ति किहां लगइ, देखि दक्षणदि दिगंतर ।
पायाल किंत्ति पन्नग करइ, इंद्र करइ आकाश [लगइ] ।
लावण्यसमय कहि विमल तुह, इम किंत्ति त्रिभोवनि झगमगइ ॥३९॥

---

a मझा शब्द भइ म b दासी माहि जाण म. c झबकी म. देइ म. d नयणि म. निरपेइ ॥ ७४ ॥ म.

३६. a किइ म. लपिमी श्रवणे क म. b किइ म. सरसति श्रवणे सुणी क, भारति रंभा भणी म. c वितरी अ, किन्नरी क म d वसुहा अ, वसुधा म.

३७. a श्रवणि झबूकइ क म. b मयमत्ता क म. गय अ म. गला क. c कुकमरोल क म. d हैइ क.

३८ a वेगिइ म. दीधउ अ, दिद्ध क म b आगइ क. मान म. लिद्ध क; अति आदर किद्ध म c अगालि अ क पचसया क म. d विमलना अ

कवित्त म.

३९ a कित्त अ. किहा अ क. b जोड़ क म. अणुत्तर म d पुब्वि क म. निरति निरंतर क म. e किहा अ क f जोइ पश्चमि समुद्र पर क, पेखिस पश्चम समुद्र पर म. h दष्यणि क, दखण म. दिगिअंतर म. i पायालि क म. पन्नग म. j ऊंची वे इंद्रसभा लगइ क, ऊंची इंद्रसभा लगइ म. k लावण्यसमय कहइ क. तुह म. l कित्त अ, कत्ति क. त्रिभोवन क. जगइ अ.

घरणइ ठविउं घन जेणि, तेण पुणउ अरि न खद्धउं ।
उअरि न खद्धउं जेणि, तेणि घण दान न दिद्धउं ।
दान न दीधउं जेणि, तेणि पुणि पुण्य न कीधउं ।
पुण्य न कीधउं जेणि, पुणउ, फल किंपि न लद्धउं ।
खद्धउं ति दिद्ध[उं] फल, लद्धं ते धन नवि घलसइ ।
लावण्यसमय कहि तिणि गुणि जो, विमल-किति त्रिभोवन
वसइ ॥ ४० ॥

इक दम्म कोइ दि, सोइ पुण्य चिहु दशि चाहि ।
इक दम्म कोइ दि, ते वि उघ[ा]र[इ] वाहइ ।
इक दम्म कोइ दि, सोइ पुणइ किति करावइ ।
इक दम्म कोइ दि, आपि आप-गुण गावइ ।
प्रासाद किघ अर्बु[द]-सिखिरि, सोविन टंका गालीइ ।
लावण्यसमय कहइ, विमलनी ते किति सुअणं सांभलीइ ॥४१॥

---

४०. a घणि क म. ठवइ अ. येणि म b तेणि म. पणिउ क, पाठा०थी उमेरो : 'पुणिउ' म. पद्धूं क, खद्धउ म. c ऊअरि क. पद्धूं क, खद्धउ अ म. येणि म. d धनि क. दांन म. दिद्धूं क. e क मां आ चरण नथी दीधउं म. येणि म. f पुहु पुण्य क पहु पुण्य म कीधुं क. g किद्धूं क. किद्धउं म. येणि म. h तेणि ('पुणउ'ने बदले) क म. कंपि क. लिद्धूं क. i पद्धू न दिद्धू फल लद्धनइ क, खद्ध दिद्ध फल लद्ध म. j धन मंदिर ज तूं वसइ क, तेणि धन मंदिरि तत्त वसइ म; वलसुं अ. k लावण्यनइ समय अ, लावण्यशमय क. वहइ क. तेणि क म. l जा क. म मां 'जो' नथी. त्रभोवन अ क, त्रिभोवनि म. हसिइ क.

४१ a इक्क क म. दंम्म अ. को क. कु म. देइ क म. b त्याइ म. पणि क, पुण म. चिहू क दसि क, दिशि म. चाहइ क म. c इक्क क म दंम्म अ. को क, कु म देइ क-म. d उद्धारइ क म. e इक्क क म. दम्म क म. को क, कु म. देइ क म. f पण क म. g इक क म. दम्म अ. को क, कु म. देइ क म. h आप आपइ क, आप आपिइं म. i कीज म. अर्बुद क म. –सिधरि क, –शषरि म. k लावण्यशमय क, लावण्यसमइ म. कहि म. l तेणि क ति म. कत्ति क. सुअण क म. संभालीइ क म.

योवनवइ अंयाचि, सीलइ साच यण तुट्ठी'।
विकट वाघ वसि करिउ, माल मलीउ करि मुट्ठी ।
यंमणीउ कीउ वंदि, जित्ति बारह सुलताण[ह] ।
चिहु दिशि चाहि दंड, तेजि त्रिहु खंडि आणह ।
प्रागवाटवंश नीनग लहरि, वडउ ते वीर सुततु वर[इ] ।
लावण्यसमइ कहि तिणि गुणि, जो विमल-कित्ति त्रिभोवनि चरइ ॥४२॥

चुपई

कही कवित्त भट्ट पाछा वलइ, माता मंत्रि गया गिरि चलइ ।
आवि मंत्रि आयलिउं वली, तुह्म दरसणि मनि पूगी रली ॥४३॥
मंत्रीसर पुहुता छि तिहां, गया मंत्रसर मेल्हो इहां ।
घरघरणि वलणि नवि होइ, एह वात जाणइ सहुकोइ ॥ ४४ ॥
घरणिमरणि हुइ घरभंग, आसा वांस-थंभ थिर चंग ।
पुरुष सरीसी नारी होइ, सघरवारि बोलीजइ सोइ ॥ ४५ ॥

---

४२. a यौवन म. वय क म. अयाचि क. b शील साचइ पय तुट्ठी क. शील सच्च पाणि तुट्ठी म c वघि अ; विकट कट वग्घ क; वग्घ म. वशि म. d मलीउ क, मेहलिउ म मठी अ मुट्ठी क म e करि म. वांद्द अ. f जित्त क म. बारइ क. सुलतानह क, सुरताणह म g चिहू क. दसि क. वाद्या क, वाहिया म. h जिते म ग्रहू क त्रिहु म षडे क म आणह क म. i प्रागवाटविंश क, प्रागवाडवंश म लहइर क लहिर म. j वड्ड क म. ति म. सुत क, सुतन म वड्इ क, वरइ म. k लावण्यसमय कहइ क. तेणि क म l 'जो' क म मा नथी. कीर्ति क. त्रभोवन क. पाठा०थी 'फुरइ' म

चुपै म.

४३. a कवित भट क म. वलि म. b वलि म. c आवइ क म आवेश म d तुम्ह क. तुम म. दरसिणि क, दरशणि म. पूगी मनि क अम पूगी म. रली क

४४. a मन्त्रिस्वर क. पुहुता क, पुहता म. छइ क. b मन्त्रि घ क म. मेहल्यां क. c घरणिइ वलणिइं म. नव क. d जांणइ म.

४५. a मरइ क. b वास क. d सम परिवार क, समरवार म कहीजइ क, बोलाइ म. सोय क.

जिहां नारी तिहां मंदिर सही, नर विण अधिक थानमइ नही ।
सीरामणी करी तुह्ये वलिउ, वहिला मंत्रीसर-नइ मलउ ॥ ४६ ॥

चित्रसाली मंड्यां घरसणां, सोविन थाल ते सोहामणा ।
ऊपरि मोतीलग चंद्रूआ, भाति भाति बांध्या छइ जूआ ॥ ४७-१ ॥

पंचसया बइठा परिवारि, प्रीसइ विमल नरेसर नारि ।
कहइ-नइ भाणइ न करइ फेर, सोविन सेर रूपा दोइ सेर ॥ ४७-२ ॥

सोविन कनक ते कीधु कूर, उज्जल रूप दहीनुं पूर ।
भट्ट पंचसइ के दक्षणी, थो प्रीसइ [बहु] सीरामणी ॥ ४८ ॥

पांति बइठा अंतर करइ, ते पापी दुर्गति अवतरइ ।
नानां मोटां जे पकवान, अंतरि आणी प्रीसइ धान ॥ ४९ ॥

अंतरनां हुइ मोटां मान, अंतरि आलइ फोफल पान ।
अंतरि करइ सगु अणसगु, ते पापी-माहि मूलगु ॥ ५० ॥

---

४६. b दांनमइ म. c तुम्हे क. वलु क म d मंत्रीश्वरनइ क, मंत्रीसरनि म. मलु क, मिलउ म.

४७–१. a चित्रशाली क, चित्रसालि म. मंड्या अ, माडघा क, मांडिआं म. b सोहामणां क म. c चद्रुआ म d बाध्या अ; भाति भातिना बांध्या जूआ क. भातिइं ठांमि ठांमि जूजूआ म.

४७ २ a पचसयां क म. बयठा क, विइठा म b नरेश्वर क म. c बहनइ म. d सोवन शेर म. रूप क, रुप म. दो क म. शेर म.

४८. a सेर कनक क, शेर कनक म. b उजल क. रूं क. दहीनु पूर अ, यश्र दधिपूर म c पचसइ क दष्यणी क. d बहू सीरामणी क, छइ सीरामणी म.

४९. a पाति क, पातिइ म. बयठा क, बिठा म. अंत क. c नाहानां क, नान्हां म मोटां क म. ये म पकवान क म. d अंतर म. धांन म.

५०. a अंतरना अ; मोटा अ; अंतरि मोटां नाहना मान क, अंतरि नाहाना मोटा मांन म. b आपइ म. पांन म. c अंतर क म. करइ अणसगु क. d –माहिं क, –माहिइं म.

ते प्रीसी श्री रहीआं टली, खिणि अंतरि तिहां आवी वली ।
वहिला थायु म लाउ [वार], म[ा]णइ हजी तेतलु भार ॥ ५१ ॥

माता तइ प्रीसिउं छइ तसिउं, जीणइ दीठइ हीयडूं हसिउं ।
सांभळतां सुख हुइ कानि, लोचन ठरीआं अमीअ समान ॥ ५२ ॥

दारिद्रां सिरि पडीउ दंड, खातां खोट न थाइ खंड ।
पडइ दंत थाइ कटकडा, नान्हा फीटी थाइ वडा ॥ ५३ ॥

सुद मरडी बोलइ नवि वली, तुह्म पाहि घरनारी भली ।
परघरि तेडी जमवा जाइ, नान्हां छोरू थाडां थाइ ॥ ५४ ॥

एक कडि एक आवइ तडइ, सवि प्रीछवइ सूखडी वडइ ।
परघरि बइठी जिमवा माइ, नानां छोरू हीड[इ] थाइ ॥ ५५ ॥

---

५१. a प्रीसीनइ क. 'श्री' क मां नथी. रहिआ अ. b ग्यण अंतर तिहां आव्यां वली क, क्षण अधक्षणि तव आव्या वली म c थाउ क म. लाउ वार क म. d माणइ क म. ए तेतलु क, तेतलइ म.

५२. a तइ क, तिइ म प्रीसीउ म. तिशउ म. b जेणइ क म. हीयडु क, हीअडु म हसिउ अ क, हशिउ म. c सामलतां क, सामलता अ. शुप क. कानि म. d ठरीआ अ. अमीय क, अमी म. समानि क, समांनि म.

५३. a दारिद्रां पडीउ क; दारिद्री म. शरि म. b पाता अ, पातां क म. पौट क. c कडकटा क म. d नाहना म. थैइ म [c d म मां ऊलटपालट छे.]

५४. a श्री वोलइ रली म. b तुम्ह क, तुम म. पाइ क, पाहिइं म. c परघर क, परिघरि म. जिमवा क, यमवा म. d नान्हा अ, नाहना क, नाहां म. छोरु हीयडइ थाइ क; छोहरां (पाठा॰ श्री 'छोरु') म. आडा अ.

५५. a कडिइ म; तडि क; एक हीडइ तडिइ म. c परिघरि यमवा बयठी माग क, परघरि यमवा विठी माइ म. नाना अ, नाहना क, नाहानां म. छोरु क. हीडइ क. हीअडि म.

ऊसारइ लाडू पकवान, माइ जिमइ अधिकेरुं धान ।
इणइ किम[इ] भाजइ भूखडी, घरि छोकरां हुसि सूखडी ॥ ५६ ॥

सोविन रूप ज के चावरुं, घरि छोकरां सूखडी करिउं ।
गांठइ बंधावइ श्रीमती, पछइ प्रीसइ सवि रसवती ॥ ५७ ॥

आम असी न दीसइ रती, भइ जिमाडया ते रसवती ।
जिमी करी ऊठिया रंगरोल, दिधां फोफल पान तंबोल ॥ ५८ ॥

थाट पाट जिहां हींडोला [खा]ट, सुखि नई वीसमीआ भाट ।
संतोष्या सवि मान्या घणुं, ठारिउं चतुर चित आपणउं ॥ ५९ ॥

माहोमाहि करइ विचार, कइ ए ब्रह्मा कइ किरतार ।
कइ विष्णु [कइ] कर्ण दातार, कइ ए ईश्वरनु अवतार ॥ ६० ॥

इसिउ विमल ते सुणीउ कानि, ते घरि नारि नही सामानि ।
श्रीइ जे हित कीधउं मुदा, जन्म माहि नवि दीठउं कदा ॥ ६१ ॥

---

५६. b माय क. जमइ क, यमइ म अधकेरू क, अधिकेरू म. धान म. c एणइ क ईणइ म कमइ न क, किमइ म d छोकरा अ, छोरू म हुरि म

५७ e रुप क जि म. चावरिउ क म b छोकरां क म. हुसि सुषडी क. c गांठि क गाठिइ म. श्री सती क म. d परीसइ म.

५८. a आगइ इसी न दीठी रती क, आगइ इसी न दीठी हती म. b जमाडया क, यमाडया म. c जमी क, यमी म. ऊठया क, उठया म. d दिधा अ, दीधां म. पान म.

५९ a थाट म. जिहा अ. हींडोलाट अ, हींडोला लाट क, हींडोलाट म. b सुखइ क, सुषिइ म. जई क वीसमीया म. c सनमान्या घणा क, सनमान्या घणउ म. d चित चतुरि म. आपणु क

६०. a माहोमाहिइ म b कि म. करतार क म. c ए वष्ण क, ए विष्णु म कइ दातार क d कि म. ईश्वरनउ क

६१. a इसु म. सुणीउ अ, सुणिउ क म कांनि म b तेह क म. c ये म. हेत क कीधु क, कीधू म मुदा अ, सदा क म d जनममाहि क, जनममाहि म नव क. दीठुं क, दीठउ अ.

जे मोकलामण नवि मेवडी, ते थीइ कोधी-केवडी ।
जेहवुं जेहवुं लीजइ दान, तेहवुं तेहवुं कीजइ वान ॥ ६२ ॥

दान समाणी कीरति करु, सीरामणि-छलि कोधउ धरु ।
गर्व न आणिउ[जाणिउ] रती, धरु धर्म जाणिउ जिनमती ॥६३॥

तुठी अंबावि लिद्ध प्रसाद, पुत्र पनइ मागिउ प्रासाद ।
पट्टणिनगरि जि को जिहां वसइ, धर्मपुत्र आपणि पांचसइ ॥६४॥

बेटा ते जे राखइ नाम कीरति तणां जगाडइ ठाम ।
तु बेटानु साचु मोह, मातापिता चडावइ सोह ॥ ६५ ॥

जां आपणइ रहइ संतान, तां विमल श्री कीर्ति प्रधान ।
प्रह्रि ऊठी आसीस विख्यात, देव विमल श्री सुप्रभात ॥ ६६ ॥

---

६२. a ये म. नव क. b थीइ क एवडी क c जेहनू येहवू म. दांन म. d तेहवु क, तेहनू म. तेहवु क, तेहवू म. वांन म.

आ पछी क म मां वधारो :—

दानि मानि कीरति नवि करइ, वीसारइ पुहुतु घर परइ ।
पडइ नरग नइ थाइ वणी घणी वात छइ कीरति तणी ॥ ७४ ॥ क

a दानमांनि म. b पुहतु म. c 'नरगि म १०३ म.

मेघ सुरतरुअर दातार, माय बाप गुरु धर्माचार ।
तसी वस्तु नहीं महीअल माहि, जे नर आपी उरण थाइ ॥७५॥ क

b धर्माचार म. c तिसी म. नहीं म. माहि म d ये म. ऊरण म. १०४ म.

६३. a दांन म. समांणि म. b सीसीरामणि क, सीरामण क, सीरामण म. कीधु क म. c आणिउ जाणीउ क, आणिउ जेणिइ म. d धर्म म.

६४. a तूठी क. अंबा क म. लद्ध म. b पणइ क. c पट्टणनगरि म. के म. जहां क. d धर्मपुत्र क म. 'आपणि'ने बदले 'पट्टणि' क. पाचसइ क.

६५. a ये म नांम म. b तणा अ. ठांम म. c साठ अ. d मातपता क. चढावइ क, वडावइ म.

६६. a जा अ. आपणु क, आपणउ म. संतांण म. b तिहां क. कीति क. निधांन म. c ऊठी क म. विख्यात अ म, विख्यात क. d दीठी क, देवी म.

कहि लावण्यसमइ संसारि, नारी वडी नरपति अवधारि ।
नारी कहीइ सिव सिणगार, नारी विना म हुज्यो भरथार ॥ ६७ ॥

आवइ नर को आस्या धरइ, नारी विण नर उत्तर करइ ।
आंगलि पाछलि पूरइ ठाम, पछी परहुणु राखइ नाम ॥ ६८ ॥

नर दुक्खीइ घरनारी दुखी, नर सुखीइ घरनारी सुखी ।
जाता जीवी मेल्हइ हाथि नारि विना को नावइ साथि ॥ ६९ ॥

पर्व परहुणउ ते पालवइ, आविउ अवसर सवि साचवइ ।
जेहनइ घरि नारी हुइ सदा, ते घर ऊजड नुहि कदा ॥ ७० ॥

जु घरि सुंदरिनु हइ सोभ, लेवइ देवइ लहीइ थोभ ।
वेलां भोजिन वेलां भोग, वेलां लाभइ सवि संजो[ग] ॥ ७१ ॥

---

६७ a कहीइ क, कहइ म लावण्यसमय क c घरशणगार क म. d विण क हयो अ क म भरतार क, भर्तार म

६८. a आशा म b ऊतर क, उत्तर म c ठाम म. d पई क परणु क, परहुणइ म नाम म.

६९. a दुपीइ क, दुषीइ म b सुपीइ घरिनारी सषी क c मेहली क, मेहलइ म d वना म

आ पछी क म मा वधारो —

नर पुहुचइ पुर पट्टण भणी, पूठि नारि रहइ आफणी ।
जु ऊठी जाइ मालवइ, तुय मन्दी मदिर जालवइ ॥८३॥ क

a पुहचइ म b पूठिइ म. आपणी म d तु म महिला मदिर म ११२ ॥ म

७०. a परव क म परणु क. जालवइ क b आविढ क म 'सवि'न वदले 'ते' म साभलइ क, जालवइ म. c येहनइ म d ऊअस क म नुहइ क, नुहुइ म

७१ a सुदरि क. तु म. हुइ शोभ क म b रहीइ म c वेल अ क. भोजन क म वेला अ क d वेला अ क. सयोग क म

नारी विण नर उभाखरु, को घर-मांहि न तेडइ अरहु ।
नारी विण नर अवगण कोडि, कोइ म देज्यो नारी खोडि ॥७२॥

उत्तम पुरुष हुआ संसारि, ते त्रइसठइ माता नारि ।
नारी लखमी पद्मावती, नारी चक्केसरि सरसती ॥ ७३ ॥

राम तणइ घरि सीता सती, नारि सभद्रा राजीमती ।
हुई नारि सुलसा रेवती, गुणवंती गंगा गोमती ॥ ७४ ॥

ब्रह्मा-घरि सावत्री कही, ईसरि उमयादेवि संग्रही ।
कृष्ण तणइ घरि सहस्स बत्रीस, नारि विना म म जाणिउ दीस ॥७५॥

रन्नादि सरिसु रविमोह, नारी विण नर न चडइ सोह ।
चंद तणइ घरि रोहिणि कही, गौतम-घरि अहिल्या सही ॥ ७६ ॥

ईंद्र ईंद्राणी सरिसा हुआ, देव न थाइ देवी जूआ ।
पंडव-घरि पंचाली जोइ, दवदंती नल सरिसी होइ ॥ ७७ ॥

बीवा वृद्धि वडेरा अंग, नारी विण नही तेहवा रंग ।
लु रामा रूडी घरि-माहि, दीठइ लोचन टाढां थाइ ॥ ७८ ॥

---

७२. a ऊभांपरु क म. b घरमाहइ क अरहउ क. c नर क म. नारी विण नर विण अवगुण होइ अ; अवगुण क म. कोडि क म. d देयो क म.

७३. a नर म. हूआ म. b त्रिसठिनी क, तिसठ्ठिइ म. c लक्ष्मी म. पदमावती क.

७४. a सिती अ. b सुभद्रा क म राजिमती क. c हुई म. d गवती क.

७५. a ब्रम्हा क. सावित्री क म. b ईश्वरि क म उमादेवी म. c सहइस क, सहस म. d वना क नवि क म जाउ क, जायो म. जगदीस म.

७६. a रत्नादेरि क, रन्नादे म. c रोहणी क. रही म. d गोतम क, गौतमनइ म. कही म.

७७. a इद्राणी क म. सरसा क. c पंचव अ. d सरखी क. नल-नृपघरि होइ म.

७८. a बीवाइ क, वीहा म. b नवि म. c रूवी रामा म. घर क म. माहि म. d टाटा अ.

नारी कहीइ उत्तम क्षेत्र, परण्या धुरि पहिरयां पानेत्र ।
जो जीवइ तां सरसी रहइ, वेदन भूख दूख सवि लहइ ॥ ७९ ॥
छोरु सवि सावयणी योग, गुरु वसजन सकल संयोग ।
करइ काज घरतणां अखंच, स्त्री-वेलि फल लागइ पंच ॥ ८० ॥
पालइ धर्म्म सदा पतिव्रता, बोलइ बोल जे मीठा मता ।
आवइ रोगयोग तनु दहि, राति दिवस ते पासइ रहइ ॥ ८१ ॥
नारि पखइ नही सुख-आस, नारि पखइ नही मंदिरि वास ।
नारि पखइ नही वंशनी वृद्धि, नारी पखइ नही पुरिसा सिद्धि ॥८२॥
कहि लावण्यसमय मनि हसी, निर्मल नारि जे मंदिरि वसी ।
विमलश्री-सुप्रभात चरित्र, श्री-नामि नीपनउं पवित्र ॥ ८३ ॥

---

७९ a कहाइ म. प्येत्र क. पेत्र म b पहिरया अ; पहइला परण्या धुरि पानेत्र क; परणीनि पहिर्या पानेत्र म. c ता अ. सरशी म d दुप म. सहइ म.

८०. a छोरू म b वधजन क, वसु जनम म. संभोग क. c तणा अ. अपच अ म d श्रीवेलि क, स्त्रीवेलिइ म. लागई म.

८१, a पाल क. धर्म म पतिव्रत्ता अ b ज क, जि म मिता क. c आवि रोगि निज तनु दहइ क, आवइ रोग निश्च तन दहइ म

आ पछी क म मा वधारो —

नमणी षमणी बहु गुण धरइ, वंश वसुद्धी सेवा करइ ।
राती रामा प्रीऊनइ रंगि, सुख अविचल ऊपाइ रंगि[र अंगि] ॥ ९६ ॥ क

a गुणधरि म. b वश म विशुद्धि म c प्रि[य]नइ म d अविचल सुष म. अंगि म १२५ ॥ म.

८२. a नर नही क म p मदिर क म. c पषइ पुणि वशनी अ, नारि पषइ पुत्र पुण्य न वृद्धि क, नारि पषइ नर पुण्य न वृद्धि म. d नारि पषइ नर नाहि परसिद्धि क, नारि पषइ नर नही परसिद्धि म

८३. a कहइ क म लाव्यण्यसमय क, लावण्यसमइ म नर क, मुनि हसी म. b निर्म्मल क. नारी क म. 'जे' क म मा नथी मदिर क वसी म c सुप्रभाति क म. d श्री नामिइ म नीपनउ अ नीपनु क म.

रहिया भट्ट राख्या तां लगइ, आव्या मंत्रि विमल जां लगइ ।
कनक कोडि तव कीधी मया, संतोस्या शवि मंदिरि गया ॥८४॥

करइ राज टालइ अन्याय, सेवइ जिनवर-सद्गुरु-पाय ।
विमलश्री-घरि रिद्धि नही मणा, सुखसागर झीलइ बे जणां ॥८५॥

पामी सरसति दिद्ध पसाय, गायु मंत्र विमल नरराय ।
रचिउ रास ते कुणइ कविराज, किणि थानकि नीपायु आज ॥८६॥

८४. a रह्या क. भाट म. राक्षा अ, राषता क राख्या म. 'तां' क मां नथी. b विमलश्री सुप्रमाति आव्या मलइ अ; जा क. d सवि क म. मंदिर क.

८५. a राज्य क. c ऋद्धि क, रिधि म नवि क, न म. d सुखसागरि म. जणा अ.

८६. a देव पसाय क, देवि पसांइ म. b गायउ म मंत्रि क म. विमलसु क. c चरित्र रास तें कुण कविराज क; कुण म d किणइ थानिक किम प्रगटि आज क; केणइ थानकि किम प्रगटिउ आज म.

आ पछी क म मां वधारो :—

गुजर देस देस नवखंड, पट्टण नगर प्रसिद्धिउ चंग ।
संघ समुख्य श्रीमाली मध्य, करइ पुण्यजस मोटा जंग ॥ १०२ ॥ क

a नवरंग म. b प्रसिद्धउ म. c मुख्य म. मग म. d पुण्य जगि म यग ॥ १३१ ॥ म.

दीइ दान व्यवहारी वादि, तिहांथा आव्या अहमदावादि ।
भणि पुत्र तस कुलशृणगार, प्रथम पुत्र सीधरसि विचार ॥ १०३ ॥ क

a दान म. b अमदावादि म. c त्रिणि म. श्रगार म d सीधर म. सुविचार म.

अजदरपुरि कीधु आवास, बीजु बधव मगलदास ।
चतुर चग त्रीजु लहूराज, तेहनइ पुण्य सरिसु काज ॥१०४॥ क

a कीधा म. b आ पछी म मा ४ चरण वधु : "क्षमकल देवी घरणी तास । च्यारि पुत्र तेहनइ जिनमती, पचमपुत्री लीलावती ॥ १३३ ॥ वस्तुपाल अमलि जिणदास," b त्रीजु बधव मगलदास म. c चउथउ लहूराज म सरीखु म. ॥ १३४ ॥ म.

धर्मशाल जिनमंदिर जहां पासि, सगारत्न तिहां रह्या चुमासि ।
जनमर्मोग देशाहिउ जसिद्ध, सद्गुरु हृदय विमासइ तिसिइ ॥१०५॥ क

पाटणि पाल्हणपुरी पोसाल, जग हुइ चउपट चुसाल ।
दि दीक्षा अति आणदपूरि, गछपति लिखिमीसागरसूरि ॥ ८७ ॥

a जहा' म मा नथी. पाशि म b समइरत्न गुरु तिहा चुमाशि म c यशइ म d विमासइ म तिशइ ॥१३५॥ म

सवत १५ एकवीतु धम, शाके १३८६ प्रसन ।
पोस वदी दिन त्रीज पवित्र, आशिउ अश्लेषा नक्षत्र ॥१०६॥ क

a १५२१ म धित्र म b शके म, तेर व्याशीउ म ॥१३६॥ म

घडि पाछिली नव जव राति, जन्म अर्क ऊगतइ प्रभाति ।
तुला लग्न सरिसु सकेत, मूरति मगल जमलु केत ॥ १०७ ॥ क

a जव नव म b अर्क म ऊगीउ म ॥ १३७ ॥ म

वृश्चक रवि बुध त्रीजइ रहिउ शुक्र मकरि ते चुथइ थयु ।
गुरु शनि कुभ रह्या पाचमइ मेष राशि सोहइ सातमइ ॥१०८॥ क

a वृश्चकि म बुध रवि म b शुक्र म. चउथइ कहिउ म c पाचमइ म d मेषि राहु सोहइ म ॥१३८॥ म

दसमु चद रहिउ निज घरे, जनमयोग जोयु सद्गुरे ।
हृदयस्थले रवि नक्षत्र वसिउ, सद्गुरु वचन प्रकासिइ असिउ ॥१०९॥ क

a दसमइ म b जन्मयोग जोइउ म c हृदयस्थलि म नक्षत्र वशिउ म d सद्गुरि म प्रकासिउ इस्यं म.

सुणु सेठि होसि तप घणी कइ ए जासिइ तीरथ भणी ।
कइ ए थासि मोटु यती, नरि विद्या होसइ दीपती ॥११०॥ क

a सुणउ श्रेष्टि होशि म b जाशइ म c थाश मोन्उ म d धर म होशइ म ॥ १४० ॥ म.

गुरु वचने वयरागी भयु, मात तात पाय लागी रहिउ ।
जेठ सुदि दिन दसमी तणु उगणत्रीसइ उछव घणु ॥ १११ ॥ क

a वइरागी थयु म b पय म c शुदि म तणउ म d उच्छव घणउ ॥ १४१ ॥ म.

८७ a पाट्ण क पोशाल क b जय क, जग म चुपट चुशाल क c दिइ क म दिक्षा क, दक्षा अ आनदपूरि क d गच्छपति म लष्मीसागरसूरि क. लषिमीसागरसूरि म

संघ सजन सुद्ध साखि तिम्हइ, नाम ठविउं तसु लावण्यसमइ ।
नवमइ वरसि दीसवर लीद्ध, समयरत्न गुरु विद्या दीघ ॥ ८८ ॥

सरसति मात मया तव लही, वरस सोलमइ वाणी हुई ।
रचिया रास सुंदर संबंध, छंद कवित चुपई प्रबंध ॥ ८९ ॥

विविधगीत बहु करिया विवाद, रचीआ दीपसूरि-संवाद ।
सरस कथा हरीआली कवइ, मोटा मंत्रिराय रंजवइ ॥ ९० ॥

जसिउ उपदेश हुइ सुविशाल, बहु थानकि देहरां पोसाल ।
मीर मलिक ते मानइ विनइ, पंडितपद ते पंचाननइ ॥ ९१ ॥

सोहइ गुण तपगछि सिणगार, देस विदेस करइ विहार ।
सोरठ देश रही चुमासि, पुहता गूजरदेस-सिणिगार ॥ ९२ ॥

अणहलवाडा पट्टण पासि, मालसमुद्रि रहिया चुमासि ।
बोल सकल संघि वीनविउ, विमलरास तेणइ कारणि कहिउ ॥९३॥

---

८८. a सजन क. सहू क म. सपी क, सापी म. तसि समइ क. b मुनि ('तसु'ने बदले) क म c दीषवर क म. लिद्ध क, लीध म. d गुरिविद्या म दिद्ध क, दीध म

८९. b वांणी म हुइ म. c रचिउ क, रचिआ म. d क मां आ चरण नथी. चउपई म.

९०. a विविध म. बहू क म. करया क, करियां म. संवाद क. b रचिआ क म. सर क, सूरस (पाठा०थी सूर-') म. c कथन क म हरिआली क, नहीं आली म. कहइ क. d जंजवइ क.

९१. a जसि क, जस म. ऊपदेस म. हव म. सविशाल म. b थांनिक क, थानकि म. देहरा थ. पोशाल क. c मलक क, मांडइ म.

९२. a गण म. तपगछ क, तपगच्छ म शणगार क म. b देसि क. विदेसि क, विदेशिइ म. व्यवहार क. c सोरठि क. देस क. देशि म. रही गरिनारि क, रही गिरनारि म. d पुहुता क. गुजर-म. मज्झारि क, मझारि म.

९३. a अणहिलवाडा म. पाटण क. पाशि म. b समुद्र क रहिआ क म. चउमासि म. c संघर क म. वीनवु क. d तेणि क. करिउ क, कहिउ म.

अट्ठसट्ठानइ आसोमासि, कीधउ पास-जिणेसर-पासि ।
मूल नक्षत्र निर्मल रविवार, पूरु विमलरास-विस्तार ॥ ९४ ॥

वस्तु

रास रचीउ रास रचीउ नवल नवखंड ।
तस ऊपरि ए चूलिका, ध्यान पास गछराउ ध्याउ ।
विमलश्री-वर्णन करिउ, सरस रास पदबंध गायु ।
संवत पनरअडसठइ, वडउ रास-विस्तार ।
ते प्रमाणि पूरु चढिउ, मालसमुद्र मझारि ॥ ९५ ॥

चउपई

पहिलुं प्रथ्वी पोढी जाणि, तेहथी मोटा मेघ घखाणि ।
तेहथी अधिका सागर सवे, कुंभजन्म ते अधिकु कवे ॥ ९६ ॥
तेहथी वली वडउं आकाश, अधिका शसि रव तणा प्रकास ।
ते जेहने चलणे जई वसइ, तिणइ दीठइ त्रिभोवन उल्लसइ ॥९७॥
रचइ देव गिरूआ गढ त्रिणि, तिहां कहिया प्रभ पइसइ पुण्य ।
ते तीरथंकर त्रिभोवन ताम, सकल संघ-नइ करइ प्रणाम ॥९८॥

---

९४. a अठ्ठसठानि म. माशि म. b कीधु क. जणेसर क. c नष्यत्र क. निर्मल म. d वस्तार क

९५. b पडि म. c उप्परि म. एक क, इक म. d ध्यानि म. चगवीय क, गयवीउ म. ध्याउं क. ध्यायु म. e किरिउ क, करिउ म. f पदबधि क. g १५ अठसठइ क, पनर अठसठइ (१५६८) म. h वडु क म. i परमाणि क. प्रमांणि म. पूरुं म. चडिउ म. j मज्झारि क, मुझारि म.

चुपइ क, चुपै म.

९६. a पहिलु अ. पहिलं म. पोढी पृथ्वी क. पोटी प्रथिवी म. जोणि म. b वर्षाणि म. c तेथी क. सहूचे म.

९७. a तेथी क. वडउ अ, अधिक क, वडू म. आकास क. b शसिहर क, शशि रवि म. प्रकाश म. c चलणं जे वसइं म. d तेणि क, तेणइ म. दीठइं क. त्रभोवन क. उल्हसइ क म.

९८. a गरूआ क. त्रणि क. b तिहां पइसइ प्रभु करया [कहिया म] पुण्य क म. c तीर्थंकर क म. त्रभोवन क. तांम म. d प्रणाम म.

संघ घउ[ा] तें त्रिभुवन-माहि. कोइ नही अधिकु तेह पाहि ।
तास कथनि मन्न थयु उल्हास, रचीउ विमलरास-विस्तार ॥९९॥

विमलरास भणतां दुख जाइ सुणतां सुख संपति थिर थाइ ।
देह विमल नइ नयण विशाल, निर्मल नर कर्ण मुख भाल ॥१००॥

विमलरास सुणतां जयकार, लहीइ मोटा मंगल चार ।
गज रथ घोडा पायक कोडि, अंगि न आवइ एकइ खोडि ॥१०१॥

मेरुरूप करि कम्मविचार, दिनकर ते कंकण-आकारि ।
ससिधर नालिकेर अवतार, अचल थाल ते वृत्ताकार ॥ १०२ ॥

नक्षत्र-रूप ते अक्षत भरी, चंद्रतेज ते चंदन करी ।
जां वधावइ वसुहां नारि, जयउ रास श्रीसंघ मझ्यारि ॥ १०३ ॥

घात केतली आगइ हवी. केतां वचन कहियां केलवी ।
अधिके ऊणई लागइ पाप, संघ समुक्ष खमावु आप ॥ १०४ ॥

---

९९. a वडु क म. ये म. त्रभोवनमाहि क, त्रिभोवन मांहि म. b मोइ म. जे पाहि क. तेह पांहि म. c कथन क. सुम्न क. d रचिउ विमल मन्त्रिनउ रास क, रचीउ मत्री विमलनु रास म.

१००. a-रास अ. भणता अ. दुप म. b सुणता अ. थिर थाइ म. c नयणां क म. बिमल म. d निर्मल क म. नाक क, तत्र (पाठा०थी 'नक') म. करण क. सुपकमल क म.

१०१. a भणतां क, सुणता अ. b मोटां क. मयल धार अ; च्यार क. c घोडां क म. d एकू म. [क मां आ कडी उपरनी पहेलां छे].

१०२. a मेरुरुपि क, मेरुरूप म. कमल ('करि कम्म'ने बदले) क, करकमल म. वचारि क. b दिनयर म. कुंकुम क म. c शसिधर क, शशिधर म. नालकेर क म. d अग्र थाल क म. वृताकारि क, वृताकार अ.

१०३. a नष्यत्र क. रुपि क, रूपि म. 'ते' क म मां नथी अष्यत क. c वद्धावइ म. वसुहा अ क. d जयु क म. मज्झारि क, मझारि म.

१०४. a केतलइ म. b केता अ. वतां क, कहिया अ. c अधके क. ऊणा क, ऊणे म. लागां क म. d समुष्य क. समक्ष म. षमावुं क, षमावूं म. आ पछी क म मां वधारोः—

अक्षर आघु पाछउ रहिइ[उ], जोतां जडतु इमक नवि कहिउ ।
ते सोधीनइ ठवज्यो ठाइ, करि जोडी कवि लागइ पाइ ॥१०५॥
सुप्रभाति जिनशासन-माहि, सुप्रभात गणधर गुरुराय ।
गछ चुरासी जे जे जती, सुप्रभात सघली महासती ॥ १०६ ॥
जे जे सकल सभा-शिणगार, सुप्रभाति सुविहुं दातार ।
सुप्रभात जे धम्मीराज, सुप्रभात सवि तीरथ आज ॥ १०७ ॥
सुप्रभात गाइ सुगुण सुजाण, सुप्रभाति कविराज वखाणि ।
विमल नरेश्वर श्री घरनारि, सुप्रभात श्रीसंघ मझार ॥ १०८ ॥

हुं सवि मूरप माहि धरी, हीइ मति नहि तेहवी परी ।
चे अप्यर कविइ जगि जाणा, ते सवि सरसति तणु प्रमाण ॥१३०॥ क
a हू म माहिइ धुरी म. b हीअडइ मति नही म. c अक्षर कविइ म. जाण म. d तणउ वषाण ॥१६०॥ म.

जे जाणइ जिनधर्माचार, जाणइ जीव निगोद बचार ।
जे कविगिरि मोटा गुरु थका, हू तेहना पगनी रेणुका ॥ १३१ ॥ म.
b जाणइ म. c जे कांव जगि मोटा मझ थिका म. d पयनी म. ॥ १६१ ॥ म

१०५. a अप्यर क. आघउ म पाछु क. रहिउ क म. b जोता अ न म. मलिउ क c सोधीनि म. ठवयो अ, ठवियउ म. d कर जोडीनइ लागु पाय क करजोडी कवि लागइ पाइ म. आ पछी क म मां वधारोः–
भूतप्रेत नासइ भय त्रास, गज रथ घरि घोडानी लास ।
पुण्यइ पदुमनि पूरी मलइ, अंगणि अरथ अचिंता फलइ ॥१३३॥ क
a नाहसइ म. c पदमिनि प्रेमिइ पूरी मिल्इ म. d अचिंत्ता म. ॥-१६३ ॥ म

१०६. a जिणसासण माहि म. b सुप्रभाति गुणधर गणराय म. c गच्छि चुराशी ये ये यती म d सुप्रभाति म. पयतणि महासती अ. [आ कडी क मां नथी].

१०७. a शणगार म. b सुप्रभात सवि म. c सुप्रभाति ये धरमीराज म. [आ कडी पण 'क' मा नथी]

१०८. a सुप्रभाति क. गासइ क, गायण म. गुण क म. –जाण क, –जांण म. b सुप्रभात म. वषाण म. d सुप्रभाति क. मज्झारि क, मझारि म.

दूहा छंदा कवित मली, भाषा विवध वचन्न ।
विमलरास अेके अछइ, तेरसया छपन्न ॥ १०९.॥

नवरंग नवला नव खंड, ते रचिउ रास अखंड ।
जे सुणसि सवि संयोग, जे भणत लहीइ भोग ॥
[जे भणत लहीइ भोग] भूतलि, भणति मुनि लावण्यसमय ।
ए विमलरास विमल वाणि, विमल घरि रिद्धि रंगइ-रमइ ॥११०॥

इति श्रीविमलरास नव खंडे पंडित लावण्यसमयकृते पंच-सत भट्ट-नामानि । विमलश्रीवर्णन कर्ता-कविचरित्रे। सकल शास्त्रे विमलरास संपूर्ण-॥

---

१०९. a मिली म. b विविध वचन म c विमलरास अ d तेरसयां क. छप्पन्न क म.

आ पछी मात्र म मां वधु :

बत्रीसे अक्षरि थिको, बांधइ ग्रथह मांन ।
सत्तरसत लीहि अमला, एह ग्रथनू न्यान ॥ १६८ ॥

११०. b रास ख. अपइ क म. c सुणित क, सुणत म. d ये म. भणित क, भणतलां म. e जे भणत लहीइ भोग म [अ मां अने क मां आ शब्दो नथी]. भूतलि क f भणित क. 'मुनि' क मां नथी. लावण्यसमइ क म. g निमल रास ते विमल वाणी क, किरति विमल वाणी विमल म h ऋद्धि रमइ क, रिधि वृद्धि रमइ म. ॥१३७॥ क, ॥१६९॥ म.

पुष्पिकाओः—

इति श्रीपण्डित लावण्यसमयगणिकृते, विमलमंत्रि मनोहर प्रगट प्रबंधे, नवरंग नवखंडे, विमलमन्त्रिश्रीवर्णन चूलिका संपूर्ण ॥ शुभ भवतु ॥ श्री संवत १६४१ वर्षे आषाढ सुदि ७ दने......तत्पट्टि सोमविमलसूरि आचार्य श्रीआणदसोमसूरीश्वराणां, परिवारस्वच्छ ०० प्रकांड श्रीश्रीश्रीश्रीश्री आगमसंयमगणिशिष्यशिरोमणि श्रीविजयसंयमगणिशिष्यशिरोमणि प० श्री हर्षविजयगणिशिष्यशिरोमणि पं० धर्मविजय मुनि पठनार्थ ॥ मदाषा मामात, चतुर्मासके स्थिता श्रीपार्श्वनाथनी रक्षा ॥ क

इति श्री महामन्त्रि मुकुट श्री विमलमन्त्री सद्‌द्रासे पंडित श्री लावण्यसमइ गणिराज कृते नवरंग नवपेडे पंचदश मद्‌नामप्रकटीकरण, विमलश्रीसुप्रभात चरित्र विचारण । स्त्रोत्र्णन । कर्ता कविचरित्र सकल श्रीसंघवर्णन । रास वर्द्धापन । संवच्छरं प्रामानि कथन, विमलश्री सुप्रभात आशीर्वादाधिकारे नवरंग नवपद चूलिका समाप्ता ॥ छो ॥ श्री ॥

स्वस्ति संवत १५८४ वर्षे पोष शुदि दशम्या तिथौ गुरु दिने भीमेन लिषित ॥ श्री रस्तु सर्वे जगत ॥ परहित निरतु भवतु भूत गुणा- दोषा प्रयातु नाश सर्वत्र सुखी भवतु लोक ॥१॥ श्री श्री श्रीमाल ज्ञातीय सुश्रावक साह श्री वनजी जूठा पठनार्थं लिपितं ॥ श्री १ ॥ लेपक पाठकयो कल्याण ॥ ॥ श्री ॥ श्री ॥ छो ॥ श्री ॥ श्री ॥ छो ॥ श्री ॥ श्री ॥ छो ॥ २ ॥ १ म.

तारवणी १ : महत्त्वना शब्दो

अक्षुरस (९.१०८) शेरडीनो रस
अखच (चू ८०) खचकाया सिवाय
अगाज (३.१७०) वगर हरकते
अगास (८ १२) आकाश (वासु अंगासे रहइ : वायरे चडयो)
अघउ (५.१६) शोभ्यो
अट्ठसट्ठानइ (चू. ९४) अडसठ
अडाणा (७.१४) भाडेथी
अड्डद (९.६३) अडवे (खाली)
अणुहण (९.४८) अडवाणे, उघाडे
अणूरूं (२.२०) अपूर्ण, अधूरु
अनेयइ (३.४१) अन्यथा, ऊलटी रीते
अनेरइ (३.४८) बीजे
अपछर (चू.३४) [?] अपछळ, काळजी
अबीह (८ ४३) निर्भय, बीक वगरना
अभड (८.१७) अभभ्य
अभीखण (४.७४) आवकार
अमरख (९.२७१) अमर्ष
अरड (९.२०३) मरडाट, मरड
अरहु (चू.७२) नजीक
अरु (३.१४) नजीक
अलग (६.७५) दूर
अलजइ (६.९३) अभिलाषथी
अलजईओ (३.२४) [?] मनगमता
अलजु (चू. १६) अभिलाप
अलवि (३.५९) कुशळतापूर्वक
अवारीय (३.१६९) ओवारीने
असगां (९.१५६) सगा नहि तेवां
अहिठाण (१ ३८) स्थान
अहिनसि (१.२०) अहर्निश
अहिनाण (२ ७७) अेंधाण
अंगोहलि (९.५२) अघोळ, स्नान माटे
अंघोल (९.१४१) स्नान
अतर (चू.४९) मेदभाव
अतेउर (७.१५) जनानो, राणीवास
अदोह (३.६०) दरकार
आउरखु (९.१५२) आयुष
आऊ (३ १४७) आयुष
आकडिइ (७.६९) [?] बळे छे.
आकह (८.७९) आकरु सखत
आखडी (४.८७) बाधा
आखंडलि (६.१००) समग्र भूमंडळमां
आघलउ (६.७९) नजदीक
आडणी (५.६१; चू. २६) अढेलीने बेसवा माटेनु आसन
आतुपोतु (३.३८) रह्युंसह्यु
आथि (७.१५) घरसामग्री
आमखि (९.१०६) आमिष मांस.
आमलु (१.३९) गूच मर्म, रहस्य
आय (३ १४८) आ
आरोट (६.३७) [?] गर्वीलो
आल (८.३०) आळ
आलि (३.७९) आल्ये, आप्ये
आवला (६.२०) आ बाजु

आशिका (१ ७७) आशीर्वादरूप क्रिया, ओवारणा
आसनउ (१.२१) अजाणतु
आसनु (५ ५८) असत, खोटु
आहेडइ (३ १३८) शिकारे
आहेडी (३ १३८) शिकारी
आकडोआ (३ १६४) एक प्रकारनु घरेणु
इक आछा (५ ९७) एकासणु
ईसरि (चू ७१) इश्वरे महादेवे शिवजीए
उछउ (१ ६५) ओछु
उछक (४.३९) उत्सुक
उठ्ठवणी (६ ९४) ऊठवानी क्रिया
उठ्ठीगणि (चू २६) अढेलवाने माटे
उड्डय (२ २४) योगिनीना शब्दनो रणकार
उढणउ (९ ५९) ओढणु ढाकण
उढी (५ ७५) ओढीने
उपहरु (९.३६) उपरनु
उमाखरु (चू ७२) चाढो
उरतु (९ १५९) ओरतो अभिलाष, जुओ 'ऊरतु'
उलग (७ २२) सेवा, चाकरी
उलि (८ ३९) ओळ, हार, पंक्ति
ऊकालिउ (९ ८३) उकाळेलु
ऊछउ (४ ७०) ओछु, ऊणु
ऊतारु (४ ७२) उतारो
ऊधाण (७ ५८) भरती
ऊरतु (२ ८) ओरतो, अभिलाष, जुओ 'उरतु'
ऊलट (४.२) उत्साह
ऊसनु (९.१५९) ऊसडी गयेल
ओसणता (७ ३३) छडता
ओसर (३.५८) विप्रानु भोजन
ओटइ (चू २०) ओटलो
ओतावलु (४ ८१) उतावळो
ओपइ (६ ४४) ओपे, शोभे
ओपरी (५ ७६) उपर
ओमजउ (७ ३५) जवा दउ
ओरसीउ (९ ६२) ओरसियो
ओलगु (८ १३) सेवक
कइवार (६ ६९) विनति
करार (९ १३१) खर कर्म
कचुडली (९ ४७) कचोलु
कजामणु (५ १३) काळा रंगनु
कट्टा (२ १३) कट्टा, कट्टर (कट्टर योद्धा)
कडब (४ ७९) सुकी चार (साठा)
कणअर (९ ६९) करेणना फूल
कणहता (९ २७०) कणसला दाणा
कबधी (८ ६५) कुबुद्धि, कमअक्ल
कयवार (७ १०६) विनति
करकस (७ ८७) कर्कश, आकरा
करगर (३ १४) कालावाला
करणत (८ ६३) रडता, रोता
करणी (३ ७९) काज, वरा
करमइ (३ १६०) कर्मना विषयमां
करवरु (३ ९६) करजदारी
करहा (९ ३२) करा (बरफना), (९ १२५) ऊंट
करि (चू १८) जाणे के
कर्णिके (९ २७१) कानमा
कम्माइ (१ ९२) करमाय, चिमोडाय
कल्लोल (१५८) किल्लोल
कमुरी (९ २३८) कसोटी

काकरि (२ ७६) काकरामा
कापडी (३.७५) एक प्रकारनो साधु, कार्पटिक
कावर (६.८४) वक्रु
कारीगरि (८ ८६) कारीगरोए
कारु (२.८५) गाछा, छीपा, लुहार, मोची दरजी ए पाच कारु कहेवाता
वास (९.१२८) नानी नहेर
कासमीआ (९ १२४) [?] कपासिया
किंयारइ (३.७१) क्यारामा
कोउ (चू.१८) कर्यो
कुतिगीआ (१ ५९) कौतुकवाळा प्रेक्षको
कुली (५.३५) कळियुग
थली (२.२८) कोमळ, कूणी, नम्र
कुकम्मरोल (चू ३०) बकु जेवो लाल
कुच (६.८३) वाळ
के (३ ७६) कोइ
केहा (७ २६) केवा
कोरडु (७ ३४) न चडे तेवा दाणा
खडीउ (४ ३३) खडियो, दोत
खळहळ (९ १५३) खळखळ करता, वेगथी
खमेडइ (३.९४) खराब वर्तणूकथी
खवा (२.५१) खबर; (९ ६६) खभो
खसर (६.२५) खजर, हीजडो
खच (३.८६) खचको (अटकवानु)
खधार (४ ४६) कोट, किल्लो
खधावलि (६ ८२) स्कधावलि, खभाना वळ उपर
खपण (६.२५) खापण, (९.१९८) कलक
खाण (७.६०) घोडाओने खावा पलाळेला चणा बाजरी वगेरेनु जोगाण
खासड (९ ८३) जोडो
खीटली (५.३८) कानतुं जडाववाळु घरेणु
खीरोदक (१ २८) नाळियेर; (४.२६) सफेद रेशमी वस्त्र
खुप (३ ३२) माथानो शणगार
खेडा (८.४६) [?] क्रीडा
खेतलवीर (९ २४६) क्षेत्रपाळ
खेस (३.४६) क्रोध
खोडि (१.६१) खामी
खोलइ (३ ९९) खोळे, खोळामा
गजयज (५.३६) हाथी
गजा (९ २७७) [?] ताकात
गणीस (५ ५३) ओगणीस
गमइ (९.२०९) गमे
गमे (९ २३४) बाजु
गराण (३.१६) ओशियाळा, हेठा
गाढिम (२.१७) चोकस स्वरूपनु
गालडा (३.१६४) गाल
गुख (१ ५५) गोख
गुरुअडि (३.१५८) गुरु
गुहु (५ ६०) घउं
गूडी (१.६२) नानी धजा
गूहड (८ ६०) घूवड
गेलि (८.७६) रमत
गोतिहिरा (९.१२५) घरेणुं जोनार
गोफणउ (५.७२) शिखाफूल

गोबरे (७.७७) गदा
ग्रास (२.१२) भाग, हिस्सो, गरास
ग्रासि (३.१४२) गरासे
ग्रासीआ (९.२६९) गराशिया, जागीर-दार
ग्या (१८९) गया
घणहठी (९.८६) घणे हठे, हठपूर्वक
घरघरणी (३.७८) गृहगृहिणी, घरधणियाणी
घरमाटी (३ ८५) घरवाळो, पति
घरी (४.६०) घरमा
घाइत (६.९५) घा
घीहटी (८.९२) घीनी दुकानो, घीनां हाट
घोल (१.७) घोळवु
चउवडी (५ ७०) चोवटी
चउसाल (४.१९) चतु:शाळा, उत्तम स्थान
चउहटे (१.५७) चौटामां
चत्तार (४ २६) चोरचखार
चमकीअलि (८ ५६) चमक्या
चख्ख (६.५६) मोढु वींछळवु-साफ करवुं
चद्रूआ (६.५८) चदरवा
चद्रूआ चित्राम (५.९७) चीतरेला चंदरवा
चव (४.१९) चामडी
चाउवियाविड (६.७९) [?] उश्के-रायेलो
चाउरि (६.६८) चातुर्य
चाउलि (८.७५) चोखायी
चाटिकु (८.११) चटाको
चामर (८.३८) चमरी धारण करनार सेवक
चासणी (७.६१) घोडाना पगनी नाळ
चाहीए (३.१६४) चाहवामां आवे
चाहु (५ ६७) रीतरिवाज; (८.११३) चाहो, जाणे के
चाद्रणी (५.६८) चांदरणी, तारो
चापेल (५.६५) चंपानु तेल
चित्राम (६.५८) चीतरेला
चिहुपखी (६.५८) चारे बाजु
चीती (२ ३२) चींतवीने, विचारीने
चीपडी (५.३३) चेपडावाळी
चुकडइ (९ २१७) चार चार
चुकडा (७.५९) चोकडु(घोडानुं)
चुपट्टइ (चू. १७) मेदान
चुमासि (८.११७) चोमासामां
चेजं (९.२४७) थप्पी [?] (वेजुंना अर्थमां)
चेजु (९ २३७) ?
चोआ (१ ७६) चूओ सुगंधी पदार्थ
चोखइ (९.५१) चोख्खु
चोखभडि (५ ३३) चोख्खी गाळी बोलनारी, बढकणी
छडे पीआणे (७.९) (८.१८) चडी सवारीए
छरु (५.२३) क्षार, धूळ
छयल (२.१२) रखडाक
छवनउ (३.३७) छपनु, छुपावेलुं
छदा (३.५३) दोषदर्शन
छाजे छाजे (चू.२५) छापरे छापरे
छाना छल (८.४८) छुपायेलां छिद्रो
छाहु (७.७०) छायो, ढांक्यो

छेह (३.८४) छेडो
छेहा (४ ८७) दगो
जके (चू.५७) जे कोई
जगोस (४ ३६) प्रमग्नता
जमलि (८ ७२) समान
जमलु (३.१५९) साथे रहेलु
जयणा (९.३५) जतन, रक्षण
जरदबध (७ ५८) जेरबद (घोडाने बाधवानो सामान)
जलतरी (४.५०) तरवानी विद्या
जलद्धि (८.८५) पाणीनी ऋद्धि
जवहरी (८.१००) झवेरी
जसवाउ (४.७) यशोवाद, कीर्तिगाथा
जग (३.१६८) यज्ञयाग वगेरे धार्मिक महोत्सवो
जगि (३ ३३) आडबरपूर्वक मोटा समारोहथी
जाग्र (७ २६) धांधल, धमाल
जाद्रणी (५ ६८) जानराणी, जानडी
जामलि (चू.२३) समान
जाल (३ १३७) झाळ, क्वजा
जाल्हिवी (६ ९५) जाळवीन
जासक (३.१८) मनमानवतु, सारी पेठे
जागि (३ १६२) ढोलनो एक प्रकार
जिको (चू.६४) जे कोई
जिणसाली (८.३७) [?] चामडानु वस्तर
जीवी (७ ३१) जिवाई, भरणपोषण
जुहार (४ ५८) जयोद्गार
जूअली (५ ३५) बे
जूआ (३.१०३) जुदा
जूजूआ (९ ३६) जुदा जुदां
जूह (४.४२) द्यूत, जुगार
जेह (५ २२) जिह्वा
जोगवी (४.४३) – नो योग करवो, –नी निमणूक करवी
जोजि (४.२०) जोजे
जोड (१ ५९) जोडी
ज्यान (९ २५३) नुकसान
झाबक (चू.१४) जलदी
झाबल (२ ४२) खाबडु, खाबोचियु
झालि (५ ३८) काननु एक घरेणुं
झूझणि (८ ६५) युद्धमा
झूझार (३ १०) योद्धा
झूझाला (८ ४३) युद्धे चडेला
झोटडी (६.७९) भेंश
झोटी (३.१३) भेंश
टकोल (३ ७१) टकोर, मर्मप्रहार, विनोद
टचागुली (५ २७) टचली आगळी
टबक (७ १८) नगारानो अवाज
टलती (७ १५) विनानी
ठणहारी (९ १३३) गुरुना नामनु पुस्तक के बीजो पदार्थ
ठबडु (९.७२) ठेस, ठोकर
ठवइ (६ ७४) स्थापे
ठाइ (९.७२) ठेकाणे
ठाम (१ ५२) ठेकाणु
ठाय (३.१०५) स्थान, ठाय फेडी= ठाम मारी, मारी नाखी
ठाहि (९.५७) ठेकाणु
ठेऊइ (२.७) ठेबेथी
ठोवु (९ ६७) स्थापवु
डमकीअल (८.९६) डमकवु, डमडम अवाज थवो

डाकडमाल (३.६७) धमपछाड, धमाल
डारे (५.३४) डरावे
डावउ (२.२४) डावो
डाहा (२.७८) डाह्या
डाहिम (५.४९) डहापण
डुड (९.५८) दोड
डोकर (१.८३) वृद्ध
ढमकीअल (८.५६) ढम ढम अवाज थयो
ढीक (९.९२) हथेळीथी वागतुं थाप
ढोलउ सनाह (८.३७) ढीलुं बख्तर
ढीली (७.३३) दिल्ही
ढेढि (३.८) ढेढवाडा जेवुं वर्तन, घोरचकोर
ढोडर (३.११२) [?]
तखर (८.५३) [?] नखर=कांटाळो
तरकस (७.८७) तीरंदाज
तलार (९.१२५) कोटवाळ
तलीआ तोरण (१.६२, ६.५०, ८.७१) त्रण पांदडांवाळा तोरण
ताति (३.५६) वखाण
तालीआ तोरण (५.७६) जुओ 'तलीआ तोरण'
ति (८.६५) ते
तुरीय (२.३४) अश्व
तुहइ (१.१४) तोपण
तुह्माश्रित (६.२१) तमारी साथेनुं, तमारं आश्रित
तूणि (३-१४) साथ
तेखि (४.५३) तीखा, तेज
तेजगलि (६.६९) तेजे आगळो, तेजस्वी
तेपली (९.२३) वनस्पतिविशेष
तोयर (७.६०) तावरी
त्रइसठइ (चू. ७३) त्रेसठ (त्रिषष्टि-शलाका-पुरुषचरित ग्रंथमांना त्रेसठ महान पुरुषो)
त्रटफइ (१५३) तडाक दईने
त्रयेलो (८.८९) त्रण वार
त्रसई (४.४५) त्रिशती गणितपाटी (ग्रंथ)
त्राजूई (५.२९) त्राजवुं
त्रिकशा तोरण (८.१०३) त्रण फळ-वाळा तोरण
त्रिसलां तोरण (चू.२६) त्रण धारवाळा तोरण
त्रेवडी (चू.६२) त्रेवड, ताकात
थइ (चू.१७) जमावट
थरिहरि (८ ३५) थथरे
थाट (१.९२) समूह
थाथरि (८.३५) थथरे
थोक (१.७३) थोकेथोक, खूब
थोम (९ १६५) अटकायत
दरमिन (९.११४) दर्शन
दद्दोलि (६ ४९) सशयमा
दाखिन (९.९) बताबीने
दादु (९ २१२) दादा, आदीश्वर, ऋषभदेव (प्रथम तीर्थंकर)
दारे (५.३४) धमकावे
दीकोला (८.६७) दीकरा, छोकरा
दीवटी (७.६९) दीवीओ, मसाल
दीस (चू.७५) दिवस
दीह (५ २६) दिवस
दुप्पसइ (९.६) दुःप्रसह नामे आचार्य
दूआ (३.११६) दूहा, प्रशस्ति

दुअगम (८ ६८) दुर्गम
दुउ (३ १४८) प्रशस्ति
दुद्धर (८ ६९) दुधर
दूहवाणउ (८.१६) दूभवायो
देउल (३ १५५) देवालय
देवति (१ ४९) देवता, देवी
देवि (२ २४) चीगरी, भैरव पक्षी
दोसी (६ ७६) कापडिया
दोहिल्या (३ ९३) मुश्केलीथी
दोहिलु (३ १२८) मुश्केल
द्रसुका (८ २७) ध्रासका
धडु (६ १६) धडो, स्थान, ठेकाणु
धमधम (४ ९२) धमधम
धवल (३ २०) धोळ (गीत)
धीज (११२) कसोटी, परीक्षा
धुरे (चू.२२) सौथी प्रथम
धुल्ही (५ ७७) धोळ गानारी
धुसट (३ २६) बाळकने धवरावती वखते पोताना साडलानो छेडो ओटाडवानी क्रिया
धुसटी (५ ६२) स्वच्छ करीने
धूपघाणई (९ ७२) धूपदानीथी
धूचडि (५ ३४) क्रोधपूर्वक
धूले धलहरे (चू १९) धवलगृह धोळा धवलगृह
धोरणी (८ ८६) रचना (मकानोनी)
धोरी (८ ३८) मोखरे रहेनार सैनिक
ध्याडि (२ ५०) धाड, [illegible]
नणदर (५ ८५) नणद
नशि (९.१) रात्रे
नसकु (९ ७८) नसोकनु
नसले (४.३६) निशाव्यमा प्रेमवाळो थाय—जनो थाय

नदीतारे (८ ५) नहि तो, नक्कर
नहुतरी (५ ६२) नोतरायेला
नग (४.१३) किंमती वस्तु
नाअता (८ १०८) वाळद
नागलु (चू ३१) दृष्टिदोष
नाट (६ ८०) नक्की
नारू (२ ८५) कदोई, काछिया, कुंभार, माळी, मर्दनिया, सूत्रधार, भैसायत, तबोळी, अने सोनी ए नव वर्ण नारू कहेवाता
नाशा (१ ६) नाक
नाहर (९ २५९) [१] जब्बर, मजबूत
निगोल (१ २) नक्की
निरत (४.६४) स्थिर
निरतइ (चू ३१) टाळे छे
निरति (१ ४३) स्थिर वास
निइ (७ ५७) अने
निक्कारण (६ ३६) निष्कारण
निरवाण (२ ३९) नक्की
निरोल (३ १२१) एकचित्त
निसही (९ ७७) निसिहि (स० निषेध यामि) जिनमंदिरमा प्रवेशता त्रणवार उच्चारातो जैन पारिभाषिक शब्द
निसिदीस (४ ३) निशादिवस, रात दिवस
नीछोडउ (३ ४०) [१] त्यजे नहि
नीमेडि (३ ४०) [१] नियमे करीने, सरेखर
नीमाला (९ ८९) मोवाळा
नीसत (८ ३०) नि सत्त्व
नीसाण (१ ६०) घोडा उपरना नगारां
नुहि (चू ७०) न होय

नेउर (१.५) नूपुर
नेउरी (७.४५) नूपुर
नेवज (९.२५१) नैवेद्य
नैरत (१.४३) नैर्ऋत्य खूणो
पगठ (९.८२) पग नीचे राखवामां आवतो बाजोठियो
पटाट (७५८) पटा
पट्टुलउं (५.७१) पटोळुं
पट्टुलडी (३.१६३) पट्टकुळ, पटोळुं
पटोधर (३.१४७) गादीनशीन
पठाणी (५.९०) पीठ पर बांधवामां आवता (पटा)
पडवडउ (६.१६) प्रतिवाद
पडवडा (७.६) प्रतिवाद—भरेला
पडा (२.५८) पुट, पडो
पतीऊं (३.१४७) पत्यु
पनरि (८.५३) [?]
पनुतां (२.२५) शुकन देनारां
पनुती (५.३९) शुकन देनारी
पन्नाला (चू.२०) परनाळ
पयसारु (५.६६) प्रवेश
पयसावा (६.७०) पेसवा
परघल (९.२४९) पुष्कळ
परतजि (६.१०) परित्यागीने, छोडीने
परनालीउ (९.५१) परनाळ
परवडउ (६.१६) मर्म साचवीने
परहु (४.५७) दूर
परहुणउ (९.१६०) परोणा, मेमान
परहुदीउ (३.४०) दोयपाळो
परहुति (२.२१) पारकी होंश
परहोदि (३.१३०) परोढमां
पराद्रउ (७.५) परास्त, रिसायेलो
पराण (३.१६) उपराणुं
पराहां (३.९८) परां, दूर
परि (१.१९) प्रकार
परिघल (९.१०३) पुष्कळ
परिथल (५.१६) पुष्कळ
पल्हणाय (८.१४) पलाणाय, पलाणवामां आवे
पली (३.७३) पळी (माप)
पश्चमु (८.३) पश्चिमनो देश
पहि (चू.२०) पथिक, मुसाफर
पही परहुणु (३.६९) पई-परोणो, पथिक अने परोणो
पंच ईटाली (९.१९२) छेतरपींडी करनार माटे करातीसजा—ईंटो के पथ्थर मारीने मारी नाखवानो सजा
पाखरीआ (७.३६) पलाण नाख्यां
पाणिहारि (८.८५) पनिहारी
पान्हउ (३.२६) पानो, स्तनमा आवतो दूधनो उभरो
पानेत्र (५ ७१) पानेतर
पायक (१.४४) पगे चालनार सैनिक
पारिखा (२.१७) परीक्षक
पालडी (९.८६) सोदो
पाला (२.२०) पगपाळो
पास (चू.२१) देराव
पीआणां (२.२७) प्रयाण
पीआरु (३.८०) पारकुं
पुण (चू.४०) पण
पुतार (७ ४६) महावत
पुष्ट (४.१७) पुष्ट
पूठि (२.३८) पाछळ
पोलि (२.३५) पोळनो दरवाजो, पोळ

पोसाल (३.१२४) पौषधशाळा
पौरवा (२.५१) पुरुवशना, पूर्वदेशना
प्रति (१.५४) –ना तरफ
प्रतिपु (५.१०६) तेजस्वी वन्यो
प्रहि (५.८१) परोढिये
प्रीअछि (८.३३) पडदो
फणगट (३.९) बेशरमी
फार (८.४७) खूब
फासू (९.३८) शेकेलु
फांडइ (७.१०) फांदे, फदामां
फेडइ (३.४०) खर्च
फेर (चू. १७-२) भिन्नभाव
फोक (४.८६) फोगट
फोफल (१.७५९) सोपारी
बइसणां (४.७४) आसनो
बरवइ (७.७१) बडापो, मोटाई
बहु (७.३४) वडु (खाद्य पदार्थ)
बदिरा (९ २३६) एक प्रकारनु नाणु
बलाणा (९ २२९) मडपनो एक प्रकार
बहिनर (३.१०४) बहेन
बहुकइ (५.१००) बहेके
बहूल (२ १२) बहुत्वथी, बहु
बागड (३.१५) तोछडु
बाफ (५.९२) पाघडी
बावनचदन (५ ७४) एक प्रकारनु चदन
बासत्या (५.९२) बास्ता नामनु कापड
बागड (६.८२) तोछडु
बागडइ (६.८२) जंगली
बिसरा त्रसरा (७.८४) बे हार त्रण हारना
बीडु (१.५१) पानबीडुं

बुह (९.३१) बहु
बुहुतेरा (७ ८१) बहु, घणा
भगर (८.५३) [?] सुको पहाड
भग (५.२२) योनि
भडवाय (६.७५) बहादुर योद्धा
भणतला (६ ८०) भणता, बोलता
भरडा (९.२०१) पूजारी, ब्राह्मण
भरह भेद (३.१७१) भरतना नाट्यशास्त्रमां आपेला नृत्यना प्रकार
भस (२ ५७) [?] भास, गेय कडवु
भंभल (८.१९) भरपूर
भाण (३.१५८) सूर्य
भामटा (३ १६८) ब्राह्मणाभास, लक्षणथी ब्राह्मणो–भिखारीओ
भामणा (३.१६१) ओवारणा
भारिउ (६.८८) भारमा राख्यो
भालोडे (७.३७) बाणथी, तीरथी
भावडि (३.७४) वासना
भुखर (६ ८३) गाडानी माफक उथ्केरायेलो
भुइ (५ २५) पृथ्वी, जमीन
भूछ (६.१९) मूर्ख, भोट, गांडो
भेटणि (१.८९) भेटने विशे; (८.७७) भेटवु
भेटि (१.८०) भेट, बक्षिस
भोजिग (४.३३) भोजक (भागाळा)
मइता (८.४१) लगाम
मउड (४.७१) मोड (बळदने मोड करीने)
मकायत (९.१२६) रूपिया परगवानो धधो
मखवट्टउ (चू २२) मुखपट, मोढु
मछरि (८.२१) मत्सर–दोषमां

मणा (३.५८) खामी
मतुं (१.४७) अभिप्राय, मत
मदफू (३.२३) किंमती कापड, फूमतु[?]
मयण (५.७४) कामदेव
मयमता (चू.३७) मदमत्त
मयला (३.७९) मेलां
मया (१.५०) कृपा
मश्रू (५.९२) एक प्रकारनुं कापड, मशरू
महिता (३.१२) महेता, अधिकारी
महिला (९.१५) अंदरना, मोघला
महीयां (३.५५) ऊंकास
महुत (२.११) मान, महत्त्व, मोटाई
महूरत (४.३१) मुहूर्त
मंगलच्यारि (६.८९) मगलाचार, मांगलिक क्रिया; (चू.१०१) चार मंगळ
मंडाण (७.२३) मांडणी
माई (३.३४) मातृका ('अ' थी 'ळ' सुधीना बधा अक्षरो)
माउला (४.५८) मामा
माम (३.९०) हिंमत; मोभो
माटलां (१.७६) माटीनां वासण
माटी (३.९३) धणी
माठा (७.४६) ढीलां
मामहिरु (५.६७) मामेरूं
माहरि (७.८०) माळारामां
मांडवीआ (१.५७) जकातना नाकेदारो
मिछो (३.१०८) माछी
मीनति (७.१०५) विनंति
मुखवटउ (४.२४) मोंनो विस्तार
मुछि (८.४१) मूंछ
मुरति (७.७५) मरडीने, वांका राखीने
मुहत (७.१२) महत्त्व
मुहवटा (५.९०) हाथीना कुंभस्थळ पर बांधवामां आवती सुशोभित अंबारी
मुहवडि (३.८७) मोखरे
मुहाडि (९.१०१) आगळ्ं धरवु
मुहुता (२.४७) महेता, अधिकारी, मंत्री
मुंछ (६.८३) मूछ
मूंजी (८.५४) कृपण
मेकडा (चू.२७) [?]
मेघनाद (९.२२९) मंडपनो एक प्रकार
मेर (९.२७७) टोच, शिखर
मेलावड़ (१.८५) समूहमां
मेल्हाण (७.३६) छावणी
मेवा (१.७६) सूकां लीलां फळ
मोस (९.१६५) मृषा, खोटां
युगतां (४.२४) जुगतां, बंधबेसतां
रखत (७.१५) राखेला
रणकीअ(ल) (८.५६) रणक्या
रणिझडि (७.६२) सखत युद्धमां
रमलि (१.६६) रमतमां
रलिआयति (९.२) रळियात
रवाडी (८.८३) पालखी
रसवती (चू. ५७) रसोई
रंगाउलइ (६.५४) एक जातना लश्करी पोशाकनो भाग
राछ (चू. २५) राचरचील, शोभा
राछपीछ (३.१२) राचरचीळ
राछनिखर (२.७९) हथियारोनो समूह

वरुठी (५.८२) लग्नवाद वर तरफथी आपवामां आवतुं जमण
वर्णिका (१.३३) रंग
वलखु (९.१९०) विलक्ष्य, बेबाकळो
वलायु (६.७१) वळाव्यो
वस (४.७०) वसा (मेळना अर्थमां)
वसिहर (६.४३) विषधर, नाग
वसुहा (८.२८) वसुधा, पृथिवी
वहिचइ (९.२१६) वहेंचे, भाग पाडे
वहिच्ची (९.१५७) वहेंची, भाग पाडयो
वहिलु (४.५५) वहेलो, पहेलो
वाई वाकरी (६.९३) होड वकी
वागदोर (७.६०) वाघदोरी (घोडाने बाधवानो सामान) [?]
वागरीआ (८ १३१) जाळ नाखनारा, वाघरी
वाटलां (१.७६) वाटका
वाणुत्र (७.७) वाणोतर.
वान (चू ६२) वर्ण, शोभा
वायण (५.६७) वायणु, स्वस्तिवाचन
वारू (७.५६) सारी रीते
वालाकुली (९.६५) वाळाकूची
वासनु (५.५८) रहेवानो
वासु (१.६३) वास, वासो, उतारो
वाहि (८ ६३) वहावे, चलावे
वाहिणि (४.७८) वाहिनी, रथ, वैलडुं
विचिलि (चू २४) वचले
विछाहि (चू.२९) विछावे
विछोहां (९.१६२) विनानां, छूटां करेलां
विणग (९.२५३) वणिक्
वितिपति (५.७३) व्युत्पत्ति, खिलावट
वीकाइ (८.९७) वेचाय
विलोणउ (६.२५) वलोणुं
विसराल (१.७२) विसरायेला, निष्फळ
विसा (३.४३) वसा
विसाविसाही (८ ९७) वीस वसाए, किंमतो
विसु (९.१५७) विषम, [?], विषय
विहिचिणि (९ २१४) वहेंचणीमां
वीकइ (८.९७) वेचाय
वीटवीटाइ (७.९२) वींटो विंटायो, वींटी वळाया
वीटलो (५.३८) वींटी, अंगूठी
वीनति (८.७८) विनंती
वीसासु (३.५३) वीस
वुली (७.१७) वळावी
वूटा (९ १५३) वही गयेलां
वेझां (६.१५) वींधवाने माटे लटकाववामां आवेल वस्तुओ
वेड्रधान (९.१०७) पोतानी मेळे ऊगेला अनाज
वेढला (३.२४) कानतु घरेणुं
वेढालगु (६.७१) लडवा सज्ज थयेल
वेढि (३.८) लडवाड
वैद्य-वइद (८.१०५) वैद्यविद्यावाळा
व्यवसाईया (६.५३) धधादारी माणसो, वेपारी
व्यवहारीआ (१.५६) वेपारी
व्यापार (२.७८) वेपार
व्यापारी (२ ५४) वेपारी
शयर (४.१४) शरीर
शारदाति (४.३५) सरस्वती

शसिहर (३.१५८) चंद्र
शिरीड़ (९.६) साथेदु, –ना जेवु
शिलावट (९.२३४) सलाट
शोभ (१८३) मान
सइशु (५.७२) सैंयो
सइ (२.८२) दरजी
सघर्डां (९.३४) घाटां
सत्ताणउ (६.१००) रक्षण सहितनो
सदलो (१.८) पत्रवाळो, पांदडावाळो
सनेपातक (८.१२) संनिपात सनेपात
सपराणा (७.१६) सावदा, तैयार
समावि (४.६६) स्वभावे
समकित (९.१६) सम्यक्त्व
समवडि (९.२४५) समोवडमा
समाधि (४.५६) शाता, शाति, दुःखनु निवारण
समुहडु (४.९) समोतु, महत्त्वपूर्वकनु, मोटु
सरडउ (३.१३९) काचींडो
सरंगट (३ ९) घुमटो राखीने
सरमइ (८.४१) श्रम करे
सलइ (६ ६८) चालो (न शके)
सवा (९.६६) पूजा करवा माटेनी सवाई बोली [?]
सहिकार (३ १५७) सत्कार
सहिगुरु (४.५२) सद्‌गुरु
सहिसिउ (८.३२) सहशो, सहन करशो
सहीअ (८.३१) सहियर, साहेली, सखी
सह्मारे (९.२४७) समारे [?]
संहेरणइ (९.११०) संहेरण, मजूस
संबल (२.२२) भाथु
संधि (४.६५) श्यामिका, काळाश
सागरि (९.१०९) सागारिक, गृहस्थ
साट (७.५८) पट्टी
साटइ पालटइ (९ ८४) साटे-पालटे, अदलेबदले
साटिकु (८.११) साटको
साठि (९.७६) साठ, ६०
साथरी (६.१४) आसन, बिछावट
साथीउ (४.११) स्वस्तिक, साथियो
साबाण (७.१५) तंबूओ
सामहणी (७.१३) तैयारी
सामानि (चू. ६१) सामान्य, साधारण
सामुद्रकि (४.५) सामुद्रिक विद्यानो जाणकार; सामुद्रिक विद्या
साम्हुउ (९.७) सामो, प्रत्यक्ष
सारु (४.१९) सारु
सारूं (३.३२) बधुं
सालरी (९.२४९) छोड उपर
सालही (९.१२९) एनो (पक्षी)
सावद्र (९.२३३) वस्त्रनो प्रकार
साह (९.१९२) धनपति वणिको माटे वपरातो शब्द
साहण (३.११६) साधनरूप वाहनो
साहबाला (५.७८) साबेला, वर-घोडामां चालता नानां छोकरां-वाळा घोडा
सिकद (९ ११८) गाडुं
सिराडउ (९.२१८) शराडे चडवु
सिलावट (९ २१९) सलाट कडियो
सीकरी (७.६५) [?] एक प्रकारनुं वाहन–पालखी
सीगरि (८.४७) [?] जुओ 'सीकरी'

सीमाडा (७,२०) सरहद उपरना
  रामाओ
सुखपट्ट (चू २२) सुखनु दर्शन
सुखासुण (७ ६८) नानी पालखी
  सुखपाल
सुजीवी (६ ३९) [!] जीवन
सुणाई (४ ७२) [!] आगाही
सुनु (८ १२) शून्य मनवु
सुविहु (चू १०७) वधाने
सुहडा (३ ११०) सुभट
सुखिणि (५ ३३) शरणी
सुठिणि (५ ३२) चूंची, छुछी
सुडल (३.३१) सुडलो
सुहालु (३ १३९) सुवाळुं
सूआ (चू ४१) सज्जन
सूपवडि (८ ३३) सुवावड
सूखडि (० ६२) सूखड, चदन
सूवडा (चू २७) मुसडी एक प्रकारनी
  मीगाई
वार (५ १०४) वापरवा योग्य
वारू (८ २३) साफ कराव्या
वालाडु (३ ४७) बरोबर
वासनु (४९) मीठाणभर्युं वतन
वासु (५) [!] अंगेअग
वाहि (८) शेरी, महोल्लानो मार्ग

सोसाल्या (७ ४५) रंग्या
सोनईया (३ १४६) सोनानाणु, सोना-
  महोर
सोर (३ १३३) पडकार
सोहासणि (१ ९१) सौभाग्यवती स्त्री
हकिक (५ ७८) हांकीने
हटी (८.९२) हाट, दुकानो
—हता (९ ७५०) —थी (अनुग)
—हतु (२ ३८) —थी (अनुग)
हराण (३ १४५) आश्चर्यचकित,
  हेरान
हरीअडा (७ ५०) माळा
हरीआली (५ ४४) अनेक अर्थवाळो
  गीतप्रकार
हलूया (५ ५०) हळवा
हसारथि (८ ६३) हास्यजनक स्थिति
—हि (चू ३९) —मा (त्रीजी अने
  सातमी विभक्तिनो प्रत्यय
हिंदू (२ ८३) हिंदु जाति
हीर (३.१३४) रत्न
—हुतौ (८ ८२) —थो (अनुग)
हुलावती (१ २२) हुलामणां करती
हेज (३ २९) हेत, प्रेम
हेरा (३ ५०) छुपाईने जोवु
होड (५ १०१) हरीफाईनो बोल
होडा (७ ५०) पल्हाण उपरनु वस्त्र

तारवणी २ : स्थलादि-विशेष नाम

सीमाड़ा (७.२०) सरहद उपरना राजाओ
सुखवट्ट (चू. २२) सुखनुं दर्शन
सुखासुण (७.६८) नानी पालखी, सुखपाल
सुजीवी (६ ३९) [?] जीवन
सुणवई (४.७२) [?] आगाही
सुनु (८.१२) शून्य मननुं
सुविहुं (चू. १०७) बधाने
सुवडा (३.११०) सुभट
सुंखिणि (५.३३) शंखणी
सुंछिणि (५.३३) चूंची, छूंछी
सुडल (३.३१) सुंडलो
सुंहाळु (३ १२९) सुंवाळुं
सुअण (चू.४१) सज्जन
सुआवडि (८.३३) सुवावड
सूकडि (९.६२) सुखड, चदन
सूखडां (चू.२७) सुखडी, एक प्रकारनी मीठाई
सूझतु (९.१०४) वापरवा योग्य
सूडाव्यां (८.२३) साफ कराव्यां
सूधां (३.४७) बरोबर
सूसणां (३.४९) मीठाशभर्युं वर्तन
सूंगो (९ ६५) [?] अंगेअंग
सेरी (१ ५७) शेरी, महोल्लानो मार्ग
सेलडी (६.२९) शेरडी
सोक्षाल्या (७.४५) रंग्या
सोनईया (३.१४६) सोनानाणुं, सोनामहोर
सोर (३.१३३) पडकार
सोहासणि (१ ९१) सौभाग्यवती स्त्री
हकिक (७.७८) हांकीने
हटी (८.९३) हाट, दुकानो
—हता (९.२७०) —थी (अनुग)
—हतु (२.३८) —थी (अनुग)
हराण (३.१४५) आश्चर्यचकित, हेरान
हरीअडा (७.५०) माळा
हरीआली (५.४४) अनेक अर्थवाळो गीतप्रकार
हलूया (५.५०) हळवा
हसारथि (८.६३) हास्यजनक स्थिति
—हि (चू.२९) —मां (त्रीजी अने सातमी विभक्तिनो प्रत्यय
हिंदू (२.८३) हिंदु जाति
हीर (३.१३४) रत्न
—हुती (८ ८२) —थी (अनुग)
हुलावती (१.२२) हुलामणां करती
हेज (३.२१) हेत, प्रेम
हेरा (३.५०) छुपाईने जोयुं
होड (५.१०१) हरीफाईनो बोल
होडा (७.५०) पलाण उपरनुं वस्त्र